B.Ed. 2nd Semester

B.Ed. Suggestion

&

Previous Year Sloved

(Hindi)

(2017 to 2023 Previous Year Sloved)

Is Here:

Course: 1.2.3 (Learning & Teaching)
Course: 1.2.8A (Knowledge & Curriculum)
Course: 1.2.9 (Assessment for Learning)
Course: 1.2. EPC2 (Drama & Art in Education)

Edited by: Soumen Das

www.dascoaching.in

B. Ed 2nd Semester Exam Guide (Hindi)

Course: 1.2.3 (Learning & Teaching) 1st Half (Learning)

Marks: 2

1. What is conceptual learning? 2017, 2020, 2022

Ans: धारणा संबंधी शिक्षण (Conceptual Learning) एक ऐसी शिक्षण प्रक्रिया है जिसमें छात्र मौलिक धारणाओं, सिद्धांतों या नीतियों को समझने की कोशिश करते हैं। यह केवल जानकारी को याद रखने के बजाय, उस जानकारी के भीतर गहरे संबंध बनाने और इसे वास्तविक जीवन में लागू करने की क्षमता विकसित करने पर आधारित है।

धारणा संबंधी शिक्षण के कुछ प्रमुख विशेषताएँ हैं:

1. **समस्या समाधान:** छात्र समस्याओं को हल करना सीखते हैं और अपनी धारणाओं को लागू करने में सक्षम होते हैं।
2. **संयोग स्थापित करना:** नई जानकारी और पूर्व ज्ञान के बीच संबंध स्थापित करना।
3. **समालोचनात्मक विचार:** छात्र जानकारी में भिन्नता करने और उसका विश्लेषण करने में सक्षम होते हैं।
4. **भावनात्मक भागीदारी:** छात्र अपनी भावनाओं और अनुभवों के माध्यम से सीखने का प्रयास करते हैं।

इस प्रक्रिया के माध्यम से, छात्र विभिन्न धारणाओं को समझने के साथ-साथ अपने विचारों और अनुभवों का उपयोग करके नए विचारों का निर्माण करते हैं।

2. Mention the different steps of information processing of learning. 2017, 2022

Ans: शिक्षण में सूचना प्रक्रिया के संगठनात्मक पहलुओं को कई चरणों में विभाजित किया जा सकता है। ये चरण मुख्य रूप से सीखने की प्रक्रिया में सूचना के संगठन और प्रक्रिया में सहायता करते हैं। नीचे ये स्तर दिए गए हैं:

1. **सूचना संग्रह (Information Gathering):** यह शिक्षण में पहला चरण है, जहां छात्र विभिन्न स्रोतों से सूचना इकट्ठा करते हैं। यह सूचना किताबों, लेखों, वीडियो, या शिक्षकों से प्राप्त हो सकती है।
2. **सूचना वर्गीकरण (Information Categorization):** छात्र एकत्रित सूचना को वर्गीकृत करते हैं। इस चरण में वे सूचना के भीतर संबंध खोजते हैं और विचारों को विभिन्न समूहों में बांटते हैं।
3. **सूचना विश्लेषण (Information Analysis):** इस स्तर पर छात्र सूचना के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करते हैं। वे सूचना के साथ गहराई से काम करते हैं और इसकी प्रासंगिकता समझते हैं।
4. **सूचना संग्रहण (Information Storage):** इस चरण में छात्र अपनी प्रक्रियाकृत सूचना को मेमोरी में संग्रहित करते हैं। यह दीर्घकालिक स्मृति में सूचना संग्रहण के लिए महत्वपूर्ण है।

5. **सूचना पुनः प्राप्ति (Information Retrieval):** जब छात्र शिक्षण के दौरान आवश्यक सूचना खोजते हैं, तो वे उस सूचना को पुनः प्राप्त करते हैं। यह परीक्षा की तैयारी या परियोजना के लिए महत्वपूर्ण है।
6. **सूचना उपयोग (Information Application):** छात्र प्राप्त सूचना को वास्तविक जीवन में उपयोग करते हैं। इस स्तर पर वे सीखने को वास्तविक परिस्थितियों में लागू करते हैं और समस्याओं का समाधान करने में सक्षम होते हैं।
7. **प्रतिबिंब (Reflection):** शिक्षण प्रक्रिया के अंत में छात्र सूचना पर प्रतिबिंबित करते हैं। वे सोचते हैं कि उन्होंने क्या सीखा, क्यों सीखा, और वे भविष्य में अपनी सीखने की प्रक्रिया को कैसे सुधार सकते हैं।

ये सभी स्तर मिलकर सूचना प्रक्रिया की प्रक्रिया को गठित करते हैं और छात्रों के सीखने के अनुभव को समृद्ध करते हैं।

3. Write any two differences between collaborative and co-operative learning. 2017, 2021

Ans: संयुक्त शिक्षण (Collaborative Learning) और सहयोगात्मक शिक्षण (Cooperative Learning) दोनों ही छात्रों के बीच समूह कार्य के माध्यम से सीखने की विधियाँ हैं, लेकिन इनके बीच कुछ अंतर हैं। यहाँ दो मुख्य अंतर दिए गए हैं:

1. <u>उद्देश्य और लक्ष्यों:</u>

- **संयुक्त शिक्षण:** संयुक्त शिक्षण में, छात्र सामान्य उद्देश्य के लिए एकत्र होते हैं और आपस में संवाद करके नया ज्ञान बनाते हैं। यह अक्सर खुली चर्चा और जानकारी के आदान-प्रदान पर आधारित होता है।
- **सहयोगात्मक शिक्षण:** सहयोगात्मक शिक्षण में, छात्र एक संरचित समूह में एक विशिष्ट लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए काम करते हैं। यहाँ भूमिकाएँ निर्धारित होती हैं, और प्रत्येक सदस्य की जिम्मेदारियाँ स्पष्ट रूप से निर्धारित की जाती हैं।

2. <u>संरचना और प्रक्रिया:</u>

- **संयुक्त शिक्षण:** संयुक्त शिक्षण आमतौर पर कम संरचित होता है, और छात्र अपनी खोजात्मक शैलियों में काम करते हैं। इसमें छात्रों के बीच संबंध और संवाद पर अधिक जोर होता है।
- **सहयोगात्मक शिक्षण:** सहयोगात्मक शिक्षण अधिक संरचित और योजनाबद्ध होता है, जहाँ छात्र अपनी भूमिकाओं के अनुसार काम करते हैं और समूह के भीतर सहयोग और समर्थन प्रदान करने के लिए संगठित होते हैं। यहाँ शिक्षक की मार्गदर्शन भी महत्वपूर्ण होती है।

ये अंतर शिक्षण प्रक्रिया में संयुक्त और सहयोगात्मक शिक्षण के बीच भिन्नताओं को स्पष्ट करने में मदद करते हैं।

4. Write any two features of cognitive learning. 2017, 2020

Ans: प्रज्ञामूलक शिक्षण (Metacognitive Learning) की कुछ विशेषताएँ हैं। यहाँ दो मुख्य विशेषताएँ दी गई हैं:

1. **स्व-नियंत्रण (Self-Regulation):** प्रज्ञामूलक शिक्षण में छात्र अपनी शैक्षिक प्रक्रिया को नियंत्रित करने में सक्षम होते हैं। वे समझते हैं कि वे कैसे सीख रहे हैं और बेहतर तरीके से कैसे सीख सकते हैं। इस स्व-नियंत्रण के माध्यम से, वे अपने लक्ष्य निर्धारित करते हैं, समय प्रबंधन करते हैं और शैक्षणिक रणनीतियों को लागू करते हैं।
2. **प्रतिबिंब (Reflection):** प्रज्ञामूलक शिक्षण की एक और महत्वपूर्ण विशेषता है प्रतिबिंब। छात्र अपनी शैक्षिक अनुभवों के बारे में सोचते हैं, वे क्या सीखे हैं, क्यों सीखे हैं और भविष्य में बेहतर तरीके से कैसे सीख सकते हैं, इसका विश्लेषण करते हैं। यह प्रतिबिंब प्रक्रिया उन्हें अपने शैक्षणिक दृष्टिकोण में सुधार करने में मदद करती है।

ये विशेषताएँ छात्रों को उनके शैक्षिक रणनीतियों और समग्र शैक्षणिक क्षमताओं को बढ़ाने में सहायक होती हैं।

5. How can teacher use 'peer tutoring' as a learning strategy? 2017, 2021

Ans: शिक्षक 'संगीन शिक्षण' (Peer Learning) को शिक्षण रणनीति के रूप में निम्नलिखित तरीकों से उपयोग कर सकते हैं:

1. **समूह गठन:** शिक्षक विभिन्न स्तरों या क्षमताओं वाले छात्रों के बीच छोटे समूह बना सकते हैं, ताकि वे एक-दूसरे के साथ मिलकर काम कर सकें और सीख सकें।
2. **चर्चा का अवसर:** छात्रों के बीच चर्चा और विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए अवसर प्रदान करना, जिससे वे समस्याओं को हल करने और नए विचार उत्पन्न करने के लिए प्रोत्साहित होते हैं।
3. **भूमिका परिवर्तन:** छात्रों को शिक्षक और छात्र दोनों के रूप में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना, ताकि वे एक-दूसरे की क्षमताओं से सीख सकें।
4. **प्रोजेक्ट-आधारित गतिविधियाँ:** सँगीन शिक्षण के माध्यम से प्रोजेक्ट, शोध या कार्यों के लिए सह-निर्धारित कार्य करना, ताकि वे एक साथ सीख सकें।
5. **मूल्यांकन:** शिक्षक सँगीन शिक्षण गतिविधियों के परिणामों का मूल्यांकन कर सकते हैं, जिससे छात्र अपनी शैक्षिक प्रक्रियाओं पर विचार कर सकें।

ये रणनीतियाँ छात्रों के बीच सहयोग, संबंध और समर्थन को बढ़ाने में सहायक होती हैं।

6. What do you mean by Scaffolding? 2017, 2020, 2022

Ans: Scaffolding का अर्थ है एक शिक्षण रणनीति, जिसमें शिक्षक या सहायक छात्रों की सीखने की प्रक्रिया का समर्थन करते हैं और उनकी आवश्यकता के अनुसार सहायता प्रदान करते हैं। यह छात्रों को उनके वर्तमान ज्ञान के स्तर से एक नए स्तर पर पहुँचने में मदद करता है।

Scaffolding के मुख्य गुण:

1. **समर्थन और मार्गदर्शन:** शिक्षक छात्रों को विशिष्ट कार्यों या अवधारणाओं को समझने में सहायता करते हैं, जो उनकी सीखने में सहायक भूमिका निभाता है।
2. **चरणबद्ध सीखना:** छात्रों को धीरे-धीरे नई जानकारी प्रदान की जाती है, जिससे वे आसानी से नए विचारों को ग्रहण कर सकें।
3. **स्वायत्तता का विकास:** समय के साथ, सहायता को धीरे-धीरे कम किया जाता है, ताकि छात्रों को स्वायत्त बनने के लिए प्रेरित किया जा सके।
4. **व्यक्तिगत शिक्षण अनुभव:** छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार सहायता प्रदान की जाती है, ताकि वे अपनी गति से सीख सकें।
5. **प्रतिक्रिया और मूल्यांकन:** यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षक छात्रों की प्रगति पर नज़र रखें और उनकी प्रगति के आधार पर उचित सहायता प्रदान करें।

यह दृष्टिकोण छात्रों के आत्मविश्वास और समस्या समाधान कौशल को बढ़ाने में मदद करता है।

7. Write any two ways of increasing the transfer of learning in the classroom. 2017

Ans: कक्षा में शिक्षण प्रवाह बढ़ाने के लिए उपयुक्त दो तरीके हैं:

1. **टिप्पणी और चर्चा:** शिक्षकों को कक्षा में छात्रों के बीच चर्चा और विचारों का आदान-प्रदान करने के अवसर प्रदान करने चाहिए। इसके माध्यम से छात्र एक-दूसरे के विचारों और अनुभवों से सीख सकते हैं, जो उनकी सीखने की प्रक्रिया को समृद्ध करता है।
2. **समूह गतिविधियाँ:** शिक्षकों को छात्रों को छोटे समूहों में काम करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे वे एक-दूसरे के साथ सहयोग करते हैं और समस्या समाधान करने की तकनीकें सीखते हैं। समूह गतिविधियों के माध्यम से छात्र अपने कौशल और ज्ञान को साझा कर सकते हैं, जिससे शिक्षण प्रवाह और बेहतर होता है।

ये तरीके कक्षा में सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देने और शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद करते हैं।

8. What is meant by the term 'Gestalt'? 2018

Ans: "गेस्टाल्ट" (Gestalt) एक जर्मन शब्द है, जिसका अर्थ है **"आकृति," "रूप," या "संरचना।"** यह सामान्यत: मनोविज्ञान के संदर्भ में उपयोग किया जाता है और **"गेस्टाल्ट मनोविज्ञान"** एक विशेष धारणा को संदर्भित करता है जो मानव मन में एक संपूर्ण, एकीकृत अनुभव बनाने पर जोर देती है।

गेस्टाल्ट सिद्धांत का मुख्य विचार यह है कि हमारा मस्तिष्क अनुभवों को अलग-अलग भागों के बजाय एकीकृत रूप में ग्रहण करता है, और लोग सामान्यत: चीजों को एक पूर्ण चित्र या **"गेस्टाल्ट"** के रूप में समझते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार, हमारी धारणा और अनुभव केवल शारीरिक संवेदनाओं पर

आधारित नहीं होते हैं, बल्कि हमारे पिछले अनुभवों, विचारों, और परिस्थितियों के संयोजन द्वारा निर्मित होते हैं।

यह अवधारणा शिक्षा, मनोविज्ञान, और चिकित्सा के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है, और यह मानव व्यवहार और धारणा पर शोध में उपयोग की जाती है।

9. What is procedural learning? 2018, 2021

Ans: प्रक्रियात्मक शिक्षण (Procedural Learning) एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति विशेष कार्यों या कौशलों को अभ्यास और पुनरावृत्ति के माध्यम से सीखता है। इसमें उन प्रक्रियाओं, नियमों और रणनीतियों का अधिग्रहण शामिल होता है जो व्यक्तियों को क्रियाएं करने और समस्याओं को प्रभावी ढंग से हल करने में सक्षम बनाते हैं। यह प्रकार का शिक्षण अक्सर अप्रत्यक्ष होता है, जिसका अर्थ है कि व्यक्ति इसके पीछे के नियमों या चरणों के बारे में पूरी तरह से अवगत नहीं हो सकते; इसके बजाय, वे अनुभव के माध्यम से सीखते हैं और समय के साथ अपने प्रदर्शन में सुधार करते हैं।

<u>प्रक्रियात्मक शिक्षण के मुख्य विशेषताएँ:</u>

1. **कौशल अधिग्रहण:** प्रक्रियात्मक शिक्षण मुख्य रूप से कौशल विकसित करने पर केंद्रित होता है, जैसे कि साइकिल चलाना, संगीत वाद्ययंत्र बजाना, या खेल खेलना।
2. **अभ्यास और पुनरावृत्ति:** कौशल में महारत हासिल करने के लिए नियमित अभ्यास और पुनरावृत्ति आवश्यक होती है। समय के साथ, यह दक्षता और कार्यों का स्वचालन बढ़ाता है।
3. **अप्रत्यक्ष ज्ञान:** प्रक्रियात्मक शिक्षण के कई पहलू स्पष्ट रूप से उपलब्ध नहीं होते; व्यक्ति यह बताने में कठिनाई महसूस कर सकते हैं कि वे एक कार्य को कैसे करते हैं, भले ही वे इसे अच्छे से कर सकें।
4. **धीरे-धीरे सुधार:** जब विद्यार्थी अभ्यास करते हैं, तो आमतौर पर उनका प्रदर्शन बेहतर होता है, वे अपनी तकनीकों को सुधारते हैं और गलतियों की संख्या को कम करते हैं।
5. **संदर्भीय शिक्षण:** प्रक्रियात्मक ज्ञान अक्सर विशिष्ट संदर्भों में प्राप्त होता है, जिससे यह विशेष कार्यों या वातावरण के लिए अत्यधिक प्रासंगिक हो जाता है।

10. What is shaping? 2018, 2020, 2022

Ans: शेपिंग (Shaping) एक शिक्षण विधि है, जो विशेष रूप से व्यवहारात्मक मनोविज्ञान में उपयोग की जाती है। यह व्यवहार को क्रमिक रूप से बदलने या विकसित करने की एक प्रक्रिया है। शेपिंग के माध्यम से एक विशिष्ट व्यवहार प्राप्त करने के लिए, पहले उस व्यवहार के प्राथमिक स्तर पर छोटे-छोटे कदम उठाए जाते हैं, और प्रत्येक सफल कदम के लिए पुरस्कार दिया जाता है।

<u>शेपिंग की मुख्य विशेषताएँ:</u>

1. **क्रमिक विकास:** शेपिंग में व्यवहार को क्रमिक रूप से विकसित किया जाता है। यह सरल, मौलिक व्यवहार से शुरू होता है और बाद में अधिक जटिल व्यवहार की ओर बढ़ता है।

2. **पुरस्कार का उपयोग:** छात्रों या जानवरों को सही व्यवहार के लिए पुरस्कार दिया जाता है, जो उन्हें और अधिक प्रयास करने और नए व्यवहार सीखने के लिए प्रोत्साहित करता है।
3. **प्रगति की निगरानी:** शेपिंग के दौरान, शिक्षक छात्रों की प्रगति की निगरानी करते हैं और आवश्यकता के अनुसार और दिशा-निर्देश प्रदान करते हैं।
4. **आदत निर्माण:** जब शेपिंग के माध्यम से नया व्यवहार प्राप्त किया जाता है, तो यह एक आदत बन जाता है, जो समय के साथ और अधिक विकसित और स्थिर होता है।

उदाहरण: मान लीजिए, एक बच्चे को चलना सिखाने के लिए शेपिंग का उपयोग किया जा रहा है। प्रारंभ में, यदि बच्चा अपने पैरों पर खड़ा होता है, तो उसकी प्रशंसा की जाती है। बाद में, जब बच्चा थोड़ा आगे बढ़ता है, तो उसे भी पुरस्कार दिया जाता है। इस प्रकार, शेपिंग के माध्यम से, बच्चा धीरे-धीरे चलने का पूरा व्यवहार प्राप्त कर सकता है।

यह एक प्रभावी विधि है, विशेष रूप से जब नई कौशल या व्यवहार सिखाने की आवश्यकता होती है।

11. Write any two importance of co-operative learning. 2018, 2020

Ans: सहयोगात्मक अधिगम के दो महत्वपूर्ण पहलू:

1. **समूहिक समस्या-समाधान क्षमता में वृद्धि:** सहयोगात्मक अधिगम से विद्यार्थियों की समूह में समस्याओं को हल करने की क्षमता में वृद्धि होती है। वे एक-दूसरे के साथ विचारों का आदान-प्रदान करते हैं और विभिन्न दृष्टिकोणों से समस्याओं को हल करना सीखते हैं, जो वास्तविक जीवन की स्थितियों में अत्यधिक प्रभावी है।
2. **समाजीकरण और टीमवर्क में सुधार:** यह अधिगम पद्धति विद्यार्थियों में सामाजिक कौशल और टीमवर्क को बढ़ावा देती है। वे एक साथ काम करना, एक-दूसरे के विचारों का सम्मान करना और सहयोगात्मक व्यवहार के माध्यम से निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में सक्रिय भाग लेना सीखते हैं।

12. Give an example of vertical transfer of learning. 2018

Ans: सीखने का ऊर्ध्वाधर संचरण (Vertical Transfer of Learning) का अर्थ है जब किसी विद्यार्थी या व्यक्ति द्वारा पहले से अर्जित ज्ञान या कौशल उच्चतर या अधिक जटिल ज्ञान या कौशल प्राप्त करने की नींव के रूप में कार्य करता है। अर्थात, पहले के स्तर की सीख या अनुभव नया और अधिक उन्नत स्तर की सीख को आसान बनाता है। इस मामले में, सीखने का क्रम बढ़ते स्तर पर होता है।

उदाहरण: यदि कोई छात्र प्रारंभिक स्तर पर गणित की मूल अवधारणाएँ जैसे जोड़ और घटाव सीखता है, तो वह ज्ञान उसे उन्नत स्तर पर समीकरण हल करने में मदद करेगा। यानी जोड़-घटाव की मूल अवधारणाएँ उसे बीजगणितीय समीकरण (algebraic equations) हल करने में दक्ष बनने में सहायता करेंगी।

13. What is brainstorming? 2018, 2021, 2023

Ans: ब्रेनस्टॉर्मिंग एक रचनात्मक समस्या-समाधान की तकनीक है जिसमें एक या अधिक व्यक्ति किसी विशेष विषय पर जितनी अधिक संभव हो, उतनी अधिक विचार या समाधान निकालने की कोशिश करते हैं। इस प्रक्रिया में, प्रतिभागी किसी भी प्रकार का विचार या विचारधारा व्यक्त कर सकते हैं बिना किसी आलोचना या निर्णय के। ब्रेनस्टॉर्मिंग का मुख्य उद्देश्य विभिन्न प्रकार के नवाचारी, मौलिक और प्रभावी समाधान खोजना है।

<u>ब्रेनस्टॉर्मिंग के मुख्य गुण:</u>

- **मुक्त विचारधारा:** प्रतिभागी कोई भी विचार व्यक्त कर सकते हैं, चाहे वह कितना भी अजीब क्यों न हो।
- **आलोचना की अनुपस्थिति:** प्रारंभिक चरण में किसी भी प्रकार की आलोचना या निर्णय नहीं किया जाता है, ताकि रचनात्मक विचार बाधित न हो।
- **सहयोग:** एक-दूसरे के विचारों से नए-नए विचार और समाधान उत्पन्न किए जाते हैं।
- **विचारों की मात्रा:** जितने संभव हो, उतने विचार उत्पन्न किए जाते हैं ताकि सबसे अच्छा समाधान खोजा जा सके।

14. What is personal motivation? 2018, 2021

Ans: व्यक्तिगत प्रेरणा (Personal Motivation) किसी व्यक्ति की आंतरिक शक्ति या इच्छाशक्ति है, जो उसे किसी विशेष लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है। यह एक मानसिक प्रक्रिया है जो व्यक्तियों को कार्य करने के लिए प्रेरित करती है और उस कार्य को पूरा करने के लिए आवश्यक ऊर्जा प्रदान करती है। व्यक्तिगत प्रेरणा विभिन्न स्रोतों से आ सकती है, जैसे अपनी आंतरिक इच्छाएँ, लक्ष्य प्राप्त करने की आकांक्षा, व्यक्तिगत विकास की आवश्यकता या सफलता की चाह।

<u>व्यक्तिगत प्रेरणा के गुण:</u>

1. **आंतरिक इच्छा:** यह व्यक्ति की अपनी इच्छाओं और आकांक्षाओं से उत्पन्न होती है, जो उन्हें अपने लक्ष्य प्राप्त करने के लिए काम करने के लिए प्रेरित करती है।
2. **सतत सुधार की प्रवृत्ति:** व्यक्तिगत प्रेरणा व्यक्तियों को लगातार अपनी क्षमताओं और ज्ञान को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करती है।
3. **लक्ष्य-उन्मुखता:** प्रेरणा व्यक्तियों को विशिष्ट लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करती है और उन्हें उन लक्ष्यों को प्राप्त करने में आगे बढ़ाती है।

15. What is over learning? 2019, 2021

Ans: अतिशिक्षण (Over Learning) एक शैक्षणिक प्रक्रिया है जिसमें एक छात्र किसी विषय या कौशल को पूरी तरह से सीखने के बाद भी उस विषय पर अतिरिक्त अभ्यास या प्रशिक्षण करता है। अतिशिक्षण

का मुख्य उद्देश्य सीखने की प्रक्रिया को और मजबूत करना और सीखी गई जानकारी या कौशल को दीर्घकालिक स्मृति में बदलना है।

<u>अतिशिक्षण के लाभ:</u>

1. **दीर्घकालिक स्मृति:** अतिशिक्षण सीखी गई विषयों को स्मृति में अधिक मजबूती से स्थापित करने में मदद करता है, जिससे परीक्षा के समय या आवश्यकता पड़ने पर जानकारी याद रखना आसान होता है।
2. **कौशल में वृद्धि:** किसी कौशल या गतिविधि पर अतिरिक्त अभ्यास, दक्षता को बढ़ाता है, जो वास्तविक जीवन में इसे प्रभावी रूप से लागू करने में मदद करता है।
3. **निर्णय लेने की क्षमता:** अतिशिक्षण छात्रों को तेजी से और प्रभावी रूप से निर्णय लेने में सक्षम बनाता है, क्योंकि वे विषय के प्रति अधिक आत्मविश्वासी हो जाते हैं।

उदाहरण: यदि एक छात्र गिटार बजाना सीखता है, और मौलिक रिफ़ या एकल बजाने के बाद, वह उन गीतों का बार-बार अभ्यास करता है, तो यह अतिशिक्षण होगा। इससे उसके गिटार बजाने की दक्षता और आत्मविश्वास बढ़ेगा।

16. What is SQ4R Model? 2019, 2022

Ans: SQ4R मॉडल (Survey, Question, Read, Recite, Review) एक प्रभावी पाठ्यपुस्तक अध्ययन पद्धति है, जो छात्रों को जानकारी एकत्रित करने और उसे याद रखने की क्षमताओं को बढ़ाने में मदद करती है। यह विशेष रूप से पाठ्यपुस्तक पढ़ने के समय उपयोग की जाती है और इसके माध्यम से छात्र जानकारी को और अधिक प्रभावी ढंग से समझने और संचित करने में सक्षम होते हैं।

<u>SQ4R के चरण:</u>

1. **Survey (पर्यवेक्षण):** अध्ययन करने वाले विषयवस्तु या अध्याय का सारांश देखें। विषयवस्तु के शीर्षक, उपशीर्षक, चित्र, तालिकाएँ और प्रारंभिक जानकारी पर ध्यान दें।
2. **Question (प्रश्न बनाना):** पढ़ते समय आप क्या सीखना चाहते हैं, यह निर्धारित करें। अध्याय की विषयवस्तु से संबंधित कुछ प्रश्न बनाएं, जो आपके अध्ययन को निर्देशित करेंगे।
3. **Read (पढ़ना):** जानकारी एकत्रित करने के लिए अध्याय को ध्यान से पढ़ें। पाठ को गहराई से समझने का प्रयास करें और प्रश्नों के उत्तर खोजें।
4. **Recite (मुँहजबानी):** पढ़ने के बाद आपने जो सीखा है, उसे अपनी शब्दों में व्यक्त करें। इससे आपकी समझ में मदद मिलेगी और जानकारी को याद रखने में आसानी होगी।
5. **Review (पुनरावलोकन):** अध्याय समाप्त करने के बाद पूरी विषयवस्तु का पुनरावलोकन करें। इससे दीर्घकालिक स्मृति में जानकारी स्थापित करने में मदद मिलेगी।

<u>SQ4R के लाभ:</u>

- यह छात्रों को विषयवस्तु को व्यवस्थित और रणनीतिक रूप से अध्ययन करने में मदद करता है।

- यह जानकारी को समझने और याद रखने के लिए एक प्रभावी पद्धति है।
- यह आत्मविश्वास बढ़ाता है क्योंकि छात्र अपनी सीखने की प्रगति देख सकते हैं।
- यह मॉडल विभिन्न प्रकार के छात्रों के लिए विशेष रूप से फायदेमंद है, क्योंकि यह उन्हें विषयवस्तु को सीखने और याद रखने में मदद करता है।

17. What do you mean by 'ZPD'? 2019, 2020, 2022, 2023

Ans: 'ZPD' या Zone of Proximal Development एक शैक्षणिक अवधारणा है, जिसे रूसी मनोवैज्ञानिक लेव विगोत्स्की द्वारा प्रस्तुत किया गया था। यह सीखने के संदर्भ में छात्र की संभावनाओं का एक क्षेत्र दर्शाता है, जहां वे अपने वर्तमान ज्ञान के स्तर से थोड़ा ऊपर उठने के लिए सहायता या मार्गदर्शन के माध्यम से सीख सकते हैं।

ZPD का मुख्य विचार:

1. **वर्तमान कौशल**: वह ज्ञान और कौशल, जो छात्र ने स्वयं अर्जित किया है, ZPD की निचली सीमा है।
2. **संभाव्यता (Potential)**: वह कौशल या ज्ञान, जिसे छात्र प्राप्त कर सकता है, लेकिन जिसे वे स्वतंत्र रूप से प्राप्त नहीं कर सकते, ZPD की ऊपरी सीमा है।
3. **सहायता**: शिक्षक या अनुभवी सहपाठी की मदद से छात्र अपनी ZPD के भीतर नए विचार और कौशल अर्जित कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, यदि एक छात्र गणित की मूल गुणा सीख चुका है (वर्तमान कौशल), तो यदि वह शिक्षक की मदद से समकालीन अंक के समस्याओं को हल करने का प्रयास करता है (ZPD की उच्चतर स्तर), तो वह इस नए कौशल को प्राप्त कर सकेगा।

18. What is called sequential learning? 2019

Ans: अनुक्रमिक अध्ययन (Sequential Learning) एक शैक्षणिक पद्धति है जहाँ जानकारी या कौशल को चरणबद्ध तरीके से, एक निश्चित क्रम में सिखाया जाता है। इस पद्धति में, प्रत्येक चरण पूर्व के ज्ञान या कौशल पर आधारित होता है, जिससे छात्रों के लिए नए विचारों को समझना और सीखना आसान हो जाता है।

अनुक्रमिक अध्ययन की विशेषताएँ:

1. **चरणबद्ध अध्ययन:** छात्र पहले मौलिक अवधारणाएँ या कौशल सीखते हैं और फिर अधिक जटिल विषयों की ओर बढ़ते हैं।
2. **सरल से जटिल की ओर:** इस पद्धति में आसान से कठिन विषयों की ओर धीरे-धीरे प्रगति की जाती है, जिससे छात्रों को नई जानकारी सीखना आसान हो जाता है।
3. **ज्ञान और कौशल का संबंध:** पूर्व में सीखे गए विषयों को नए विषयों के साथ जोड़ा जाता है, जिससे छात्रों की सीखने की प्रक्रिया को बढ़ावा मिलता है।

उदाहरण: उदाहरण के लिए, भाषा अध्ययन में, छात्रों को पहले मौलिक शब्दावली सिखाई जाती है, फिर वाक्य संरचना, और अंततः पूरे वाक्य और संवाद सिखाए जाते हैं। इस मामले में, प्रत्येक चरण पिछले चरण पर आधारित होता है।

19. Mention two conditions of classical conditioning. 2019, 2021

Ans: क्लासिकल कंडीशनिंग एक सीखने की प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्ति या जानवर एक विशेष उत्तेजक के साथ एक विशिष्ट प्रतिक्रिया सीखता है। इस प्रक्रिया के दो मुख्य शर्तें हैं:

1. **अशर्त उत्तेजक (Unconditioned Stimulus - US):** यह एक प्राकृतिक उत्तेजक है जो स्वाभाविक रूप से एक प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है। उदाहरण के लिए, भोजन एक अशर्त उत्तेजक है, जो किसी व्यक्ति या जानवर में भूख उत्पन्न करता है।
2. **शर्त उत्तेजक (Conditioned Stimulus - CS):** यह एक तटस्थ उत्तेजक है जिसे पहले अशर्त उत्तेजक के साथ जोड़ा जाता है और बाद में एक शर्त प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है। उदाहरण के लिए, यदि हर बार भोजन देने से पहले घंटी बजाई जाती है, तो घंटी बाद में भोजन के अभाव की प्रतिक्रिया (जैसे, लार आना) उत्पन्न करेगी।

जब इन दोनों शर्तों के बीच एक संबंध स्थापित हो जाता है, तो शर्त उत्तेजक (CS) एक शर्त प्रतिक्रिया (Conditioned Response - CR) उत्पन्न कर सकती है, जो पहले केवल अशर्त उत्तेजक (US) के साथ जुड़ी होती थी।

20. What is 'self-efficacy'? 2019, 2020, 2022

Ans: आत्मकुशलता (Self-efficacy) एक व्यक्ति की अपनी क्षमताओं और कौशलों में विश्वास है। यह एक मानसिक प्रक्रिया है जो यह दर्शाती है कि एक व्यक्ति कितनी आत्मविश्वास से विश्वास करता है कि वह किसी विशेष कार्य को पूरा करने में सक्षम है। आत्मकुशलता छात्रों, कर्मचारियों या किसी भी व्यक्ति के लिए अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उनके प्रदर्शन पर गहरा प्रभाव डालती है।

<u>आत्मकुशलता की कुछ विशेषताएँ हैं:</u>

1. **अपनी क्षमता में विश्वास:** यह व्यक्तियों को उनके कौशल और सफलता में विश्वास दिलाता है।
2. **चुनौतियों का सामना करने की इच्छा:** जब आत्मकुशलता उच्च होती है, तो व्यक्ति चुनौतियों का स्वागत करता है और उन्हें सामना करने की कोशिश करता है।
3. **भावनाओं का नियंत्रण:** आत्मकुशलता व्यक्ति के मानसिक तनाव और चिंता को कम करने में मदद करती है, क्योंकि उन्हें अपने ऊपर विश्वास होता है।
4. **सुधार और सीखने की इच्छा:** आत्मकुशलता व्यक्तियों को सुधार की ओर प्रेरित करती है और नए कुछ सीखने के लिए उत्साही बनाती है।

आत्मकुशलता सामान्यतः शैक्षणिक वातावरण में महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि यह छात्रों की प्रेरणा और शैक्षणिक परिणामों को सुधारने में सहायक होती है।

21. State two principles of enrichment programme. 2019

Ans: <u>समृद्धिकरण कार्यक्रम के दो मुख्य सिद्धांत हैं:</u>

1. **विविधता और गहराई:** समृद्धिकरण कार्यक्रम का पहला सिद्धांत यह है कि छात्रों के लिए विषयवस्तु और अनुभवों में विविधता और गहराई प्रदान की जाए। यह विभिन्न शैक्षणिक शैलियों और रुचियों पर ध्यान केंद्रित करता है, जिससे उन्हें अपनी पसंद के तरीके से सीखने का अवसर मिलता है।
2. **स्वायत्तता और रचनात्मकता:** दूसरा सिद्धांत यह है कि छात्रों की स्वायत्तता और रचनात्मकता को प्रोत्साहित किया जाए। छात्रों को अपने स्वयं के रुचियों के आधार पर परियोजनाएँ या कार्य चुनने का अवसर दिया जाता है, जो उनके रचनात्मक सोच और समस्या समाधान कौशल को विकसित करता है।

ये समृद्धिकरण कार्यक्रम के प्रभावी सिद्धांतों का हिस्सा हैं और छात्रों के अध्ययन के अनुभव को बढ़ाने में मदद करते हैं।

22. What is achievement motivation? 2023

Ans: सफलता की प्रेरणा (Achievement Motivation) एक मानसिक प्रक्रिया है, जो किसी व्यक्ति को लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रेरित करती है। यह एक आंतरिक प्रेरणा है, जो सफलता प्राप्त करने की इच्छा और उस लक्ष्य की दिशा में काम करने के लिए उत्साह देती है। सफलता की प्रेरणा व्यक्ति को अपनी क्षमताओं को बढ़ाने, चुनौतियों को स्वीकार करने और समस्या समाधान में रुचि रखने के लिए प्रेरित करती है।

<u>सफलता की प्रेरणा के कुछ विशेषताएँ हैं:</u>

1. **लक्ष्य निर्धारण:** सफलता की प्रेरणा आमतौर पर स्पष्ट और चुनौतीपूर्ण लक्ष्यों की स्थापना में मदद करती है।
2. **चुनौतियों को स्वीकार करना:** ऐसे व्यक्ति आमतौर पर कठिन कार्यों का सामना करना पसंद करते हैं और सफलता प्राप्त करने के लिए प्रयास करते हैं।
3. **सफलता और असफलता के प्रति दृष्टिकोण:** इस प्रेरणा के धारक व्यक्ति अपनी सफलताओं और असफलताओं को सीखने के अवसर के रूप में स्वीकार करते हैं।
4. **आत्म-विश्वास:** सफलता की प्रेरणा आत्म-विश्वास बढ़ाने में सहायक होती है, क्योंकि यह व्यक्तियों को उनकी क्षमताओं और कौशल के प्रति जागरूक करती है।

सफलता की प्रेरणा सामान्यत: शैक्षिक वातावरण, कार्यस्थल, और व्यक्तिगत जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि यह व्यक्तियों को उनके लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए और अधिक प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

23. What is collaborative learning? 2023

Ans: सहयोगी शिक्षण एक शैक्षिक विधि है, जिसमें छात्र एक साथ टीमों में काम करते हैं ताकि नई जानकारी सीख सकें और समस्याओं को हल करने में मदद कर सकें। इस दृष्टिकोण में, छात्र एक-दूसरे के साथ सहयोग करते हैं, अपने विचार साझा करते हैं, और एक सामान्य लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मिलकर काम करते हैं।

<u>सहयोगी शिक्षण की मुख्य विशेषताएँ:</u>

- **टीमवर्क:** छात्र छोटे समूहों में काम करते हैं जहाँ प्रत्येक सदस्य की विभिन्न कौशल और ताकत होती हैं।
- **संवाद और चर्चा:** छात्र विभिन्न विचारों और विचारों पर चर्चा करते हैं, जो उनके सीखने की प्रक्रिया को समृद्ध करता है।
- **नेतृत्व और जिम्मेदारी:** समूह के सदस्य एक-दूसरे का समर्थन करते हैं और विभिन्न जिम्मेदारियाँ लेते हैं, जो उनके नेतृत्व कौशल को बढ़ाते हैं।
- **जानकारी का सरल आदान-प्रदान:** छात्र एक-दूसरे से सीखते हैं और अपनी जानकारी साझा करते हैं, जो उनके सामूहिक ज्ञान को बढ़ाता है।

सहयोगी शिक्षण एक प्रभावी शैक्षिक विधि है, जो छात्रों की सीखने और सामाजिक कौशल दोनों क्षेत्रों में सुधार करने में मदद करती है।

24. Write the needs for enrichment programme in school. 2023

Ans: विद्यालय समृद्धिकरण कार्यक्रम (Enrichment Programme) एक शैक्षिक प्रक्रिया है, जो छात्रों के ज्ञान और कौशल का विस्तार करने के लिए डिज़ाइन की गई है। यह सामान्य पाठ्यक्रम के बाहर अतिरिक्त शिक्षा और अनुभव प्रदान करता है, ताकि छात्र अपनी प्रतिभा और रुचियों के अनुसार नए विषय सीख सकें और अपने कौशल के विकास में सहायता प्राप्त कर सकें। यह कार्यक्रम सामान्यतः विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से संचालित किया जाता है, जैसे शिविर, प्रतियोगिताएँ, शोध परियोजनाएँ, कला और सांस्कृतिक गतिविधियाँ।

<u>विद्यालय समृद्धिकरण कार्यक्रम की आवश्यकता:</u>

1. **छात्रों की रुचि बढ़ाना**: समृद्धिकरण कार्यक्रम छात्रों में नए विषयों और कौशल के प्रति रुचि उत्पन्न करता है, जो उनके सीखने के प्रति उत्साह बढ़ाता है।
2. **रचनात्मकता और समस्या समाधान क्षमता का विकास**: यह कार्यक्रम छात्रों की रचनात्मक सोच और समस्या समाधान की क्षमता को बढ़ाने में सहायक है, क्योंकि वे विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से नए विचारों को लागू करते हैं।
3. **व्यक्तिगत और सामाजिक कौशल का विकास**: समृद्धिकरण गतिविधियाँ छात्रों के सहयोग, नेतृत्व और संचार कौशल को सुधारती हैं, जो उनके सामाजिक जीवन के लिए महत्वपूर्ण हैं।

4. **विशेष रुचियों और प्रतिभाओं का विकास**: छात्रों में विशेष प्रतिभाओं और रुचियों की पहचान करने और उनके विकास में मदद करने के लिए समृद्धिकरण कार्यक्रम अत्यधिक प्रभावी है।
5. **विविध शैक्षिक अनुभव**: यह छात्रों के लिए विभिन्न प्रकार के शैक्षिक अनुभव प्रदान करता है, जो उनके विकास के लिए एक समन्वित दृष्टिकोण बनाता है।
6. **शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार**: समृद्धिकरण कार्यक्रम शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार में सहायक है, क्योंकि यह छात्रों को व्यापक रूप से जानने और अनुसंधान में प्रोत्साहित करता है।
7. **नए कौशल अर्जित करना**: छात्र विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से नए कौशल सीखने और अपने आप को सुधारने का अवसर प्राप्त करते हैं।

इन सभी कारणों से विद्यालय में समृद्धिकरण कार्यक्रम महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह छात्रों के लिए एक समृद्ध और विकासशील शैक्षिक वातावरण तैयार करता है।

25. State two strategies for effective memorization. 2023

Ans: कार्यकारी स्मरण प्रक्रिया (Effective Memorization) के लिए दो तकनीकें हैं:

1. **संयुक्ति तकनीक (Mnemonic Devices)**: संयुक्ति तकनीक एक स्मरण तकनीक है, जो जानकारी को आसानी से याद रखने के लिए विभिन्न अक्षरों, शब्दों, या चित्रों के संयोजन का उपयोग करती है। इस पद्धति में, आप नई जानकारी को अपनी पूर्ववर्ती जानकारी या अनुभव के साथ जोड़ते हैं, जिससे स्मरण प्रक्रिया सरल होती है। उदाहरण के लिए, एक वाक्य या एक शब्द बनाना जो कुछ जानकारी के पहले अक्षरों से मिलकर बना हो। जैसे, "NASA" शब्द "National Aeronautics and Space Administration" का संक्षिप्त रूप है।
2. **दोहराव तकनीक (Repetition Technique)**: दोहराव तकनीक एक प्रभावी विधि है, जिसमें आप जानकारी को बार-बार पढ़ने या लिखने का प्रयास करते हैं। यह तकनीक जानकारी को दीर्घकालिक स्मृति में संरक्षित करने में मदद करती है। उदाहरण के लिए, किसी शब्द या पंक्ति को कई बार उच्चारण करना या लिखना, ताकि वह आपके मन में स्थायी रूप से बसी रहे। इस पद्धति का उपयोग करने से, आप चरण-दर-चरण जानकारी को याद रख सकेंगे, जो परीक्षा के समय सहायक होती है।

ये तकनीकें कार्यकारी स्मरण प्रक्रिया को विकसित करने में मदद करती हैं और छात्रों के लिए उनकी सीखने की प्रक्रिया को सरल बनाती हैं।

26. Write the principles of operant conditioning theory? 2023

Ans: ऑपेरेंट कंडीशनिंग सिद्धांत के कुछ प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित हैं:

1. **पुरस्कार और दंड (Reinforcement and Punishment)**:

- पुरस्कार (Reinforcement): जब किसी व्यवहार के बाद सकारात्मक परिणाम प्राप्त होता है, तो वह व्यवहार फिर से होने की संभावना को बढ़ाता है। इसे सकारात्मक पुरस्कार कहा जाता है। नकारात्मक पुरस्कार (Negative reinforcement) का मतलब है कि कोई नकारात्मक स्थिति समाप्त हो जाती है, जिससे व्यवहार को बढ़ावा मिलता है।

- दंड (Punishment): किसी व्यवहार के बाद नकारात्मक परिणाम प्राप्त होने से उस व्यवहार की पुनरावृत्ति की संभावना कम हो जाती है। दंड दो प्रकार के होते हैं: सकारात्मक दंड (Positive punishment) और नकारात्मक दंड (Negative punishment) ।

2. **वास्तविकता की धारणा (Perception of Reality)**: व्यक्ति अपनी धारणा के अनुसार पुरस्कार और दंड को समझता है। विभिन्न लोग समान पुरस्कार या दंड को अलग-अलग तरीके से महसूस कर सकते हैं।
3. **व्यवहार का अनुसरण (Behavioral Shaping)**: व्यवहार को धीरे-धीरे और छोटे-छोटे कदमों से विकसित किया जा सकता है। शुरू में छोटे लक्ष्यों के लिए पुरस्कार दिए जाते हैं, और जैसे-जैसे व्यक्ति अपने व्यवहार में सुधार करता है, पुरस्कार को बढ़ाया जा सकता है।
4. **नियमितता (Consistency)**: पुरस्कार और दंड की प्रक्रिया में नियमितता होनी चाहिए। यदि पुरस्कार या दंड को कभी-कभी लागू किया जाता है, तो इसका प्रभाव कम हो सकता है।
5. **अवधि (Timing)**: पुरस्कार या दंड तुरंत प्रदान करना अधिक प्रभावी होता है। जब पुरस्कार या दंड का समय सही होता है, तो यह व्यक्ति के व्यवहार पर अधिक प्रभाव डालता है।
6. **अवसर (Opportunity)**: व्यक्ति को व्यवहार करने का अवसर मिलना चाहिए। यदि व्यक्ति के पास व्यवहार करने का मौका नहीं है, तो ऑपेरेंट कंडीशनिंग प्रक्रिया प्रभावित होती है।

ये सिद्धांत ऑपेरेंट कंडीशनिंग के अध्ययन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और यह समझने में मदद करते हैं कि कैसे व्यवहार को प्रोत्साहित या नकारात्मक रूप से प्रभावित किया जा सकता है।

Marks: 5

1. Discuss briefly the educational implication of Thorndike's major lows of learning. 2017, 2022

Ans:

<u>भूमिका:</u> थॉर्नडाइक ने शिक्षण प्रक्रिया के आधार पर तीन महत्वपूर्ण नियम प्रस्तुत किए हैं, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र को एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया। उनके नियमों में छात्रों की सीखने की मानसिकता, आदतें और अनुभवों पर ध्यान दिया गया है। तैयारी का नियम, अभ्यास का नियम, और प्रभाव का नियम - ये तीनों छात्रों की सीखने की प्रभावशीलता और शिक्षकों के शिक्षण के तरीकों को सुधारने में सहायक हैं। शिक्षा के क्षेत्र में ये नियम शिक्षण को और अधिक फलदायक और गतिशील बनाते हैं।

<u>थॉर्नडाइक के प्रमुख शिक्षण के नियम:</u> थॉर्नडाइक के शिक्षण के नियम शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने मुख्य रूप से तीन मुख्य नियम प्रस्तुत किए: तैयारी का नियम, अभ्यास का नियम, और प्रभाव का नियम। यहाँ प्रत्येक नियम का संक्षिप्त में शिक्षण में महत्व बताया गया है:

1. **तैयारी का नियम:** यह नियम कहता है कि जब कोई छात्र मानसिक और शारीरिक रूप से सीखने के लिए तैयार होता है, तो शिक्षण प्रक्रिया और अधिक प्रभावी हो जाती है। तैयारी शिक्षण प्रक्रिया में महत्वपूर्ण है क्योंकि यह छात्र को सीखने के लिए मानसिक रूप से उत्साहित करता है।

शैक्षिक प्रभाव: छात्रों की रुचि और आवश्यकताओं के अनुसार पाठ्यक्रम तैयार करना आवश्यक है। यदि छात्र सीखने के लिए तैयार होते हैं, तो वे नई अवधारणाओं को अधिक आसानी से और जल्दी से आत्मसात कर सकते हैं।

2. **अभ्यास का नियम:** यह नियम बताता है कि पुनरावृत्ति से सीखना और अधिक स्थायी हो जाता है। जितनी बार किसी कार्य या विषय को दोहराया जाता है, उतना ही वह मस्तिष्क में गहराई से स्थापित हो जाता है।

शैक्षिक प्रभाव: शिक्षकों को चाहिए कि वे छात्रों को विषय की पुनरावृत्ति का अवसर दें। यह प्रभावी शिक्षण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि बार-बार अभ्यास से छात्र आत्मविश्वास और कौशल में निपुण होते हैं।

3. **प्रभाव का नियम:** यह नियम कहता है कि संतोषजनक परिणाम शिक्षण प्रक्रिया को प्रोत्साहित करते हैं, और नकारात्मक परिणाम इसे हतोत्साहित करते हैं। जब छात्र सीखने के बाद संतोष महसूस करते हैं, तो सीखने का अनुभव और भी दृढ़ हो जाता है।

शैक्षिक प्रभाव: शिक्षकों को छात्रों को सकारात्मक प्रतिक्रिया देनी चाहिए और उनकी उपलब्धियों की सराहना करनी चाहिए। इसके माध्यम से छात्र सीखने के लिए और अधिक प्रेरित होते हैं और भविष्य में बेहतर परिणाम प्राप्त कर सकते हैं।

थॉर्नडाइक के ये तीन मूल नियम शिक्षण प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि शिक्षण के दौरान शिक्षकों द्वारा इन नियमों का पालन किया जाए, तो सीखना और भी प्रभावी और आनंददायक हो सकता है।

2. Write down The Principles of the 'self-concept theory' of Carl Rogers. 2017, 2020

Ans: कार्ल रॉजर्स का आत्मबोध सिद्धांत व्यक्ति के आत्मसम्मान और व्यक्तित्व विकास पर आधारित है। यह सिद्धांत मुख्य रूप से व्यक्ति के व्यक्तिगत अनुभवों और स्वयं को समझने की क्षमता पर केंद्रित होता है, जिससे आत्मविकास में मदद मिलती है। इसके मुख्य सिद्धांत निम्नलिखित हैं:

1. **आत्म-धारणा (Self-Concept):** आत्म-धारणा व्यक्ति का खुद के प्रति दृष्टिकोण या समझ है, जो उनके व्यक्तित्व और व्यवहार को प्रभावित करता है। यह तय करता है कि व्यक्ति खुद को कैसे देखता है और अपनी शक्तियों, कमजोरियों और मानसिकता के साथ कैसे संबंध बनाता है।
2. **आदर्श आत्म (Ideal Self):** आदर्श आत्म वह है जिसमें व्यक्ति खुद को जिस रूप में देखना चाहता है या बनना चाहता है। यह व्यक्ति के सपनों, आकांक्षाओं और लक्ष्यों से संबंधित होता है। यदि आदर्श आत्म और वास्तविक आत्म में तालमेल होता है, तो व्यक्ति मानसिक शांति का अनुभव करता है; अन्यथा, संघर्ष उत्पन्न होता है।
3. **आत्म-सम्मान (Self-Esteem):** आत्म-सम्मान वह मूल्य और सम्मान है जो व्यक्ति खुद के प्रति महसूस करता है। उच्च आत्म-सम्मान आमतौर पर आत्मविश्वास बढ़ाता है, जबकि निम्न आत्म-सम्मान व्यक्ति के व्यवहार पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

4. **आत्म-स्वीकृति और आत्म-स्वीकार्यता (Self-Recognition and Acceptance):** रॉजर्स के अनुसार, आत्म-विकास के लिए व्यक्ति को खुद को पूरी तरह से स्वीकार करना आवश्यक है। इसमें व्यक्ति को अपनी कमियों, कमजोरियों और सीमाओं को स्वीकार करना होता है और खुद से प्रेम करना सीखना होता है।
5. **आत्म-सामंजस्य (Self-Consistency):** जब व्यक्ति अपनी आत्म-धारणा और अनुभवों के बीच तालमेल या संगति पाता है, तो वह आत्म-सामंजस्य प्राप्त करता है। आत्म-धारणा और वास्तविक अनुभवों के बीच अंतर होने पर व्यक्ति मानसिक संघर्ष का अनुभव कर सकता है।
6. **आत्म-प्राप्ति (Self-Actualization):** आत्म-प्राप्ति आत्म-जागरूकता का उच्चतम स्तर है, जहां व्यक्ति अपनी पूरी क्षमताओं और संभावनाओं को समझने और महसूस करने में सक्षम होता है। रॉजर्स के अनुसार, खुद को पूरी तरह से समझना और विकसित करना व्यक्तित्व विकास की अंतिम अवस्था है।

कार्ल रॉजर्स के आत्मबोध सिद्धांत के ये सिद्धांत व्यक्ति के विकास और मानसिक स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

3. Write down the factors which influence memorization. 2017, 2022

Ans: स्मृति को बेहतर बनाने के लिए विभिन्न तत्व प्रभाव डालते हैं, जो सीखने और याद रखने की प्रक्रिया को आसान बनाते हैं। नीचे स्मृति के सहायक कुछ प्रमुख तत्व दिए गए हैं:

1. **ध्यान (Attention):** किसी जानकारी को याद रखने का पहला कदम है ध्यान देना। किसी भी विषय को ध्यान से सुनने या देखने पर यह मस्तिष्क में अच्छी तरह से अंकित हो जाता है और उसे याद रखना आसान हो जाता है।
2. **पुनरावृत्ति (Repetition):** किसी विषय या जानकारी को बार-बार दोहराने से यह स्मृति में गहराई से बसी रहती है। नियमित अभ्यास जानकारी को लंबे समय तक याद रखने में मदद करता है।
3. **संयोजन (Organization):** जानकारी को ठीक से वर्गीकृत करना या क्रम में रखना इसे स्मृति में संग्रहीत करना आसान बनाता है। विषयों को विभाजित करके पढ़ना अधिक प्रभावी बनाता है।
4. **आंतरिक प्रेरणा (Intrinsic Motivation):** व्यक्ति की सीखने के प्रति स्वाभाविक रुचि और उत्साह स्मृति की प्रक्रिया को गति देता है। व्यक्तिगत रुचि के विषय आसानी से और लंबे समय तक स्मृति में बने रहते हैं।
5. **विश्लेषण और समझ (Analysis and Understanding):** केवल रटने की बजाय जानकारी को समझने से यह मस्तिष्क में लंबे समय तक बनी रहती है। विषय की अर्थ और अवधारणा को समझने से मस्तिष्क में संबंध बनते हैं और इसे याद रखना आसान हो जाता है।
6. **परिस्थितिजन्य कारक (Contextual Factors):** सीखने का माहौल जैसे प्रकाश, शोर, स्थान, और समय स्मृति को प्रभावित करते हैं। शांत और ध्यान केन्द्रित करने वाला वातावरण स्मृति को बढ़ाने में सहायक होता है।

7. **दृश्य चित्र और उदाहरण (Visual Imagery and Examples):** व षय सामग्री को चित्र या उदाहरणों के साथ जोड़ने से यह मस्तिष्क में स्थायी रूप से अंकित होती है। उदाहरण और चित्रात्मक प्रस्तुतिकरण विषय को और अधिक आसानी से याद रखने में सहायक होते हैं।
8. **मानसिक और शारीरिक स्थिति (Mental and Physical Condition):** शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य जैसे नींद, आहार, और तनाव स्मृति पर बड़ा प्रभाव डालते हैं। स्वस्थ रहने से मस्तिष्क अच्छे से कार्य करता है और जानकारी को पकड़ने में सक्षम होता है।
9. **भावनात्मक प्रभाव (Emotional Influence):** भावनाओं से जुड़ी स्मृतियाँ सामान्यतः लंबे समय तक बनी रहती हैं। उदाहरण के लिए, कोई भावनात्मक घटना आसानी से मस्तिष्क में बनी रहती है।

ये तत्व याद रखने की प्रक्रिया को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनके माध्यम से स्मृति को मजबूत और प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा सकता है।

4. Write a note on 'Cognitive Constructivism'. 2017, 2020

Ans: निर्मितिवाद एक शैक्षिक सिद्धांत है, जो कहता है कि छात्र अपने अनुभवों के माध्यम से ज्ञान का निर्माण करते हैं। इस सिद्धांत का मुख्य आधार यह है कि ज्ञान स्थानांतरित नहीं होता, बल्कि इसे निर्मित किया जाता है। छात्र विभिन्न परिस्थितियों में अपने अनुभव, अवलोकन और चर्चा के माध्यम से नए विचारों का निर्माण करते हैं।

मुख्य घटक:

1. **अनुभव का महत्व:** छात्रों के अनुभव उनके सीखने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नए विचारों के निर्माण के लिए प्रासंगिक अनुभव का होना आवश्यक है।
2. **सक्रिय सीखने की प्रक्रिया:** छात्र सक्रिय प्रक्रिया के माध्यम से ज्ञान अर्जित करते हैं। वे चर्चा, प्रश्न, अनुसंधान और समस्या समाधान के माध्यम से सीखते हैं।
3. **जवाबदेही:** छात्र अपने सीखने के लिए जिम्मेदार होते हैं। उनके सीखने के माहौल में खुलेपन और सहयोग का होना आवश्यक है।
4. **सामाजिक संबंध:** ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया आमतौर पर सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में होती है। सहपाठियों और शिक्षकों के बीच समन्वय और सहयोग सीखने की प्रक्रिया को और बेहतर बनाता है।

शिक्षा में अनुप्रयोग: निर्मितिवाद शिक्षकों को छात्रों में सोचने-समझने और समस्या समाधान की क्षमता को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करता है। शिक्षक आमतौर पर गाइड या सुविधाकर्ता की भूमिका में होते हैं, जहां वे छात्रों को प्रश्न पूछने और चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

निर्मितिवाद शिक्षा का एक सशक्त दृष्टिकोण है, जो छात्रों की ज्ञान निर्माण प्रक्रिया में उनकी सक्रिय भागीदारी पर जोर देता है। यह शिक्षा को एक गतिशील और समावेशी अनुभव के रूप में बनाता है, जहां छात्र अपने और अपने पर्यावरण से जुड़ते हैं।

5. Mention the different strategies of remedial teaching. 2017, 2021, 2023

Ans: <u>सुधारात्मक शिक्षण मुख्यतः</u> विभिन्न तरीकों और रणनीतियों का उपयोग करता है ताकि छात्रों की शैक्षिक कमजोरियों को दूर करने में सहायता मिल सके। नीचे दी गई कुछ प्रभावी रणनीतियाँ किसी भी शैक्षिक समस्या या कमजोरी को दूर करने के लिए अपनाई जाती हैं:

1. **व्यक्तिगत शिक्षण योजना:** प्रत्येक छात्र की सीखने की क्षमता, कमजोरी, और आवश्यकता के अनुसार एक विशेष योजना बनाई जाती है। इससे छात्रों को अपनी गति और शैली में सीखने का अवसर मिलता है।
2. **दोहराव और अभ्यास:** समझ और स्मृति को बढ़ाने के लिए बार-बार दोहराव किया जाता है। इस रणनीति से छात्र थोड़े समय में अपनी क्षमता को बढ़ा सकते हैं।
3. **दृश्य साधन:** फ्लैशकार्ड, चार्ट और वीडियो जैसे दृश्य साधनों का उपयोग करके अवधारणाओं को समझाना आसान बनाया जाता है। दृश्य साधन छात्रों के मन में विषय की स्पष्ट छवि प्रस्तुत करते हैं।
4. **क्रमबद्ध शिक्षण:** सामग्री को छोटे-छोटे चरणों में बाँटकर समझाया जाता है। यह जटिल विषयों को आसानी से समझने के लिए प्रभावी है।
5. **प्रतिक्रिया और समीक्षा:** छात्रों की प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए नियमित रूप से प्रतिक्रिया दी जाती है। प्रतिक्रिया के माध्यम से वे अपनी गलतियों को सुधार सकते हैं और विषय के बारे में अधिक स्पष्टता प्राप्त कर सकते हैं।
6. **समूह शिक्षण:** छात्रों को छोटे समूहों में बाँटकर सहयोगात्मक रूप से सिखाया जाता है। इस पद्धति से वे आपस में जानकारी साझा करते हैं और सहयोगी वातावरण में सीखते हैं।
7. **पठन और संरचनात्मक अभ्यास:** पढ़ने और समझने की क्षमता को बढ़ाने के लिए विभिन्न पठन तकनीकों और संरचित अभ्यासों का प्रयोग किया जाता है।
8. **ट्यूटोरिंग:** कमजोर छात्रों के लिए व्यक्तिगत या छोटे समूह आधारित ट्यूटोरिंग सत्र आयोजित किए जाते हैं, जिसमें उनकी समस्याओं की पहचान कर उन्हें दूर करने पर विशेष ध्यान दिया जाता है।
9. **पुनःमूल्यांकन:** छात्रों की प्रगति और कमजोरियों की पहचान के लिए नियमित पुनःमूल्यांकन किया जाता है, जिससे प्रत्येक छात्र के सीखने के स्तर का अंदाजा मिलता है।
10. **नियंत्रित गति:** छात्रों की सीखने की गति के अनुसार शिक्षण की गति निर्धारित की जाती है, ताकि वे किसी दबाव को महसूस न करें।

इन रणनीतियों को प्रभावी रूप से लागू करने से छात्रों की सीखने की प्रक्रिया सरल हो जाती है और वे अपनी कमजोरियों को दूर करने में सक्षम होते हैं।

6. Discuss in brief Bruner's theory of Discovery learning. 2018, 2021, 2023

Ans: जेरोम ब्रूनर का खोजपरक अधिगम सिद्धांत छात्रों की सक्रिय भागीदारी के माध्यम से शिक्षा प्राप्ति पर जोर देता है। इस सिद्धांत के अनुसार, जब छात्र खुद अवधारणाओं, सिद्धांतों या समाधानों को खोजने के लिए काम करते हैं, तो वे अधिगम प्रक्रिया में गहराई से शामिल होते हैं और उनकी समझ अधिक

स्थायी होती है। ब्रूनर का मानना है कि छात्रों को केवल जानकारी देना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन्हें स्वयं सोचने और अन्वेषण करने का अवसर देना चाहिए।

ब्रूनर के सिद्धांत के मुख्य तत्व हैं:

1. **संरचनात्मक दृष्टिकोण**: छात्रों की संज्ञानात्मक संरचनाओं के विकास पर जोर देना और उन्हें ज्ञान का प्रभावी ढंग से उपयोग करने का अवसर प्रदान करना।
2. **सक्रिय भागीदारी**: छात्रों को समस्याओं के समाधान के लिए सक्रिय रूप से सोचने और खोजने के लिए प्रोत्साहित करना।
3. **पूर्वज्ञान का विकास**: छात्रों द्वारा पहले सीखी गई बातों के आधार पर नए ज्ञान का निर्माण करना।
4. **अन्वेषण-आधारित अधिगम**: छात्रों की जिज्ञासा और खोजी प्रवृत्ति का विकास करना, बिना किसी विशेष उत्तर या समाधान की ओर निर्देशित किए।

इस सिद्धांत के अनुसार, ब्रूनर का खोजपरक अधिगम सिद्धांत छात्रों में रचनात्मकता और विश्लेषणात्मक सोच को बढ़ावा देता है। यह शिक्षा का एक प्रभावी तरीका है, जो छात्रों के अधिगम को वास्तविक जीवन के अनुभवों से जोड़ता है, जिससे उनकी सीखने में रुचि और प्रेरणा बढ़ती है।

7. Discuss in brief the principle of 'Operant Conditioning'. 2018, 2021

Ans: विद्यालय में सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों का उद्देश्य छात्रों के समग्र विकास में सहायता करना है। इन गतिविधियों के माध्यम से छात्र कक्षा के बाहर विभिन्न गतिविधियों में भाग लेते हैं और महत्वपूर्ण कौशल प्राप्त करते हैं।

सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के मुख्य उद्देश्य हैं:

1. **मानसिक विकास**: सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में भाग लेने से छात्रों की मानसिक शक्ति बढ़ती है और उन्हें रचनात्मक सोचने के अवसर मिलते हैं।
2. **शारीरिक विकास**: खेलकूद और शारीरिक गतिविधियाँ छात्रों के स्वास्थ्य में सुधार करती हैं और शारीरिक क्षमता को बढ़ाती हैं।
3. **सामाजिक कौशल विकास**: नाटक, बहस और खेल जैसी समूह गतिविधियाँ छात्रों को सहयोग, नेतृत्व, और टीमवर्क कौशल विकसित करने में सहायता करती हैं।
4. **नैतिक और नैतिकता का विकास**: सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ छात्रों को ईमानदारी, अनुशासन, जिम्मेदारी और दृढ़ता जैसे मूल्यों को सिखाती हैं।
5. **आत्मविश्वास में वृद्धि**: विभिन्न गतिविधियों में भाग लेकर छात्र अपना आत्मविश्वास बढ़ा सकते हैं, जो उनके व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में सहायक होता है।
6. **खोज और रुचि का विकास**: छात्र नए विषयों में रुचि विकसित कर सकते हैं और उनकी रचनात्मकता, जिज्ञासा, और समस्या समाधान कौशल बढ़ती है।
7. **नेतृत्व गुणों का विकास**: सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के माध्यम से छात्र नेतृत्व गुण विकसित कर सकते हैं और टीम प्रबंधन का अनुभव प्राप्त कर सकते हैं।

सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ छात्रों के मानसिक, शारीरिक, सामाजिक और नैतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये आत्मविश्वास बढ़ाती हैं, टीमवर्क कौशल को विकसित करने में सहायक होती हैं, और रचनात्मक सोच को बढ़ावा देती हैं। छात्रों के समग्र सुधार के लिए इन गतिविधियों का महत्व अत्यधिक है।

8. Discuss briefly the causes of forgetting. 2018, 2020, 2022

Ans: भूलना का तात्पर्य पिछले सीखे गए या अनुभव किए गए जानकारी को बनाए रखने में असमर्थता से है। यह एक प्रक्रिया है जिसमें मस्तिष्क पहले से संग्रहीत जानकारी को भूल जाता है या उसे पुनः प्राप्त करने में असफल रहता है। यह सीखने और स्मृति की प्रक्रियाओं में एक सामान्य घटना है।

भूलने के मुख्य कारण हैं:

1. **सड़न का सिद्धांत (Decay Theory)**: समय के साथ, यादें कमजोर होती हैं और धीरे-धीरे फीकी पड़ जाती हैं। जब लंबे समय तक इसका उपयोग नहीं किया जाता है, तो स्मृति में यह कमी आती है।
2. **हस्तक्षेप का सिद्धांत (Interference Theory)**: पहले से सीखी गई या बाद में सीखी गई जानकारी के कारण नए जानकारी को याद करने में कठिनाई होती है। यह दो तरीकों से होता है: *प्रोक्टिव हस्तक्षेप*, जहाँ पुरानी जानकारी नई जानकारी को याद करने में बाधा डालती है, और *रेट्रोएक्टिव हस्तक्षेप*, जहाँ नई जानकारी पुरानी जानकारी को भूलने का कारण बनती है।
3. **प्रेरणा और रुचि की कमी (Lack of Motivation and Interest)**: जो विषय या जानकारी कम रुचिकर होती है, वह आसानी से याद नहीं रहती, जिससे स्मृति में कमी आती है।
4. **शारीरिक और मानसिक स्थिति**: शारीरिक बीमारी या मानसिक तनाव स्मृति की क्षमता को कमजोर कर सकता है। चिंता, अवसाद और मानसिक थकान भी भूलने का कारण बन सकती है।
5. **नाजुक स्मृति निर्माण (Poor Encoding)**: यदि किसी जानकारी को पहली बार सही तरीके से याद नहीं किया गया है या सीखने के समय उचित ध्यान नहीं दिया गया है, तो वह जानकारी आसानी से भूल सकती है।

भूलना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है जो समय, हस्तक्षेप, प्रेरणा की कमी, शारीरिक और मानसिक स्थितियों, और नाजुक स्मृति निर्माण के कारण होती है। स्मृति सुधारने के लिए ध्यान, रुचि और आवश्यक रणनीतियों का उपयोग करना महत्वपूर्ण है। सही तरीकों का पालन करके, हम अपनी स्मृति क्षमताओं को मजबूत कर सकते हैं।

9. Discuss in brief the determinants of mental health. 2018, 2020

Ans: मानसिक स्वास्थ्य से तात्पर्य है किसी व्यक्ति की मानसिक, भावनात्मक, और सामाजिक भलाई। यह हमारे विचारों, भावनाओं और व्यवहारों को प्रभावित करता है। मानसिक स्वास्थ्य केवल मानसिक रोगों की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि यह एक स्वस्थ और संतोषजनक जीवन के लिए आवश्यक शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य का एक हिस्सा है।

मानसिक स्वास्थ्य के निर्धारक:

1. **आनुवंशिकी और वंशानुक्रम:** किसी व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य पर आनुवंशिक विशेषताओं और जीनों का प्रभाव हो सकता है। कुछ मानसिक रोग परिवारों में प्रचलित हो सकते हैं।
2. **परिवार और सामाजिक परिवेश:** परिवार की संरचना, सामाजिक संबंध, समर्थन प्रणाली, और संवाद के आदान-प्रदान का मानसिक स्वास्थ्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। सहायक वातावरण मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करने में मदद कर सकता है।
3. **आर्थिक स्थिति:** किसी व्यक्ति की वित्तीय स्थिति और आर्थिक सुरक्षा मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। आर्थिक संकट या गरीबी मानसिक तनाव उत्पन्न कर सकती है।
4. **शिक्षा:** शिक्षा का स्तर मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित होता है। उच्च शिक्षा के अवसर और ज्ञान अर्जन मानसिक विकास में सहायक होते हैं।
5. **मानसिक तनाव:** दैनिक जीवन के तनाव, जैसे काम का दबाव, पारिवारिक समस्याएं, या स्वास्थ्य संबंधित चिंता, मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डाल सकती हैं।
6. **शारीरिक स्वास्थ्य की स्थिति:** शारीरिक बीमारियां, विकार या पुरानी बीमारियां मानसिक स्वास्थ्य को खराब कर सकती हैं।
7. **सामाजिक अलगाव:** समाज से अलगाव या अकेलापन मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।
8. **संस्कृति और धर्म:** सांस्कृतिक मूल्य, धार्मिक विश्वास, और व्यवहार मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य के निर्धारक जटिल और बहुआयामी होते हैं। आनुवंशिकी, पर्यावरण, जीवनशैली, मानसिक तनाव, सामाजिक संबंध, और शिक्षा की भूमिकाएं महत्वपूर्ण हैं। इन सभी तत्वों का सही मिश्रण मानसिक भलाई सुनिश्चित करने में मदद करता है।

10. Discuss the methods of enhancing the transfer of learning. 2018

Ans: शिक्षण संचालना का मतलब है छात्रों के सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी और उनकी सीखने की प्रगति की निगरानी करना। यह शिक्षकों द्वारा शिक्षण प्रक्रिया का प्रबंधन, समर्थन और मूल्यांकन करने की प्रक्रिया है। शिक्षण संचालना छात्रों के ज्ञान, कौशल और अनुभव को विकसित करने में सहायक होती है।

शिक्षण संचालना को बढ़ाने के लिए कुछ प्रभावी रणनीतियाँ निम्नलिखित हैं:

1. **सक्रिय भागीदारी**: छात्रों को पाठ्य विषय में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करें। प्रश्न और चर्चा, समूह गतिविधियाँ और टीम में काम करने के माध्यम से छात्र अपनी सोच और राय व्यक्त कर सकते हैं, जो उनके सीखने की प्रक्रिया को बेहतर बनाता है।
2. **विभिन्न शिक्षण विधियाँ**: विभिन्न शिक्षण विधियाँ अपनाएँ, जैसे गेम-आधारित लर्निंग, परियोजना-आधारित शिक्षा, या अन्वेषणात्मक शिक्षा। यह छात्रों को विभिन्न तरीकों से सीखने में मदद करता है और उनकी रुचि बनाए रखता है।
3. **फीडबैक प्रदान करना**: नियमित और निर्माणात्मक फीडबैक दें। यह छात्रों को उनकी ताकत और कमजोरियों के बारे में अवगत कराता है और उनके सुधार के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान करता है।

4. **प्रौद्योगिकी का उपयोग**: शिक्षण प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी का उपयोग करें, जैसे इंटरैक्टिव बोर्ड, डिजिटल सामग्री, और ऑनलाइन संसाधन। प्रौद्योगिकी छात्रों के सीखने की रुचि को बढ़ाती है और विभिन्न प्रकार की शिक्षण सामग्री तक पहुँच प्रदान करती है।
5. **सामाजिक सहयोग**: छात्रों के बीच सहयोग और सहयोगात्मक सीखने का वातावरण बनाएं। समूह परियोजनाएँ, टीम में काम करना और पीयर टीचिंग के माध्यम से छात्र एक-दूसरे से सीख सकते हैं और आपस में संवाद बढ़ा सकते हैं।

शिक्षण संचालना बढ़ाने की रणनीतियाँ छात्रों के सीखने के अनुभव को समृद्ध करती हैं और उनकी भागीदारी को बढ़ाती हैं। सक्रिय भागीदारी, विभिन्न शिक्षण विधियाँ, फीडबैक, प्रौद्योगिकी का उपयोग और सामाजिक सहयोग छात्रों के सीखने को प्रोत्साहित करते हैं, जो उनकी रचनात्मकता और विश्लेषणात्मक सोच को विकसित करता है। सही पद्धतियों के माध्यम से सीखना और भी प्रभावी होता है।

11. Mention the differences between classical conditioning and operant conditioning in learning. 2019, 2022

Ans: शिक्षण में क्लासिकल कंडीशनिंग और ऑपरेट कंडीशनिंग दो अलग-अलग प्रक्रियाएँ हैं। इनके बीच के मुख्य अंतर इस प्रकार हैं:

1. **परिभाषा:**

- **क्लासिकल कंडीशनिंग:** यह एक प्रक्रिया है जहाँ एक विशेष उत्तेजक (Stimulus) एक अनियंत्रित प्रतिक्रिया (Unconditioned Response) उत्पन्न करता है, जबकि एक नई उत्तेजक (Conditioned Stimulus) भी उसी प्रतिक्रिया उत्पन्न करने में सक्षम होती है। उदाहरण के लिए, पावलोव के कुत्ते के प्रयोग में, जब भोजन के लिए घंटी बजाई जाती है, तो कुत्ता लार छोड़ने लगता है।
- **ऑपरेट कंडीशनिंग:** यह एक प्रक्रिया है जहाँ एक व्यवहार के परिणामस्वरूप फल (Reinforcement) या दंड (Punishment) दिया जाता है, जो भविष्य में उस व्यवहार को दोहराने की संभावना को प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, अगर बच्चे को एक कार्य करने के लिए पुरस्कार मिलता है, तो उसकी संभावना बढ़ जाती है कि वह फिर से वही कार्य करेगा।

2. **लक्ष्य:**

- **क्लासिकल कंडीशनिंग:** शिक्षण प्रक्रिया में एक से अधिक उत्तेजकों को जोड़कर शर्तित प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करना।
- **ऑपरेट कंडीशनिंग:** पुरस्कार या दंड के माध्यम से व्यवहार को नियंत्रित करना।

3. **उदाहरण:**

- **क्लासिकल कंडीशनिंग:** जब कुत्ते को भोजन दिखाया जाता है, तो वह लार उत्पन्न करता है, जबकि घंटी बजने पर भी ऐसा होता है।
- **ऑपरेट कंडीशनिंग:** यदि बच्चे को अच्छे काम के लिए पुरस्कार दिया जाता है, तो वह उस काम को फिर से करेगा।

4. **व्यवहार परिवर्तन:**

- **क्लासिकल कंडीशनिंग:** सामान्यतः अनियंत्रित प्रतिक्रियाओं में परिवर्तन होता है।
- **ऑपरेट कंडीशनिंग:** व्यवहार के नियंत्रण और परिवर्तन पर आधारित होता है।

5. **प्रयोग:**

- **क्लासिकल कंडीशनिंग:** सामान्यतः भावनाओं के माध्यम से शिक्षण में उपयोग किया जाता है।
- **ऑपरेट कंडीशनिंग:** व्यवहार के नियंत्रण के लिए उपयोग किया जाता है, विशेष रूप से शिक्षा और व्यवहार परिवर्तन में।

ये दोनों प्रक्रियाएँ शिक्षण में महत्वपूर्ण हैं, लेकिन ये विभिन्न तरीकों से काम करती हैं।

12. Discuss in brief the role of teacher in transmission of motivation. 2019, 2020, 2021

Ans: प्रेरणा संचार एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक छात्रों के बीच सीखने के लिए रुचि, उत्साह और ऊर्जा पैदा करते हैं। यह शैक्षिक प्रक्रिया को और गतिशील बनाता है, क्योंकि प्रेरणा छात्रों के दृष्टिकोण और व्यवहार पर सकारात्मक प्रभाव डालती है और सीखने के परिणामों को बढ़ाती है।

प्रेरणा संचार में शिक्षकों की भूमिका:

प्रेरणा संचार शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जहां शिक्षक की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण होती है। यह भूमिका विभिन्न तरीकों से प्रकट होती है:

1. **प्रेरणा उत्पन्न करना:** शिक्षक छात्रों में सीखने के लिए रुचि और उत्साह पैदा करने में मदद करते हैं। वे पाठ्यवस्तु को छात्रों से जोड़ते हैं और सीखने के लाभ समझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
2. **विस्तृत शिक्षण:** प्रेरणा संचार के माध्यम से शिक्षक छात्रों के मन में गहरी अवधारणाएँ बनाते हैं। वे एक ऐसा शिक्षण वातावरण बनाते हैं जहां छात्र प्रश्न पूछने और चर्चाओं में भाग लेने के लिए प्रेरित होते हैं।
3. **व्यक्तिगत ध्यान:** शिक्षक छात्रों को व्यक्तिगत रूप से समझ सकते हैं और उनकी ताकत और कमजोरियों के आधार पर प्रेरणा प्रदान कर सकते हैं। इससे छात्रों का आत्मविश्वास बढ़ता है और वे सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी कर सकते हैं।
4. **मूल्यांकन और प्रतिक्रिया:** शिक्षकों द्वारा नियमित मूल्यांकन और प्रतिक्रिया छात्रों की सफलता और विकास के लिए महत्वपूर्ण होती है। वे छात्रों को सही मार्गदर्शन करते हैं और उनके काम में सुधार करने में मदद करते हैं।
5. **सहायक वातावरण:** शिक्षक एक सहायक और सुरक्षित शिक्षण वातावरण बनाते हैं, जहां छात्र गलतियाँ करने से डरते नहीं हैं और एक-दूसरे से सीख सकते हैं।

शिक्षकों की ये विभिन्न भूमिकाएँ छात्रों की सीखने की प्रक्रिया को प्रेरित करती हैं और प्रेरणा संचार में सहायक होती हैं, जिससे सीखने के अनुभव को बढ़ाया जाता है।

13. What are the objectives of co-curricular activities in school? 2019, 2021

Ans: विद्यालय में सहपाठ्यक्रमिक गतिविधियाँ वे कार्यक्रम हैं जो कक्षा में पढ़ाई जाने वाले शैक्षणिक विषयों के साथ-साथ आयोजित होते हैं। इनमें खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम, बहस, संगीत, नाटक और विभिन्न क्लब गतिविधियाँ शामिल होती हैं। ये गतिविधियाँ छात्रों के व्यक्तित्व, सामाजिक कौशल, रचनात्मकता और शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के विकास में सहायक होती हैं।

विद्यालय में सहपाठ्यक्रमिक गतिविधियों के उद्देश्य:

1. **सामाजिक कौशल का विकास:** सहपाठ्यक्रमिक गतिविधियाँ छात्रों के बीच संवाद और सहयोग कौशल को विकसित करती हैं।
2. **व्यक्तित्व विकास:** ये गतिविधियाँ छात्रों का आत्मविश्वास, नेतृत्व गुण और दूसरों के साथ मेलजोल की क्षमता बढ़ाती हैं।
3. **शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य:** खेल और अन्य शारीरिक गतिविधियाँ छात्रों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करती हैं।
4. **शिक्षा और सामग्री का एकीकरण:** सहपाठ्यक्रमिक गतिविधियाँ पाठ्यक्रम से संबंधित होती हैं, जिससे छात्रों का सीखने का अनुभव समृद्ध होता है।
5. **रचनात्मकता को बढ़ावा:** सांस्कृतिक, कलात्मक और रचनात्मक गतिविधियाँ छात्रों की रचनात्मक सोच और समस्या समाधान क्षमताओं को विकसित करती हैं।
6. **अनुशासन और समय प्रबंधन:** सहपाठ्यक्रमिक गतिविधियाँ छात्रों को अनुशासन, समय प्रबंधन और जिम्मेदारी का एहसास कराती हैं।
7. **सामाजिक जागरूकता:** ये गतिविधियाँ छात्रों को सामाजिक मुद्दों और न्यायसंगत मूल्यों के प्रति जागरूक करती हैं।
8. **टीमवर्क का अनुभव:** सहपाठ्यक्रमिक गतिविधियाँ छात्रों के बीच टीमवर्क और सहयोग के मूल्यों को स्थापित करती हैं।

ये उद्देश्य छात्रों के समग्र विकास में सहायक हैं और उन्हें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफल होने के लिए तैयार करते हैं।

14. Discuss in brief, Bandura`s Social Cognitive theory. 2019

Ans: बान्दुरा का सामाजिक प्रज्ञामूलक सिद्धांत अमेरिका के मनोवैज्ञानिक अल्बर्ट बान्दुरा द्वारा विकसित किया गया था। यह सिद्धांत मानव व्यवहार और शिक्षण प्रक्रिया को समझने के लिए एक समग्र ढांचा प्रदान करता है।

बान्दुरा के सामाजिक प्रज्ञामूलक सिद्धांत के मुख्य सिद्धांत:

1. **शिक्षण और मॉडलिंग:** बान्दुरा के अनुसार, लोग अपने पर्यावरण में दूसरों के व्यवहार को देखकर सीखते हैं। यह मॉडलिंग के माध्यम से होता है, जहाँ एक व्यक्ति (मॉडल) दूसरे के व्यवहार की नकल करता है।

2. **अनुभव और परिणाम:** किसी व्यवहार का परिणाम (जैसे पुरस्कार या दंड) उस व्यवहार के दोहराए जाने की संभावना को प्रभावित करता है। यदि कोई व्यवहार सकारात्मक परिणाम देता है, तो उसकी पुनरावृत्ति की संभावना बढ़ जाती है।
3. **स्व-नियमन:** बान्दुरा के सिद्धांत में कहा गया है कि लोग केवल अपने पर्यावरण द्वारा प्रभावित नहीं होते, बल्कि अपने विचारों और भावनाओं के माध्यम से अपने व्यवहार को नियंत्रित कर सकते हैं। यह उनकी क्षमता और आत्मविश्वास को बढ़ाता है।
4. **सामाजिक संदर्भ:** बान्दुरा अपने सिद्धांत में सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों के महत्व को उजागर करते हैं। उनका मानना है कि समाज और संस्कृति के विभिन्न तत्व मानव व्यवहार के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
5. **आंतरिक प्रक्रियाएँ:** यह सिद्धांत मानता है कि मानव व्यवहार में आंतरिक प्रक्रियाएँ भी महत्वपूर्ण होती हैं। किसी व्यक्ति के विचार, भावनाएँ, और मूल्य उनके कार्यों को प्रभावित करते हैं।

बान्दुरा का सामाजिक प्रज्ञामूलक सिद्धांत हमारे शिक्षण प्रक्रियाओं को और गहराई से समझने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है, विशेषकर यह कि कैसे पर्यावरण, मॉडल, और आंतरिक प्रक्रियाएँ मानव व्यवहार को आकार देती हैं।

15. What is meant by insight? Discuss in brief, the educational significance of Gestalt theory. 2019

Ans: अंतर्दृष्टि (Insight) एक समस्या समाधान प्रक्रिया है, जहां एक व्यक्ति अप्रत्याशित रूप से समस्या का समाधान खोज लेता है। यह एक सृजनात्मक या नवोन्मेषी सोच है जो किसी परिस्थिति के अंतर्निहित विषय या संबंध को समझने में मदद करती है। अंतर्दृष्टि के माध्यम से लोग अपने व्यवहार में परिवर्तन ला सकते हैं और नए विचार या समाधान विकसित कर सकते हैं।

<u>गेस्टाल्ट सिद्धांत के अनुसार शिक्षा में मार्गदर्शन की आवश्यकता:</u>

गेस्टाल्ट सिद्धांत मानव व्यवहार और अनुभव पर एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो सही मार्गदर्शन और शिक्षण पद्धतियों की आवश्यकता को उजागर करता है। इसके मुख्य पहलू हैं:

1. **समग्र दृष्टिकोण:** गेस्टाल्ट सिद्धांत के अनुसार, छात्र संपूर्ण जानकारी के आधार पर अवधारणाएँ बनाते हैं। जब शिक्षक मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, तो छात्रों को जानकारी को समझने और नए विचार बनाने में मदद मिलती है।
2. **भाग से समग्र:** छात्रों का उद्देश्य एकल भागों से समग्र अवधारणा बनाना होता है। गेस्टाल्ट सिद्धांत के अनुसार, जब छात्र अनुभव से सीखते हैं, तो उचित मार्गदर्शन उन्हें इस अनुभव को और गहराई से समझने में मदद करता है।
3. **अनुभव की प्रासंगिकता:** गेस्टाल्ट सिद्धांत के मार्गदर्शन के माध्यम से, शिक्षक छात्रों के अनुभवों के साथ नई जानकारी को जोड़ने में सक्षम होते हैं। यह उनके शिक्षण अनुभव को समृद्ध करता है।

4. **भावनाएँ और अनुभव:** गेस्टाल्ट सिद्धांत भावनाओं के महत्व को मान्यता देता है। मार्गदर्शन के माध्यम से, शिक्षक छात्रों की भावनाओं और अनुभवों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं, जिससे शिक्षा अधिक प्रभावी होती है।
5. **समस्या समाधान:** गेस्टाल्ट सिद्धांत अंतर्दृष्टि और सृजनात्मकता बढ़ाने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है, जो छात्रों को समस्या समाधान में सहायक होता है।

गेस्टाल्ट सिद्धांत शिक्षा में मार्गदर्शन की आवश्यकता पर बल देता है, क्योंकि यह छात्रों को समग्र अवधारणाएँ बनाने, जानकारी को भावनाओं और अनुभवों के साथ जोड़ने, और समस्या समाधान में सहायता करता है। उचित मार्गदर्शन शिक्षा प्रक्रिया को प्रभावी और समृद्ध बनाता है, जो छात्रों के विकास को प्रोत्साहित करता है।

16. Write down the principles of 'Self Concept Theory' of Carl Rogers. 2020

Ans: कार्ल रोजर्स का 'आत्मबोध' (Self-Concept) सिद्धांत मानव व्यवहार और व्यक्तित्व विकास को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

<u>रोजर्स के सिद्धांत के मुख्य सिद्धांत हैं:</u>

1. **आत्मबोध की परिभाषा:** आत्मबोध एक व्यक्ति की अपने प्रति धारणा और समझ है। यह उनकी क्षमताओं, सीमाओं, विश्वासों और जीवन के अनुभवों से संबंधित है।
2. **स्व-मूल्यांकन:** रोजर्स के अनुसार, लोग अपने आत्मबोध के आधार पर अपने आप का मूल्यांकन करते हैं। यदि कोई व्यक्ति सकारात्मक आत्मबोध का अनुभव करता है, तो वे आत्मविश्वासी और आत्मसम्मानित हो जाते हैं।
3. **सत्यता और अनुभव:** रोजर्स यह बताते हैं कि आत्मबोध और अनुभव के बीच सत्यता होनी चाहिए। यदि कोई व्यक्ति अपनी भावनाओं और वास्तविक अनुभवों के बीच असंगति महसूस करता है, तो उनका आत्मबोध प्रभावित हो सकता है।
4. **स्वीकृति की आवश्यकता:** रोजर्स का सिद्धांत व्यक्तिगत विकास और सुधार के लिए प्रेम, स्वीकृति और समर्थन की आवश्यकता पर जोर देता है। रिश्तों में प्रेम और स्वीकृति व्यक्ति के आत्मबोध को मजबूत करती है।
5. **स्व-सचेतना:** रोजर्स के अनुसार, आत्मबोध का विकास स्व-सचेतना और आत्म-प्रतिबिंब के माध्यम से होता है। जब व्यक्ति अपनी भावनाओं और अनुभवों के प्रति जागरूक होते हैं, तो वे अपने आप को बेहतर समझ सकते हैं।
6. **विकास की प्रक्रिया:** रोजर्स मानते हैं कि व्यक्ति के रूप में विकास की प्रक्रिया निरंतर और गतिशील होती है। यह किसी व्यक्ति के अनुभवों और संबंधों के आधार पर विकसित होती है।
7. **स्वतंत्रता और जिम्मेदारी:** रोजर्स के सिद्धांत का एक महत्वपूर्ण पहलू स्वतंत्रता है। व्यक्ति अपने आत्मबोध को आकार देने के लिए स्वतंत्र होते हैं और अपने निर्णयों के लिए जिम्मेदार होते हैं।

कार्ल रोजर्स का आत्मबोध सिद्धांत व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य, आत्मबोध और अंतर-व्यक्तिगत संबंधों को समझने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है।

17. Discuss briefly, the educational significance of Gestalt theory. 2022

Ans: गेस्टाल्ट सिद्धांत शिक्षा में एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो छात्रों की सीखने की प्रक्रिया को गहराई से समझने में सहायक है।

गेस्टाल्ट सिद्धांत का शैक्षिक महत्व:

1. **सम्पूर्णता का महत्व:** गेस्टाल्ट सिद्धांत का मूल सिद्धांत है कि "सम्पूर्ण अपने हिस्सों के योग से अधिक है।" अर्थात, जब छात्र एक संपूर्ण अवधारणा को समझते हैं, तो वे विभिन्न जानकारियों के बीच संबंध स्थापित कर सकते हैं, जिससे उनकी सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावी होती है।
2. **भाग से सम्पूर्ण:** छात्र व्यक्तिगत भागों से एक समग्र समझ बनाते हैं। उदाहरण के लिए, गणित की समस्या के विभिन्न घटकों का विश्लेषण करके छात्र समस्या समाधान के लिए एक व्यापक विचार बना सकते हैं।
3. **अनुभव की प्रासंगिकता:** जब छात्र नई जानकारी को अपने अनुभवों से जोड़ सकते हैं, तो उनकी सीखने की प्रक्रिया और भी समृद्ध होती है। गेस्टाल्ट सिद्धांत शिक्षकों को निर्देश देता है कि वे छात्रों के अनुभवों के साथ नई जानकारी को जोड़ने में मदद करें।
4. **शिक्षण की प्रक्रिया:** गेस्टाल्ट सिद्धांत शिक्षा में भावनाओं और अनुभवों के महत्व को स्वीकार करता है। यदि शिक्षक छात्रों की भावनाओं पर ध्यान देते हैं, तो शिक्षण अधिक प्रभावी और प्रभावशाली हो जाता है।
5. **समस्या समाधान:** गेस्टाल्ट सिद्धांत छात्रों की अंतर्दृष्टि और रचनात्मकता को बढ़ाने में सहायता करता है। यह छात्रों को समस्या समाधान में मदद करता है और उन्हें नए विचार या समाधान खोजने के लिए प्रोत्साहित करता है।

गेस्टाल्ट सिद्धांत का शैक्षिक महत्व शिक्षकों को छात्रों की सीखने की प्रक्रिया में सहायता करता है, उनकी रचनात्मकता और समस्या समाधान की क्षमताओं को बढ़ाता है। यह शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है।

18. What is co-operative learning? Discuss briefly the role of a teacher in co-operetive learning. 2023

Ans: सहयोगात्मक अध्ययन (Collaborative Learning) एक शिक्षण विधि है, जहाँ छात्र समूह में मिलकर काम करते हैं और एक-दूसरे से सीखने में मदद करते हैं। इस प्रक्रिया में छात्र विभिन्न दृष्टिकोण, कौशल और अनुभव के आधार पर चर्चा और समस्या समाधान करते हैं, जो उनके अध्ययन के अनुभव को समृद्ध करता है।

सहयोगात्मक अध्ययन में शिक्षक की भूमिका:

1. **नेतृत्व प्रदान करना:** शिक्षक को सहयोगात्मक अध्ययन के लिए एक उचित वातावरण बनाना होता है, जहाँ छात्र स्वतंत्र रूप से अपने विचार व्यक्त कर सकें और एक-दूसरे के साथ सहयोग कर सकें।
2. **समूह गठन:** शिक्षक की जिम्मेदारी है कि वे उपयुक्त छात्रों का एक समूह बनाएं, ताकि विभिन्न कौशल और पृष्ठभूमियों वाले छात्र एक साथ काम कर सकें।

3. **मॉडलिंग:** शिक्षक को अध्ययन की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए और समूह कार्य के लिए उचित व्यवहार और रणनीतियों को प्रदर्शित करना चाहिए।
4. **मार्गदर्शन और समर्थन:** शिक्षक को छात्रों की सहायता करनी चाहिए, उनके विचारों और समस्या समाधान के लिए मार्गदर्शन देना चाहिए, और आवश्यकतानुसार फीडबैक प्रदान करना चाहिए।
5. **मूल्यांकन:** शिक्षक को छात्रों की गतिविधियों का मूल्यांकन करना चाहिए और उनकी प्रगति के लिए उपयुक्त प्रतिक्रिया प्रदान करनी चाहिए, ताकि वे और सुधार कर सकें।

कुल मिलाकर, सहयोगात्मक अध्ययन में शिक्षक की भूमिका एक वातावरण बनाना, मार्गदर्शन प्रदान करना, और छात्रों के बीच सहयोग और समर्थन को प्रोत्साहित करना है।

19. Write the classroom implications of theory of conditioning with suitable examples. 2023

Ans: कक्षा में व्यवहारवाद का अनुप्रयोग छात्रों के व्यवहार को बदलने के लिए एक प्रभावी विधि है। इस सिद्धांत का मुख्य विचार यह है कि मानव व्यवहार को पर्यावरण के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में देखा जाता है, और इसे प्रशिक्षण के माध्यम से बदला जा सकता है। यहां कक्षा में व्यवहारवाद के अनुप्रयोग के कुछ उदाहरण दिए गए हैं:

1. **इनाम और दंड:** शिक्षक छात्रों के सकारात्मक व्यवहार को प्रोत्साहित करने के लिए इनाम प्रणाली लागू कर सकते हैं। **उदाहरण:** यदि एक छात्र समय पर आता है और नियमित रूप से पढ़ाई करता है, तो शिक्षक उसे स्टिकर या प्रशंसा पत्र दे सकते हैं। यह छात्र को बेहतर व्यवहार प्रदर्शित करने के लिए प्रेरित करता है।
2. **आदत निर्माण:** शिक्षक नियमित गतिविधियों के माध्यम से छात्रों में सकारात्मक आदतें विकसित कर सकते हैं। **उदाहरण:** हर दिन की शुरुआत में एक गीत गाना या प्रार्थना करना। जब छात्र इस आदत के आदी हो जाते हैं, तो उनकी ध्यान केंद्रित करने और जागरूक रहने की संभावना बढ़ जाती है।
3. **व्यावहारिक तरीके:** शिक्षक विभिन्न व्यवहारात्मक तकनीकों का उपयोग करके छात्रों को सिखा सकते हैं। **उदाहरण:** गणित की समस्याओं को हल करने के लिए छात्रों को चरण-दर-चरण निर्देश प्रदान करना। जब वे सही ढंग से समस्याओं को हल करते हैं, तो उनकी प्रशंसा की जाती है, और यदि वे गलत होते हैं, तो उन्हें सही उत्तर दिया जाता है। इस विधि से छात्र सही व्यवहार और विधियों को सीखेंगे।
4. **शिक्षा का उपयोग:** शिक्षक छात्रों के विभिन्न व्यवहारों को रिकॉर्ड कर सकते हैं और इसके आधार पर उनका मूल्यांकन कर सकते हैं। **उदाहरण:** शिक्षक कक्षा में उत्तरों के लिए अंक देते हैं और उन अंकों के आधार पर छात्रों की प्रगति का मूल्यांकन करते हैं। इसका उनके सीखने पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
5. **सामाजिक व्यवहार:** शिक्षक सामाजिक व्यवहार सिखाने के समय व्यवहारवाद का उपयोग कर सकते हैं। **उदाहरण:** एक समूह परियोजना में छात्रों के बीच सहयोग और चर्चा को बढ़ाने के लिए,

शिक्षक उनके लिए प्रतियोगिताएँ आयोजित कर सकते हैं। जिन टीमों का काम सबसे अच्छा होगा, उन्हें पुरस्कार दिया जाएगा।

निष्कर्ष: व्यवहारवाद कक्षा में व्यवहार को बदलने के लिए एक प्रभावी विधि है। यह शिक्षकों और छात्रों के बीच एक उत्पादक संबंध बनाता है और छात्रों में सकारात्मक व्यवहार और आदतों को विकसित करने में मदद करता है।

20. What measures a teacher can take for securing mental health of learners. 2023

Ans: छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखना शिक्षकों के लिए एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। सही सहायता और समर्थन प्रदान करके, शिक्षक छात्रों के मानसिक तनाव को कम करने, आत्मविश्वास बढ़ाने और सामाजिक संबंधों में सुधार करने में मदद कर सकते हैं, जो उनके समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

1. **सहायता और समर्थन:** शिक्षकों को छात्रों की चिंताओं, समस्याओं और चिंताओं को ध्यान से सुनना चाहिए और उनके प्रति सहानुभूति दिखानी चाहिए। जब छात्रों को अपनी समस्याओं को साझा करने का अवसर मिलता है, तो वे मानसिक रूप से अधिक आराम महसूस करते हैं।
2. **अनुभव साझा करना:** शिक्षक अपने अनुभवों और शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से छात्रों की सहायता कर सकते हैं। यह छात्रों को मानसिक तनाव के समय सहायक कदम उठाने के लिए प्रेरित करता है।
3. **सामाजिक कौशल का विकास:** शिक्षक सहानुभूति, सहयोग और समर्थन जैसे सामाजिक कौशल को बढ़ाने के लिए गतिविधियाँ आयोजित कर सकते हैं। यह छात्रों के बीच संबंध बनाता है और मानसिक स्वास्थ्य को सुधारता है।
4. **मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा:** शिक्षकों को छात्रों को मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित मुद्दों के बारे में बताना चाहिए ताकि वे अपने मानसिक स्वास्थ्य के बारे में जागरूक हो सकें और आवश्यक सहायता प्राप्त कर सकें।
5. **अनुशासन और सुरक्षित वातावरण:** कक्षा में एक सुव्यवस्थित और सुरक्षित वातावरण बनाना, जहाँ छात्र अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकें। नियमों को बनाकर अनुशासन बनाए रखना।
6. **अभिभावकों के साथ संचार:** अभिभावकों के साथ नियमित संपर्क बनाए रखना ताकि वे छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के बारे में जागरूक हो सकें और आवश्यक सहायता प्रदान कर सकें।
7. **शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा:** शिक्षकों को छात्रों के शारीरिक स्वास्थ्य पर जोर देना चाहिए और खेलों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। शारीरिक गतिविधि मानसिक स्वास्थ्य को सुधारने में मदद करती है।
8. **माइंडफुलनेस और ध्यान:** छात्रों के बीच माइंडफुलनेस और ध्यान की प्रथाओं को पेश करना, जो उनके मानसिक तनाव को कम करने में मदद करता है।

9. **संचार के अवसर बनाना:** शिक्षक छात्रों के साथ एक स्पष्ट और खुले संचार स्थापित कर सकते हैं, जिससे छात्रों को अपनी समस्याओं पर चर्चा करने में सहायता मिलती है।

शिक्षक छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सहानुभूति, प्रोत्साहन, और प्रभावी संचार के माध्यम से वे छात्रों को मानसिक तनाव का सामना करने में मदद करते हैं। सुरक्षा और समर्थन प्रदान करने से छात्रों का विकास बेहतर होता है, जो उनके शैक्षणिक और सामाजिक सफलता में सहायक होता है।

Marks: 10

1. What do you understand by mental health? How can a teacher help maintain a student's mental health? 2017, 2020, 2022

Ans:

<u>भूमिका:</u> छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य एक महत्वपूर्ण विषय है, जो उनके शैक्षिक अनुभव, सामाजिक संबंध और व्यक्तिगत विकास को प्रभावित करता है। अच्छा मानसिक स्वास्थ्य छात्रों के आत्मविश्वास, रचनात्मकता और सीखने की इच्छा को बढ़ाता है। हालांकि, आधुनिक शैक्षणिक वातावरण में मानसिक तनाव, चिंता और अन्य मानसिक समस्याएँ छात्रों के बीच बढ़ रही हैं। इसलिए, शिक्षकों के लिए इस स्थिति के महत्व को समझना और छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में सक्रिय भूमिका निभाना अत्यंत आवश्यक है। शिक्षक सहानुभूति, समर्थन और सही वातावरण प्रदान करके छात्रों को मानसिक तनाव से निपटने में मदद कर सकते हैं, जो उनके समग्र विकास में मदद करता है।

<u>मानसिक स्वास्थ्य:</u> मानसिक स्वास्थ्य उस स्थिति को संदर्भित करता है जिसमें एक व्यक्ति अपनी भावनाओं, विचारों, व्यवहारों और संबंधों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित कर सकता है। इसमें आत्मविश्वास, रचनात्मकता और सामाजिक कौशल शामिल हैं। छात्रों के लिए मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखना उनके सीखने, विकास और समग्र जीवन के लिए अनिवार्य है, क्योंकि यह उन्हें मानसिक तनाव, चिंता और अन्य मानसिक समस्याओं का सामना करने की क्षमता बढ़ाने में मदद करता है।

<u>छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में शिक्षकों की भूमिका:</u>

1. **सहानुभूति और समर्थन:** शिक्षकों को छात्रों की चिंताओं और समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए और सहानुभूति दिखानी चाहिए। यह छात्रों को अपनी भावनाएँ व्यक्त करने का अवसर देता है और उन्हें मानसिक राहत प्रदान करता है, जिससे वे अपनी समस्याओं को साझा कर सकते हैं।
2. **सामाजिक कौशल विकास:** शिक्षक सहानुभूति, सहयोग और समस्या समाधान जैसे कौशलों को विकसित करने के लिए विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित कर सकते हैं। इस प्रकार, छात्र एक-दूसरे के साथ संबंध बना सकते हैं, जो उनके सामाजिक संवाद और मानसिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है।
3. **मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा:** शिक्षकों को छात्रों को मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित मुद्दों के बारे में शिक्षित करना चाहिए। इस प्रकार, छात्र अपने मानसिक स्वास्थ्य के महत्व को समझ सकते हैं और आवश्यकतानुसार सहायता प्राप्त करने के लिए प्रेरित हो सकते हैं, जो उनके स्वास्थ्यकर जीवन के लिए सहायक है।

4. **सुरक्षित वातावरण बनाना:** कक्षा में एक निष्पक्ष और सुरक्षित वातावरण बनाना बहुत महत्वपूर्ण है। जहाँ छात्र अपनी भावनाएँ व्यक्त कर सकते हैं और गलतियों से सीख सकते हैं। यह उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने में मदद करता है और मानसिक तनाव को कम करता है।
5. **शारीरिक स्वास्थ्य:** छात्रों के लिए शारीरिक स्वास्थ्य को महत्व देना अनिवार्य है। खेलों में भागीदारी के माध्यम से शारीरिक गतिविधि उनके मानसिक स्वास्थ्य को सुधारती है। एक स्वस्थ शरीर मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी सहायक है।
6. **माइंडफुलनेस और मेडिटेशन:** शिक्षकों को छात्रों में माइंडफुलनेस और मेडिटेशन की प्रथाओं को प्रोत्साहित करना चाहिए। ये प्रथाएँ मानसिक तनाव को कम करने में मदद करती हैं और छात्रों को अपनी ध्यान केंद्रित करने और भावनाओं को प्रबंधित करने में सहायता करती हैं।
7. **संवाद के अवसरों का निर्माण:** शिक्षकों को छात्रों के साथ खुला और स्पष्ट संवाद स्थापित करना चाहिए। इससे छात्रों के लिए अपनी समस्याओं पर चर्चा करना आसान हो जाता है और उनके आत्मविश्वास और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार होता है।
8. **अभिभावकों के साथ संवाद:** अभिभावकों के साथ नियमित संवाद रखने से छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता बढ़ती है। अभिभावक आवश्यक सहायता प्रदान कर सकते हैं, जो छात्रों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के विकास में सहायक होती है।

उपसंहार: छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उनके शारीरिक, सामाजिक और मानसिक विकास में योगदान करता है। शिक्षकों को उचित सहायता और समर्थन प्रदान करना चाहिए, ताकि छात्र चिंता और तनाव का सामना कर सकें। सहानुभूति, माइंडफुलनेस, सामाजिक कौशल विकास और सुरक्षित वातावरण बनाना छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य है। अभिभावकों के साथ संवाद बनाए रखना और छात्रों के अनुभव साझा करना उनके मानसिक तनाव को कम करने में मदद करता है। शिक्षकों का यह प्रयास छात्रों के आत्मविश्वास को बढ़ाता है, रचनात्मकता को बढ़ावा देता है और उनकी शैक्षणिक और सामाजिक सफलता की ओर अग्रसर करता है।

2. State in brief the 'Gestalt Theory of Learning'. Write down the application of Gestalt theory in classroom teaching. 2017, 2021

Ans:

भूमिका: गेस्टाल्ट शिक्षण सिद्धांत एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक अवधारणा है जो शिक्षा प्रक्रिया में मानव मन के संगठन और अनुभवों की पूर्णता को समझाने का कार्य करती है। इस सिद्धांत के अनुसार, लोग अपने अनुभवों को अलग-अलग भागों के बजाय एक संपूर्ण रूप में समझते हैं। गेस्टाल्ट सिद्धांत समस्या समाधान और विचार प्रक्रियाओं के बीच संबंध पर जोर देता है। यह कक्षा में छात्रों के बीच समन्वय, सहयोग और सृजनात्मक सोच को प्रेरित करने में सहायक है। इस सिद्धांत के माध्यम से शिक्षक छात्रों को एक सक्रिय, समावेशी और ज्ञानवर्धक शिक्षण अनुभव प्रदान कर सकते हैं, जो उनके समग्र विकास में सहायक होता है।

गेस्टाल्ट शिक्षण सिद्धांत: गेस्टाल्ट सिद्धांत मनोविज्ञान और शिक्षा में एक दृष्टिकोण है जो मानव मन के संगठन और अनुभवों की पूर्णता या "गेस्टाल्ट" को समझने पर जोर देता है। इस सिद्धांत के अनुसार,

लोग अपने अनुभवों को अलग-अलग भागों के बजाय एक संपूर्ण रूप में समझते हैं। गेस्टाल्ट शिक्षण सिद्धांत के मुख्य सिद्धांत हैं:

1. **पूर्णता:** लोग अनुभवों को एक पूर्ण रूप में समझना चाहते हैं, जहाँ प्रत्येक भाग एक बड़े अस्तित्व से संबंधित होता है।
2. **संगठन:** लोग अपनी भावनाओं और विचारों को एक विशिष्ट संरचना या डिज़ाइन में व्यवस्थित करते हैं। इसलिए, वे जानकारी में संबंध और प्रासंगिकता खोजते हैं।
3. **समस्या समाधान:** इस सिद्धांत के माध्यम से समस्या समाधान पर ध्यान केंद्रित करने पर जोर दिया जाता है। लोग आमतौर पर एक समस्या के समाधान में अपने अनुभवों को एकत्र करते हैं और एक नया दृष्टिकोण अपनाते हैं।

कक्षा शिक्षण में गेस्टाल्ट सिद्धांत का अनुप्रयोग:

कक्षा शिक्षण में गेस्टाल्ट सिद्धांत के कुछ अनुप्रयोग हैं:

1. **सामूहिक शिक्षण:** शिक्षक छात्रों को जानकारी और अवधारणाओं को एकत्रित करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक इतिहास के पाठ में छात्रों से विभिन्न घटनाओं के बीच संबंध स्थापित करने के लिए कहा जा सकता है, ताकि वे एक बड़े चित्र का निर्माण कर सकें।
2. **समूह गतिविधियाँ:** गेस्टाल्ट सिद्धांत में समूह कार्य के माध्यम से सहयोग और संबंध स्थापित करना महत्वपूर्ण है। शिक्षक छात्रों को समूह में काम करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं, ताकि वे एक-दूसरे के साथ जुड़कर नए विचार बना सकें।
3. **प्रतिक्रिया और चर्चा के अवसर:** शिक्षक छात्रों को अपने अनुभव और विचार व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। यह छात्रों को अपने विचारों को व्यवस्थित करने और समूह में चर्चा करने में सहायता करता है।
4. **प्रौद्योगिकी का उपयोग:** गेस्टाल्ट सिद्धांत के माध्यम से प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए छात्रों को विभिन्न जानकारियाँ एकत्रित करने के अवसर उत्पन्न किए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, छात्र कई स्रोतों से जानकारी एकत्र करके एक परियोजना बना सकते हैं।
5. **सृजनात्मक समस्या समाधान:** छात्रों को समस्या समाधान में सृजनात्मक दृष्टिकोण अपनाने के लिए कहा जा सकता है, जहाँ वे अपने विचारों और अनुभवों का उपयोग करके नए समाधान बना सकते हैं।

निष्कर्ष: गेस्टाल्ट शिक्षण सिद्धांत शिक्षा में एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण है जो छात्रों को उनके अनुभवों को एक संपूर्ण रूप में समझने में मदद करता है। इस सिद्धांत के अनुसार, छात्र अपने आस-पास के वातावरण और जानकारी को संगठित करके समस्याओं को हल करने में सक्षम होते हैं। कक्षा में गेस्टाल्ट सिद्धांत का अनुप्रयोग छात्रों में सृजनात्मकता, समन्वय, और सहयोग को उत्तेजित करता है, जिससे उनकी शिक्षण प्रक्रिया अधिक प्रभावी बनती है। इस प्रकार, शिक्षक छात्रों को स्वाभाविक रूप से सोचने और समस्याओं का समाधान करने के लिए प्रेरित करते हैं, जो उनके व्यक्तिगत और सामाजिक कौशल को सुधारने में मदद करता है। इस प्रकार, गेस्टाल्ट सिद्धांत शिक्षण प्रक्रिया में एक मूल्यवान योगदान करता है।

3. What is constructivism? Briefly explain 'Zone of Proximal Development' in Vygotsky's theory of Learning. 2018, 2020, 2022

Ans:

भूमिका: निर्मितिवाद एक महत्वपूर्ण शिक्षण सिद्धांत है जो छात्रों के अनुभवों और उनके वातावरण के साथ संवाद के माध्यम से ज्ञान निर्माण पर जोर देता है। यह शिक्षा को एक सक्रिय प्रक्रिया के रूप में मानता है, जहाँ छात्र अपने विचार और मत व्यक्त करते हैं। वायगोत्स्की के 'नैकट्य विकास की सीमा' (ZPD) का सिद्धांत छात्रों की सीखने की प्रक्रिया को समझाने में मदद करता है, जहाँ वे दूसरों की सहायता से नया ज्ञान प्राप्त करते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार, शिक्षक छात्रों के लिए उचित चुनौतियाँ और सहायता प्रदान करते हैं, जो उनके सीखने और विकास को अधिक व्यवस्थित और प्रभावी बनाता है।

निर्मितिवाद: निर्मितिवाद एक शिक्षण सिद्धांत है जो छात्रों के शिक्षा ग्रहण की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी को महत्व देता है। इस सिद्धांत के अनुसार, व्यक्ति अपने अनुभवों और उनके वातावरण के साथ संवाद करके अपने ज्ञान का निर्माण करते हैं। निर्मितिवाद का मुख्य विचार यह है कि छात्र अपने पूर्व ज्ञान और अनुभवों के आधार पर नए विचार बनाते हैं और अपनी सीखने की प्रक्रिया को व्यक्तिगत बनाते हैं।

निर्मितिवाद में शिक्षक की भूमिका छात्रों के लिए एक सहायक वातावरण बनाना है, जहाँ वे चर्चा, अनुसंधान, और समस्या समाधान के माध्यम से नए विचारों का निर्माण कर सकें। इसमें सहकारी गतिविधियाँ, परियोजना आधारित शिक्षा, और समस्या समाधान की रणनीतियों को शामिल किया जाता है।

वायगोत्स्की का सिद्धांत और नैकट्य विकास की सीमा (ZPD):

वायगोत्स्की की नैकट्य विकास की सीमा (ZPD) एक महत्वपूर्ण अवधारणा है जो शिक्षण प्रक्रिया को समझाने में मदद करती है। यह इस बात को दर्शाती है कि एक छात्र स्वतंत्र रूप से जो कर सकता है, और सहारे के माध्यम से जो कार्य कर सकता है, उनके बीच का क्षेत्र ZPD है।

ZPD के मुख्य विचार:

1. **स्वतंत्र कौशल:** ये वे कार्य हैं जिन्हें छात्र अकेले कर सकते हैं, जो उनके वर्तमान ज्ञान और क्षमताओं का प्रतिबिंब होते हैं। ये कौशल छात्र की आत्मनिर्भरता के स्तर को दर्शाते हैं।
2. **सहायता प्राप्त कौशल:** ये वे कार्य हैं जिन्हें सहायता और मार्गदर्शन के माध्यम से छात्र पूरा कर सकते हैं, जो उनके संभावित विकास के स्तर का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस स्तर पर छात्र मार्गदर्शन के माध्यम से नए कौशल प्राप्त करते हैं।
3. **शिक्षक की भूमिका:** शिक्षक ZPD में काम करते समय छात्रों को सहायता प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, वे प्रश्न पूछते हैं, निर्देश देते हैं, और प्रोत्साहित करते हैं, जो छात्रों की सीखने की प्रक्रिया को तेज करता है।

4. **सहकारी शिक्षा:** ZPD में छात्र एक-दूसरे के सहारे से सीखकर अपने सामाजिक और मानसिक विकास को बढ़ाते हैं। इस प्रक्रिया में छात्र अपने अनुभव साझा करते हैं और एक-दूसरे को प्रेरित करते हैं।
5. **शिक्षण का अनुकूलन:** शिक्षक छात्रों के ZPD के अनुसार पाठ योजना बनाते हैं, ताकि छात्रों को पर्याप्त चुनौती मिले और उनके ज्ञान के विकास के लिए उचित सहायता प्राप्त हो सके।
6. **कालिक पहलू:** ZPD एक गतिशील अवधारणा है, जो छात्र की आवश्यकताओं, अनुभवों और शिक्षक की गतिविधियों के आधार पर बदलती है।

<u>कक्षा में ZPD का अनुप्रयोग:</u>

1. **व्यक्तिगत शिक्षण:** शिक्षकों को छात्रों के ZPD के आधार पर पाठ योजनाएँ विकसित करनी चाहिए। इस प्रकार, वे छात्रों के लिए उपयुक्त चुनौतियाँ निर्धारित कर सकते हैं और उनकी सीखने की प्रक्रिया को बढ़ा सकते हैं।
2. **गpyn गतिविधियाँ:** छात्रों को समूह कार्य के माध्यम से सहयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। इससे वे एक-दूसरे के साथ सहयोग करते हैं और अपने ज्ञान के आधार पर समाधान खोजते हैं, जो उनके ZPD विकास में सहायक होता है।
3. **सहायक सामग्री:** शिक्षकों को विभिन्न सहायक सामग्री का उपयोग करना चाहिए, जैसे गाइड, हैंडआउट, या प्रौद्योगिकी का उपयोग, ताकि छात्र अपनी ZPD तक पहुँच सकें।
4. **मेंटोरिंग और कोचिंग:** शिक्षकों को छात्रों के मेंटर या कोच के रूप में कार्य करना चाहिए। वे कई प्रश्न और चुनौतियाँ प्रदान करते हैं और आवश्यकता के अनुसार छात्रों का मार्गदर्शन करते हैं।
5. **फीडबैक प्रदान करना:** शिक्षक छात्रों के काम के लिए स्पष्ट और प्रभावी फीडबैक प्रदान करते हैं, जो उन्हें अपने ZPD में आगे बढ़ने में मदद करता है। यह फीडबैक छात्रों की प्रगति की निगरानी में मदद करता है।
6. **समस्या समाधान गतिविधियाँ:** ZPD में कार्य करने के लिए समस्या समाधान आधारित गतिविधियों की योजना बनाई जा सकती है, जहाँ छात्र वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में अपनी समस्याओं को हल करना सीखते हैं।
7. **छात्रों का आत्म-प्रतिबिंब:** शिक्षकों को छात्रों को अपने सीखने की प्रक्रिया के बारे में आत्म-प्रतिबिंब करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, ताकि वे समझ सकें कि किन क्षेत्रों में उन्हें सुधार करने की आवश्यकता है और अपनी ZPD को सही ढंग से कैसे निर्धारित करना है।
8. **अभिभावकों को शामिल करना:** शिक्षकों को छात्रों के अभिभावकों को ZPD के सिद्धांत के बारे में जानकारी देकर उन्हें मदद करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, ताकि वे घर पर छात्रों की सीखने की प्रक्रिया में सहायता कर सकें।

<u>निष्कर्ष:</u> वायगोत्स्की की नैकट्य विकास की सीमा (ZPD) छात्रों की सीखने की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। यह शिक्षकों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है, जिससे वे छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं और क्षमताओं के अनुसार शिक्षा प्रदान कर सकें। ZPD का अनुप्रयोग कक्षा में छात्रों के बीच सहयोग, समन्वय, और रचनात्मकता को बढ़ाता है। इससे शिक्षक समय पर और उचित

सहायता प्रदान कर सकते हैं, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होता है। नतीजतन, छात्र अपनी पूरी क्षमता को व्यक्त कर सकते हैं और अपने शैक्षणिक और सामाजिक कौशल को बढ़ा सकते हैं। ZPD का प्रभावी उपयोग सीखने की प्रक्रिया को अधिक फलदायी और प्रभावी बनाता है।

4. State in brief the Strategies for remedial teaching and enrichment programme taken by the schools for slow learners. 2018, 2021

Ans:

भूमिका: विद्यालय में पिछड़े या धीमी गति से सीखने वाले विद्यार्थियों के लिए उपचारात्मक शिक्षण और समृद्धिकरण कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। जब ये विद्यार्थी अपने सहपाठियों की तुलना में धीमी गति से सीखते हैं, तो उनकी शैक्षिक प्रगति बाधित होती है। उनके लिए विशेष रणनीतियाँ अपनाने की आवश्यकता होती है ताकि वे अपनी संभावनाओं के अनुसार विकसित हो सकें। शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय के सहयोग से इन विद्यार्थियों के सीखने के तरीके में सुधार संभव है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के अपने गति और क्षमता के अनुसार उनके सीखने की प्रक्रिया को समृद्ध करना है, ताकि वे शिक्षा के मुख्यधारा में लौट सकें।

पिछड़े विद्यार्थियों के लिए उपचारात्मक कार्यक्रम की रणनीतियाँ:

1. **व्यक्तिगत शिक्षण:** व्यक्तिगत शिक्षण रणनीति के अनुसार, शिक्षकों को विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान, अनुभव और सीखने की गति के आधार पर सामग्री प्रदान करनी चाहिए। इससे विद्यार्थियों को अपनी गति से सीखने का अवसर मिलता है, जो उनकी आत्मविश्वास और रुचि को बढ़ाता है। व्यक्तिगत पाठ योजना बनाना महत्वपूर्ण है।
2. **समर्थनशील वातावरण:** एक समर्थनशील वातावरण कक्षा में सीखने के लिए अनिवार्य है। शिक्षकों को सुरक्षा और प्रोत्साहन प्रदान करना चाहिए, ताकि विद्यार्थी अपनी सोच को व्यक्त कर सकें। इस प्रकार के वातावरण में विद्यार्थी रचनात्मकता से सोचते हैं और सहयोग करते हैं, जिससे उनका आत्मविश्वास और सीखने का अनुभव बढ़ता है।
3. **समूह गतिविधियाँ:** समूह गतिविधियाँ विद्यार्थियों के बीच सहयोग और सामाजिक संबंध बनाने में मदद करती हैं। इसमें विद्यार्थी एक-दूसरे के साथ चर्चा करते हैं और विभिन्न दृष्टिकोणों से समस्याओं के समाधान खोजते हैं। इस प्रकार की गतिविधियाँ पिछड़े विद्यार्थियों के लिए एक सुरक्षित स्थान तैयार करती हैं, जहाँ वे सक्रिय रूप से भाग ले सकते हैं।
4. **उपयुक्त सहायक सामग्री:** शिक्षक विभिन्न सहायक सामग्री, जैसे दृश्य सहायक, मल्टीमीडिया उपकरण और प्रौद्योगिकी का उपयोग करके विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया को सरल बना सकते हैं। ये सामग्री विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करती हैं और सीखने के अनुभव को और अधिक आकर्षक बनाती हैं, जिससे उनके ज्ञान में वृद्धि होती है।
5. **समस्या समाधान आधारित शिक्षण:** समस्या समाधान आधारित शिक्षण में विद्यार्थी वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में अपनी समस्याओं का समाधान करना सीखते हैं। इस पद्धति में विद्यार्थी तर्क, विश्लेषण और रचनात्मक सोच के माध्यम से समस्याओं का समाधान खोजते हैं। यह उनके रणनीतिक सोच और सहयोग को बढ़ाता है।

6. **प्रतिक्रिया और मूल्यांकन:** नियमित प्रतिक्रिया और मूल्यांकन विद्यार्थियों की प्रगति की निगरानी के लिए महत्वपूर्ण हैं। शिक्षक विद्यार्थियों के काम पर सटीक और प्रभावी प्रतिक्रिया देकर उनकी ताकत और कमजोरियों की पहचान कर सकते हैं। इससे विद्यार्थियों को अपनी गलतियों से सीखने का अवसर मिलता है, जिससे उनकी सुधार की प्रक्रिया तेज होती है।
7. **मेंटॉरशिप और काउंसलिंग:** विद्यार्थियों के लिए मानसिक और भावनात्मक सहायता मेन्टर्स या काउंसलर के माध्यम से प्रदान की जाती है। मेंटर्स विद्यार्थियों को कई प्रश्नों और चुनौतियों का सामना करने में मदद करते हैं, जो उनके आत्मविश्वास और समस्याओं के समाधान करने की क्षमता को बढ़ाता है। काउंसलिंग सत्र उनके मानसिक स्वास्थ्य को सुधारने में सहायक होते हैं।
8. **अभिभावकों की सहभागिता:** अभिभावकों को स्कूल की गतिविधियों में शामिल करना विद्यार्थियों के सीखने में मदद कर सकता है। अभिभावक घर पर अपने बच्चों की पढ़ाई में मदद कर सकते हैं, जिससे विद्यार्थियों के लिए एक स्थिर सहायक वातावरण तैयार होता है। अभिभावकों के साथ नियमित संवाद विद्यार्थियों की प्रगति और चुनौतियों के बारे में जागरूकता बढ़ाता है।

उपसंहार: पिछड़े विद्यार्थियों के लिए उपचारात्मक शिक्षण और समृद्धिकरण कार्यक्रम की रणनीतियाँ विद्यार्थियों के सीखने के अनुभव को सुधारने और उनकी क्षमताओं के अनुसार शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। व्यक्तिगत शिक्षण, समर्थनशील वातावरण, समूह गतिविधियाँ, उपयुक्त सहायक सामग्री, समस्या समाधान आधारित शिक्षण, प्रतिक्रिया और मूल्यांकन, मेंटॉरशिप, और अभिभावकों की सहभागिता इन रणनीतियों में शामिल हैं। ये रणनीतियाँ विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ाती हैं, उनके सामाजिक और भावनात्मक विकास में सहायता करती हैं, और उनके सीखने की प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी बनाती हैं। इसके परिणामस्वरूप, पिछड़े विद्यार्थी शिक्षा के मुख्यधारा में लौटने में सक्षम होते हैं।

5. What do you mean by Guidance? Discuss in brief, the necessity of guidance in education. 2019

Ans:

भूमिका: शिक्षा में मार्गदर्शन एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो छात्रों को जीवन के विभिन्न चरणों में सही निर्णय लेने और समस्याओं को हल करने में मदद करता है। मार्गदर्शन के माध्यम से छात्र अपने शैक्षिक, व्यक्तिगत और व्यावसायिक लक्ष्यों को निर्धारित कर सकते हैं और उन्हें प्राप्त करने की दिशा में बढ़ सकते हैं। शिक्षाक्षेत्र में मार्गदर्शन न केवल पाठ्यक्रम तक सीमित होता है; यह उनके व्यक्तित्व, कौशल और आत्मविश्वास के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके माध्यम से छात्रों में सामाजिक, व्यावसायिक और जीवन से संबंधित कौशलों का विकास होता है, जो भविष्य में उनकी प्रगति के लिए सहायक होता है।

मार्गदर्शन: मार्गदर्शन एक प्रक्रिया है, जो व्यक्ति को सही दिशा में ले जाने और व्यक्तिगत, शैक्षिक या व्यावसायिक जीवन में सहायता प्रदान करने के लिए प्रयोग होती है। इसके माध्यम से व्यक्ति अपने लक्ष्यों को निर्धारित कर सकता है, निर्णय ले सकता है और विभिन्न चुनौतियों का सामना कर सकता है। मार्गदर्शन छात्र या व्यक्ति की आवश्यकताओं और रुचियों के अनुसार सहायता प्रदान करता है और आत्म-विकास में सहायक भूमिका निभाता है। यह केवल जानकारी देने तक सीमित नहीं है; बल्कि यह

दिशा-निर्देश प्रदान करने, समस्याओं के समाधान के तरीके सिखाने और आत्मविश्वास बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण साधन है।

<u>शिक्षा में मार्गदर्शन की आवश्यकता:</u>

1. **सकारात्मक शिक्षण वातावरण का निर्माण:** मार्गदर्शन छात्रों के लिए सकारात्मक और सहायक वातावरण का निर्माण करता है, जो उनकी सीखने की रुचि और आत्मविश्वास को बढ़ाता है। यह उन्हें समसामयिक चुनौतियों का सामना करने में मदद करता है, जिससे उनका सीखने का अनुभव अधिक फलदायक हो जाता है।
2. **शैक्षिक लक्ष्य निर्धारण में सहायक:** मार्गदर्शन के माध्यम से छात्र अपने लक्ष्य को निर्धारित कर सकते हैं और उचित योजना बना सकते हैं। यह उन्हें शैक्षिक और व्यावसायिक लक्ष्यों की पूर्ति में मदद करता है और भविष्य में उनके करियर विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
3. **आत्मविश्वास में वृद्धि:** मार्गदर्शन छात्रों के आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहायक होता है, क्योंकि यह उन्हें सही दिशा प्रदान करता है। जब छात्र सही मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं, तो वे अपनी क्षमताओं में विश्वास उत्पन्न करते हैं, जो उनकी प्रगति में सहायक होता है।
4. **व्यक्तिगत विकास के लिए सहायक:** मार्गदर्शन के माध्यम से छात्र व्यक्तिगत रूप से कौशल और योग्यताएँ प्राप्त कर सकते हैं। यह उनके सोचने के तरीके, भावनाओं और व्यवहार को सुधारता है, जो व्यक्तिगत विकास में सहायक भूमिका निभाता है और सफल शैक्षिक जीवन के लिए आवश्यक है।
5. **सही निर्णय लेने की कुशलता:** शिक्षा में मार्गदर्शन छात्रों को सही निर्णय लेने की कुशलता सिखाता है। यह उन्हें विभिन्न विकल्पों और अवसरों का मूल्यांकन करना सिखाता है, जिससे उन्हें जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय लेने में मदद मिलती है और आत्मनिर्भर बनाता है।
6. **सोचने की शक्ति और विश्लेषणात्मक क्षमता में वृद्धि:** मार्गदर्शन छात्रों की सोचने की शक्ति और विश्लेषणात्मक क्षमता को बढ़ाता है, जो उन्हें ज्ञान प्राप्त करने और समस्याओं को हल करने में मदद करता है। छात्र अधिक रचनात्मक और तर्कपूर्ण बनते हैं, जिससे उनकी शैक्षिक कुशलता में वृद्धि होती है।
7. **मनोबल और धैर्य शक्ति में वृद्धि:** शिक्षा में मार्गदर्शन के माध्यम से छात्र मनोबल और धैर्य का विकास कर सकते हैं। यह उन्हें कठिन समय में मनोबल बनाए रखने में मदद करता है और जीवन की चुनौतियों का सामना करने में धैर्य प्रदान करता है।
8. **सामाजिक कौशल का विकास:** मार्गदर्शन छात्रों के सामाजिक कौशल को बढ़ाने में सहायक होता है, क्योंकि यह उन्हें अन्य लोगों के साथ सहयोग और सामंजस्य बिठाना सिखाता है। इससे छात्र अपने वातावरण में बेहतर तरीके से मेलजोल कर सकते हैं।
9. **प्रेरणा और रुचि का संरक्षण:** मार्गदर्शन के माध्यम से छात्रों की प्रेरणा और रुचि को बनाए रखा जा सकता है। यह उन्हें कठिन समय में प्रोत्साहित करता है और उनके लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है, जिससे वे अपनी पढ़ाई में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।
10. **दृष्टिकोण का परिवर्तन और सुधार:** मार्गदर्शन छात्रों में सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करता है और उनके मनोभावों में परिवर्तन लाने में सहायक होता है। यह उन्हें जीवन के प्रति एक वास्तविक और सकारात्मक दृष्टिकोण बनाने में मदद करता है, जो उनके शिक्षाजगत में प्रगति के लिए सहायक होता है।

उपसंहार: शिक्षा में मार्गदर्शन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह छात्रों को सही मार्ग में ले जाने में सहायक होता है। मार्गदर्शन के माध्यम से छात्र सही लक्ष्यों को निर्धारित कर सकते हैं, आत्मविश्वास में वृद्धि कर सकते हैं और सोचने की शक्ति तथा सामाजिक कौशलों का विकास कर सकते हैं। यह उन्हें समस्याओं का समाधान करने, सकारात्मक मनोभाव बनाने और जीवन के प्रति सही दृष्टिकोण अपनाने की दिशा में सक्षम बनाता है। इसलिए, शिक्षा में मार्गदर्शन एक आवश्यक तत्व के रूप में कार्य करता है, जो छात्रों को शैक्षिक और व्यक्तिगत जीवन में सफलता प्राप्त करने में सहायक होता है।

6. Discuss the Piaget`s cognitive constructivist learning theory. Mention the educational significance of this theory. 2019

Ans:

भूमिका: प्याज के प्रज्ञामूलक निर्माणवाद का सिद्धांत शैक्षिक निर्माणवाद का एक उन्नत रूप है, जो ज्ञान अधिग्रहण और सीखने की प्रगतिशील विकास प्रक्रिया को समझाता है। इस सिद्धांत के अनुसार, शिक्षार्थी विभिन्न स्तरों पर ज्ञान का निर्माण करते हैं, जहाँ प्रत्येक स्तर प्याज की परतों की तरह पूर्व स्तर पर आधारित होता है। यह शिक्षा की सक्रिय और निरंतर प्रक्रिया को दर्शाता है, जहाँ शिक्षार्थी अपने पिछले अनुभवों के साथ नए विचारों को जोड़कर ज्ञान का निर्माण करते हैं। यह सिद्धांत केवल जानकारी इकट्ठा करने पर नहीं, बल्कि सोच, विश्लेषण और व्यावहारिक अनुप्रयोग के माध्यम से ज्ञान के निर्माण पर जोर देता है।

प्याज का प्रज्ञामूलक निर्माणवाद: प्याज के प्रज्ञामूलक निर्माणवाद का सिद्धांत शैक्षिक निर्माणवाद का एक रूप है, जो शिक्षार्थियों द्वारा ज्ञान के स्तरीय अधिग्रहण प्रक्रिया को समझाता है। इस सिद्धांत में, प्याज की तरह ज्ञान कई परतों में विकसित होता है, जहाँ प्रत्येक परत पिछले स्तर पर आधारित होती है। शिक्षार्थी अपने व्यक्तिगत अनुभवों, वातावरण और नई जानकारी के माध्यम से अपने ज्ञान का निर्माण करते हैं।

प्रत्येक परत नए विचारों और विश्लेषण के माध्यम से बनाई जाती है, जो लगातार गहरी और जटिल होती जाती है। यह शिक्षार्थियों को केवल जानकारी प्राप्तकर्ता के रूप में नहीं, बल्कि ज्ञान निर्माता के रूप में स्थापित करता है, जो शिक्षा के उद्देश्य को और अधिक अर्थपूर्ण बनाता है।

प्याज के प्रज्ञामूलक निर्माणवाद की मुख्य विशेषताएँ:

1. **स्तरीय अधिग्रहण प्रक्रिया:** प्याज की तरह, शिक्षा की परतें धीरे-धीरे निर्मित होती हैं। शिक्षार्थी अपने पिछले ज्ञान और अनुभव के आधार पर नए स्तर पर पहुँचते हैं, जो और गहरा और जटिल होता जाता है।
2. **अनुभव और जुड़ाव:** शिक्षार्थी अपने पिछले अनुभवों और नई जानकारी के बीच संबंध स्थापित कर ज्ञान का निर्माण करते हैं। यह व्यक्तिगत और सामाजिक अनुभवों को प्राथमिकता देता है।
3. **सक्रिय भागीदारी:** शिक्षार्थी सक्रिय रूप से सीखने की प्रक्रिया में भाग लेते हैं और अपने ज्ञान का निर्माण करते हैं। वे केवल जानकारी एकत्र करने वाले नहीं होते, बल्कि रचनात्मक सोच और विश्लेषण के माध्यम से ज्ञान का निर्माण करते हैं।

4. **प्रज्ञामूलक ढाँचा:** शिक्षार्थियों का ज्ञान एक ढाँचे के भीतर होता है, जहाँ वे नई जानकारी को पुराने विचारों के साथ मिलाते हैं, जो सीखने को अधिक प्रभावी बनाता है।
5. **संवाद और सहयोग:** सीखने की प्रक्रिया में शिक्षार्थियों के बीच संवाद और सहयोग को प्रोत्साहित किया जाता है, ताकि वे एक-दूसरे के ज्ञान और विचारों को समृद्ध कर सकें।

शैक्षिक महत्त्व:

1. **निर्माणात्मक अधिगम:** प्याज के प्रज्ञामूलक निर्माणवाद शिक्षार्थियों को सक्रिय रूप से सीखने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह उन्हें अपने अनुभवों के आधार पर नए विचार बनाने में मदद करता है, जिससे सीखने की प्रक्रिया और गहरी हो जाती है।
2. **व्यक्तिगत शिक्षण:** प्रत्येक शिक्षार्थी का अनुभव अलग होता है, और यह सिद्धांत उस व्यक्तिगत अनुभव को महत्व देता है। यह शिक्षा को व्यक्तिगत रूप से अनुकूलित करने में मदद करता है।
3. **समस्या-आधारित अधिगम:** यह सिद्धांत शिक्षार्थियों की समस्या समाधान करने की क्षमता को बढ़ाने में मदद करता है, क्योंकि वे अपने अनुभव और ज्ञान का उपयोग करके नई समस्याओं का समाधान खोजते हैं।
4. **सक्रिय और इंटरैक्टिव शिक्षण विधियाँ:** शिक्षार्थी जानकारी के आदान-प्रदान और सहयोग के माध्यम से सीखने में सक्षम होते हैं, जो समूह शिक्षण का विकास करता है।
5. **भावनाएँ और ज्ञान का संबंध:** इस सिद्धांत में भावनाओं को शिक्षा के साथ जोड़ा जाता है, जिससे ज्ञान शिक्षार्थियों के लिए और अधिक अर्थपूर्ण और स्थायी हो जाता है।

उपसंहार: प्याज के प्रज्ञामूलक निर्माणवाद का सिद्धांत ज्ञान अधिग्रहण की एक स्तरीय और प्रगतिशील प्रक्रिया को समझाता है। शिक्षार्थी अपने पिछले अनुभवों और नई जानकारी के बीच संबंध स्थापित करके सक्रिय रूप से ज्ञान का निर्माण करते हैं। यह सिद्धांत शिक्षा को अधिक प्रभावी, व्यक्तिगत और समावेशी बनाता है, जहाँ शिक्षार्थी अपने ज्ञान का निर्माण करने में सक्षम होते हैं। शैक्षिक दृष्टिकोण से, यह शिक्षार्थियों की समस्या समाधान, विश्लेषण और सोचने की क्षमता को बेहतर बनाता है। शिक्षकों की भूमिका केवल निर्देश देने की नहीं, बल्कि ऐसे वातावरण का निर्माण करने की है जहाँ शिक्षार्थी अपने अनुभवों के आधार पर सक्रिय रूप से सीख सकें।

7. Describe briefly Carl Roger's Self-Concept theory and its educational implication. 2022, 2023

Ans:

भूमिका: कार्ल रॉजर्स का 'Self-Concept' सिद्धांत मानवतावादात्मक मनोविज्ञान और शिक्षा में एक महत्वपूर्ण योगदान है। इस सिद्धांत के अनुसार, किसी व्यक्ति का आत्म-धारणा या Self-Concept उनके व्यक्तित्व और व्यवहार की नींव बनाता है। एक व्यक्ति अपने बारे में कैसे सोचता है, उनके आदर्श स्वयं और आत्म-सम्मान के माध्यम से Self-Concept का निर्माण होता है। शिक्षा के क्षेत्र में, यह सिद्धांत छात्रों के मानसिक विकास, आत्म-विश्वास बढ़ाने, और सीखने के प्रति दृष्टिकोण बनाने में विशेष भूमिका निभाता है। एक सकारात्मक Self-Concept छात्र की सीखने की प्रक्रिया को समृद्ध कर सकता है और उसे जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद कर सकता है।

कार्ल रॉजर्स के 'Self-Concept' सिद्धांत का संक्षेप:

कार्ल रॉजर्स एक मानवतावादात्मक मनोवैज्ञानिक थे, और उन्होंने 'Self-Concept' या आत्म-धारणा का सिद्धांत प्रस्तुत किया। उनके अनुसार, Self-Concept एक व्यक्ति के अपने बारे में विचारों और भावनाओं का संपूर्णता है, जो व्यक्तित्व और व्यवहार की नींव बनाता है।

Self-Concept के तीन मुख्य तत्व:

1. **Self-Image (स्व-चित्र):** Self-Image वह है, जिसे व्यक्ति अपने बारे में सोचता है या देखता है। यह एक व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, और सामाजिक स्थिति के बारे में विचारों को आकार देती है। उदाहरण के लिए, यदि कोई छात्र अपनी शारीरिक संरचना या शैक्षणिक सफलता के बारे में नकारात्मक धारणा रखता है, तो उनका स्व-चित्र नकारात्मक हो सकता है, जिससे उनका आत्म-विश्वास और व्यवहार प्रभावित होगा।
2. **Ideal Self (आदर्श स्व):** Ideal Self वह है, जिसे व्यक्ति बनना चाहता है। यह व्यक्ति की आकांक्षाओं, लक्ष्यों और इच्छाओं का प्रतिबिंब है। यदि कोई व्यक्ति अपने Ideal Self के साथ मेल नहीं खा पाता, तो इससे निराशा और आत्म-विश्वास की कमी उत्पन्न हो सकती है। उदाहरण के लिए, यदि कोई छात्र अपने Ideal Self के रूप में एक सफल चिकित्सक बनना चाहता है, लेकिन वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक कदम उठाने में असफल रहता है, तो वह निराश हो सकता है।
3. **Self-Esteem (आत्ममर्यादा):** Self-Esteem वह है, जिसमें व्यक्ति अपनी मूल्यांकन कैसे करता है। यह आत्म-विश्वास और आत्म-सम्मान का एक माप है। यदि कोई व्यक्ति अपनी आत्ममर्यादा को उच्च मानता है, तो वह सामान्यतः स्वतःस्फूर्त, साहसी और उद्यमी होता है। दूसरी ओर, यदि उसकी आत्म-सम्मान कम होती है, तो वह संकुचित और उदासीन हो सकता है।

कार्ल रॉजर्स के 'Self-Concept' सिद्धांत के विशेषताएँ:

1. **स्व-चित्र (Self-Image):** Self-Image वह है, जिसमें व्यक्ति खुद को कैसे देखता है या कैसे सोचता है। यह शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्थितियों के बारे में विचारों को आकार देती है। यदि स्व-चित्र सकारात्मक है, तो आत्म-विश्वास बढ़ता है, जबकि नकारात्मक होने पर आत्म-सम्मान में कमी आती है।
2. **आदर्श स्व (Ideal Self):** Ideal Self वह है, जिसे व्यक्ति बनना चाहता है। यह व्यक्ति की आकांक्षाएँ, लक्ष्य और इच्छाओं का प्रतिबिंब है। जब कोई व्यक्ति अपने आदर्श स्व के साथ मेल खाता है, तो उसके आत्म-विश्वास और संतोष में वृद्धि होती है।
3. **आत्म-सम्मान (Self-Esteem):** Self-Esteem वह है, जिसमें व्यक्ति अपनी मूल्यांकन कैसे करता है। यह आत्म-विश्वास और आत्म-सम्मान का माप है। उच्च आत्म-सम्मान व्यक्ति को सक्रिय, उद्यमी और साहसी बनाता है, जो सीखने और सामाजिक संबंधों पर प्रभाव डालता है।
4. **अनुभव का प्रभाव (Influence of Experience):** Self-Concept का निर्माण प्रक्रिया जन्म के बाद शुरू होती है और यह जीवन के अनुभवों, पारिवारिक प्रभाव, सामाजिक वातावरण और सांस्कृतिक मूल्यों द्वारा प्रभावित होती है। अनुभव जितना विविध और समृद्ध होगा, Self-Concept उतना ही अधिक स्थिर और संगठित होगा।

5. **गतिशील प्रकृति (Dynamic Nature):** Self-Concept एक गतिशील प्रक्रिया है, जो परिवर्तनशील और विकसित होती है। व्यक्ति नए अनुभवों और जानकारी के आधार पर अपने Self-Concept का पुनर्निर्माण करते हैं। यह मानसिक स्वास्थ्य और विकास के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह सीखने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाता है।

<u>कार्ल रॉजर्स के 'Self-Concept' सिद्धांत के शैक्षिक अनुप्रयोग:</u>

कार्ल रॉजर्स का 'Self-Concept' सिद्धांत शिक्षा में कई महत्वपूर्ण अनुप्रयोगों का योगदान देता है। रॉजर्स के अनुसार, Self-Concept या आत्म-धारणा व्यक्ति के अपने बारे में विचार और आत्म-सम्मान का एक आईना है। यह व्यक्ति के व्यवहार, विचारों, और भावनाओं को प्रभावित करता है। इस सिद्धांत के कई शैक्षिक अनुप्रयोग निम्नलिखित हैं:

1. **छात्र-केंद्रित शिक्षा:** रॉजर्स के सिद्धांत के अनुसार, शिक्षकों को छात्रों की अनोखी पहचान और आत्म-विश्वास पर जोर देना चाहिए। छात्रों के विचारों और भावनाओं के आधार पर पाठ्यक्रम का विकास उनके आत्म-विश्वास को बढ़ावा देने में मदद करता है।
2. **आत्म-सम्मान विकास:** शिक्षा में आत्म-सम्मान को बढ़ाना आवश्यक है। शिक्षकों को ऐसे वातावरण का निर्माण करना चाहिए जो छात्रों की क्षमताओं के प्रति आत्म-जागरूकता को बढ़ावा दे। यह उनकी रचनात्मकता और समस्या समाधान कौशल को बढ़ाता है।
3. **प्रतिसाद और समर्थन:** छात्रों को सकारात्मक प्रतिसाद और समर्थन देने से उनकी आत्म-धारणा में सुधार होता है। रॉजर्स के अनुसार, छात्रों के आत्म-विश्वास और मानसिक स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित और सहायक वातावरण बनाना अनिवार्य है।
4. **आलोचना और मूल्यांकन:** शिक्षकों को छात्रों को आत्म-आलोचना के अवसर प्रदान करना चाहिए। इससे छात्र अपनी क्षमताओं और सुधार के क्षेत्रों को पहचानने में सक्षम होते हैं, जो उनकी आत्म-धारणा को बढ़ाता है।
5. **प्रगति की निगरानी:** शिक्षकों को छात्रों की प्रगति पर नजर रखनी चाहिए और उसे आत्म-विश्वास के आधार पर मूल्यांकन करना चाहिए। छात्रों को अपनी गलतियों से सीखने की अनुमति देना उनके आत्म-विश्वास को और मजबूत करता है।
6. **मानसिक स्वास्थ्य:** शिक्षा में मानसिक स्वास्थ्य पर चर्चा और समर्थन छात्रों के आत्म-विश्वास और आत्म-सम्मान को बढ़ा सकता है।
7. **सामाजिक संबंध:** शिक्षकों को छात्रों के बीच सामाजिक संबंधों के निर्माण पर जोर देना चाहिए। यह उनके आत्म-सम्मान और सहयोग की भावना को बढ़ाता है।

<u>निष्कर्ष:</u> कार्ल रॉजर्स का 'Self-Concept' सिद्धांत शिक्षा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह सिद्धांत छात्रों की आत्म-धारणा और आत्म-सम्मान को बढ़ाने पर जोर देता है, जो उनकी रचनात्मकता और समस्या समाधान कौशल में सुधार करता है। जब शिक्षक सकारात्मक प्रतिसाद देते हैं और सुरक्षित, सहायक वातावरण का निर्माण करते हैं, तो छात्र अपनी क्षमताओं के प्रति अधिक जागरूक हो जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप, उनका आत्म-विश्वास बढ़ता है और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार होता है। इसलिए, रॉजर्स के सिद्धांत पर आधारित शिक्षा में आत्म-धारणा का महत्व अत्यधिक है।

8. Write down in brief theories of transfer of learning. What steps a teacher should follow in class for better transfer for learning. 2022, 2023

Ans:

परिचय: शिक्षा में सीखने के संचरण के सिद्धांत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये सिद्धांत छात्रों की सीखने की प्रक्रियाओं और अनुभवों को निर्देशित करते हैं, जिससे उनके मानसिक और सामाजिक विकास में सहायता मिलती है। निर्माणवाद, व्यवहारवाद, संज्ञानात्मक सिद्धांत, और सामाजिक सीखने के सिद्धांत विभिन्न दृष्टिकोणों से सीखने की प्रक्रिया का विश्लेषण करते हैं। एक शिक्षक के रूप में, सीखने के संचरण को प्रभावी बनाने के लिए छात्रों में रुचि पैदा करना, विभिन्न सीखने की शैलियों पर विचार करना और सहायक वातावरण तैयार करना आवश्यक है। इन सिद्धांतों के माध्यम से शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाया जा सकता है, जिससे छात्र सफलतापूर्वक ज्ञान और कौशल प्राप्त कर सकते हैं।

सीखने का संचरण: सीखने का संचरण एक प्रक्रिया है जहां पहले से प्राप्त ज्ञान या अनुभव को नए परिस्थितियों में लागू किया जाता है। यह सीखने का एक महत्वपूर्ण पहलू है क्योंकि यह सुनिश्चित करता है कि पिछले ज्ञान का प्रभाव नए सीखने के संदर्भ में अनुभव किया जाए। एच.सी. एलिस (1956) के अनुसार, सीखने का संचरण का अर्थ है कि किसी कार्य का अनुभव या कौशल अगले कार्य की प्रभावशीलता को प्रभावित करता है। गुंथ्री और पॉवर्स (1973) कहते हैं कि यह व्यवहार को फैलाने और लागू करने की प्रक्रिया है। मेयर और विट्रॉक (1996) के अनुसार, संचरण तब होता है जब पहले सीखी गई सामग्री वर्तमान सीखने को प्रभावित करती है या जब एक समस्या का समाधान नई समस्याओं के समाधान को प्रभावित करता है। इसलिए, सीखने का संचरण सीखने की एक प्रगतिशील और आवश्यक प्रक्रिया है, जो छात्रों के कौशल और ज्ञान को बढ़ाने में सहायता करती है।

सीखने के संचरण के सिद्धांत की विशेषताएँ:

1. **छात्र-केंद्रितता:** सीखने का संचरण छात्रों की आवश्यकताओं और रुचियों पर आधारित होता है। छात्रों को सक्रिय रूप से भाग लेने, सोचने और समस्याओं को हल करने के लिए प्रेरित किया जाता है।
2. **सहयोग:** सीखने की गतिविधियाँ छात्रों के बीच सहयोग और टीमवर्क के माध्यम से संचालित होती हैं। छात्र आपस में संवाद करते हैं और विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, जिससे सीखने की प्रक्रिया समृद्ध होती है।
3. **अनुभव आधारित सीखना:** सीखने का संचरण विभिन्न अनुभवों के माध्यम से सीखने पर जोर देता है। छात्र वास्तविक जीवन की समस्याओं और परिस्थितियों के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करते हैं।
4. **फीडबैक और मूल्यांकन:** छात्रों को सीखने की प्रक्रिया में नियमित और सकारात्मक फीडबैक प्रदान किया जाता है। यह उन्हें अपनी प्रगति और सुधार के अवसरों को समझने में मदद करता है।
5. **गतिशीलता और अनुकूलन:** सीखने का संचरण एक गतिशील प्रक्रिया है, जो नए जानकारी और अनुभवों के आधार पर बदलती है। शिक्षकों की कार्रवाई और छात्रों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर योजना को समायोजित किया जा सकता है।

एक शिक्षक उत्तम सीखने के संचरण के लिए क्या कदम उठा सकता है:

1. **छात्रों में रुचि पैदा करना:** पाठ के प्रारंभ में छात्रों को उत्तेजक प्रश्नों या खेलों के माध्यम से आकर्षित करें। इससे वे विषय के प्रति उत्साहित महसूस करेंगे और सीखने के लिए प्रेरित होंगे।
2. **छात्रों की आवश्यकताओं और रुचियों पर विचार करना:** छात्रों की रुचियों और अनुभवों के आधार पर पाठ्यक्रम तैयार करें। उनके विचारों को सुनना और भागीदारी को प्रोत्साहित करना शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाता है और छात्रों का आत्मविश्वास बढ़ाता है।
3. **सहयोगी शिक्षण का वातावरण तैयार करना:** छात्रों के बीच सहयोग के अवसर बनाने के लिए समूह कार्य और चर्चा का आयोजन करें। इससे वे एक-दूसरे के साथ सीख सकते हैं और संबंध बना सकते हैं, जो उनके सीखने की प्रक्रिया को समृद्ध करेगा।
4. **विभिन्न सीखने की शैलियों को अपनाना:** छात्रों की सीखने की शैलियों की विविधता पर विचार करें और विभिन्न विधियों को लागू करें। दृश्य, श्रव्य, और काइनेस्टेटिक सीखने का उपयोग करने से छात्रों को और अधिक प्रभावी ढंग से सीखने में मदद मिलेगी।
5. **अनुभव आधारित सीखने के अवसर प्रदान करना:** वास्तविक जीवन के उदाहरण और व्यावहारिक अनुभव प्रदान करें। परियोजनाओं, अनुसंधान, और क्षेत्र यात्राओं के माध्यम से छात्रों के सीखने के अनुभव को समृद्ध करें, जिससे उनकी सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावी हो सके।
6. **नियमित मूल्यांकन और फीडबैक:** छात्रों का नियमित मूल्यांकन करें और उनके कार्यों पर सकारात्मक फीडबैक दें। यह उनकी प्रगति पर नज़र रखने और उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने में मदद करता है।
7. **शिक्षण परिणामों की निगरानी:** छात्रों की प्रगति की निगरानी करें और आवश्यकतानुसार पाठ्यक्रम को संशोधित करें। इससे छात्रों की आवश्यकताओं के अनुसार गतिविधियों को समायोजित करने में मदद मिलेगी, जो सीखने में सहायक होगी।
8. **समर्थनकारी वातावरण बनाना:** कक्षा में एक सुरक्षित और समर्थनकारी वातावरण स्थापित करें जहाँ छात्र स्वतंत्र रूप से अपने विचार व्यक्त कर सकें, प्रश्न पूछ सकें, और अपनी चिंताओं को साझा कर सकें।
9. **शिक्षण उद्देश्यों और लक्ष्यों को स्पष्ट करना:** पाठ के उद्देश्यों और लक्ष्यों को स्पष्ट रूप से समझाएं। इससे छात्रों को यह जानकारी मिलेगी कि वे क्या सीखने जा रहे हैं और यह क्यों महत्वपूर्ण है, जो सीखने के लिए प्रेरणा उत्पन्न करेगा।
10. **स्वयं-प्रतिबिंब के अवसर प्रदान करना:** छात्रों को अपने कार्यों का मूल्यांकन करने और उन पर आलोचना करने की अनुमति दें। इससे उन्हें अपनी ताकत और कमजोरियों को पहचानने में मदद मिलेगी, जो आत्मविश्वास और विकास को बढ़ावा देगा।

निष्कर्ष: कक्षा में प्रभावी सीखने के संचरण के लिए, शिक्षकों के लिए प्रभावी कदम उठाना आवश्यक है। छात्रों में रुचि पैदा करके, उनकी आवश्यकताओं और रुचियों पर विचार करके, और सहयोगात्मक वातावरण को बढ़ावा देकर, शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया को बेहतर बना सकते हैं। विभिन्न सीखने की शैलियों को अपनाने और अनुभव आधारित सीखने के अवसर प्रदान करने से छात्रों के कौशल में सुधार होता है। नियमित मूल्यांकन और फीडबैक छात्रों के आत्मविश्वास और मनोबल को मजबूत करते हैं। अंत में, एक सुरक्षित और समर्थनकारी वातावरण बनाना, छात्रों को स्वयं-प्रतिबिंब के अवसर प्रदान करना, और शैक्षणिक उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करना शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाता है।

****

Course: 1.2.3 (Learning & Teaching) 2nd Half (Teaching)

Marks: 2

1. State any two factors which influence Teaching. 2017, 2021

Ans: शिक्षण को प्रभावित करने वाले दो कारक हैं:

1. **छात्र की रुचि और मनोभाव (Student Interest and Attitude):** यदि छात्र विषय में रुचि रखते हैं और उनका मनोभाव सकारात्मक होता है, तो वे अधिक सक्रिय रूप से भाग लेते हैं और सीखने की प्रक्रिया में बेहतर परिणाम प्राप्त करते हैं। पाठ योजना बनाते समय शिक्षकों के लिए छात्रों की रुचियों और मनोभाव को समझना आवश्यक है।
2. **शिक्षण विधियाँ और रणनीतियाँ (Teaching Methods and Strategies):** शिक्षकों द्वारा उपयोग की जाने वाली विधियाँ और रणनीतियाँ शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिए, इंटरएक्टिव विधियों का उपयोग करने से छात्र का ध्यान और भागीदारी बढ़ सकती है, जिससे सीखने में सकारात्मक परिणाम मिलते हैं।

2. What is 'Syntax' of any model of Teaching? 2017, 2020, 2022

Ans: वाक्यतत्व (Syntax) एक शिक्षण मॉडल की संरचना या ढाँचा है, जो यह संकेत करता है कि शिक्षण प्रक्रिया कैसे व्यवस्थित और संचालित की जाएगी। यह मॉडल के विभिन्न घटकों और उनके बीच के संबंधों को परिभाषित करता है। एक शिक्षण मॉडल के वाक्यतत्व के मुख्य पहलू निम्नलिखित हैं:

1. **उद्देश्य (Objectives):** शिक्षण प्रक्रिया के उद्देश्य क्या होंगे और छात्रों को क्या सिखाया जाएगा।
2. **मूलभूत घटक (Core Components):** शिक्षण प्रक्रिया में कौन से मूलभूत घटक होंगे, जैसे शिक्षक, छात्र, सामग्री, और शिक्षण रणनीतियाँ।
3. **शिक्षण रणनीतियाँ (Teaching Strategies):** शिक्षक जिन तरीकों और रणनीतियों का उपयोग कर सकते हैं, जो छात्रों के सीखने में सहायक होंगी।
4. **मूल्यांकन (Assessment):** छात्रों की सीखने की प्रगति और परिणामों का मूल्यांकन करने के तरीके।
5. **प्रबंधन (Management):** शिक्षण प्रक्रिया को कैसे प्रबंधित किया जाएगा, जैसे कि समय सारणी, वातावरण, और छात्रों की भागीदारी।

इन घटकों के संबंध और उचित व्यवस्था शिक्षण मॉडल की प्रभावशीलता सुनिश्चित करती है।

3. Write two demerits of CAM. 2017, 2020, 2022

Ans: CAM (कंप्यूटर सहायक प्रबंधन) के दो असुविधाएँ हैं:

1. **प्रौद्योगिकी पर निर्भरता (Dependence on Technology):** CAM प्रणालियों की प्रभावशीलता प्रौद्योगिकी पर निर्भर करती है। तकनीकी विफलताएँ, सॉफ़्टवेयर समस्याएँ, या हार्डवेयर टूटने से प्रबंधन संचालन बाधित हो सकते हैं। इसके अलावा, यदि उपयोगकर्ताओं के पास प्रौद्योगिकी या ज्ञान

की कमी है, तो वे प्रणाली का सही ढंग से उपयोग करने में कठिनाई महसूस कर सकते हैं, जिससे कार्यक्षमता प्रभावित होती है।

2. **महंगा सेटअप और रखरखाव (Costly Setup and Maintenance):** CAM प्रणालियों की स्थापना और रखरखाव महंगा हो सकता है। नए सॉफ़्टवेयर और हार्डवेयर खरीदने के लिए बड़ी राशि खर्च करनी पड़ सकती है, और रखरखाव के लिए नियमित लागत भी होती है। यह छोटे और मध्यम आकार के उद्यमों के लिए एक बाधा बन सकता है।

4. What do you mean by interactive stage of Teaching? 2017, 2021

Ans: शिक्षण में स्वतंत्र चलक (Independent Variables in Teaching) वे तत्व या स्थितियाँ हैं जो शिक्षण प्रक्रिया में परिवर्तन करती हैं और शैक्षिक परिणामों को प्रभावित करती हैं। इनमें शामिल हो सकते हैं:

1. **शिक्षक की विधियाँ (Teacher's Methods):** शिक्षक सामग्री को कैसे प्रस्तुत करते हैं, जैसे प्रस्तुति की विधियाँ, उपयोग की गई रणनीतियाँ, और शिक्षण तकनीकें।
2. **छात्र की तैयारी (Student Preparation):** छात्रों का पूर्व ज्ञान, रुचियाँ, और सीखने के लिए उनकी तैयारी। उनके अनुभव और अपेक्षाएँ शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावित कर सकती हैं।
3. **शिक्षण वातावरण (Learning Environment):** कक्षा में शिक्षण का वातावरण, जैसे शैक्षिक सामग्री, प्रौद्योगिकी का उपयोग, और कक्षा के नियम।
4. **पाठ्यक्रम की सामग्री (Curriculum Content):** जो सामग्री पढ़ाई जा रही है और इसकी संरचना भी स्वतंत्र चलक के रूप में कार्य करती है, क्योंकि यह शिक्षा के लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्रभावित करती है।

ये स्वतंत्र चलक शिक्षण प्रक्रिया के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करते हैं, जो छात्रों के शैक्षिक परिणामों और अनुभवों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

5. Explain independent variable of Teaching Task. 2017, 2022

Ans: शिक्षण कार्य के 'मध्यवर्ती चलक' (Intermediate Variables) उन तत्वों को संदर्भित करते हैं जो शिक्षण प्रक्रिया के भीतर कार्य करते हैं और स्वतंत्र चलकों के प्रभाव को छात्रों के शिक्षण परिणामों पर प्रभावित करते हैं। ये आमतौर पर तीन मुख्य पहलुओं के आधार पर काम करते हैं:

1. **शिक्षक की संचार कौशल (Teacher's Communication Skills):** शिक्षक द्वारा जानकारी प्रस्तुत करने की विधियाँ और कौशल मध्यवर्ती चलक के रूप में कार्य करते हैं, जो छात्रों की समझ और शिक्षण अनुभव को प्रभावित करते हैं।
2. **छात्र की प्रतिक्रिया (Student Response):** छात्र शिक्षक या पाठ्य सामग्री के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करते हैं, उनकी भागीदारी का स्तर, और चर्चा या कार्य के लिए उनकी तैयारी—ये सभी मध्यवर्ती चलक के रूप में कार्य करते हैं।

3. **शिक्षण रणनीतियाँ (Teaching Strategies):** शिक्षण रणनीतियाँ जैसे समूह कार्य, चर्चाएँ, परियोजनाएँ, या समस्या-आधारित सीखने की तकनीकें, जो शिक्षण अनुभव को आकार देती हैं और शैक्षणिक परिणामों को प्रभावित करती हैं।

ये मध्यवर्ती चलक स्वतंत्र चलकों के प्रभाव को फ़िल्टर करते हैं और शैक्षणिक परिणामों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

6. Mention two conditions of effective teaching. 2017, 2020

Ans: <u>कार्यक्षम शिक्षण के लिए दो शर्तें निम्नलिखित हैं:</u>

1. **स्पष्ट लक्ष्य और उद्देश्य (Clear Goals and Objectives):** शिक्षण प्रक्रिया की शुरुआत में स्पष्ट और मापने योग्य लक्ष्य और उद्देश्य स्थापित करना आवश्यक है। जब छात्रों को यह पता होता है कि उन्हें क्या सिखाया जाएगा और उनके सीखने के परिणाम क्या होंगे, तो वे अधिक ध्यान केंद्रित और संलग्न हो जाते हैं।
2. **छात्र की सक्रिय भागीदारी (Active Student Participation):** प्रभावी शिक्षण के लिए यह आवश्यक है कि छात्र सामग्री में सक्रिय रूप से शामिल हों। चर्चाओं, समूह कार्य, और समस्या समाधान के माध्यम से, छात्र अपने सीखने की प्रक्रिया में संलग्न होते हैं, जो उनकी समझ को गहरा करता है और सीखने के अनुभव को और अधिक फलदायी बनाता है।

ये शर्तें प्रभावी शिक्षण के लिए एक आधार तैयार करती हैं, जो छात्रों के लिए एक शक्तिशाली और समृद्ध शैक्षणिक अनुभव प्रदान करती हैं।

7. Mention two merits of Micro Teaching. 2017

Ans: <u>सूक्ष्म-शिक्षण (Micro-teaching) के दो लाभ निम्नलिखित हैं:</u>

1. **संगठित विकास (Systematic Development):** सूक्ष्म-शिक्षण शिक्षकों को उनके शिक्षण तकनीकों का परीक्षण और सुधार करने के लिए एक प्रभावी विधि प्रदान करता है। यह शिक्षकों को एक निश्चित समय सीमा के भीतर छोटे पाठ देने की अनुमति देता है, जिससे उनकी कौशल और आत्मविश्वास बढ़ता है।
2. **फीडबैक और मूल्यांकन (Feedback and Evaluation):** सूक्ष्म-शिक्षण के माध्यम से, शिक्षक अपनी पाठ योजनाओं के बाद सहपाठियों और प्रशिक्षकों से मूल्यांकन और फीडबैक प्राप्त कर सकते हैं। यह फीडबैक उन्हें उनकी ताकत और कमजोरियों के बारे में जागरूक करता है और उन्हें अगले शिक्षण प्रक्रियाओं में सुधार करने में मदद करता है।

ये लाभ सूक्ष्म-शिक्षण को शिक्षकों के लिए एक प्रभावी प्रशिक्षण विधि बनाते हैं।

8. Mention two importances of 'Maxims of Teaching'. 2018, 2020, 2022

Ans: <u>'शिक्षण के सिद्धांत' (Principles of Teaching) के दो महत्व निम्नलिखित हैं:</u>

1. **शिक्षण प्रक्रिया के लिए मार्गदर्शन (Guidance for Teaching Process):** शिक्षण के सिद्धांत शिक्षकों को प्रभावी शिक्षण रणनीतियों का चयन करने और शिक्षण प्रक्रिया को प्रबंधित करने में मदद करते हैं। ये सिद्धांत शिक्षकों को निर्देशित करते हैं, ताकि वे छात्रों के विभिन्न सीखने की शैलियों पर उचित ध्यान केंद्रित कर सकें और सही विधियों को अपनाने में सक्षम हों।
2. **शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए सहायक (Support for Improving Quality of Education):** शिक्षण के सिद्धांत शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने में सहायता करते हैं। ये छात्रों को व्यापक ज्ञान और कौशल प्राप्त करने में मदद करते हैं, जो शैक्षिक मानकों में समग्र सुधार में योगदान करता है। सही सिद्धांतों का पालन करने से छात्रों को बेहतर सीखने का अनुभव प्राप्त करने में सक्षम होता है।

ये महत्व शिक्षण के सिद्धांतों को एक मौलिक घटक के रूप में उजागर करते हैं, जो प्रभावी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए आवश्यक हैं।

9. Write down two advantages of 'Inquiry Training Model'(ITM). 2018, 2021, 2023

Ans: <u>'अनुसंधान प्रशिक्षण मॉडल' (Inquiry Training Model - ITM) के दो लाभ निम्नलिखित हैं:</u>

1. **सक्रिय सीखने के लिए प्रोत्साहन (Encouragement of Active Learning):** अनुसंधान प्रशिक्षण मॉडल छात्रों को सक्रिय रूप से ज्ञान अर्जित करने के लिए प्रेरित करता है। छात्र स्वयं प्रश्न पूछते हैं, समस्याओं को हल करते हैं, और जानकारी एकत्र करते हैं, जिससे उनका शिक्षण प्रक्रिया अधिक आकर्षक और इंटरैक्टिव हो जाती है।
2. **समस्या समाधान कौशल का विकास (Development of Problem-Solving Skills):** यह मॉडल छात्रों के समस्या समाधान कौशल को विकसित करता है। वे वास्तविक जीवन की समस्याओं से संबंधित होकर अपने सैद्धांतिक ज्ञान को लागू करना सीखते हैं, जो उन्हें उनके जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में प्रभावी रूप से समस्याओं को हल करने में मदद करता है।

ये लाभ अनुसंधान प्रशिक्षण मॉडल को शिक्षा में एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण के रूप में स्थापित करते हैं।

10. Explain 'Intervening variable' of Teaching Task. 2018

Ans: शिक्षण कार्य में 'मध्यवर्ती चलक' (Intervening Variable) उन तत्वों को संदर्भित करता है जो शिक्षण प्रक्रिया के भीतर काम करते हैं और स्वतंत्र चलकों के प्रभाव को छात्रों के शिक्षण परिणामों पर प्रभावित करते हैं। ये चलक आमतौर पर शिक्षण के विभिन्न पहलुओं के माध्यम से काम करते हैं और

छात्रों के शिक्षण अनुभवों और परिणामों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मध्यवर्ती चलकों के कुछ मुख्य पहलू निम्नलिखित हैं:

1. **शिक्षक की संचार कौशल (Teacher's Communication Skills):** एक शिक्षक जानकारी को कितनी प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है और संवाद करता है, यह छात्रों की समझ को प्रभावित करता है। एक कुशल शिक्षक छात्रों को सामग्री को आसानी से समझने के अवसर प्रदान करता है।
2. **छात्रों की प्रतिक्रिया (Student Response):** छात्र शिक्षक या सामग्री के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करते हैं, उनकी भागीदारी का स्तर, और कार्यों के लिए उनकी तैयारी—all of these are considered intervening variables. छात्रों की सक्रिय भागीदारी शिक्षण प्रक्रिया पर सकारात्मक प्रभाव डालती है।
3. **शिक्षण रणनीतियाँ (Teaching Strategies):** विभिन्न शिक्षण रणनीतियाँ जैसे समूह कार्य, चर्चाएँ, और समस्या-आधारित शिक्षा, सीखने के अनुभव को आकार देती हैं। विभिन्न रणनीतियाँ छात्रों के बीच जुड़ाव और रुचि पैदा करती हैं, जो शिक्षण परिणामों को प्रभावित करती हैं।

ये मध्यवर्ती चलक स्वतंत्र चलकों के प्रभाव को फ़िल्टर करते हैं और शैक्षिक परिणामों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, शिक्षकों के लिए शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाने के लिए एक ढांचा प्रदान करते हैं।

11. What is Constructivist approach to teaching? 2018

Ans: निर्मितिवादी शिक्षण दृष्टिकोण एक ऐसा शिक्षण सिद्धांत है जो इस विचार पर आधारित है कि छात्र अपने अनुभवों और सक्रिय भागीदारी के माध्यम से ज्ञान का निर्माण करते हैं। इस दृष्टिकोण में छात्र केवल जानकारी के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता नहीं होते, बल्कि वे स्वयं शिक्षण प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। निर्माणवाद छात्रों को नए ज्ञान को अपने पिछले ज्ञान से जोड़ने, जो सीखा है उसका अर्थ निकालने और उसे वास्तविक जीवन में लागू करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

<u>निर्माणवाद के मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:</u>

1. **सक्रिय शिक्षण:** छात्रों को अन्वेषण, प्रश्न पूछने और समस्याओं को हल करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जो गहरी समझ और सीखने को बढ़ावा देता है।
2. **सहयोग और सामाजिक अंतःक्रिया:** समूह कार्य, चर्चा और सहपाठियों के साथ बातचीत के माध्यम से छात्र विभिन्न दृष्टिकोणों से सीख सकते हैं और अपनी समझ को गहरा कर सकते हैं।
3. **अनुभव के माध्यम से शिक्षण:** निर्माणवाद वास्तविक जीवन के अनुभवों और हाथों-हाथ सीखने को महत्व देता है, जिससे छात्रों को सैद्धांतिक विचारों को व्यावहारिक स्थितियों से जोड़ने में मदद मिलती है।
4. **शिक्षक एक मार्गदर्शक के रूप में:** इस दृष्टिकोण में शिक्षक केवल जानकारी प्रदान नहीं करता बल्कि छात्रों को मार्गदर्शन और प्रोत्साहन भी देता है। शिक्षक ऐसा वातावरण तैयार करता है जहाँ छात्र अपने विचार व्यक्त करने में सहज महसूस करते हैं।

5. **स्कैफोल्डिंग (समय पर सहायता):** शिक्षक छात्रों को उनकी वर्तमान स्तर से आगे बढ़ने में सहायता प्रदान करते हैं और धीरे-धीरे उनकी सहायता कम करते हैं ताकि वे स्वतंत्र रूप से सीखने में सक्षम हो सकें।

निर्मितिवादी शिक्षण में छात्रों को ज्ञान के निर्माता के रूप में देखा जाता है, और शिक्षण प्रक्रिया को एक सक्रिय, सतत प्रक्रिया माना जाता है, जिसमें छात्र बातचीत और पिछले अनुभवों के माध्यम से नई समझ का निर्माण करते हैं।

12. Write the components of re-inforcement skill. 2018, 2021

Ans: प्रोत्साहन कौशल के घटक छात्रों की सीखने में रुचि और भागीदारी को बढ़ाने में सहायक होते हैं। यह शिक्षक की उन क्षमताओं को दर्शाता है, जो छात्रों को समर्थन और प्रेरणा प्रदान करती हैं। इसके मुख्य घटक हैं:

1. **प्रशंसा और मान्यता:** छात्रों के अच्छे काम, प्रयास और सुधार की सराहना करना, जिससे उनका आत्मविश्वास और रुचि बढ़ती है।
2. **सकारात्मक प्रतिक्रिया:** छात्रों के उत्तरों के लिए सकारात्मक प्रतिक्रिया देना, जो उन्हें और अधिक सीखने के लिए प्रेरित करता है।
3. **उदाहरण और कहानियों का प्रयोग:** छात्रों की सीखने में रुचि बढ़ाने के लिए विभिन्न उदाहरण, कहानियाँ, या प्रासंगिक घटनाएँ प्रस्तुत करना।
4. **प्रोत्साहन देने वाली भाषा और शारीरिक भाषा:** ऐसी भाषा और शारीरिक भाषा का प्रयोग करना जो प्रेरित करे, जैसे एक सच्ची मुस्कान, सिर हिलाना, और उत्साहपूर्ण अभिव्यक्ति।
5. **उत्तेजनात्मक प्रश्न:** ऐसे प्रश्न पूछना जो छात्रों को सोचने के लिए प्रेरित करें और उनकी जिज्ञासा बढ़ाएं, जिससे वे समस्या समाधान की ओर बढ़ें।
6. **सुनने की कुशलता:** छात्रों की बात को ध्यान से सुनना और उनके विचारों को महत्व देना, जो उन्हें अपने विचार व्यक्त करने के लिए प्रेरित करता है।
7. **सहायता और समर्थन:** सीखने की प्रक्रिया में आवश्यक सहायता और समर्थन प्रदान करना, ताकि छात्रों को यह महसूस हो कि शिक्षक उनके साथ हैं।

इन घटकों का उपयोग करके शिक्षक छात्रों को सीखने के प्रति अधिक ध्यान केंद्रित और उत्साहित कर सकते हैं।

13. What is Diagnostic function of teaching? 2018, 2020, 2022

Ans: शिक्षण का निदानात्मक कार्य छात्रों की कमजोरियों, सीखने में चुनौतियों या शिक्षा प्रक्रिया में आने वाली बाधाओं की पहचान और विश्लेषण करने की प्रक्रिया को दर्शाता है। यह कार्य शिक्षकों को यह समझने में मदद करता है कि छात्रों को किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है। निदानात्मक कार्य शिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह छात्रों के सीखने के स्तर, कमजोरियों और ताकतों की पहचान

में सहायक होता है, जिससे वे छात्रों के लिए व्यक्तिगत शिक्षण योजनाएँ या सहायता प्रणालियाँ बना सकते हैं।

<u>निदानात्मक कार्य के मुख्य पहलू हैं:</u>

1. **सीखने के अंतर की पहचान:** उन क्षेत्रों की पहचान करना, जिनमें छात्र कमजोर हैं या जिनमें सुधार की आवश्यकता है।
2. **मूल्यांकन और विश्लेषण:** छात्रों के परीक्षा परिणाम, असाइनमेंट और व्यवहार का विश्लेषण करके सीखने में कमी की पहचान करना।
3. **व्यक्तिगत सहायता प्रदान करना:** पहचानी गई समस्याओं के आधार पर छात्रों को लक्षित समर्थन और मार्गदर्शन प्रदान करना।

इस कार्य के माध्यम से, छात्र और शिक्षक दोनों ही शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने के कदम उठा सकते हैं।

14. Mention two advantages of Computer Assisted Instruction. 2018,2019, 2020, 2021, 2022

Ans: <u>कंप्यूटर-सहायित निर्देश (CAI) के दो मुख्य लाभ हैं:</u>

1. **व्यक्तिगत सीखना:** CAI प्रत्येक छात्र की सीखने की गति, रुचि और आवश्यकताओं के अनुसार सामग्री प्रदान कर सकता है। इससे छात्र अपनी सुविधा के अनुसार सीखने की गति निर्धारित कर सकते हैं, जिससे सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावी बनती है।
2. **इंटरएक्टिव और आकर्षक प्रस्तुति:** CAI अक्सर ऑडियो, वीडियो, एनीमेशन और गेमिंग तत्वों का उपयोग करके सामग्री को आकर्षक बनाता है। इससे छात्रों की सीखने में रुचि बढ़ती है और उनकी ध्यान क्षमता बनी रहती है।

ये लाभ शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाते हैं और छात्रों की सीखने की गुणवत्ता को बेहतर बनाने में सहायक होते हैं।

16. What is the difference between concept formation and concept attainment? 2019, 2023

Ans: <u>अवधारणा गठन और अवधारणा लाभ</u>

<u>अवधारणा गठन (Concept Formation)</u>

- **परिभाषा:** अवधारणा गठन एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से शिक्षार्थी विभिन्न अनुभवों और अवलोकनों से जानकारी इकट्ठा करते हैं और उस जानकारी के आधार पर नए विचार बनाते हैं।

- **उदाहरण:** उदाहरण के लिए, यदि एक बच्चा विभिन्न रंगों के फलों को देखता है और उनके ढांचे, रंग और गुणों का विश्लेषण करता है और "फल" के बारे में अवधारणा बनाता है, तो यह अवधारणा गठन है।
- **प्रक्रिया:** अवधारणा गठन के दौरान, शिक्षार्थी प्रत्यक्ष अवलोकन और अनुभवों से सीखते हैं। यहां खोज की प्रक्रिया महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

<u>अवधारणा लाभ (Concept Attainment)</u>

- **परिभाषा:** अवधारणा लाभ एक निर्देशात्मक विधि है जिसके माध्यम से शिक्षार्थी विशिष्ट विशेषताओं के आधार पर एक अवधारणा को सटीक रूप से निर्धारित करते हैं।
- **उदाहरण:** यदि एक शिक्षक "स्तनपायी जीवों" की अवधारणा सिखाना चाहता है और इस श्रेणी के जीवों के गुणों पर चर्चा करता है, तो यह अवधारणा लाभ है।
- **प्रक्रिया:** अवधारणा लाभ के दौरान, शिक्षार्थी उदाहरणों और गैर-उदाहरणों के आधार पर अवधारणा को पहचानना सीखते हैं। यह एक निर्देशात्मक और प्रयोगात्मक प्रक्रिया है।

<u>मुख्य अंतर</u>

- **प्रक्रिया:** अवधारणा गठन में, शिक्षार्थी अपने अनुभवों से अवधारणाएँ बनाते हैं, जबकि अवधारणा लाभ में, अवधारणा को विशिष्ट विशेषताओं के आधार पर पहचाना जाता है।
- **विधि:** अवधारणा गठन खोज-आधारित होती है और आत्म-शिक्षण के माध्यम से होती है, जबकि अवधारणा लाभ शिक्षक-निर्देशित विधियों के माध्यम से होता है।
- **उपयोग:** अवधारणा गठन स्वतंत्र सीखने के लिए उपयुक्त है, जबकि अवधारणा लाभ निर्देशात्मक सीखने के लिए उपयुक्त है।

ये अंतर अवधारणाओं से संबंधित सीखने की प्रक्रिया के विभिन्न पहलुओं को उजागर करते हैं, जो शिक्षकों को अपनी शिक्षण रणनीतियों का चयन करने में सहायक हो सकते हैं।

17. Why a teacher needs to undergo training? 2019, 2020, 2023

Ans: <u>शिक्षकों के प्रशिक्षण की आवश्यकता के पाँच महत्वपूर्ण कारण</u>

1. **शिक्षण विधियों में सुधार:** शिक्षक प्रशिक्षण शिक्षकों को नए शिक्षण विधियों और रणनीतियों के बारे में जानकारी देता है, जिससे उनकी शिक्षण क्षमता में वृद्धि होती है। प्रशिक्षण के माध्यम से वे आधुनिक तकनीकों और विधियों का उपयोग करना सीखते हैं, जिससे वे छात्रों का ध्यान आकर्षित कर सकते हैं।
2. **छात्रों की आवश्यकताओं को समझने की क्षमता:** प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षक विभिन्न प्रकार की छात्रों की आवश्यकताओं और सीखने की शैलियों को समझने में सक्षम होते हैं। यह उन्हें अधिक व्यक्तिगत और प्रभावी शिक्षा प्रदान करने में मदद करता है।

3. **शैक्षिक नीतियों और पाठ्यक्रम का ज्ञान:** प्रशिक्षण शिक्षकों को वर्तमान शैक्षिक नीतियों और पाठ्यक्रमों से परिचित कराता है। इस ज्ञान के साथ, वे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार और नीतियों का पालन करने में अधिक प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं।
4. **व्यवसायिक विकास:** शिक्षक प्रशिक्षण व्यवसायिक विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह उनके आत्मविश्वास को बढ़ाता है और उनके पेशेवर जीवन को समृद्ध करता है, जिससे वे नए विचारों और तकनीकों के साथ तालमेल बिठा सकते हैं।
5. **समस्या समाधान की क्षमता:** प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षक समस्या समाधान में दक्षता प्राप्त करते हैं। वे कक्षा में विभिन्न समस्याओं का सामना कर सकते हैं और उन समस्याओं के प्रभावी समाधान निकालने में सक्षम होते हैं।

ये कारण शिक्षकों के प्रशिक्षण के महत्व को उजागर करते हैं और यह बताते हैं कि यह शिक्षा के सुधार में कैसे सहायक हो सकता है।

18. 'Proceed from whole to part' - Explain. 2019, 2021

Ans: 'समग्र से भाग की ओर अग्रसर होना' एक शिक्षण रणनीति है, जो मुख्य रूप से एक धारणा या विषय को पहले समग्र रूप में प्रस्तुत करती है और फिर उस विषय के विभिन्न हिस्सों के विश्लेषण या विस्तृत चर्चा पर जोर देती है। इसकी व्याख्या निम्नलिखित है:

1. **व्यापक अवधारणाओं का प्रस्तुतिकरण:** इस रणनीति में, विषय का मुख्य विचार या समग्र रूप पहले प्रस्तुत किया जाता है। इससे छात्रों को विषय के बारे में स्पष्ट और स्पष्ट समझ मिलती है, जो आगे के हिस्सों को समझने में सहायक होती है।
2. **अंतर-संबंधों को समझना:** समग्र से भाग की ओर बढ़ने पर, छात्र विषय के विभिन्न हिस्सों के बीच के संबंध को समझ सकते हैं। यह उनकी सोचने की क्षमता को बढ़ाता है और विभिन्न तत्वों के बीच संबंध स्थापित करने में मदद करता है।
3. **गहन विश्लेषण:** समग्र विषय को पहले प्रस्तुत करने के बाद, छात्र उस विषय के विभिन्न घटकों या हिस्सों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। यह उन्हें गहन विश्लेषण और विस्तृत चर्चा करने का अवसर प्रदान करता है।
4. **शिक्षण प्रक्रिया को सरल बनाना:** यह पद्धति छात्रों के लिए सामग्री को सरल बनाती है, क्योंकि वे एक बड़े विचार के संदर्भ में छोटे छोटे हिस्सों के अर्थ और महत्व को समझ सकते हैं। परिणामस्वरूप, शिक्षण प्रक्रिया अधिक प्रभावी और सार्थक हो जाती है।

यह रणनीति शिक्षण प्रक्रिया में अत्यधिक प्रभावी है, क्योंकि यह छात्रों के लिए धारणा बनाने और विश्लेषण करने में सहायक भूमिका निभाती है।

19. Write down two disadvantages of 'Games' as a way of teaching. 2019, 2021, 2022

Ans: <u>'खेल' को शिक्षण के तरीके के रूप में दो नुकसान</u>

1. **समय प्रबंधन की समस्याएँ:** खेलों के माध्यम से शिक्षण में अक्सर समय की सीमाएँ होती हैं, जिससे पाठ्यक्रम के अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान कम हो सकता है। इसके परिणामस्वरूप, छात्र विषयवस्तु को पूरी तरह से समझ नहीं पाते हैं।
2. **अत्यधिक ध्यान से ध्यान भटकना:** जबकि खेलों से सीखना आकर्षक हो सकता है, कुछ छात्र खेल में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि वे शैक्षणिक सामग्री पर कम ध्यान देते हैं। इससे उनकी पढ़ाई के प्रति ध्यान और रुचि कम हो सकती है।
3. **शिक्षक-छात्र संबंधों में समस्या:** खेलों के दौरान शिक्षकों की प्राधिकरण कम हो सकता है, जो छात्रों में अनुशासन और नियंत्रण बनाए रखने में समस्या पैदा कर सकता है। कुछ छात्र इस अवसर का लाभ उठाकर अशिष्ट व्यवहार कर सकते हैं।
4. **सभी के भागीदारी की कठिनाई:** खेलों के माध्यम से शिक्षण में सभी छात्र समान रूप से भाग नहीं ले सकते। कुछ छात्र शारीरिक कौशल की कमी या आत्मविश्वास के अभाव के कारण खेलों में सक्रिय रूप से भाग नहीं लेना चाह सकते हैं, जिससे उनके सीखने के अवसर सीमित हो जाते हैं।

20. What is effective teaching? 2019, 2020, 2022, 2023

Ans: प्रभावी शिक्षण (Effective Teaching) एक ऐसा शिक्षण विधि है, जो छात्रों की सीखने और विकास के लिए सबसे फायदेमंद है। इसके मुख्य तत्व निम्नलिखित हैं:

1. **छात्रों को सक्रिय रूप से जोड़ना:** प्रभावी शिक्षण छात्रों को शैक्षणिक प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करता है। यह उनके विचारों को जागरूक करता है और चर्चा और प्रश्नोत्तर के माध्यम से सीखने की गहराई को बढ़ाता है।
2. **व्यक्तिगत शिक्षा:** प्रभावी शिक्षण छात्रों की विभिन्न सीखने की शैलियों और आवश्यकताओं के अनुसार अनुकूलित किया जाता है। शिक्षक छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के आधार पर पाठ्यक्रम और गतिविधियों को तैयार करते हैं, जो उनके लिए प्रासंगिक और अर्थपूर्ण होती हैं।
3. **अनुसंधान और विश्लेषण के अवसर:** प्रभावी शिक्षण का एक महत्वपूर्ण पहलू छात्रों को अनुसंधान और विश्लेषण के अवसर प्रदान करना है। यह उनके आलोचनात्मक सोचने और समस्या समाधान के कौशल के विकास में मदद करता है।
4. **फीडबैक और मूल्यांकन:** नियमित फीडबैक और मूल्यांकन प्रभावी शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा होते हैं। यह छात्रों को उनकी प्रगति को समझने और सुधार के लिए आवश्यक परिवर्तनों को करने में मदद करता है।

ये बिंदु प्रभावी शिक्षण के मुख्य पहलुओं को उजागर करते हैं और छात्र विकास के लिए इसकी महत्वता को स्पष्ट करते हैं।

21. Mention two advantages of Programmed Instruction. 2019

Ans: <u>Programmed Instruction के दो लाभ</u>

1. **स्वतंत्र शिक्षा:** Programmed Instruction विधि छात्रों को अपनी गति से सीखने का अवसर देती है। वे शैक्षणिक सामग्री को अपने समय और तरीके से पूरा कर सकते हैं, जिससे उनका सीखने का अनुभव और अधिक व्यक्तिगत बनता है।
2. **स्पष्ट निर्देश:** इस पद्धति के माध्यम से छात्रों के लिए स्पष्ट और संगठित निर्देश प्रदान किए जाते हैं। यह छात्रों के लिए विषय सामग्री को समझने और उनके सीखने की प्रक्रिया में तेजी लाने में सहायक होता है।
3. **पर्याप्त प्रतिक्रिया:** Programmed Instruction छात्रों को तात्कालिक प्रतिक्रिया प्रदान करती है, जिससे वे अपनी गलतियों को पहचानने और सीखने में मदद करते हैं। इससे उनकी सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावी बनती है।
4. **स्वायत्तता और आत्म-नियमन:** यह विधि छात्रों में स्वायत्तता और आत्म-नियमन की भावना को विकसित करती है, क्योंकि वे अपनी शिक्षा की प्रक्रिया को प्रबंधित करने में सक्षम होते हैं।

22. Why 'Microteaching' is called scaled down teaching? 2023

Ans: <u>Microteaching को "scaled down teaching" कहा जाता है, इसके कई कारण हैं:</u>

1. **सीमित दायरा:** Microteaching में, शिक्षण प्रक्रिया को सरल बनाया गया है और इसे एक विशिष्ट कौशल या अवधारणा पर केंद्रित किया गया है। पूर्ण पाठ पढ़ाने के बजाय, शिक्षक एक छोटे खंड को पढ़ाते हैं, जो आमतौर पर 5 से 10 मिनट तक चलता है। यह शिक्षण के एक विशेष पहलू पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अभ्यास की अनुमति देता है।
2. **नियंत्रित वातावरण:** Microteaching एक नियंत्रित वातावरण में होता है, अक्सर एक छोटे समूह के साथ या एक मेंटॉर के साथ जो छात्रों की भूमिका निभाते हैं। यह सेटिंग पारंपरिक कक्षा शिक्षण की जटिलता और दबाव को कम करती है, जिससे शिक्षकों के लिए प्रयोग करना और तात्कालिक फीडबैक प्राप्त करना आसान हो जाता है।
3. **विशिष्ट कौशल पर ध्यान:** यहाँ विशिष्ट शिक्षण कौशल विकसित करने पर जोर दिया गया है, जैसे प्रश्न पूछने की तकनीकें, पाठ का आयोजन, या कक्षा प्रबंधन। इन कौशलों को microteaching सत्र में अलग करके, शिक्षक अपनी क्षमताओं को पूर्ण कक्षा के डाइनामिक्स से ध्यान भंग किए बिना सुधार सकते हैं।
4. **पुनरावृत्ति अभ्यास:** Microteaching पुनरावृत्ति और सुधार को प्रोत्साहित करता है। शिक्षक एक ही खंड का कई बार अभ्यास कर सकते हैं, प्रत्येक सत्र के बाद फीडबैक को शामिल करके और समायोजन कर सकते हैं। यह पुनरावृत्त प्रक्रिया पूरे पाठ योजना को संशोधित करने की तुलना में अधिक प्रबंधनीय होती है।

सारांश में, microteaching को scaled down teaching कहा जाता है क्योंकि यह शिक्षण प्रक्रिया को सरल बनाता है, दायरे को सीमित करता है, विशिष्ट कौशल पर ध्यान केंद्रित करता है, और नियंत्रित अभ्यास और फीडबैक की अनुमति देता है।

23. Write down two components of questioning skill. 2023

Ans: <u>प्रश्नकरण कौशल के दो घटक हैं:</u>

1. **प्रश्नों के प्रकार:** प्रश्नकरण कौशल का एक महत्वपूर्ण घटक विभिन्न प्रकार के प्रश्न तैयार करने की क्षमता है। शिक्षकों को उचित प्रश्नों का चयन करना आना चाहिए, जैसे खुले प्रश्न (open-ended questions) जो छात्रों को सोचने और विश्लेषण करने का अवसर देते हैं, और संकुचित प्रश्न (closed questions) जो सही उत्तर जानने में मदद करते हैं।
2. **प्रश्नों के स्तर:** प्रश्नकरण कौशल का एक और घटक प्रश्नों के स्तरों को समझना है। शिक्षकों को विभिन्न स्तरों के प्रश्न बनाने में सक्षम होना चाहिए, जैसे केवल जानकारी इकट्ठा करने के लिए प्रश्न (knowledge-based questions) से लेकर गहरे विश्लेषण और मूल्यांकन के लिए प्रश्न (higher-order thinking questions) बनाना। यह छात्रों के विचार और चर्चा के स्तर को बढ़ाने में मदद करता है।

24. State two advantages of Programmed Instruction. 2023

Ans: <u>प्रोग्राम निर्देशना के दो लाभ हैं:</u>

1. **स्वतंत्रता और स्व-नियंत्रण:** प्रोग्राम निर्देशना पद्धति छात्रों को अपनी गति से सीखने का अवसर प्रदान करती है, जो उनके सीखने की प्रक्रिया में अधिक स्वतंत्रता और स्व-नियंत्रण प्रदान करती है। छात्र अपनी सुविधा के अनुसार सामग्री को पूरा कर सकते हैं, जिससे सीखने का अनुभव और अधिक व्यक्तिगत हो जाता है।
2. **तत्काल प्रतिक्रिया:** इस पद्धति के माध्यम से छात्रों को तत्काल फीडबैक मिलता है, जो उन्हें अपनी गलतियों को पहचानने और सीखने में मदद करता है। यह उनके सीखने की प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी बनाता है और सुधार के लिए अवसर पैदा करता है।

Marks: 5

1. Discuss the components of questioning. 2017, 2020, 2022

Ans: प्रश्न पूछने के घटक शिक्षण प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सही प्रश्न छात्रों की सोचने और विश्लेषण करने की क्षमताओं को बढ़ाते हैं। प्रश्न पूछने के मुख्य घटक निम्नलिखित हैं:

1. **प्रश्नों के प्रकार**: प्रश्नों को दो प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है: बंद और खुले प्रश्न। बंद प्रश्नों के निश्चित उत्तर होते हैं, जैसे हाँ/नहीं। खुले प्रश्नों के माध्यम से छात्र विस्तृत उत्तर देते हैं, जो उनकी सोचने और विश्लेषण करने की क्षमताओं को बढ़ाता है।

2. **प्रश्नों के स्तर**: प्रश्नों के पाँच स्तर होते हैं: स्मरण, समझ, अनुप्रयोग, विश्लेषण, और रचनात्मकता। ये स्तर छात्रों को ज्ञान को विभिन्न दृष्टिकोणों से जांचने में मदद करते हैं, जिससे सीखने की गहराई बढ़ती है और उनकी रचनात्मक सोच को प्रोत्साहन मिलता है।
3. **प्रश्नों की संरचना**: प्रश्नों की संरचना स्पष्ट और प्रासंगिक होनी चाहिए। स्पष्ट प्रश्न छात्रों को समझने में मदद करते हैं, जिससे वे आसानी से उत्तर दे सकें। प्रासंगिक प्रश्नों को छात्रों के अनुभव और विषयवस्तु से संबंधित होना चाहिए, जो शिक्षा के प्रभाव को बढ़ाता है।
4. **प्रश्नों का उद्देश्य**: प्रश्न पूछने का उद्देश्य शिक्षण प्रक्रिया को सुधारना है। उद्देश्य हो सकता है जानकारी इकट्ठा करना, सोचने को प्रेरित करना, या चर्चाएँ आरंभ करना। सही उद्देश्य के साथ प्रश्न तैयार करने से छात्रों का ध्यान और रुचि बढ़ती है, और सीखने की गति तेज होती है।
5. **प्रतिक्रिया और मूल्यांकन**: शिक्षकों को छात्रों के उत्तर और प्रतिक्रियाओं का मूल्यांकन करना चाहिए। प्रतिक्रिया के आधार पर प्रश्नों में बदलाव या नए प्रश्न बनाए जा सकते हैं। यह छात्रों की प्रतिक्रियाओं के अनुसार सीखने का वातावरण बनाने में मदद करता है और उनके कौशल को बढ़ाने में सहायक होता है।

प्रश्न पूछना शिक्षा का एक महत्वपूर्ण भाग है। सही प्रश्न छात्रों की सोचने और विश्लेषण करने की क्षमताओं को बढ़ाते हैं। प्रश्नों के प्रकार, स्तर, संरचना, उद्देश्य, और छात्रों की प्रतिक्रियाओं का मूल्यांकन शिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण हैं। प्रभावी प्रश्न पूछने के माध्यम से एक समृद्ध और अंतःक्रियात्मक शिक्षण वातावरण का निर्माण संभव है, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होता है।

2. Discuss the role of teacher and learners in reflective level of teaching. 2019, 2020, 2023

Ans:

शिक्षण का प्रतिफलन स्तर एक महत्वपूर्ण शैक्षिक पद्धति है, जहाँ शिक्षक और छात्र अपनी अनुभवों और विचारों का विश्लेषण करके सीखने की प्रक्रिया को सुधारते हैं। यहाँ शिक्षक और छात्रों की भूमिकाएँ चर्चा की गई हैं:

1. <u>शिक्षकों की भूमिका</u>

- **सामान्य प्रबंधन**: प्रतिफलन स्तर पर शिक्षक छात्रों के लिए एक सुरक्षित और खुला वातावरण बनाते हैं, जहाँ वे अपने विचार साझा कर सकते हैं।
- **अनुसंधानकर्ता के रूप में कार्य करना**: शिक्षक अपनी शिक्षण प्रक्रिया पर समालोचनात्मक दृष्टिकोण रखते हैं और इसे सुधारने के तरीके खोजते हैं। वे अपनी शिक्षण विधियों की प्रभावशीलता का विश्लेषण करते हैं।
- **मोडरेटर और मार्गदर्शक**: शिक्षकों को छात्रों को प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करना चाहिए और उनके विचार व्यक्त करने में मदद करनी चाहिए। इससे छात्रों के लिए विश्लेषण और समालोचनात्मक सोचने के अवसर पैदा होते हैं।
- **मूल्यांकन**: शिक्षक छात्रों के प्रतिफलन का मूल्यांकन करते हैं और उनके सुधार के लिए विशेष फीडबैक प्रदान करते हैं। इससे छात्रों को अपनी सीखने की प्रक्रिया को समझने और सुधारने में मदद मिलती है।

2. **<u>छात्रों की भूमिका</u>**

- **अनुभवों का विश्लेषण**: छात्र अपनी सीखने के अनुभवों का विश्लेषण करते हैं और वे क्या सीखे हैं और कैसे सीखे हैं, इस पर विचार करते हैं।
- **सक्रिय भागीदारी**: छात्र चर्चाओं और प्रतिफलों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, जो उनकी समालोचनात्मक सोच और आत्मविश्लेषण कौशल को बढ़ाता है।
- **प्रश्न पूछना**: छात्रों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और उनके विचारों को गहराई से समझने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। वे उन विषयों पर चर्चा कर सकते हैं जिन्हें वे नहीं समझते हैं।
- **स्वायत्तता**: छात्र अपनी सीखने की प्रक्रिया में स्वायत्तता ग्रहण करते हैं, जिससे उनकी अपनी सीखने के प्रति जिम्मेदारी और रुचि पैदा होती है।

शिक्षण के प्रतिफलन स्तर पर शिक्षकों और छात्रों के बीच सहयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षक छात्रों के लिए एक प्रेरणादायक वातावरण बनाते हैं और उनके विचारों के विकास में मदद करते हैं, जबकि छात्र अपनी सीखने के अनुभवों का विश्लेषण करते हैं और निरंतर सुधार की दिशा में आगे बढ़ते हैं। इस प्रकार, एक प्रतिफलनशील शिक्षण वातावरण का निर्माण होता है जो शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाता है।

3. Briefly discuss the 'Syntax' of Concept Attainment Model. 2018, 2021

Ans: धारणात्मक अधिगम मॉडल (Concept Attainment Model) एक शिक्षण पद्धति है जो छात्रों को किसी अवधारणा या विचार की व्याख्या और अनुप्रयोग के माध्यम से सीखने में सहायता करती है। इस मॉडल की वाक्यविज्ञान (Syntax) कई प्रमुख घटकों पर आधारित होती है, जो निम्नलिखित हैं:

1. **लक्ष्य निर्धारण:** शिक्षक का पहला कार्य सीखने के लक्ष्यों को सटीक रूप से परिभाषित करना है। यह स्पष्ट रूप से बताना आवश्यक है कि छात्रों को कौन सी अवधारणा प्राप्त करनी है, जैसे विशेष विशेषताएँ या गुण।
2. **उदाहरण और अपदृष्ट:** शिक्षक छात्रों को विभिन्न उदाहरण प्रदान करते हैं। कुछ उदाहरण अवधारणा से संबंधित होते हैं (सही उदाहरण), जबकि कुछ नहीं होते (गलत उदाहरण)। इसके माध्यम से छात्र अवधारणा के गुण और सीमाएँ समझ सकते हैं।
3. **विशेषताओं का विश्लेषण:** छात्र सही और गलत उदाहरणों के आधार पर विशेषताओं का विश्लेषण करते हैं। वे चर्चा और अवलोकन के माध्यम से अवधारणा की मुख्य विशेषताएँ पहचानते हैं।
4. **अवधारणा का प्रमाणीकरण:** शिक्षक छात्रों को प्राप्त अवधारणा को प्रमाणीकरण करने में मदद करते हैं। छात्र अपनी प्रतिक्रियाओं और विश्लेषणों के माध्यम से एक सामान्यीकृत अवधारणा विकसित करते हैं।
5. **मूल्यांकन:** शिक्षक छात्रों द्वारा प्राप्त अवधारणा का मूल्यांकन करते हैं और इसके प्रभावी होने का विश्लेषण करते हैं। छात्र अपनी सीखने की प्रक्रिया और अवधारणा के कार्यान्वयन पर चर्चा करते हैं।

धारणात्मक अधिगम मॉडल की वाक्यविज्ञान छात्रों को अवधारणाओं के निर्माण में सक्रिय रूप से संलग्न करती है, जिससे उनके सोचने और विश्लेषण करने की क्षमताएँ बढ़ती हैं। यह शिक्षकों को एक स्पष्ट ढाँचा प्रदान करती है, जो सीखने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और प्रभावशाली बनाती है।

5. Discuss the Microteaching cycle. 2018, 2020, 2023

Ans: सूक्ष्म शिक्षण (Micro Teaching) एक प्रभावी शिक्षण विधि है जो शिक्षकों को अपनी क्षमताओं को सुधारने में मदद करती है। सूक्ष्म शिक्षण चक्र सामान्यतः पांच चरणों में विभाजित होता है, जो निम्नलिखित हैं:

1. **योजना (Planning)**: इस चरण में शिक्षक पाठ के उद्देश्यों और लक्ष्यों को निर्धारित करते हैं। वे विषय सामग्री, शिक्षण रणनीतियों और छात्रों के लिए उपयुक्त गतिविधियों का चयन करते हैं। योजना को एक निर्दिष्ट समय सीमा के भीतर पूरा किया जाता है।
2. **पाठ देना (Teaching)**: शिक्षक योजना के आधार पर पाठ प्रदान करते हैं। सूक्ष्म शिक्षण एक छोटे समूह में (आमतौर पर 5-10 छात्रों) आयोजित किया जाता है, जहाँ शिक्षक अपनी शिक्षण रणनीतियों का प्रयोग करते हैं। इस चरण में छात्रों के साथ संबंध स्थापित करना और उनकी भागीदारी सुनिश्चित करना आवश्यक है।
3. **पर्यवेक्षण (Observation)**: इस चरण में शिक्षक और सहकर्मी शिक्षक के प्रदर्शन का अवलोकन करते हैं। वे देखते हैं कि शिक्षक पाठ को कैसे प्रस्तुत कर रहे हैं, छात्रों की प्रतिक्रियाएँ क्या हैं, और शिक्षण प्रक्रिया कितनी प्रभावी है। इस चरण में शिक्षक की गतिविधियों और छात्रों की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण किया जाता है।
4. **प्रतिपुष्टि (Feedback)**: अवलोकन के बाद, साथी या प्रशिक्षक शिक्षक की शिक्षण विधियों पर फीडबैक प्रदान करते हैं। यह फीडबैक निर्माणात्मक होना चाहिए और सुधार के लिए लक्षित होना चाहिए, ताकि शिक्षक अपनी कमियों को पहचान सकें और भविष्य में प्रगति कर सकें।
5. **पुनः पाठ (Re-teaching)**: फीडबैक के आधार पर, शिक्षक फिर से उसी विषय पर पाठ प्रदान करते हैं, जहाँ वे पूर्व अनुभवों से सीखी गई नई रणनीतियों और विधियों को लागू करते हैं। इस चरण में शिक्षक अपनी क्षमताओं और तकनीकों को बढ़ाने में सक्षम होते हैं।

सूक्ष्म शिक्षण चक्र शिक्षकों के लिए एक प्रभावी प्रशिक्षण विधि तैयार करता है, जो उनकी शिक्षण क्षमताओं को बढ़ाने में मदद करता है। इस चक्र के प्रत्येक चरण शिक्षकों के लिए सीखने की प्रक्रिया को समृद्ध करता है और उनके आत्मविश्वास को बढ़ाता है।

6. Discuss pre-active stage of teaching. 2017, 2021

Ans: शिक्षण की पूर्व-सक्रिय अवस्था शिक्षकों द्वारा पाठ योजना और तैयारी का एक महत्वपूर्ण चरण है। इस अवस्था में शिक्षक शिक्षण के उद्देश्यों को निर्धारित करते हैं, पाठ योजना तैयार करते हैं, और उपयुक्त सामग्री का चयन करते हैं। यह छात्रों की शिक्षा के लिए एक सुव्यवस्थित ढांचा बनाने का प्रारंभिक चरण होता है। सही तरीके से संचालित पूर्व-सक्रिय अवस्था शिक्षण की सफलता को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी और सार्थक बनाती है।

पूर्व-सक्रिय शिक्षण की अवस्थाएँ: शिक्षण की पूर्व-सक्रिय अवस्था शिक्षण प्रक्रिया का पहला चरण है, जहाँ शिक्षक शिक्षण योजना और तैयारी पर काम करते हैं। इस चरण में शिक्षण के उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है, शिक्षण सामग्री का चयन किया जाता है, शिक्षण रणनीति तय की जाती है, और छात्रों की सीखने की आवश्यकताओं का आकलन किया जाता है।

पूर्व-सक्रिय शिक्षण की मुख्य विशेषताएँ:

- **उद्देश्य निर्धारण:** शिक्षक का पहला कार्य शिक्षण के उद्देश्यों को निर्धारित करना होता है। वे यह तय करते हैं कि छात्रों को कौन-सा विषय या सामग्री सिखाई जाएगी और इसके माध्यम से छात्र किस प्रकार का ज्ञान या कौशल प्राप्त करेंगे।
- **विषय-वस्तु विश्लेषण:** शिक्षक विषय-वस्तु का विश्लेषण करते हैं और उसे खंडों में विभाजित करते हैं। इससे यह समझने में मदद मिलती है कि किन हिस्सों पर अधिक ध्यान देना है।
- **छात्रों के स्तर का आकलन:** छात्रों की उम्र, मानसिक विकास, रुचि और पूर्व ज्ञान के आधार पर शिक्षण रणनीति तय की जाती है। इससे शिक्षण प्रक्रिया छात्रों की मानसिकता के अनुकूल होती है।
- **शिक्षण रणनीति का निर्धारण:** व्याख्यान, चर्चा, प्रदर्शन आदि जैसे विभिन्न शिक्षण तरीकों का चयन किया जाता है ताकि छात्र विषय को आसानी से समझ सकें।
- **शिक्षण सामग्री की तैयारी:** शिक्षण को सरल और प्रभावी बनाने के लिए शिक्षक चार्ट, मॉडल, ऑडियो-वीडियो सहायक सामग्री जैसी विभिन्न शिक्षण सामग्री तैयार करते हैं।
- **मूल्यांकन की योजना:** शिक्षक शिक्षण के परिणामों का मूल्यांकन करने के लिए विभिन्न मूल्यांकन तकनीकों का निर्धारण करते हैं, जैसे प्रश्न-पत्र, प्रायोगिक गतिविधियाँ या समूह चर्चा।

सही योजना और पूर्व-सक्रिय अवस्था शिक्षण को सफल बनाती है। शिक्षक की पूर्व तैयारी छात्रों की मानसिकता और रुचि के अनुरूप शिक्षण गतिविधियों को संचालित करती है। परिणामस्वरूप, सीखने की प्रक्रिया प्रभावी होती है, और छात्र विषय-वस्तु को आसानी से आत्मसात कर पाते हैं, जिससे शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति होती है।

7. Discuss any two maxims of Teaching. 2017, 2020

Ans: शिक्षण के सिद्धांत विभिन्न नियम और रणनीतियाँ हैं जो शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी और सफल बनाने में मदद करती हैं। इनके माध्यम से शिक्षक छात्रों की उम्र, अनुभव और रुचियों के आधार पर पाठ योजना तैयार करते हैं। मुख्य सिद्धांतों में ज्ञात से अज्ञात की ओर, सरल से जटिल की ओर, और ठोस से अमूर्त की ओर शिक्षण शामिल है।

शिक्षण के दो सिद्धांत:

1. **ज्ञात से अज्ञात की ओर (From Known to Unknown):** शिक्षण का एक प्रमुख सिद्धांत है "ज्ञात से अज्ञात की ओर" सिखाना। इस सिद्धांत के अनुसार, शिक्षक पहले छात्रों के लिए ज्ञात विषयों से शुरू करते हैं और फिर धीरे-धीरे नए या अज्ञात विषयों की ओर बढ़ते हैं। यह छात्रों के लिए सीखने की प्रक्रिया को आसान बनाता है क्योंकि वे पूर्वज्ञान का उपयोग करके नए विचारों को समझने की कोशिश करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई छात्र पहले से "गिनती" के बारे में जानता है, तो शिक्षक उसे "जोड़-घटाव" सिखाने से पहले गिनती की अवधारणाओं का उपयोग करके नए विषय

को समझाएँगे। इससे छात्र धीरे-धीरे नई जानकारी को आत्मसात कर सकते हैं, और सीखने की प्रक्रिया सरल हो जाती है।

2. **सरल से जटिल की ओर (From Simple to Complex):** शिक्षण का एक और महत्वपूर्ण सिद्धांत है "सरल से जटिल की ओर" सिखाना। इस सिद्धांत के आधार पर, शिक्षक पहले सरल विषयों से शुरू करते हैं और धीरे-धीरे छात्रों को अधिक जटिल विषयों की ओर ले जाते हैं। जब छात्र सरल विषयों को पहले आत्मसात कर लेते हैं, तो वे मानसिक रूप से जटिल विषयों को समझने के लिए तैयार रहते हैं। उदाहरण के लिए, गणित की शिक्षा में शिक्षक पहले सरल संख्या और गिनती की अवधारणा सिखाएंगे, फिर धीरे-धीरे विभाजन, गुणा, और अन्य जटिल समस्याएँ सिखाएँगे। इससे छात्रों में आत्मविश्वास विकसित होता है और उनकी सीखने की रुचि बढ़ती है।

ये दोनों सिद्धांत शिक्षण को संरचनात्मक और प्रभावी बनाने में मदद करते हैं, क्योंकि ये छात्रों की मानसिकता और सीखने के स्तर के अनुसार शिक्षण प्रक्रिया का मार्गदर्शन करते हैं।

8. What are the Practical applications of AOM. 2017, 2021

Ans: AOM (Aspect-Oriented Modeling) एक प्रोग्रामिंग और मॉडलिंग विधि है जो जटिल सॉफ़्टवेयर प्रणालियों में क्रॉस-कटिंग चिंताओं (जैसे लॉगिंग, सुरक्षा, त्रुटि प्रबंधन) को प्रबंधित करती है। यह मुख्य रूप से ऑब्जेक्ट-ओरिएंटेड प्रोग्रामिंग (OOP) का एक उन्नत संस्करण है, जिसमें सॉफ़्टवेयर मॉडल के विभिन्न पहलुओं (aspects) को पहले अलग किया जाता है और फिर उन्हें एकीकृत किया जाता है।

AOM के व्यावहारिक उपयोग:

1. **क्रॉस-कटिंग चिंताओं का मॉडलिंग:** AOM सॉफ़्टवेयर डिज़ाइन प्रक्रिया में क्रॉस-कटिंग चिंताओं (जैसे सुरक्षा, लॉगिंग, या प्रदर्शन) को अलग करने में मदद करता है। इस पद्धति का उपयोग करके इन्हें मुख्य व्यावसायिक गतिविधियों से अलग कर मॉडल किया जा सकता है।
2. **कोड का पुनःउपयोग:** AOM सॉफ़्टवेयर कोड के पुन:उपयोग और रखरखाव को आसान बनाता है, क्योंकि एक बार क्रॉस-कटिंग चिंता को मॉडल करने के बाद, इसके लिए नया कोड लिखने की आवश्यकता नहीं होती। इससे सॉफ़्टवेयर विकास का समय कम हो जाता है।
3. **आसान रखरखाव:** प्रोग्राम की लॉजिक और क्रॉस-कटिंग चिंताओं को अलग रखने से सॉफ़्टवेयर का रखरखाव आसान हो जाता है। जब कोई परिवर्तन आवश्यक होता है, तो उसे स्वतंत्र रूप से प्रबंधित किया जा सकता है।
4. **मॉड्यूलरिटी में वृद्धि:** AOM के माध्यम से सॉफ़्टवेयर को मॉड्यूलर बनाया जा सकता है, जो प्रोग्राम के विभिन्न हिस्सों के बीच बेहतर समन्वय और सटीकता बनाए रखता है।
5. **सुरक्षा और लॉगिंग:** सुरक्षा या लॉगिंग जैसी चिंताओं को क्रॉस-कटिंग चिंताओं के रूप में माना जाता है, और AOM के माध्यम से इन्हें स्वतंत्र रूप से प्रबंधित किया जा सकता है, जिससे सुरक्षा में सुधार होता है और लॉगिंग प्रक्रिया अधिक कुशल हो जाती है।

AOM का उपयोग सॉफ़्टवेयर विकास के दौरान प्रणाली की जटिलता को कम करता है और प्रणाली के संचालन को विभिन्न दृष्टिकोणों से बेहतर ढंग से मॉडल करने में मदद करता है।

9. Analyse the steps of reflective level of Teaching. 2017, 2022

Ans: शिक्षण का प्रतिबिंब चरण (Reflective Stage of Teaching) शिक्षण प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण चरण है, जहाँ शिक्षक शिक्षण के अंत में छात्रों के सीखने और शिक्षण विधियों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करते हैं। इस चरण में शिक्षक और छात्र दोनों शिक्षा के परिणामों पर विचार करते हैं और अनुभव से सीखकर उन्हें भविष्य की शिक्षण प्रक्रिया में लागू करने की कोशिश करते हैं।

आइए प्रतिबिंब चरण के कदमों का विश्लेषण करें:

1. **मूल्यांकन (Evaluation)**: प्रतिबिंब चरण का पहला कदम छात्रों के सीखने का मूल्यांकन करना है। इस चरण में शिक्षक विभिन्न तरीकों (परीक्षा, क्विज़, समूह चर्चा, प्रायोगिक गतिविधियाँ) से छात्रों के सीखने के स्तर का निर्धारण करते हैं। यह मूल्यांकन किया जाता है कि छात्रों ने कितना सीखा है और वे अध्ययन की सामग्री को कितनी अच्छी तरह आत्मसात कर पाए हैं।
2. **प्रतिक्रिया (Feedback)**: इस चरण में छात्र और शिक्षक दोनों एक-दूसरे से प्रतिक्रिया एकत्र करते हैं। छात्र अपनी सीखने के अनुभव पर विचार व्यक्त करते हैं और शिक्षक की विधियों के बारे में अपनी भावनाएँ साझा करते हैं। इसी प्रकार, शिक्षक छात्रों के सीखने की प्रक्रिया पर प्रतिक्रिया देते हैं और उन्हें किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है, यह बताते हैं।
3. **स्वयं-प्रतिबिंब (Self-Reflection)**: शिक्षक अपने शिक्षण प्रक्रिया पर स्वयं-प्रतिबिंब करते हैं। वे यह मूल्यांकन करते हैं कि कौन सी विधियाँ अच्छी काम कर रही हैं और किन्हें सुधारने की आवश्यकता है। यह भविष्य की शिक्षण गतिविधियों के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह शिक्षक को अपनी विधियों पर और बेहतर नियंत्रण रखने में मदद करता है।
4. **त्रुटि विश्लेषण और सुधार (Error Analysis and Correction)**: इस चरण में शिक्षक छात्रों की सीखने की प्रक्रिया में किसी भी गलती या त्रुटि को पहचानते हैं और उन्हें सुधारने की कोशिश करते हैं। शिक्षक उन क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं जहाँ छात्रों को कठिनाई हो रही है और संबंधित विषयों पर फिर से चर्चा कर सकते हैं।
5. **पुनःशिक्षण योजना (Re-teaching Planning)**: यदि कोई विषय छात्रों द्वारा ठीक से समझा नहीं जाता है, तो शिक्षक उस विषय को फिर से सिखाने के लिए नई योजना बनाते हैं। इस चरण में छात्र और शिक्षक के बीच पुनः संबंध होता है, जहाँ शिक्षक शिक्षण विधियों में बदलाव या नए तरीकों से विषय को सिखाने की कोशिश करते हैं।
6. **भविष्य की शिक्षण रणनीतियाँ निर्धारित करना (Planning for Future Teaching)**: इस प्रतिबिंब चरण में प्राप्त प्रतिक्रिया और मूल्यांकन के आधार पर शिक्षक भविष्य के लिए नई शिक्षण रणनीतियाँ निर्धारित करते हैं। वे विश्लेषण करते हैं कि कौन सी शिक्षण विधियाँ प्रभावी रहीं और कौन सी विफल रहीं, और अगली कक्षा के लिए एक बेहतर रणनीति अपनाते हैं।

शिक्षण का प्रतिबिंब चरण शिक्षक और छात्रों दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह शिक्षण प्रक्रिया में सुधार और शिक्षा की प्रभावशीलता बढ़ाने में सहायक होता है। इस चरण में शिक्षक की शिक्षण विधियों का मूल्यांकन और छात्र के सीखने का विकास संभव होता है, जिससे शिक्षा अधिक प्रभावी बनती है।

10. Describe in brief the inter-active stage of Teaching. 2018, 2021

Ans: शिक्षण का अंतर-सक्रिय चरण वह चरण है जिसमें शिक्षक और छात्रों के बीच प्रत्यक्ष संवाद और प्रतिक्रिया होती है। इस चरण में शिक्षक छात्रों के सामने विषय प्रस्तुत करते हैं और छात्र शिक्षण प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।

अंतर-सक्रिय चरण की विशेषताएँ:

- **शिक्षक की भूमिका**: इस चरण में शिक्षक मुख्य रूप से पाठ पढ़ाते हैं, प्रश्न पूछते हैं और चर्चा के माध्यम से छात्रों को सिखाने का काम करते हैं। शिक्षक का उद्देश्य होता है छात्रों को विषय समझाना और उन्हें सीखने के लिए प्रेरित करना।
- **छात्रों की भूमिका**: छात्र शिक्षक के साथ चर्चा में भाग लेते हैं, प्रश्नों का उत्तर देते हैं, अपने विचार व्यक्त करते हैं और विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों में भाग लेते हैं। इससे छात्र शिक्षण प्रक्रिया में सक्रिय हो जाते हैं।
- **प्रश्नोत्तर**: शिक्षक और छात्रों के बीच प्रश्नोत्तर सत्र होता है, जो छात्रों की समझ को परखने और स्पष्ट करने का एक महत्वपूर्ण तरीका है। इससे छात्रों का ज्ञान बढ़ता है।
- **समावेश और भागीदारी**: इस चरण में छात्र सीधे पाठ से जुड़े रहते हैं और सक्रिय भागीदारी के माध्यम से सीखने का अनुभव प्राप्त करते हैं।

निष्कर्ष: शिक्षण का अंतर-सक्रिय चरण शिक्षण प्रक्रिया का केंद्र बिंदु है, जहाँ शिक्षक और छात्र दोनों सक्रिय भूमिका निभाते हैं। यह चरण शिक्षा की प्रभावशीलता को बढ़ाता है और छात्रों के सीखने के अनुभव को समृद्ध करता है।

11. Write down the role of learners in memory level of teaching and understanding level of teaching. 2018, 2020

Ans: स्मरण स्तर और बोधगम्यता स्तर में शिक्षार्थियों की भूमिका:

स्मरण स्तर में शिक्षार्थियों की भूमिका: स्मरण स्तर (Memory Level of Teaching) वह चरण है जहाँ शिक्षार्थियों को मुख्य रूप से तथ्यों, जानकारियों, नियमों और परिभाषाओं को कंठस्थ करना होता है। इस चरण में शिक्षार्थियों का कार्य होता है शिक्षक द्वारा दी गई जानकारी को हूबहू याद रखना। यहाँ शिक्षार्थी सोच-विचार या विश्लेषण नहीं करते, बल्कि केवल जानकारी को स्मरण करते हैं।

शिक्षार्थियों की भूमिका:

- **जानकारी कंठस्थ करना:** शिक्षार्थी शिक्षक द्वारा पढ़ाए गए विषय को ठीक से कंठस्थ करते हैं।
- **सही उत्तर देना:** कंठस्थ की गई जानकारी के आधार पर वे सही तरीके से प्रश्नों का उत्तर देते हैं।
- **अभ्यास द्वारा दक्षता प्राप्त करना:** शिक्षार्थी अधिक से अधिक अभ्यास के द्वारा कंठस्थ जानकारी को अच्छी तरह से याद रखते हैं।

बोधगम्यता स्तर में शिक्षार्थियों की भूमिका: बोधगम्यता स्तर (Understanding Level of Teaching) वह चरण है जहाँ शिक्षार्थी केवल जानकारी कंठस्थ करने के बजाय उसे समझने और आत्मसात करने का प्रयास करते हैं। इस स्तर पर शिक्षार्थी विभिन्न धारणाओं, नियमों और सिद्धांतों का अर्थ समझने के साथ-साथ उनके बीच संबंधों को भी खोजते हैं।

शिक्षार्थियों की भूमिका:

- **जानकारी का विश्लेषण करना:** शिक्षार्थी सामग्री का विश्लेषण करते हैं और उसके अर्थ को समझने का प्रयास करते हैं।
- **प्रश्न पूछना:** शिक्षार्थी प्रश्न पूछते हैं ताकि वे समझ सकें कि नियम और सिद्धांत वास्तविकता में कैसे लागू होते हैं।
- **सिद्धांतों का अनुप्रयोग करना:** शिक्षार्थी सीखी गई जानकारी को वास्तविक जीवन में लागू करने की कोशिश करते हैं और विभिन्न परिस्थितियों में उसका उपयोग खोजते हैं।
- **तुलना और मूल्यांकन करना:** शिक्षार्थी विभिन्न जानकारियों और सिद्धांतों के बीच तुलना करते हैं और उसके आधार पर अपनी राय बनाते हैं।

इन दोनों स्तरों पर शिक्षार्थियों की भूमिका उनकी सीखने की पद्धति पर निर्भर करती है, जहाँ स्मरण स्तर में कंठस्थ करने की क्षमता और बोधगम्यता स्तर में विश्लेषण एवं अनुप्रयोग की क्षमता महत्वपूर्ण होती है।

12. Briefly discuss the relationship of Teaching with Instruction and Training. 2018, 2022

Ans: शिक्षण, निर्देशन और प्रशिक्षण—ये तीनों शिक्षा प्रक्रिया के महत्वपूर्ण तत्व हैं, और ये आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं। शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को ज्ञान, कौशल और मूल्यों को प्राप्त करने का अवसर प्रदान करना है, और निर्देशन और प्रशिक्षण उस लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक भूमिका निभाते हैं।

शिक्षण: शिक्षण एक प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक सामग्री सिखाने के लिए योजनाबद्ध गतिविधियों का संचालन करते हैं। शिक्षक छात्रों के सामने नए विचार, जानकारी और विषय प्रस्तुत करते हैं और उन्हें सही तरीके से समझने में मदद करते हैं। शिक्षण केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं है; यह छात्रों की सोचने और समस्या सुलझाने की क्षमताओं को भी बढ़ाता है।

निर्देशन: निर्देशन वह विधि या रणनीति है जिसका उपयोग शैक्षिक लक्ष्यों को लागू करने के लिए किया जाता है। यह शिक्षक और छात्रों के बीच एक निर्माणात्मक प्रक्रिया है, जहां शिक्षक स्पष्ट रूप से बताते हैं कि किसी कार्य को कैसे पूरा किया जाए। निर्देशन के माध्यम से, छात्र विशिष्ट कार्यों या कौशलों को आत्मसात कर सकते हैं। शिक्षण प्रक्रिया में, निर्देशन शिक्षक के हाथ में एक उपकरण के रूप में कार्य करता है, जिसके माध्यम से छात्र एक विशिष्ट दिशा में आगे बढ़ते हैं।

प्रशिक्षण: प्रशिक्षण वह प्रक्रिया है जिसमें छात्रों को व्यावहारिक अनुभवों के माध्यम से कौशल और प्रभावशीलता प्राप्त करने के लिए सिखाया जाता है। यह अक्सर हाथों-हाथ सिखाने पर निर्भर करता है,

जहां छात्र किसी कार्य या गतिविधि के माध्यम से अनुभव प्राप्त करते हैं। प्रशिक्षण शिक्षा प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, विशेषकर व्यावहारिक कौशल प्राप्त करने के लिए।

शिक्षण, निर्देशन और प्रशिक्षण के बीच संबंध:

- **शिक्षण का आधार:** शिक्षण एक व्यापक प्रक्रिया है, जिसमें निर्देशन और प्रशिक्षण शामिल हैं। निर्देशन और प्रशिक्षण शिक्षण का हिस्सा होते हुए छात्रों के सीखने के अनुभव को समृद्ध करते हैं।
- **निर्देशन का मार्गदर्शन:** निर्देशन छात्रों के लिए मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है। यह विभिन्न चरणों में उचित निर्देश प्रदान करता है और उनके समझने की प्रक्रिया को सरल बनाता है। शिक्षण के दौरान, शिक्षक अपने शिक्षण प्रयासों को सफल बनाने के लिए निर्देशन का उपयोग कर सकते हैं।
- **प्रशिक्षण के माध्यम से कौशल विकास:** प्रशिक्षण छात्रों को व्यावहारिक कौशल और अनुभव प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है, जो शिक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। प्रशिक्षण के माध्यम से, छात्र सीखे गए विषयों को व्यावहारिक रूप से लागू करने में सक्षम होते हैं।

शिक्षण, निर्देशन और प्रशिक्षण के बीच का संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण है। ये एक-दूसरे के पूरक के रूप में कार्य करते हैं, जो छात्रों के कौशल और ज्ञान के विकास को सुनिश्चित करते हैं। ये तीनों प्रक्रियाएं मिलकर एक प्रभावी शिक्षण वातावरण बनाती हैं, जहां छात्रों को प्रभावी ढंग से सीखने का अवसर मिलता है।

13. Write down different categories of Flander's Interaction Analysis. 2019, 2021

Ans: फ्लैंडर के इंटरैक्शन एनालिसिस को विभिन्न प्रकार की इंटरैक्शन आधारित गतिविधियों के अनुसार वर्गीकृत किया गया है। ये श्रेणियाँ शिक्षकों और छात्रों के बीच संवाद और इंटरैक्शन के विभिन्न पहलुओं की पहचान करती हैं। यहां फ्लैंडर के इंटरैक्शन एनालिसिस की मुख्य श्रेणियाँ दी गई हैं:

फ्लैंडर के इंटरैक्शन एनालिसिस की श्रेणियाँ:

1. **शिक्षक की बातचीत (Teacher Talk):** वह समय जब शिक्षक बोलते हैं, जैसे जानकारी देना या नए विषयों की व्याख्या करना।
2. **छात्र की बातचीत (Student Talk):** छात्रों का योगदान, जहाँ वे प्रश्न पूछते हैं, उत्तर देते हैं, या चर्चाओं में भाग लेते हैं।
3. **शिक्षक-छात्र इंटरैक्शन (Teacher-Student Interaction):** छात्रों की प्रतिक्रियाएँ शिक्षकों के प्रश्नों या टिप्पणियों के प्रति और चर्चाओं में भाग लेना।
4. **निर्देश (Instruction):** शिक्षक की दिशा-निर्देश जो छात्रों की गतिविधियों या अध्ययन के लिए मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।
5. **प्रश्न पूछना (Questioning):** शिक्षक द्वारा प्रश्न पूछने और छात्रों द्वारा उत्तर देने की प्रक्रिया, जो सोचने और समझने में सुधार करती है।
6. **चर्चा (Discussion):** छात्रों के बीच चर्चा और उनके विचारों और विचारों को साझा करने की प्रक्रिया।

7. **सहायता और मार्गदर्शन (Support and Guidance):** शिक्षक की सहायता और मार्गदर्शन जो छात्रों की सीखने की प्रक्रिया का समर्थन करती है।
8. **मूल्यांकन (Evaluation**): वह प्रक्रिया जिसके द्वारा शिक्षक छात्रों के काम या प्रदर्शन का मूल्यांकन करते हैं।

ये श्रेणियाँ शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षकों और छात्रों की भूमिकाओं और इंटरैक्शन के गुणात्मक और मात्रात्मक पहलुओं का विश्लेषण करने में मदद करती हैं। फ्लैंडर के इंटरैक्शन एनालिसिस शिक्षण की प्रभावशीलता और प्रक्रियाओं को बढ़ाने में सहायक है।

14. How can Introducing the lesson skill be applied in classroom situation? Discuss with examples. 2019, 2021, 2023

Ans: <u>कक्षा में पाठ की शुरुआत की कौशल</u>

कक्षा में पाठ की शुरुआत करने की कौशल एक महत्वपूर्ण कदम है जो छात्रों का ध्यान आकर्षित करता है और पाठ के विषय में उनकी रुचि उत्पन्न करता है। यह शिक्षक की पहली गतिविधि है जो छात्रों को पाठ के मूल सामग्री या अवधारणा से परिचित कराती है। यहाँ कुछ उदाहरण दिए गए हैं:

1. **प्रश्नों के साथ शुरुआत:** शिक्षक पाठ शुरू करने से पहले छात्रों से संबंधित विषय पर प्रश्न पूछ सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि पाठ का विषय 'पर्यावरण' है, तो शिक्षक पूछ सकते हैं, "हम अपने चारों ओर के पर्यावरण की रक्षा कैसे कर सकते हैं?" इससे छात्रों के विचारों को उत्तेजित किया जाता है और वे पाठ में रुचि रखते हैं।
2. **कहानी या घटना साझा करना:** कहानी या घटना साझा करना पाठ की शुरुआत का एक प्रभावी तरीका है। उदाहरण के लिए, यदि विषय 'अनुशासन' है, तो शिक्षक एक कहानी सुना सकते हैं जिसमें एक पात्र अनुशासन का पालन करके सफलता प्राप्त करता है। यह छात्रों को सामग्री समझने में मदद करता है और उनका ध्यान आकर्षित करता है।
3. **दृश्य सामग्री का उपयोग:** शिक्षक पाठ की शुरुआत में चित्र, वीडियो या चार्ट का उपयोग कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि पाठ का विषय 'विश्व युद्ध' है, तो शिक्षक युद्ध की एक ऐतिहासिक छवि दिखा सकते हैं। इससे छात्रों के बीच चर्चा और प्रश्न पूछने का अवसर मिलता है।
4. **संक्षिप्त सारांश प्रदान करना:** शिक्षक पाठ की सामग्री का एक संक्षिप्त सारांश प्रदान कर सकते हैं जो छात्रों को बताता है कि वे क्या सीखने जा रहे हैं। उदाहरण के लिए, "आज हम गणित में गुणन के बारे में सीखेंगे और देखेंगे कि यह दैनिक जीवन में कैसे उपयोग होता है।" इससे उनकी रुचि और अपेक्षाएँ बढ़ती हैं।
5. **खेल या गतिविधियाँ:** शिक्षक एक छोटे खेल या गतिविधि के माध्यम से पाठ की शुरुआत कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि विषय 'ऊर्जा' है, तो शिक्षक एक गतिविधि शुरू कर सकते हैं जिसमें छात्र विभिन्न ऊर्जा स्रोतों की पहचान करते हैं। यह छात्रों की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करता है और पाठ के प्रति उनकी रुचि बढ़ाता है।

पाठ की शुरुआत करने की कौशल कक्षा में छात्रों का ध्यान आकर्षित करने और सीखने के अनुभव को बेहतर बनाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। विभिन्न तकनीकों का उपयोग करके शिक्षक छात्रों को सीखने में रुचि बढ़ा सकते हैं और पाठ की सामग्री के लिए उनकी तैयारी में सहायता कर सकते हैं।

15. Briefly discuss social system and principle of reaction of Advance Organizer Model. 2019, 2022

Ans: Advance Organizer Model एक शिक्षण विधि है जो छात्रों को नए जानकारी सीखने से पहले उनके पूर्व ज्ञान के आधार पर एक ढांचा प्रदान करती है। यह मॉडल, जिसे शिक्षक द्वारा बनाया गया है, एक अवधारणा या ढांचे के रूप में कार्य करता है जो छात्रों के सीखने के अनुभव को समृद्ध बनाने में मदद करता है। यह दृष्टिकोण छात्रों को नए जानकारी से परिचित कराने के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है और उनके सीखने की प्रक्रिया को सरल बनाता है।

Advance Organizer Model का सामाजिक तंत्र और प्रतिक्रिया नीति

1. **सामाजिक तंत्र:**

a) **सामाजिक संबंध:** Advance Organizer Model सामाजिक शिक्षा संबंधी अवधारणाओं को जोड़ता है। यह छात्रों के बीच एक सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ बनाता है, जो उनके सीखने के अनुभव को और समृद्ध करता है।

b) **समूह चर्चा:** जब छात्र एक संरचनात्मक चर्चा में भाग लेते हैं, तो उनके पूर्व अवधारणाओं के आधार पर नई जानकारी प्राप्त करने की प्रक्रिया अधिक मजबूत हो जाती है। यह एक सहयोगात्मक शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देता है जहां छात्र एक-दूसरे के अनुभवों से सीख सकते हैं।

2. **प्रतिक्रिया नीति:**

a) **प्रतिक्रिया देना:** Advance Organizer Model छात्रों को नए जानकारी को स्वीकार करते समय अपने अनुभवों और विचारों को व्यक्त करने के लिए प्रेरित करता है। छात्र अपने पूर्व अवधारणाओं के साथ नए जानकारी का समन्वय कर सकते हैं, जो उनके सीखने की प्रक्रिया का समर्थन करता है।

b) **समस्या समाधान:** जब छात्र नए अवधारणाओं को अपनी मौजूदा अवधारणाओं के साथ मिलाने का प्रयास करते हैं, तो वे विभिन्न समस्या समाधान रणनीतियों पर काम करते हैं। यह उनके विचारशक्ति और समस्या समाधान कौशल को बढ़ाने में मदद करता है।

Advance Organizer Model शिक्षण प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, विशेष रूप से जब छात्रों को नए अवधारणाएँ सिखाने का समय आता है। यह सामाजिक संबंध स्थापित करने और छात्रों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर सीखने के अनुभव को समृद्ध बनाने में सहायक है।

16. Describe the post-active phase of teaching. 2019, 2021

Ans: शिक्षण के उत्तर-सक्रियता चरण (Post-active Phase of Teaching) वह चरण है जहाँ पाठ समाप्त होने के बाद छात्रों और शिक्षकों के बीच प्रतिक्रियाएँ और मूल्यांकन होते हैं। इस चरण में शिक्षक छात्रों के सीखने के परिणामों का मूल्यांकन करते हैं और छात्रों की सीखने की प्रक्रिया में सुधार के लिए महत्वपूर्ण जानकारी एकत्र करते हैं।

उत्तर-सक्रियता चरण की विशेषताएँ:

1. **मूल्यांकन और प्रतिबिंब:** शिक्षक परीक्षणों या परियोजनाओं के माध्यम से छात्रों के सीखने के परिणामों का मूल्यांकन करते हैं। वे छात्रों की क्षमताओं और ज्ञान के स्तर को समझने की कोशिश करते हैं, जबकि छात्र अपनी सीखने की प्रक्रियाओं पर विचार करते हैं।
2. **फीडबैक प्रदान करना:** इस चरण में शिक्षकों के लिए छात्रों को रचनात्मक फीडबैक देना महत्वपूर्ण है। शिक्षक छात्रों की गलतियों या मजबूत बिंदुओं को पहचानते हैं और सुधार के लिए निर्देश देते हैं।
3. **छात्रों का आत्म-मूल्यांकन:** छात्रों को अपनी सीखने की प्रक्रियाओं और परिणामों पर विचार करना चाहिए। उन्हें यह समझना चाहिए कि वे कहाँ अच्छे हैं और कहाँ सुधार की आवश्यकता है।
4. **शिक्षण रणनीतियों की समीक्षा:** शिक्षक इस चरण में अपनी शिक्षण रणनीतियों और गतिविधियों का मूल्यांकन करते हैं। वे सोचते हैं कि कौन-सी विधियाँ प्रभावी थीं और कौन-सी विधियों में परिवर्तन करने की आवश्यकता है।
5. **नई योजनाएँ बनाना:** इस चरण में शिक्षक छात्रों की प्रतिक्रियाओं और परिणामों के आधार पर भविष्य के पाठ की योजना बनाते हैं। यह सुनिश्चित करता है कि अगले पाठ की गतिविधियाँ छात्रों की आवश्यकताओं के अनुसार समायोजित की जा रही हैं।

उत्तर-सक्रियता चरण शिक्षण प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण भाग है। यह शिक्षकों को सीखने के परिणामों का विश्लेषण करने और छात्रों के सीखने के अनुभवों को समृद्ध बनाने का अवसर प्रदान करता है। यह चरण शिक्षण प्रक्रिया के समग्र सुधार और प्रभावशीलता के लिए महत्वपूर्ण है।

17. Compare Concept Attainment model (CAM) with Advance Organizer Model (AOM). 2023

Ans: <u>Concept Attainment Model (CAM) और Advance Organizer Model (AOM) की तुलना</u>

<u>1. परिभाषा:</u>

- **Concept Attainment Model (CAM):** CAM एक शिक्षण पद्धति है जिसका उपयोग छात्रों को नए विचार या संकल्पनाएं सिखाने के लिए किया जाता है। इस मॉडल में शिक्षक कुछ उदाहरण प्रदान करते हैं, और छात्र उन उदाहरणों के बीच सामान्य विशेषताओं को पहचानना सीखते हैं और संकल्पनाएँ बनाते हैं।
- **Advance Organizer Model (AOM):** AOM एक शिक्षण पद्धति है जो छात्रों को नए जानकारी सीखने से पहले उनके पूर्व ज्ञान के आधार पर एक ढांचा प्रदान करती है। यह छात्रों के शिक्षण अनुभव को समृद्ध करने और नए सामग्री से परिचित कराने के लिए एक मार्गदर्शन के रूप में कार्य करती है।

<u>2. उद्देश्य:</u>

- **CAM:** CAM का उद्देश्य छात्रों में एक नया विचार विकसित करना और उनके विचार एवं विश्लेषणात्मक क्षमताओं में सुधार करना है।
- **AOM:** AOM का उद्देश्य छात्रों के शिक्षण अनुभव को बेहतर बनाना और नए जानकारी के साथ उनके पूर्व ज्ञान को जोड़ना है।

3. पद्धति:

- **CAM:** CAM में शिक्षक उदाहरण प्रदान करते हैं (जो सही या गलत हो सकते हैं) और छात्र उन उदाहरणों के आधार पर सामान्य विशेषताओं को निर्धारित करते हैं।
- **AOM:** AOM में शिक्षक छात्रों के पूर्व ज्ञान के आधार पर एक ढांचा प्रदान करते हैं जो नए जानकारी सीखने में सहायक होता है।

4. छात्र की भूमिका:

- **CAM:** छात्र CAM में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, जानकारी का विश्लेषण करते हैं और संकल्पनाएँ बनाते हैं।
- **AOM:** AOM में छात्र प्रस्तावित ढांचे का उपयोग करते हैं ताकि वे अपने पूर्व ज्ञान को नए जानकारी के साथ जोड़ सकें।

5. उदाहरण:

- **CAM:** उदाहरण के लिए, शिक्षक कुछ फल (सेब, केला, आम) और सब्जियाँ (गाजर, खीरा) दिखाते हैं और छात्रों से पूछते हैं कि वे इनमें कैसे अंतर करते हैं और फलों की सामान्य विशेषताओं को पहचानने के लिए।
- **AOM:** उदाहरण के लिए, यदि नया पाठ "जैव विविधता" के बारे में है, तो शिक्षक पिछले पाठ में जानवरों और पौधों के बीच के अंतर का संक्षिप्त सारांश प्रदान कर सकते हैं ताकि छात्र नए जानकारी के लिए तैयार रहें।

6. परिणाम:

- **CAM:** CAM छात्रों के बीच गहरी समझ और विश्लेषणात्मक सोच विकसित करता है।
- **AOM:** AOM नए जानकारी को ग्रहण करने की प्रक्रिया को सरल बनाता है और शिक्षण अनुभव को समृद्ध करता है।

जबकि CAM और AOM दोनों शिक्षण विधियाँ हैं, उनके उद्देश्य, विधियाँ और छात्रों की भूमिकाएँ भिन्न होती हैं। CAM छात्रों को नए विचार बनाने में मदद करता है, जबकि AOM छात्रों के पूर्व ज्ञान के आधार पर नए जानकारी सीखने के लिए एक ढांचा प्रदान करता है।

18. State the advantages of gamification in Education. 2023

Ans: गेमिफिकेशन शिक्षा प्रक्रिया में खेल के तत्वों और सिद्धांतों का उपयोग है, जो छात्रों का ध्यान आकर्षित करने और उनके सीखने में रुचि बढ़ाने में सहायक है। यह छात्रों के बीच सक्रिय भागीदारी, रचनात्मकता और समस्या-समाधान कौशल को बढ़ावा देता है, जिससे सीखने का अनुभव और समृद्ध होता है।

शिक्षा में खेलों का उपयोग करने के प्रमुख पांच लाभ:

1. **प्रेरणा में वृद्धि:** गेमिफिकेशन छात्रों के लिए एक आकर्षक और मजेदार सीखने का वातावरण बनाता है। विभिन्न खेलों के माध्यम से, छात्र सीखने के लिए उत्सुक होते हैं, जिससे उनकी शिक्षा में रुचि बढ़ती है।
2. **अनुभव-आधारित सीखना:** गेमिफिकेशन के माध्यम से, छात्र वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में अपनी क्षमताओं का उपयोग कर सकते हैं। यह उन्हें व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने का अवसर देता है, जिससे उनकी सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावी होती है।
3. **सहयोग और प्रतिस्पर्धा:** गेमिफिकेशन छात्रों के बीच सहयोग और प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा करता है। समूह खेलों या टीम चुनौतियों के माध्यम से, वे एक साथ काम करते हैं और टीम के रूप में सफलता के लिए प्रयास करते हैं।
4. **फीडबैक और मूल्यांकन:** खेलों के माध्यम से, छात्रों को उनकी प्रगति के बारे में तात्कालिक फीडबैक मिलता है। यह उनके सीखने की प्रक्रिया में सुधार करने में मदद करता है, क्योंकि वे जानते हैं कि उन्हें कहाँ सुधार करने की आवश्यकता है।
5. **रचनात्मकता और समस्या-समाधान कौशल:** गेमिफिकेशन छात्रों की रचनात्मकता और समस्या-समाधान कौशल को विकसित करने में सहायक है। उन्हें खेलों के माध्यम से विभिन्न समस्याओं को हल करने के लिए नए और अभिनव तरीकों को खोजने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

गेमिफिकेशन शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और आकर्षक बनाता है। यह छात्रों के लिए एक समग्र सुधारित सीखने के अनुभव को सुनिश्चित करता है, जो उनके ज्ञान, कौशल और व्यक्तित्व के विकास में सहायक होता है।

19. Discuss the effectiveness of group discussion method in classroom teaching. 2023

Ans: समूह चर्चा विधि शिक्षण प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस विधि में, छात्र विभिन्न विषयों पर चर्चा करने के लिए एकत्रित होते हैं, जिससे उनके सीखने के अनुभव को समृद्ध किया जाता है।

<u>कक्षा में समूह चर्चा विधि की प्रभावशीलता:</u>

1. **सक्रिय भागीदारी:** समूह चर्चाओं के माध्यम से छात्र सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। इससे उनकी सीखने की प्रक्रिया में गहराई आती है, क्योंकि उनके पास अपने विचार और राय व्यक्त करने का अवसर होता है।
2. **समस्या समाधान कौशल में वृद्धि:** समूह चर्चा छात्रों को समस्या समाधान में सहायता करती है। विभिन्न दृष्टिकोणों से सोचने पर वे नए विचार और समाधान खोजते हैं।
3. **सहयोग और सामाजिक कौशल:** यह विधि छात्रों के बीच सहयोग की भावना उत्पन्न करती है। वे एक-दूसरे के साथ चर्चा करते हैं, जो उनके सामाजिक कौशल और अंतरव्यक्तिक संबंधों के विकास में सहायक होता है।
4. **विभिन्न दृष्टिकोणों की समझ:** चर्चा के दौरान, छात्रों को एक-दूसरे के दृष्टिकोण सुनने का अवसर मिलता है। इससे वे विषय के बारे में एक व्यापक समझ प्राप्त करते हैं और विभिन्न दृष्टिकोणों का मूल्यांकन करना सीखते हैं।

5. **नए विचारों का निर्माण:** समूह चर्चाओं में, छात्र नए विचार और जानकारी का निर्माण करते हैं। वे अपने अनुभवों और अनुसंधान के आधार पर नया ज्ञान उत्पन्न कर सकते हैं।
6. **फीडबैक प्रदान करना:** समूह चर्चा के दौरान, छात्र एक-दूसरे के काम और विचारों पर फीडबैक देते हैं। इससे उनकी सीखने की प्रक्रिया में सुधार होता है, क्योंकि वे समझते हैं कि उन्हें कहाँ सुधार करने की आवश्यकता है।

समूह चर्चा विधि शिक्षण प्रक्रिया में अत्यधिक प्रभावी है। यह न केवल छात्रों को सक्रिय रूप से शामिल करती है, बल्कि उनके विचार, चर्चा और समस्या समाधान कौशल को भी बढ़ाती है। शिक्षकों को इस विधि का उपयोग करना चाहिए, क्योंकि यह छात्रों के सीखने के अनुभव को और अधिक समृद्ध और प्रभावी बनाता है।

Marks: 10

1. Describe enquiry training model with suitable examples. 2017, 2019, 2020

Ans:

परिचय: Inquiry Training Model एक प्रभावी शैक्षणिक दृष्टिकोण है जो छात्रों में खोज करने की प्रवृत्ति विकसित करने में मदद करता है। यह मॉडल छात्रों को प्रश्न पूछने और अपने चारों ओर की दुनिया को गहराई से समझने के लिए प्रेरित करता है। इस विधि के माध्यम से, छात्र जानकारी इकट्ठा करते हैं, उसका विश्लेषण करते हैं, और निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल होते हैं। Inquiry Training Model शिक्षकों के लिए भी एक महत्वपूर्ण उपकरण है, क्योंकि यह कक्षा में सक्रिय सीखने का वातावरण बनाता है। छात्र स्वतंत्र रूप से समस्या समाधान में शामिल हो सकते हैं, जिससे वे प्रभावी रूप से ज्ञान अर्जित करते हैं और अपनी आलोचनात्मक सोच और विश्लेषणात्मक क्षमताओं को विकसित करते हैं।

Inquiry Training Model की मुख्य विशेषताएँ:

1. **प्रश्न उत्तेजना:** छात्रों को विभिन्न विषयों पर प्रश्न उत्पन्न करने के लिए प्रेरित किया जाता है। उदाहरण के लिए, एक विज्ञान कक्षा में शिक्षक छात्रों से पूछ सकते हैं, "आपको क्यों लगता है कि पेड़ हरे होते हैं?" यह प्रश्न छात्रों के बीच रुचि और चर्चा को जन्म देता है।
2. **डाटा संग्रह:** छात्र अपने प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए जानकारी इकट्ठा करते हैं। उदाहरण के लिए, विज्ञान कक्षा में वे पत्ते इकट्ठा कर सकते हैं या विभिन्न रंगों के पत्तों पर शोध कर सकते हैं।
3. **विश्लेषण और व्याख्या:** डेटा इकट्ठा करने के बाद, छात्र उसका विश्लेषण करते हैं और उत्तर खोजने का प्रयास करते हैं। उदाहरण के लिए, वे अपनी अवलोकनों पर चर्चा कर सकते हैं और जान सकते हैं कि पेड़ों के हरे रंग के लिए क्लोरोफिल जिम्मेदार है।
4. **निर्णय लेना:** अपने शोध के आधार पर छात्र निर्णय लेते हैं। उदाहरण के लिए, वे यह निर्णय ले सकते हैं कि पौधों का रंग पर्यावरण और खाद्य श्रृंखला पर कैसे निर्भर करता है।
5. **प्रतिक्रिया और संशोधन:** छात्र अपने निर्णयों और अवलोकनों पर प्रतिक्रिया देते हैं और आवश्यक होने पर उन्हें संशोधित करते हैं। उदाहरण के लिए, वे अपने शोध के परिणामों पर चर्चा करते हैं और नए प्रश्न उत्पन्न कर सकते हैं।

उदाहरण: "पानी क्यों आवश्यक है?"

1. **प्रश्न उठाना:** शिक्षक कक्षा में छात्रों से पूछते हैं: "पानी क्यों आवश्यक है?" यह प्रश्न छात्रों के बीच चर्चा की शुरुआत करता है और वे इस विषय पर गहराई से सोचने लगते हैं।
2. **जानकारी इकट्ठा करना:** छात्र विभिन्न स्रोतों से जानकारी इकट्ठा करना शुरू करते हैं, जैसे:

- पानी के उपयोग:
  - वे विभिन्न स्रोतों से जान पाते हैं कि पानी हमारे दैनिक जीवन के लिए आवश्यक है।
  - पीना: पानी शरीर के सही कार्यों में मदद करता है और हाइड्रेशन बनाए रखता है।
  - स्नान: पानी स्वच्छता और स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है।
  - **कृषि:** कृषि के लिए पानी बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह फसलों की वृद्धि और उत्पादन सुनिश्चित करता है। छात्र विभिन्न पौधों के लिए आवश्यक पानी की मात्रा और सूखे की स्थितियों में इसके प्रभाव पर शोध कर सकते हैं।

3. **जीवन रक्षक:**
   - वे विश्लेषण करते हैं कि पानी न केवल मानवों के लिए बल्कि सभी जीवों और पौधों के लिए आवश्यक है। उदाहरण के लिए, वे यह खोजते हैं कि:
     - जलजीवों के लिए पानी की उपस्थिति उनके जीवनचक्र में महत्वपूर्ण होती है।
     - पौधों के लिए, पानी उनके पोषण के अवशोषण और वृद्धि को सुनिश्चित करता है, और इसके अभाव में पौधे मर सकते हैं।
4. **विश्लेषण:** छात्र एकत्रित जानकारी का विश्लेषण करते हैं। वे चर्चा करते हैं कि पानी केवल जीवन के लिए महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि यह पर्यावरण के संतुलन को बनाए रखने में भी सहायक है। वे सूखा, बाढ़ आदि जैसी विभिन्न परिस्थितियों के प्रभावों का मूल्यांकन करते हैं।
5. **निर्णय लेना:** छात्र इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि पानी मानव जीवन और पर्यावरण का एक आवश्यक हिस्सा है। वे समझते हैं कि पानी के बिना जीवन असंभव है और इसके उचित प्रबंधन और संरक्षण की आवश्यकता है।
6. **प्रतिक्रिया और संशोधन:** छात्र अपने शोध के परिणामों पर चर्चा करते हैं और नए प्रश्न उत्पन्न करते हैं, जैसे "पानी की कमी होने पर हमें क्या करना चाहिए?" वे विभिन्न समस्याओं और संभावित समाधानों पर विचार करते हैं और आवश्यक कदम उठाने की योजना बनाते हैं।

<u>निष्कर्ष:</u> Inquiry Training Model एक शक्तिशाली शैक्षणिक विधि है जो छात्रों को सक्रिय रूप से सीखने और अपने प्रश्नों के माध्यम से खोज करने के लिए प्रेरित करती है। यह मॉडल छात्रों की आलोचनात्मक सोच और समस्या समाधान कौशल को विकसित करने में मदद करता है, क्योंकि वे जानकारी इकट्ठा करते हैं और उसका विश्लेषण करते हैं। छात्र वास्तविक जीवन की समस्याओं के समाधान की प्रक्रिया में शामिल होते हैं, जो उन्हें शोधकर्ता और वैज्ञानिक के रूप में विकसित करता है। परिणामस्वरूप, वे केवल जानकारी नहीं सीखते, बल्कि अपने ज्ञान के आधार पर नए विचार बनाने में सक्षम होते हैं।

2. Describe different categories of Flanner's Interaction Analysis. 2017, 2023

Ans: <u>परिचय:</u> Flanders का परस्पर क्रिया विश्लेषण एक महत्वपूर्ण शैक्षिक विधि है जो कक्षा में छात्रों और शिक्षकों के बीच संचार के विभिन्न आयामों का विश्लेषण करता है। इसका उपयोग शिक्षण प्रक्रिया

में इंटरैक्शन और संबंधों की संरचना को समझने के लिए किया जाता है। यह मॉडल सात मुख्य श्रेणियों में विभाजित है, जिसमें शिक्षक-विषय चर्चा, शिक्षक-छात्र चर्चा, छात्र-छात्र चर्चा और अन्य इंटरैक्शन शामिल हैं। यह विश्लेषण विधि शिक्षकों को कक्षा में प्रभावी शिक्षण रणनीतियाँ अपनाने और छात्रों को सक्रिय रूप से शिक्षण प्रक्रिया में शामिल करने की अनुमति देती है। इसके परिणामस्वरूप, यह छात्रों की आलोचनात्मक सोच, समस्या समाधान और सामाजिक कौशल के विकास को बढ़ावा देती है।

Flanders के परस्पर क्रिया विश्लेषण की श्रेणियाँ: Flanders का परस्पर क्रिया विश्लेषण एक शिक्षण विधि है जो कक्षा में शिक्षकों और छात्रों के बीच संचार की प्रक्रियाओं का विश्लेषण करने के लिए उपयोग की जाती है। इसे सामान्यतः सात प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया जाता है, जो नीचे वर्णित हैं:

1. **शिक्षक-विषय चर्चा:** इस श्रेणी में शिक्षक छात्रों के लिए सामग्री प्रस्तुत करते हैं। इसमें मुख्यतः शिक्षण विषय से संबंधित चर्चाएँ शामिल होती हैं। उदाहरण के लिए, शिक्षक पाठ्यपुस्तक से जानकारी पढ़ते हैं या किसी विषय पर विस्तृत चर्चा करते हैं।
2. **शिक्षक-छात्र चर्चा:** इस श्रेणी में शिक्षक छात्रों से प्रश्न पूछते हैं और उनके उत्तर सुनते हैं। इसका उद्देश्य छात्रों को शिक्षण प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल करना है। उदाहरण के लिए, शिक्षक एक प्रश्न प्रस्तुत कर छात्रों को उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
3. **छात्र-शिक्षक चर्चा:** इस श्रेणी में छात्र शिक्षक से प्रश्न पूछते हैं और अपने विचार और राय साझा करते हैं। यह छात्रों की रचनात्मकता और स्वतंत्र सोच के विकास को बढ़ावा देता है। उदाहरण के लिए, छात्र शिक्षक को अपनी राय बताते हैं या किसी विषय की व्याख्या चाहते हैं।
4. **छात्र-छात्र चर्चा:** इस श्रेणी में छात्र एक-दूसरे के साथ चर्चा और सहयोग करते हैं। यह छात्रों के बीच आलोचनात्मक सोच और सहयोगात्मक कौशल के विकास में मदद करता है। उदाहरण के लिए, एक समूह चर्चा या सहयोगात्मक परियोजना पर काम करना।
5. **शिक्षक-अन्य चर्चा:** इसमें शिक्षकों और अन्य शिक्षकों या स्कूल के कर्मचारियों के बीच चर्चा शामिल होती है। उदाहरण के लिए, शिक्षक एक बैठक में भाग लेते हैं जहां शिक्षण विधियों पर चर्चा की जाती है।
6. **छात्र-अन्य चर्चा:** इस श्रेणी में छात्र अन्य छात्रों या अन्य किसी (जैसे अभिभावक या मेहमान) के साथ चर्चा करते हैं। उदाहरण के लिए, छात्र स्कूल के बाहर किसी परियोजना पर चर्चा कर रहे हैं।
7. **गैर-मौखिक क्रिया:** यह एक महत्वपूर्ण श्रेणी है जिसमें शिक्षक या छात्रों की इशारों, चेहरे के भाव और शारीरिक भाषा शामिल होती है। इसे संचार के एक भाग के रूप में माना जाता है जो बिना शब्दों के संदेश पहुंचा सकता है, जो अक्सर संचार प्रक्रिया को बढ़ाने में मदद करता है।

निष्कर्ष: Flanders का परस्पर क्रिया विश्लेषण कक्षा में संचार के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करने का एक प्रभावी तरीका है। यह शिक्षकों और छात्रों के बीच संबंधों और सहयोग के महत्व को उजागर करता है। शिक्षक-विषय, शिक्षक-छात्र, और छात्र-छात्र चर्चाओं के माध्यम से, यह छात्रों के सक्रिय भागीदारी और आलोचनात्मक सोच के विकास को बढ़ावा देता है। विभिन्न श्रेणियाँ शिक्षण प्रक्रिया में संबंधों की स्थापना को सक्षम करती हैं और छात्रों की सोच और कौशल को बढ़ाती हैं। इसके परिणामस्वरूप, यह शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार करता है और कक्षा में एक समृद्ध और सक्रिय वातावरण बनाता है, जो छात्रों के सीखने के अनुभव को समृद्ध करता है और उनके व्यक्तित्व विकास में सहायक होता है।

3. Discuss the role of teacher in effective teaching. Mention two advantages of 'Group Discussion'. 2018, 2020, 2021, 2023

Ans: <u>भूमिका:</u> शिक्षक की भूमिका प्रभावी शिक्षण में अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षक छात्रों की सीखने की प्रक्रिया में मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं, उनके कौशल और ज्ञान के विकास को बढ़ावा देते हैं। वे सक्रिय चर्चा और सहयोगात्मक सीखने का वातावरण बनाते हैं, जहाँ छात्र अपनी सोच और राय व्यक्त कर सकते हैं। शिक्षक कक्षा में आरामदायक माहौल बनाते हैं और छात्रों की ताकत और कमजोरियों के आधार पर सहायक मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। शिक्षक पाठ्य विषय के प्रति छात्रों की रुचि बढ़ाने और आलोचनात्मक सोच को विकसित करने में मदद करते हैं। इस प्रकार, शिक्षक की प्रभावी भूमिका छात्रों के सामूहिक सीखने की प्रक्रिया को समृद्ध करती है और उनके भविष्य को आकार देने में मदद करती है।

<u>प्रभावी शिक्षण:</u> प्रभावी शिक्षण एक ऐसी शिक्षण विधि है जो छात्रों को सक्रिय रूप से सीखने की प्रक्रिया में शामिल करती है और उनके सीखने के अनुभव को समृद्ध करती है। इस दृष्टिकोण में, शिक्षकों और छात्रों के बीच आपसी संचार और सहयोग महत्वपूर्ण है। प्रभावी शिक्षण के कुछ मुख्य घटक हैं:

- **छात्रों की भागीदारी:** छात्रों की राय, प्रश्न और चर्चा को शामिल किया जाता है, जिससे वे अपनी सोच और विचार व्यक्त कर सकें।
- **समस्या समाधान:** छात्रों को वास्तविक जीवन की समस्याओं को हल करने के लिए प्रेरित किया जाता है, जो उनकी आलोचनात्मक सोच और रचनात्मकता को विकसित करता है।
- **ग्रुप वर्क:** छात्रों को समूहों में काम करने के लिए प्रेरित किया जाता है, जो सहयोग और सामाजिक कौशल में सुधार करता है।
- **फीडबैक:** शिक्षक छात्रों को नियमित रूप से फीडबैक प्रदान करते हैं, जो उनकी सीखने की प्रक्रिया को बेहतर बनाता है।
- **सक्रिय शिक्षण रणनीतियाँ:** चर्चा, नाटक, परियोजनाएँ, और अनुसंधान गतिविधियों जैसी विभिन्न रणनीतियों का उपयोग कर सीखने की प्रक्रिया को प्रभावी बनाया जाता है।

<u>प्रभावी शिक्षण में शिक्षक की भूमिका:</u> प्रभावी शिक्षण में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक कक्षा में केवल जानकारी प्रदान करने वाले नहीं होते, बल्कि वे छात्रों की सीखने की प्रक्रिया में मार्गदर्शक और सहायक के रूप में कार्य करते हैं। उनकी भूमिकाएँ निम्नलिखित हैं:

- **मार्गदर्शन:** शिक्षक छात्रों को सीखने के लक्ष्यों और उद्देश्यों के बारे में दिशा-निर्देश देते हैं और उन्हें प्रभावी ढंग से सीखने के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।
- **प्रेरक:** शिक्षक छात्रों को प्रोत्साहित करते हैं और उनके भीतर रुचि और उत्साह जगाते हैं, ताकि वे पाठ्य विषय के साथ सक्रिय रूप से जुड़े रह सकें।
- **सहयोगिता:** शिक्षक छात्रों के बीच सहयोग और समूह कार्य का माहौल बनाते हैं, जो उनके सामाजिक और पारस्परिक कौशल के विकास में मदद करता है।
- **फीडबैक प्रदान करना:** शिक्षक छात्रों के काम पर नियमित रूप से फीडबैक प्रदान करते हैं, जो उनकी सीखने की गुणवत्ता को बढ़ाता है और गलतफहमियों को दूर करने में मदद करता है।

- **शिक्षण रणनीतियों का चयन:** शिक्षक विभिन्न शिक्षण रणनीतियों और विधियों का चयन करते हैं, ताकि कक्षा में सभी छात्रों के लिए उपयुक्त शिक्षा सुनिश्चित की जा सके।
- **निगरानी:** शिक्षक छात्रों की प्रगति की निगरानी करते हैं और आवश्यकता के अनुसार उनके सीखने की रणनीतियों को बदलते हैं।

दलगत चर्चा के दो फायदे:

- **समस्या समाधान कौशल में वृद्धि:** समूह चर्चा के माध्यम से छात्र विभिन्न दृष्टिकोणों और रायों को साझा करते हैं और समस्या समाधान के नए तरीके खोजने में सक्षम होते हैं। इससे उनकी आलोचनात्मक सोच और विश्लेषणात्मक क्षमताएँ विकसित होती हैं।
- **सामाजिककरण और पारस्परिक कौशल:** समूह चर्चा से छात्रों को एक-दूसरे के साथ संवाद करने, सहयोग करने और सामाजिक संबंध बनाने का अवसर मिलता है। यह उनके आत्मविश्वास को बढ़ाता है और पारस्परिक कौशल के विकास में मदद करता है।

उपसंहार: प्रभावी शिक्षण में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे छात्रों की सीखने की प्रक्रिया में मार्गदर्शक, प्रेरक और मूल्यांकनकर्ता के रूप में कार्य करते हैं। शिक्षक सक्रिय और सहयोगात्मक वातावरण बनाते हैं, जो छात्रों की सोच और समस्या समाधान के कौशल को बढ़ाता है। समूह चर्चा के माध्यम से छात्र एक-दूसरे से सीखते हैं और आत्मविश्वास प्राप्त करते हैं। इस प्रकार, शिक्षकों की प्रभावी भूमिका और समूह चर्चा छात्रों के लिए समृद्ध शिक्षण अनुभव बनाते हैं, जो उनके व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में सहायक होता है। शिक्षा के गुणवत्ता में सुधार के लिए ये दो तत्व आवश्यक हैं।

4. What do you mean by Advance Organizer? Describe Advance Organizer Model (AOM) with suitable example. 2018, 2022

Ans:

भूमिका: अग्रणी संगठन (Advance Organizer) एक महत्वपूर्ण शिक्षण रणनीति है, जो छात्रों को नई जानकारी सीखने के लिए तैयार करती है। यह रणनीति शिक्षा प्रक्रिया में प्रासंगिक जानकारी का एक ढांचा प्रदान करती है, जो छात्रों को पूर्व ज्ञान और अनुभव के साथ नई जानकारी को जोड़ने में मदद करती है। अग्रणी संगठन मॉडल (AOM) छात्रों के विचारों और अवधारणाओं को संगठित करता है, जिससे वे नई सामग्री को आसानी से समझ सकें। यह मॉडल प्रभावी शिक्षण प्रक्रिया सुनिश्चित करने में मदद करता है और छात्रों के सीखने के अनुभव को समृद्ध करता है। शिक्षकों के लिए यह एक प्रभावी तरीका है, जिससे वे छात्रों को उनके ज्ञान के आधार को निर्माण में सहायता कर सकते हैं।

अग्रणी संगठन मॉडल (AOM): अग्रणी संगठन मॉडल (Advance Organizer Model) एक शिक्षण विधि है, जो नए जानकारी को सीखने में मदद करने के लिए छात्रों के पूर्व ज्ञान के साथ संबंधित एक ढांचा बनाती है। इस मॉडल को प्रोफेसर डेविड ऑस्बेल द्वारा विकसित किया गया था और यह छात्रों की सीखने की प्रक्रिया में सुधार करने के लिए विभिन्न रणनीतियों का उपयोग करता है।

AOM के मुख्य तत्व:

1. **पूर्व ज्ञान:** छात्रों के पूर्व ज्ञान और अनुभव की पहचान की जाती है। यह ज्ञान नई जानकारी को समझने के लिए एक आधार के रूप में कार्य करता है।
2. **अग्रणी संगठन का प्रस्तुतिकरण:** नए जानकारी को प्रस्तुत करने से पहले शिक्षक एक अग्रणी संगठन प्रस्तुत करते हैं, जो सामान्यतः एक ग्राफ, चार्ट या संक्षिप्त विवरण के रूप में होता है। यह छात्रों के लिए एक दिशा-निर्देश के रूप में कार्य करता है।
3. **नई जानकारी का संबंध:** छात्र नई जानकारी को अपने पूर्व ज्ञान के साथ जोड़ सकते हैं, जो उन्हें समझने और याद रखने में मदद करता है।
4. **प्रक्रिया और संक्षेपण:** छात्रों की सीखने की प्रक्रिया की निगरानी की जाती है और नई जानकारी को संक्षेपण या मॉडल के माध्यम से सजाया जाता है।

अग्रणी संगठन मॉडल (AOM) का उदाहरण: अग्रणी संगठन मॉडल (AOM) छात्रों को नई जानकारी सिखाने के लिए एक प्रभावी विधि है, जिसमें पूर्व ज्ञान के साथ नई जानकारी को जोड़ा जाता है। नीचे जलवायु परिवर्तन की शिक्षा के संदर्भ में इस मॉडल का प्रभावी उपयोग कैसे किया जा सकता है, यह चर्चा की गई है।

उदाहरण: जलवायु परिवर्तन

1. **पूर्व ज्ञान की पहचान:** कक्षा के पहले, शिक्षक छात्रों से पूछ सकते हैं कि वे पहले से जलवायु, मौसम और पर्यावरण के मुद्दों के बारे में क्या जानते हैं। उदाहरण के लिए, वे जान सकते हैं:
    - जलवायु का अर्थ दीर्घकालिक मौसम पैटर्न है।
    - ग्रीनहाउस गैसें क्या होती हैं।
    - जलवायु परिवर्तन के कुछ प्रभाव जैसे तापमान में वृद्धि।
2. **अग्रणी संगठन का प्रस्तुतिकरण:** शिक्षक छात्रों के लिए एक अग्रणी संगठन बनाते हैं, जो जलवायु परिवर्तन के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत करता है। उदाहरण के लिए, एक ग्राफ या चार्ट हो सकता है जिसमें जलवायु परिवर्तन के कारण, प्रभाव, और संभावित समाधान चित्रित किए गए हैं। चार्ट का उदाहरण:
    - **कारण:** कार्बन डाइऑक्साइड में वृद्धि, वनों की कटाई, औद्योगिककरण।
    - **प्रभाव:** तापमान में वृद्धि, बर्फ का पिघलना, समुद्र स्तर में वृद्धि।
    - **संभावित समाधान:** नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग, वृक्षारोपण, पर्यावरण-हितैषी तकनीकें।
3. **नई जानकारी का संबंध:** अब, शिक्षक छात्रों को नई जानकारी प्रस्तुत करते हैं, जो जलवायु परिवर्तन से संबंधित मुद्दों को गहराई से समझाती है। इस समय, छात्रों से कहा जाता है कि वे इस नई जानकारी को अपने पूर्व ज्ञान के साथ संबंधित करें। उदाहरण के लिए:
    - वे चर्चा कर सकते हैं कि कैसे ग्रीनहाउस गैसें जलवायु परिवर्तन में योगदान देती हैं।
    - वे सोच सकते हैं कि कैसे तापमान में वृद्धि से विभिन्न प्रजातियों की जैव विविधता प्रभावित हो रही है।
4. **प्रक्रिया और संक्षेपण:** शिक्षक छात्रों से जलवायु परिवर्तन के प्रभाव पर एक संक्षिप्त शोध प्रस्तुति करने के लिए कहते हैं। इसमें वे अपने सीखने के अनुभवों को एकत्र करते हैं और एक समग्र चित्र बनाते हैं।

<u>उपसंहार:</u> अग्रणी संगठन मॉडल (AOM) शिक्षा की एक प्रभावी रणनीति है, जो छात्रों को नई जानकारी सीखने के लिए तैयार करने में मदद करती है। यह छात्रों के पूर्व ज्ञान और अनुभव के आधार पर नई सामग्री को संगठित करती है, जिससे उनकी सोचने और विश्लेषणात्मक क्षमताएँ बढ़ती हैं। उदाहरण के लिए, जलवायु परिवर्तन के पाठ में अग्रणी संगठक का उपयोग करके, शिक्षक छात्रों को प्रासंगिक अवधारणाओं के बारे में जागरूक करते हैं और नई जानकारी स्वीकार करने में सहायता करते हैं। यह मॉडल छात्रों के लिए सीखने की प्रक्रिया को सरल और अधिक अर्थपूर्ण बनाता है, जिससे वे जिन विषयों को सीखते हैं, उन्हें सही ढंग से समझने और याद रखने में सक्षम होते हैं। इस प्रकार, AOM शिक्षण प्रक्रिया की गुणवत्ता में सुधार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

5. What is task of teaching? Explain the role of different variables in task of teaching. 2019, 2022

Ans:<u>भूमिका:</u> शिक्षण कार्य शिक्षा की एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षक छात्रों को ज्ञान और कौशल विकसित करने में सहायता करते हैं। इस प्रक्रिया में विभिन्न चलकों का समन्वय होता है, जैसे शिक्षक, छात्र, पाठ्य सामग्री, शिक्षण विधियाँ, वातावरण और मूल्यांकन। शिक्षक अपने अनुभव और तकनीकों का उपयोग करके छात्रों को प्रेरित करते हैं, जबकि छात्रों की रुचि और ध्यान शिक्षण गतिविधियों को प्रभावित करता है। प्रासंगिक पाठ्य सामग्री और उपयुक्त शिक्षण विधियाँ शिक्षण कार्य को फलदायी बनाने में सहायता करती हैं। एक सहायक वातावरण छात्रों की सीखने की इच्छा को बढ़ाता है, जिससे सीखने की प्रभावशीलता में सुधार होता है। इसके परिणामस्वरूप, शिक्षण कार्य छात्रों के लिए एक अर्थपूर्ण और सफल अनुभव उत्पन्न करता है।

<u>शिक्षण कार्य (Task of Teaching):</u>

शिक्षण कार्य शिक्षा की प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षक छात्रों को ज्ञान, कौशल और व्यवहार सिखाने के लिए योजनाबद्ध गतिविधियों और विधियों का उपयोग करते हैं। इस प्रक्रिया में विभिन्न उद्देश्यों, विधियों और उपकरणों का समन्वय होता है, ताकि छात्र अपनी रुचियों, आवश्यकताओं और क्षमताओं के आधार पर सीखने का अवसर प्राप्त कर सकें।

<u>शिक्षण कार्य सामान्यतः निम्नलिखित तत्वों से निर्मित होता है:</u>

- **शिक्षक:** शिक्षक शिक्षण कार्य का केंद्रबिंदु होते हैं। वे छात्रों की सीखने के लिए योजना बनाते हैं, पाठ्य सामग्री प्रस्तुत करते हैं, और उन्हें सहायता करते हैं।
- **छात्र:** छात्र शिक्षण कार्य के मुख्य प्रतिभागी होते हैं। उनकी रुचि, पूर्व ज्ञान, और सीखने की विधियाँ शिक्षण कार्य को प्रभावित करती हैं।
- **पाठ्य सामग्री:** पाठ्य सामग्री उस जानकारी और विचारों का समूह होती है, जिसे शिक्षक छात्रों को सिखाते हैं। यह विभिन्न स्रोतों से आ सकती है, जैसे किताबें, ऑनलाइन संसाधन, या परियोजनाएँ।
- **शिक्षण विधियाँ:** शिक्षक विभिन्न शिक्षण विधियों और तकनीकों का उपयोग करते हैं, जैसे चर्चा, समूह कार्य, समस्या समाधान, और परियोजना आधारित शिक्षण, ताकि छात्र सक्रिय रूप से भाग ले सकें।

- **मूल्यांकन:** शिक्षण कार्य का एक महत्वपूर्ण भाग मूल्यांकन है। इसका उपयोग छात्रों की सीखने की प्रगति और उपलब्धियों का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है, ताकि उनकी शक्तियों और कमजोरियों की पहचान की जा सके।

<u>शिक्षण कार्य में विभिन्न चलकों की भूमिका:</u>

शिक्षण कार्य की सफलता और प्रभावशीलता विभिन्न चलकों पर निर्भर करती है। ये चलक एक साथ काम करके छात्रों के सीखने के अनुभव को प्रभावित करते हैं। निम्नलिखित विभिन्न चलक और उनकी भूमिकाएँ उल्लेखित हैं:

- **शिक्षक की भूमिका:**
  - **ज्ञान और कौशल:** शिक्षक की विषय पर दक्षता और ज्ञान छात्रों को विषयवस्तु को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने में मदद करता है।
  - **शिक्षण तकनीक:** शिक्षक विभिन्न शिक्षण तकनीकों का उपयोग करते हैं, जैसे चर्चा, प्रश्नोत्तर, और समूह गतिविधियाँ, जो छात्रों के सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करती हैं।
  - **प्रेरणा:** शिक्षक छात्रों को प्रेरित करते हैं और उनमें रुचि पैदा करते हैं, जो सीखने की प्रक्रिया को सरल बनाता है।
- **छात्र की भूमिका:**
  - **सक्रिय भागीदारी:** जब छात्र कक्षा में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, तो वे बेहतर सीख सकते हैं और नई जानकारी को ग्रहण कर सकते हैं।
  - **पूर्व ज्ञान:** छात्रों का पूर्व ज्ञान और अनुभव नई जानकारी से जोड़ने में मदद करता है, जो शिक्षण गतिविधि को समृद्ध करता है।
- **पाठ्य सामग्री:**
  - **गुणवत्ता:** पाठ्य सामग्री की समृद्धता और प्रासंगिकता छात्रों की सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करती है। गुणवत्तापूर्ण और आकर्षक पाठ्य सामग्री छात्रों की रुचि को बढ़ाने में मदद करती है।
  - **संरचना:** पाठ्य सामग्री किस प्रकार व्यवस्थित है, यह छात्रों के लिए विषयवस्तु को समझना सरल बनाता है।
- **शिक्षण वातावरण:**
  - **कक्षा का वातावरण:** एक सुरक्षित और सहयोगी वातावरण छात्रों के आत्मविश्वास और भागीदारी को बढ़ाने में सहायक होता है। यह शिक्षकों के लिए भी महत्वपूर्ण होता है, ताकि वे नई तकनीकों का परीक्षण कर सकें।
  - **सामाजिक संबंध:** छात्रों के बीच सहयोग और सकारात्मक संबंध बनाने से सीखने के अनुभव में सुधार होता है।
- **मूल्यांकन:**
  - **प्रक्रियात्मक मूल्यांकन:** नियमित मूल्यांकन छात्रों की प्रगति की निगरानी करने में मदद करता है, जो उनके सीखने के स्तर और सुधार के लिए दिशा-निर्देश प्रदान करता है।
  - **फीडबैक:** शिक्षकों द्वारा दी गई फीडबैक छात्रों के काम में सुधार करने और भविष्य में क्या करना है, इसका मार्गदर्शन करती है।

<u>उपसंहार:</u> शिक्षण कार्य (Task of Teaching) विभिन्न चलकों के समन्वय से निर्मित एक जटिल प्रक्रिया है, जो शिक्षक की कौशल, छात्र की रुचि, पाठ्य सामग्री की गुणवत्ता, शिक्षण वातावरण और मूल्यांकन विधियों पर निर्भर करती है। प्रत्येक चलक आपस में जुड़कर शिक्षण कार्य को समृद्ध करता है और छात्रों के सीखने के अनुभव को प्रभावित करता है। यदि शिक्षक इन चलकों का सही ढंग से प्रबंधन कर सकें, तो वे छात्रों के लिए एक प्रभावी और आकर्षक सीखने का वातावरण बना सकेंगे। इस प्रकार, शिक्षण कार्य की सफलता शिक्षक की रणनीतियों और छात्रों की भागीदारी पर निर्भर करती है, जो लंबे समय में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करती है।

Course: 1.2.8 Part-1 (Knowledge and Curriculum Part-1)

Marks: 2

1. What is the relationship between 'Knowledge' and 'Information'? 2017, 2021

Ans: <u>ज्ञान और जानकारी के बीच संबंध:</u>

1. **परिभाषा:** जानकारी वह कच्चा सामग्री है जिसे ठीक से व्यवस्थित या विश्लेषित नहीं किया गया है, जबकि ज्ञान उस जानकारी की गहन समझ और उसे लागू करने की क्षमता है। ज्ञान जानकारी पर आधारित है, लेकिन यह विश्लेषण, अनुभव और आलोचना के माध्यम से विकसित होता है।
2. **लाभ:** जानकारी एक आधार प्रदान करती है, जो ज्ञान प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। जानकारी के संग्रह के माध्यम से व्यक्ति अंतर्दृष्टि प्राप्त करता है, जो ज्ञान के निर्माण की ओर ले जाती है। इस प्रकार, जानकारी और ज्ञान एक-दूसरे का समर्थन करते हैं और संज्ञानात्मक विकास के लिए महत्वपूर्ण होते हैं।
3. **स्वभाव:** जानकारी एक स्थिर और आंतरिक गुण है, जबकि ज्ञान गतिशील और नवोन्मेषी है। ज्ञान समय के साथ विकसित होता है और नई जानकारी और अनुभवों के माध्यम से समृद्ध होता है। इसके परिणामस्वरूप, ज्ञान एक प्रक्रिया है जो जानकारी को प्रभावी ढंग से लागू करने में सक्षम बनाती है।

2. State the method of teaching proposed by John Dewey. 2017

Ans: जॉन ड्यूई द्वारा प्रस्तावित शिक्षण पद्धति प्रगतिशील शिक्षा पद्धति है, जो छात्रों के लिए स्वाभाविकता और वास्तविक जीवन के अनुभवों के माध्यम से सीखने पर जोर देती है। ड्यूई की शिक्षण पद्धति की मुख्य विशेषताएँ हैं:

1. **अनुभवात्मक शिक्षा:** छात्रों को वास्तविक जीवन के अनुभवों से सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यह उन्हें उनके परिवेश के प्रति जागरूक बनाता है और सीखने की प्रक्रिया को प्रासंगिक बनाता है।
2. **समस्या समाधान पर ध्यान:** छात्रों को समस्याओं के समाधान के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। ड्यूई का मानना था कि शिक्षा एक समस्या समाधान की प्रक्रिया है, जहां छात्र विश्लेषण, मूल्यांकन और निर्णय लेने के माध्यम से सीखते हैं।

3. **सक्रिय शिक्षा:** छात्रों को सक्रिय रूप से भाग लेना आवश्यक है। वे प्रश्न पूछकर, चर्चा करके और परियोजनाओं पर काम करके अपने शिक्षण अनुभव को बढ़ाते हैं।
4. **शिक्षा का सामाजिक महत्व:** शिक्षा को एक सामाजिक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। ड्यूई के अनुसार, शिक्षा केवल व्यक्तिगत विकास में ही नहीं, बल्कि समाज के सुधार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
5. **मनस्तात्त्विक पहलू:** शिक्षण पद्धति छात्रों के मनोवैज्ञानिक और सामाजिक विकास पर भी ध्यान देती है। यह छात्रों के आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता के निर्माण में सहायक होती है।

ड्यूई की शिक्षण पद्धति छात्रों को सक्रिय रूप से सीखने, समाधान खोजने और उनके समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए तैयार करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

3. Differentiate between 'teaching' from 'training'. 2017, 2020, 2022

Ans: <u>'शिक्षण' और 'प्रशिक्षण' के बीच का अंतर</u>

<u>परिभाषा:</u>

- शिक्षण ज्ञान, जानकारी और कौशल प्राप्त करने की प्रक्रिया है, जो सामान्यतः विद्यालयों या शैक्षणिक संस्थानों में होती है।
- प्रशिक्षण एक विशिष्ट कौशल या कार्य के लिए तैयारी करने की प्रक्रिया है, जो अक्सर कार्यस्थल या विशेष पेशेवर वातावरण में आयोजित होती है।

<u>उद्देश्य:</u>

- शिक्षण का उद्देश्य छात्रों को समग्र ज्ञान और समझ प्राप्त करने में सहायता करना है, और उनके सोचने और विश्लेषणात्मक कौशल को बढ़ाना है।
- प्रशिक्षण का उद्देश्य विशिष्ट कौशल प्राप्त करना और रोजगार या पेशेवर विकास में सहायता करना है।

<u>स्वभाव:</u>

- **शिक्षण सामान्यतः** सैद्धांतिक और व्यापक होता है, जहां विभिन्न विषयों और अवधारणाओं पर जोर दिया जाता है।
- **प्रशिक्षण सामान्यतः** व्यावहारिक और संकीर्ण होता है, जहां विशिष्ट कार्य या कौशल पर अधिक ध्यान दिया जाता है।

<u>अवधि:</u>

- शिक्षण एक दीर्घकालिक प्रक्रिया हो सकती है, जो वर्षों तक चलती है और व्यापक विषय सामग्री शामिल होती है।

- प्रशिक्षण सामान्यतः अल्पकालिक होता है और निश्चित समय में पूरा किया जाता है, जो तेजी से परिणाम प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

4. What are the componets of Sri Aurobindo's 'Integral Education'? 2017

Ans: <u>श्री अरबिंदो की 'एकीकृत शिक्षा' के घटक निम्नलिखित हैं:</u>

1. **विविध शिक्षा:** श्री अरबिंदो की शिक्षा प्रणाली विभिन्न दृष्टिकोणों और क्षेत्रों के एकीकरण को प्रोत्साहित करती है। यह छात्रों को विभिन्न शाखाओं के बीच संबंध स्थापित करने का अवसर प्रदान करती है।
2. **शारीरिक, मानसिक, और आध्यात्मिक विकास:** शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं है, बल्कि यह छात्रों को शारीरिक, मानसिक, और आध्यात्मिक स्तर पर विकसित करने में मदद करना है।
3. **आत्म-आवश्यकता:** श्री अरबिंदो की शिक्षा प्रणाली में आत्म-आवश्यकता की अवधारणा शामिल है, जहां छात्र अपनी अनुभवों और ज्ञान का उपयोग करके सीखते हैं।
4. **व्यक्तिगत और सामाजिक जिम्मेदारी:** छात्रों को एक व्यक्ति और समाज के सदस्य के रूप में अपनी जिम्मेदारियों को समझने और स्वीकार करने में सहायता की जाती है।
5. **निर्मलता और सद्भाव:** शिक्षा प्रक्रिया में निर्मलता और सद्भाव पर जोर दिया जाता है, जो श्री अरबिंदो के मानव और आध्यात्मिक विकास के उद्देश्यों से संबंधित है।
6. **सहयोगी शिक्षा:** यह पद्धति छात्रों को सहयोग, चर्चा, और समर्थन के माध्यम से सीखने के लिए प्रोत्साहित करती है, ताकि वे एक-दूसरे से सीखने के अनुभव प्राप्त कर सकें।

श्री अरबिंदो की एकीकृत शिक्षा प्रणाली छात्रों को एक समग्र और संपूर्ण शिक्षण अनुभव प्रदान करने के लिए योजना बनाई गई है।

5. What is meant by 'Multiculturalism'? 2017, 2020

Ans: 'बहुसंस्कृतिवाद' से तात्पर्य है एक विचारधारा और नीति, जो समाज में विभिन्न संस्कृतियों की समानता, स्वीकृति और एकता पर जोर देती है। यह एक समाज में विभिन्न जातियों, धर्मों, भाषाओं, और सांस्कृतिक परंपराओं के समन्वय का समर्थन करती है। बहुसंस्कृतिवाद के कुछ मुख्य पहलू हैं:

1. **संस्कृतियों की स्वीकृति:** यह विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं के मूल्यांकन और स्वीकृति पर जोर देती है, जो समाज के विभिन्न समूहों की सांस्कृतिक पहचान को सम्मानित करती है।
2. **सामाजिक समानता:** यह सामाजिक समानता और न्याय की स्थापना का प्रयास करती है, यह सुनिश्चित करते हुए कि सभी सांस्कृतिक समूहों के पास समान अधिकार और अवसर हों।
3. **संस्कृति संवाद:** यह विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद और अंतर्संवाद को प्रोत्साहित करती है, जिससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सामाजिक संबंधों को मजबूत किया जा सके।

4. **शिक्षा और जागरूकता:** बहुसंस्कृतिवाद शिक्षा और जागरूकता के महत्व पर जोर देता है, ताकि विविधता की महत्वपूर्णता को समझा जा सके और संस्कृतियों के बीच आपसी सम्मान को बढ़ावा दिया जा सके।

बहुसंस्कृतिवाद समाज में एकता और विविधता के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है, जो समुदाय के समग्र विकास में मदद करता है।

6. Define 'Sustainable Development'. 2017

Ans: अविराम विकास या 'Sustainable Development' एक विकास प्रक्रिया है जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करती है, लेकिन भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं को नुकसान नहीं पहुँचाती। यह आर्थिक विकास, सामाजिक विकास, और पर्यावरण की सुरक्षा इन तीनों पहलुओं को समाहित करती है। इसका मुख्य उद्देश्य एक संतुलित और समेकित विकास हासिल करना है, जो सभी के लिए एक सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण बनाता है।

<u>अविराम विकास के मुख्य तत्व हैं:</u>

1. **पर्यावरण संरक्षण:** प्राकृतिक संसाधनों के अपव्यय को रोकना और पर्यावरण को नुकसान से बचाना।
2. **आर्थिक स्थिरता:** ऐसा आर्थिक विकास जो समाज के सभी स्तरों के लोगों को लाभान्वित करता है।
3. **सामाजिक न्याय:** सभी व्यक्तियों के मौलिक अधिकारों और अवसरों की समानता सुनिश्चित करना।

इस प्रकार, अविराम विकास एक ऐसा विचार है जो वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के हित में एक स्वस्थ और स्थायी दुनिया बनाने में मदद करता है।

7. What is 'hidden Curriculum'? 2017,2020, 2021

Ans: लुक्कायित पाठ्यक्रम उस अज्ञात या अप्रकट शिक्षा को संदर्भित करता है, जो छात्र पारंपरिक पाठ्यक्रम के बाहर सीखते हैं। यह आमतौर पर स्कूलों और अन्य शैक्षिक संस्थानों में समाज के नैतिकता, मूल्यों, व्यवहार और सामाजिक जिम्मेदारियों से संबंधित शिक्षा को शामिल करता है। लुक्कायित पाठ्यक्रम की कुछ मुख्य विशेषताएँ हैं:

1. **व्यवहारिक शिक्षा:** छात्र लुक्कायित पाठ्यक्रम के माध्यम से यह सीखते हैं कि उन्हें कैसे व्यवहार करना चाहिए, नियमों का पालन करना चाहिए और सामाजिक संबंध कैसे बनाना चाहिए।
2. **मानव मूल्य:** यह छात्रों के बीच मानव मूल्यों, नैतिकता और सहानुभूति के विकास को बढ़ावा देता है, जो उनके सामाजिक जीवन में सहायक होता है।
3. **सामाजिक ढाँचा:** लुक्कायित पाठ्यक्रम छात्रों को सामाजिक ढाँचे और संबंधों को समझने में मदद करता है, जैसे वर्ग विभाजन, शक्ति के संबंध, और सांस्कृतिक अंतर।
4. **गुप्त शिक्षा:** यह छात्रों को गुप्त या अप्रकट शिक्षा प्रदान करता है, जो शैक्षिक वातावरण में उनके व्यवहार और मानसिकता पर प्रभाव डालती है।

लुक्कायित पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्र केवल ज्ञान में नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक पहलुओं में भी शिक्षित होते हैं, जो उनके जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सहायक होते हैं।

8. State the relationship between 'Reason' and 'Belief'. 2018, 2021

Ans: <u>'तर्क और विश्वास' के बीच संबंध को संक्षेप में इस प्रकार बताया जा सकता है:</u>

1. तर्क उस तर्कसंगत सोच और प्रमाण पर आधारित होता है, जो जानकारी का विश्लेषण करने और निर्णय लेने में मदद करता है।
2. विश्वास किसी व्यक्ति की अंतर्निहित भावना या धारणा है, जो अक्सर तर्क के बाहर होती है और सांस्कृतिक या व्यक्तिगत अनुभवों पर निर्भर करती है।
3. तर्क और विश्वास एक-दूसरे को प्रभावित कर सकते हैं; तर्क विश्वास को बदल सकता है, और विश्वास के आधार पर बनाए गए तर्क हमारे निर्णयों और व्यवहार को प्रभावित कर सकते हैं।
4. कभी-कभी, तर्क हमेशा विश्वास पर लागू नहीं हो सकता, और विश्वास हमेशा प्रमाणित नहीं हो सकता।

इस प्रकार, तर्क और विश्वास के बीच एक जटिल और आपस में जुड़े हुए संबंध का अस्तित्व है।

9. State two contributions of Sir Ashutosh Mukherjee in the field of education. 2018

Ans: <u>शिक्षा के क्षेत्र में सर आशुतोष मुखोपाध्याय के दो महत्वपूर्ण योगदान हैं:</u>

1. **कोलकाता विश्वविद्यालय की स्थापना और विकास:** सर आशुतोष मुखोपाध्याय 1906 में कोलकाता विश्वविद्यालय के उप-कुलपति के रूप में नियुक्त हुए। उन्होंने विश्वविद्यालय में शिक्षा के मान में सुधार और शोध के क्षेत्र में महत्वपूर्ण बदलाव लाए। उनके नेतृत्व में, विश्वविद्यालय में नए पाठ्यक्रम और शोध पहलों की शुरुआत हुई, जिसने उच्च शिक्षा को एक नए आयाम में पहुंचा दिया।
2. **वैज्ञानिक शिक्षा का प्रचार:** सर आशुतोष मुखोपाध्याय ने वैज्ञानिक शिक्षा के प्रचार में विशेष भूमिका निभाई। उन्होंने बंगाली भाषा में वैज्ञानिक विषयों पर ग्रंथ लिखे और विज्ञान शिक्षा को लोकप्रिय बनाने के लिए विभिन्न पहलों को अपनाया। उनके प्रयासों से छात्रों में विज्ञान शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ी, जिससे भारत में वैज्ञानिक अनुसंधान पर एक महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

10. Mention two role of education in Promoting secularism in society. 2018, 2021

Ans: <u>समाज में निष्पक्षता के आदर्शों के प्रसार में शिक्षा की दो भूमिकाएँ हैं:</u>

1. **चेतना वृद्धि और मूल्यवर्धन:** शिक्षा व्यक्तियों में सामाजिक न्याय, समानता और मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाती है। यह छात्रों में निष्पक्षता के महत्व और भेदभाव के खिलाफ जागरूकता उत्पन्न करती है, जिससे वे समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में सक्षम होते हैं।
2. **सामंजस्य और सहिष्णुता को बढ़ावा देना:** शिक्षा विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों और जातियों के बीच सहानुभूति और सम्मान पैदा करने के लिए काम करती है। यह विभिन्न पृष्ठभूमियों के लोगों के बीच

संवाद और समझ स्थापित करने में मदद करती है, जो समाज में निष्पक्षता और शांति के वातावरण को बनाने में सहायक होती है।

11. State two characteristics of sustainable development. 2018, 2020, 2022

Ans: <u>स्थायी विकास की दो विशेषताएँ हैं:</u>

1. **सामाजिक समावेशन:** स्थायी विकास सभी के लिए अवसर पैदा करता है, विशेष रूप से हाशिए पर और अदृश्य जनसंख्या के लिए। यह समाज के सभी स्तरों पर लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं और अधिकारों को सुनिश्चित करता है, ताकि विकास के लाभ सभी में समान रूप से वितरित हों।
2. **पर्यावरणीय सुरक्षा:** स्थायी विकास प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करता है, लेकिन इस उपयोग को सुरक्षात्मक और दीर्घकालिक बनाता है। इसका उद्देश्य पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभावों को कम करना है ताकि भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक पर्यावरण की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

12. Who are socially disadvantaged groups in Indian society? 2018, 2021

Ans: भारत में सामाजिक रूप से पिछड़े समूहों का मतलब उन सभी समूहों या समुदायों से है जो आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से उपेक्षित हैं और प्रगति के अवसरों से वंचित हैं। इन समूहों में आमतौर पर निम्न श्रेणी के लोग, आदिवासी समुदाय, एससी (अनुसूचित जातियाँ), एसटी (अनुसूचित जनजातियाँ), और ओबीसी (अन्य पिछड़ी जातियाँ) शामिल हैं।

ये समूह समाज में विभिन्न कारणों से, जैसे ऐतिहासिक भेदभाव, शिक्षा और रोजगार में अवसरों की कमी, और सांस्कृतिक बाधाओं के कारण पिछड़े हुए हैं। सरकार और विभिन्न संगठन इनकी उन्नति के लिए विभिन्न कार्यक्रमों और नीतियों का निर्माण करते हैं, ताकि उनके मौलिक अधिकारों और विकास के अवसरों को सुनिश्चित किया जा सके।

13. State two impacts of illiteracy on society. 2018, 2020

Ans: <u>समाज पर निरक्षरता के दो प्रभाव हैं:</u>

1. **आर्थिक विकास में बाधा:** निरक्षरता आर्थिक विकास के लिए एक बड़ा बाधा के रूप में कार्य करती है। निरक्षर व्यक्ति सामान्यतः कौशल की कमी के कारण अच्छे रोजगार पाने में असमर्थ होते हैं, जिससे उनकी वित्तीय स्थिति प्रभावित होती है। इसके परिणामस्वरूप, यह देश की समग्र अर्थव्यवस्था और विकास पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।
2. **सामाजिक असमानता:** निरक्षरता सामाजिक भेदभाव और असमानता का निर्माण करती है। निरक्षर लोगों में जागरूकता की कमी के कारण वे अपने मौलिक अधिकारों और अवसरों के प्रति अज्ञात रहते हैं। यह समाज के विभिन्न समूहों के बीच विभाजन का कारण बनता है और समाज के विकास में बाधा डालता है।

14. What is multiculturalism? 2018, 2022

Ans: बहुसंस्कृतिवाद एक सामाजिक और राजनीतिक धारणा है, जो विभिन्न संस्कृतियों, जातियों, धर्मों, भाषाओं और जीवनशैली के समन्वय को मान्यता देती है और उसका सम्मान करती है। यह समाज में विभिन्न सांस्कृतिक समूहों की अभिव्यक्ति और उनकी संस्कृतियों की विविधता को महत्व देती है। बहुसंस्कृतिवाद की मुख्य विशेषताएँ हैं:

1. **विविधता की मान्यता:** बहुसंस्कृतिवाद समाज के भीतर विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं के अस्तित्व को स्वीकार करता है, और इसे गंभीरता से लेता है।
2. **सामाजिक न्याय:** यह सामाजिक न्याय और समानता को बढ़ावा देता है, जहां सभी सांस्कृतिक समूहों के अधिकारों और लाभों की रक्षा की जाती है।
3. **संवाद और समझ:** बहुसंस्कृतिवाद विभिन्न सांस्कृतिक समूहों के बीच संवाद और समझ को विकसित करने में मदद करता है, जो सहिष्णुता और आपसी सम्मान को बढ़ाता है।
4. **योगदान और सद्भाव:** यह विभिन्न सांस्कृतिक समूहों के योगदान को मान्यता देता है और समाज में सद्भाव उत्पन्न करता है, जहां सभी अपने-अपने संस्कृतियों का जश्न मना सकते हैं।

यह धारणा विशेष रूप से विविध समाजों में सामाजिक स्थिरता और शांति बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है।

15. State the relationship 'Knowledge' and 'Skill'. 2019

Ans: <u>ज्ञान और कौशल के बीच का संबंध संक्षेप में इस प्रकार कहा जा सकता है:</u> ज्ञान जानकारी और अवधारणाओं का संयोजन है, जो हमें किसी विषय के बारे में समझ बढ़ाता है। इसे सीखने के माध्यम से प्राप्त किया जाता है।

कौशल ज्ञान को लागू करने की क्षमता है, जो विशेष रूप से व्यावहारिक कार्य करने के लिए आवश्यक है। कौशल विकसित करने के लिए प्रशिक्षण और अभ्यास की आवश्यकता होती है।

<u>संबंध:</u>

- **संयुक्त उपयोग:** ज्ञान के बिना कौशल हासिल करना संभव नहीं है। उदाहरण के लिए, एक डॉक्टर को रोग का निदान करने के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है, लेकिन कौशल विकसित करने के लिए उसे अभ्यास करना होता है।
- **अनुभव:** कौशल प्राप्त करने के माध्यम से ज्ञान गहरा होता है, जो व्यावहारिक कार्य में मदद करता है।

संक्षेप में, ज्ञान और कौशल एक-दूसरे के पूरक हैं, और एक साथ मिलकर हमारे विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

16. Mention two major contributions of Dr. Sarvapalli Radhakrishnan in modern Indian education. 2019, 2022

Ans: <u>डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का आधुनिक भारतीय शिक्षा में दो प्रमुख योगदान निम्नलिखित हैं:</u>

1. **शिक्षक दिवस की स्थापना**: डॉ. राधाकृष्णन ने शिक्षकों के योगदान को मान्यता देने और समाज में उनकी महत्ता को बढ़ाने के उद्देश्य से शिक्षक दिवस मनाने की पहल की। उनके जन्मदिन, 5 सितंबर, को हर साल शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है, जो शिक्षकों के प्रति सम्मान व्यक्त करने और शिक्षा में उनके योगदान को सराहने का अवसर प्रदान करता है।
2. **विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-49)**: डॉ. राधाकृष्णन ने स्वतंत्र भारत में उच्च शिक्षा प्रणाली को सुधारने के लिए विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग का नेतृत्व किया। इस आयोग ने भारतीय विश्वविद्यालयों की शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने, पाठ्यक्रम को अद्यतन करने, नैतिक शिक्षा पर जोर देने और शिक्षण पद्धतियों में सुधार की कई सिफारिशें की, जिनसे आधुनिक भारतीय शिक्षा को नई दिशा मिली।

17. What is meant by the term secularism? 2019, 2020, 2022

Ans: धर्मनिरपेक्षता एक सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक अवधारणा है जो धर्म को राज्य की गतिविधियों से अलग करती है। इसका मुख्य उद्देश्य समाज के सभी सदस्यों के धार्मिक विश्वास या अनास्था के प्रति समान सम्मान और अधिकार सुनिश्चित करना है। धर्मनिरपेक्षता की मुख्य विशेषताएँ हैं:

1. **सम समानता:** राज्य के सभी नागरिकों के लिए समान अधिकार और अवसर सुनिश्चित करना, उनके धार्मिक विश्वासों के बावजूद।
2. **धर्म की स्वतंत्रता:** किसी व्यक्ति के धार्मिक विश्वास या अनास्था पर किसी प्रकार की रोक या उत्पीड़न न करना।
3. **राज्य और धर्म की अलग पहचान:** राज्य की गतिविधियों को धर्म के प्रभाव से मुक्त रखने का प्रयास करना, ताकि राज्य की नीतियाँ और कानून धार्मिक आधार पर संचालित न हों।

इस प्रकार, धर्मनिरपेक्षता एक मुक्त और विविध समाज बनाने में मदद करती है जहाँ सभी धर्मों के लोग शांति से रह सकते हैं।

18. Mention two national aims of education. 2019, 2021

Ans: <u>शिक्षा के दो राष्ट्रीय लक्ष्य हैं:</u>

1. **सामाजिक विकास:** शिक्षा समाज के सभी स्तरों के लोगों में समानता, सामाजिक न्याय और विभिन्न सांस्कृतिक धरोहरों के मूल्यों को विकसित करने के माध्यम से समाज के विकास में मदद करती है। यह सामाजिक समस्याओं को हल करने के लिए कौशल बढ़ाने और नागरिकों के बीच जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

2. **आर्थिक विकास:** शिक्षा मानव संसाधनों के विकास में सहायक होती है, जो देश के आर्थिक विकास और रोजगार सृजन में योगदान करती है। कौशल और ज्ञान प्राप्त करके, लोगों की आय की क्षमता बढ़ती है, जिससे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था मजबूत होती है।

19. Write the two differences between non-formal and informal education. 2019, 2022

Ans: <u>'Non-formal' और 'In-formal' शिक्षा के बीच दो मुख्य अंतर हैं:</u>

1. <u>संरचना और ढांचा:</u>

- **Non-formal शिक्षा:** यह योजनाबद्ध और संरचित होती है, जहाँ शिक्षा गतिविधियाँ विशिष्ट लक्ष्यों, पाठ्यक्रमों और प्रशिक्षण विधियों के माध्यम से संचालित होती हैं। उदाहरण के लिए, वयस्कों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम या सामुदायिक शिक्षा कार्यक्रम।
- **In-formal शिक्षा:** यह असंरचित होती है और स्वाभाविक रूप से होती है, जहाँ छात्र अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी के अनुभवों और परिस्थितियों के माध्यम से सीखते हैं। उदाहरण के लिए, परिवार या दोस्तों के साथ सीखना।

2. <u>पहचान और प्रमाणन:</u>

- **Non-formal शिक्षा:** इस प्रकार की शिक्षा के लिए आमतौर पर किसी प्रकार की पहचान या प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है, जो छात्र द्वारा अधिग्रहित कौशल और ज्ञान का प्रमाण होता है।
- **In-formal शिक्षा:** इसे कोई आधिकारिक पहचान नहीं मिलती है, और आमतौर पर कोई प्रमाणपत्र या डिप्लोमा नहीं दिया जाता है। यह व्यक्तिगत विकास के लिए और जीवन के अनुभवों के माध्यम से होती है।

20. State two impacts of poverty on society. 2019

Ans: <u>समाज पर गरीबी के दो प्रभाव हैं:</u>

1. **शिक्षा की कमी:** गरीबी के कारण कई परिवार अपने बच्चों की शिक्षा पर ध्यान नहीं दे पाते। आर्थिक सीमाएँ शैक्षिक अवसरों को सीमित कर देती हैं, जिससे गरीबी का एक चक्र बनता है, जिसमें निरक्षरता भविष्य में रोजगार के अवसरों को कम करती है, और इसके परिणामस्वरूप गरीबी बढ़ती रहती है।
2. **स्वास्थ्य समस्याएँ:** गरीबी के कारण कई लोग स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित रह जाते हैं। भोजन की कमी, पोषण की कमी और स्वास्थ्य सेवाओं की अनुपलब्धता के कारण विभिन्न स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, जो समाज के सामान्य स्वास्थ्य और विकास को प्रभावित करती हैं। ये स्वास्थ्य समस्याएँ सामान्यतः उत्पादकता को कम करती हैं और श्रमशक्ति की प्रभावशीलता को घटाती हैं।

21. What is meant by epistemology? 2019, 2020, 2022

Ans: ज्ञानतत्त्व (Epistemology) दर्शन का एक शाखा है जो ज्ञान की प्रकृति, स्रोत, और सीमाओं पर चर्चा करता है। यह सवाल करता है कि मनुष्य कैसे जानता है, ज्ञान क्या है, और ज्ञान को वैध या सत्य कैसे माना जा सकता है। ज्ञानतत्त्व में कुछ प्रमुख विषय शामिल हैं:

1. **ज्ञान की परिभाषा:** यह चर्चा करता है कि ज्ञान क्या है, और इसे कैसे प्राप्त किया जाता है।
2. **ज्ञान प्राप्त करने के तरीके:** ज्ञान प्राप्त करने के विभिन्न तरीकों जैसे अनुभव, तर्क, और अनुभूति के माध्यम से ज्ञान अर्जन की विधियाँ।
3. **संदेह और विश्वास:** कैसे संदेह और विश्वास ज्ञान की नींव बनाते हैं और कैसे ये हमारे समझ पर प्रभाव डालते हैं।

संक्षेप में, ज्ञानतत्त्व ज्ञान के सिद्धांत और संरचना पर विचार करता है, जो हमारे सोचने और शिक्षण प्रक्रियाओं को प्रभावित करता है।

22. What are the components of Sri Aurobindo's 'Integral Education'? 2021

Ans: श्री अरविंद का 'समन्वित शिक्षा' एक व्यापक शिक्षण प्रणाली है जो शिक्षा को जीवन के विभिन्न पहलुओं से जोड़ती है। इस शिक्षा प्रणाली के मुख्य तत्व हैं:

1. **आध्यात्मिक तत्व:** शिक्षा केवल ज्ञानार्जन के लिए नहीं है, बल्कि आत्मा के विकास और आध्यात्मिक जागरण के लिए भी महत्वपूर्ण है। छात्रों के आध्यात्मिक जीवन पर जोर दिया जाता है।
2. **शारीरिक विकास:** शिक्षा शारीरिक स्वास्थ्य और सुधार पर भी ध्यान देती है। एक स्वस्थ शारीरिक स्थिति और गतिविधियों के माध्यम से छात्रों के शारीरिक विकास को सुनिश्चित किया जाता है।
3. **मानसिक और बुद्धिमत्ता का विकास:** शिक्षा छात्रों की बुद्धिमत्ता और सोचने की क्षमताओं को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करती है। यह आलोचनात्मक सोच और रचनात्मकता के विकास में सहायक होती है।
4. **सामाजिक और नैतिक शिक्षा:** नैतिक मानकों और सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए समाज और मानव मूल्य पर जोर दिया जाता है।
5. **रचनात्मकता और खोज:** श्री अरविंद की समन्वित शिक्षा में रचनात्मकता के विकास पर भी ध्यान दिया जाता है, ताकि छात्र अपने विचारों और धारणाओं को व्यक्त कर सकें।
6. **स्वायत्तता:** छात्रों को अपनी शिक्षण प्रक्रिया में स्वायत्तता का महत्व दिया जाता है, जिससे वे अपनी शिक्षा के लिए जिम्मेदार बनना सीख सकें।

ये तत्व शिक्षा को एक समन्वित और बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में आकार देते हैं, जो छात्रों के समग्र विकास का समर्थन करती है।

23. What do you mean by Curriculum in narrow sense. 2023

Ans: संकुचित अर्थ में पाठ्यक्रम एक विशिष्ट शैक्षणिक प्रक्रिया में शामिल विषयों, पाठ्यक्रमों और पाठ्यपुस्तकों के सेट को संदर्भित करता है। यह विशेष रूप से शैक्षणिक संस्थानों में दिए जाने वाले विषयों की संरचना और सामग्री को निर्दिष्ट करता है, जो छात्रों के शैक्षणिक उद्देश्यों और लक्ष्यों के अनुसार तैयार किया गया है।

<u>संकुचित अर्थ में पाठ्यक्रम की मुख्य विशेषताएँ हैं:</u>

1. **विषय:** यह निर्धारित करता है कि विषयों में क्या पढ़ाया जाएगा और उसकी सामग्री क्या होगी।
2. **संरचना:** यह निर्धारित करता है कि विषयों को किस प्रकार व्यवस्थित किया जाएगा और विभिन्न स्तरों पर उन्हें कैसे सिखाया जाएगा।
3. **परीक्षा और मूल्यांकन:** यह छात्रों का मूल्यांकन करने के लिए विधियों और रणनीतियों को शामिल करता है।
4. **शिक्षण विधियाँ:** यह दर्शाता है कि शिक्षक विषयों को छात्रों को सिखाने के लिए कौन सी विधियाँ उपयोग करेंगे।

इस प्रकार, संकुचित अर्थ में पाठ्यक्रम शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षण का एक योजनाबद्ध और संरचित दृष्टिकोण है।

24. Write down two differences between formal and non-formal education. 2023

Ans: <u>प्रथागत और प्रथाबहिर्भूत शिक्षा के बीच दो प्रमुख अंतर हैं:</u>

<u>शिक्षण पद्धति:</u>

- **प्रथागत शिक्षा:** यह सामान्यतः कक्षा में निर्धारित पाठ्यक्रम और शिक्षक-केंद्रित पद्धति का पालन करती है, जहां छात्र पास करते हैं और विशिष्ट विषयों पर ज्ञान प्राप्त करते हैं। शिक्षक की निर्देशना और परीक्षा प्रमुख भूमिका निभाते हैं।
- **प्रथाबहिर्भूत शिक्षा:** यह स्वाभाविक रूप से होती है, जहां छात्र अपनी अनुभवों, परिस्थितियों और गतिविधियों के माध्यम से सीखते हैं। इस प्रकार की शिक्षा में प्रथागत ढांचे के बाहर जाकर नए विचार और कौशल प्राप्त करने पर ध्यान दिया जाता है।

<u>मूल्यांकन पद्धति:</u>

- **प्रथागत शिक्षा:** यह सामान्यतः परीक्षाओं के माध्यम से मूल्यांकन करती है, जहां छात्रों के ज्ञान और कौशल का निर्धारण करने के लिए मानक परीक्षण का उपयोग किया जाता है।
- **प्रथाबहिर्भूत शिक्षा:** यह छात्रों की उपलब्धियों का अवलोकन, परियोजना कार्य, और वास्तविक अनुभव के माध्यम से मूल्यांकन करती है, जहां उनकी रचनात्मकता और समस्या समाधान की क्षमता पर जोर दिया जाता है।

25. What is the role of education to promote secularism? 2023

Ans: धर्मनिरपेक्षता को बढ़ावा देने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जो निम्नलिखित तरीकों से प्रकट होती है:

1. **सामाजिक मूल्यों का विकास:** शिक्षा धर्मनिरपेक्षता से संबंधित सामाजिक मूल्यों जैसे सहिष्णुता, समान अधिकारों की धारणा और विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों के प्रति सम्मान को विकसित करती है। यह छात्रों के बीच धार्मिक विविधता के प्रति जागरूकता बढ़ाती है।
2. **समाज के साथ संबंध:** शैक्षणिक संस्थान धार्मिक प्रगति और समन्वय के माध्यम के रूप में कार्य करते हैं। यहां छात्र विभिन्न धर्मों के लोगों के साथ बातचीत करते हैं और एक-दूसरे के अनुभवों और विश्वासों के बारे में जानने का अवसर प्राप्त करते हैं।
3. **ज्ञान और विश्लेषणात्मक सोच का विस्तार:** धर्मनिरपेक्ष शिक्षा छात्रों को विश्लेषणात्मक सोच और तार्किक दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करती है। यह धार्मिक और नैतिक प्रश्नों की आलोचना करने का अवसर प्रदान करती है, जिससे छात्र सुसंगत निर्णय ले सकते हैं।
4. **नागरिक शिक्षा:** धर्मनिरपेक्षता राज्य और समाज में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व सुनिश्चित करने में मदद करती है। शिक्षा नागरिकों को उनके अधिकारों, जिम्मेदारियों और समाज में धर्म की भूमिका के बारे में जागरूक करती है।
5. **आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षा:** धर्मनिरपेक्ष शिक्षा केवल धार्मिक मामलों पर ध्यान नहीं देती, बल्कि मानव मूल्य, नैतिकता और आध्यात्मिक विकास पर भी जोर देती है, जो समाज के सभी सदस्यों के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।
6. **सामाजिक असमानता को कम करना:** शिक्षा के माध्यम से गरीबी, नस्लवाद और सामाजिक भेदभाव का मुकाबला करना संभव है। धर्मनिरपेक्ष शिक्षा लोगों के बीच समानता और मानव अधिकारों की स्थापना में मदद करती है।

इस प्रकार, शिक्षा धर्मनिरपेक्षता को बढ़ावा देने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में कार्य करती है, जो समाज के समग्र विकास और शांति के लिए अनिवार्य है।

26. What do you mean by multicultural classroom? 2023

Ans: बहुसंस्कृतिवाद या बहु संस्कृतिसम्पन्न कक्षा एक शैक्षिक प्रणाली या वातावरण को संदर्भित करता है जहाँ विभिन्न संस्कृतियों, जातियों, भाषाओं, और सामाजिक पृष्ठभूमियों के छात्र एक साथ अध्ययन करते हैं। इस तरह की कक्षाओं में सांस्कृतिक विविधता को मान्यता और सम्मान दिया जाता है, और शिक्षा में समावेशिता और समानता सुनिश्चित की जाती है। इसके कुछ मुख्य विशेषताएँ हैं:

1. **विविधता का सम्मान:** कक्षा में विभिन्न संस्कृतियों और पहचान के बीच पारस्परिक सम्मान और समझ का निर्माण किया जाता है।
2. **सृजनात्मकता और अनुभव साझा करना:** छात्रों को अपने सांस्कृतिक अनुभवों और मूल्यों को साझा करने का अवसर मिलता है, जो कक्षा में सृजनात्मकता और समृद्ध चर्चा को प्रेरित करता है।

3. **सार्वभौमिक शिक्षण के अवसर:** शिक्षण विधियाँ विभिन्न संस्कृतियों और भाषाओं के प्रति संवेदनशीलता से डिज़ाइन की जाती हैं, ताकि सभी छात्र अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से शिक्षा प्राप्त कर सकें।
4. **संस्कृति और समाज के बीच संबंध:** छात्र विभिन्न संस्कृतियों के इतिहास, परंपराओं और सामाजिक मुद्दों के बारे में जानकर बड़े समाज से जुड़ते हैं।
5. **समाज में सहयोग और समानता:** यह छात्रों के बीच सहयोग की भावना विकसित करता है और उन्हें सामाजिक न्याय और समानता के विचार के प्रति जागरूक करता है।

इस प्रकार, बहुसंस्कृतिवाद कक्षा में एक समावेशी और विविध वातावरण तैयार करता है, जो छात्रों की सामाजिक और सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ाता है।

27. State the relationship between 'Knowledge' and 'Skill'. 2023

Ans: <u>'ज्ञान' और 'कौशल' के बीच संबंध इस प्रकार है:</u>

ज्ञान: यह जानकारी, विचार और अनुभवों का संग्रह है जो व्यक्ति की समझ और धारणा को बढ़ाता है। ज्ञान प्राप्त करने के माध्यम से व्यक्ति किसी विषय के बारे में समझ सकता है और सोच सकता है।

कौशल: यह ज्ञान को प्रभावी ढंग से उपयोग करने की क्षमता है। कौशल प्राप्त करने के माध्यम से व्यक्ति उस ज्ञान को वास्तविक जीवन में लागू करने में सक्षम होता है, जैसे कि समस्याओं को हल करना, निर्णय लेना और प्रभावी ढंग से कार्य करना।

संक्षेप में, ज्ञान जानकारी और विचारों की नींव है, जबकि कौशल उस ज्ञान को प्रभावी ढंग से उपयोग करने की क्षमता है। कौशल के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है, और ज्ञान को व्यावहारिक रूप में लाने के लिए कौशल की आवश्यकता होती है।"

28. How can values be inculcated in school? Mention two means. 2023

Ans: <u>स्कूल में मूल्य स्थापित करने के लिए दो तरीके हैं:</u>

1. **सामाजिक और नैतिक शिक्षा:** पाठ्यक्रम में सामाजिक और नैतिक शिक्षा को शामिल करना एक महत्वपूर्ण तरीका है। यह छात्रों के बीच सहानुभूति, सम्मान और सहयोग जैसे मूल्यों को विकसित करने में मदद करता है। शिक्षक विभिन्न संदर्भों में नैतिक प्रश्न उठाकर छात्रों के बीच चर्चा और आलोचनात्मक सोच को उत्पन्न कर सकते हैं।
2. **गतिविधियों और परियोजनाओं के माध्यम से शिक्षण:** विभिन्न गतिविधियों जैसे सामुदायिक सेवा, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भागीदारी और परियोजना-आधारित शिक्षण के माध्यम से छात्र विभिन्न मूल्यों के प्रति जागरूकता प्राप्त कर सकते हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से वे टीम में काम करने का अनुभव प्राप्त करते हैं और जिम्मेदारी, नेतृत्व और सामाजिक जागरूकता के मूल्यों को विकसित कर सकते हैं।

29. Who forms the disadvantaged groups? 2023

Ans: सुविधाबंचित समूह सामान्यतः उन समूहों को संदर्भित करता है जो आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक या सांस्कृतिक कारणों से समाज की मुख्यधारा के लाभ से वंचित होते हैं। इनमें शामिल हो सकते हैं:

- **आर्थिक रूप से कमजोर परिवार:** जो गरीबी और अभाव के कारण मौलिक आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ होते हैं।
- **शहरी और ग्रामीण गरीब:** जो अपने जीवन स्तर को सुधारने में असमर्थ होते हैं।
- **अल्पसंख्यक समूह:** जो धर्म, जाति या भाषा के कारण समाज में भेदभाव का सामना करते हैं।
- **बच्चे और महिलाएँ:** जिन्हें अक्सर शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और सामाजिक सुरक्षा के अवसरों से वंचित किया जाता है।
- **शारीरिक और मानसिक रूप से विकलांग:** जो शारीरिक या मानसिक विकलांगता के कारण समाज में पूर्ण रूप से भाग नहीं ले पाते हैं।
- **जातीय भेदभाव का शिकार:** विभिन्न जातीय या नस्ली समूह जो सामाजिक और आर्थिक अवसरों से वंचित होते हैं।

सुविधाबंचित समूहों के गठन में सामाजिक स्थिति, आर्थिक कमजोरियों, और राजनीतिक परिस्थितियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

Marks: 5

1. Discuss the role of mass media in education. 2017

Ans:

परिचय: शिक्षा में मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह जानकारी के प्रचार, जागरूकता बढ़ाने और शिक्षा को आधुनिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मीडिया के माध्यम से छात्र नए विचार और ज्ञान प्राप्त करते हैं, जो उनके सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक विकास में मदद करता है। यह शैक्षणिक प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और समृद्ध बनाता है।

शिक्षा में मीडिया की भूमिका:

1. **जानकारी का प्रचार और वितरण:** मीडिया जानकारी का एक प्रमुख स्रोत के रूप में कार्य करता है। समाचार, अनुसंधान और शैक्षणिक सामग्री आसानी से छात्रों तक पहुँच सकती है, जो उनके ज्ञान को बढ़ाती है।
2. **जागरूकता का निर्माण:** मीडिया समाज में विभिन्न मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने में मदद करता है। यह सामाजिक समस्याओं, स्वास्थ्य सेवा, पर्यावरण और अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करता है, जो छात्रों के बीच जागरूकता बढ़ाता है।

3. **शिक्षा का आधुनिकीकरण:** टेलीविजन, रेडियो और ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म विभिन्न प्रकार के शैक्षणिक कार्यक्रम और सामग्री प्रदान करते हैं। डिजिटल मीडिया छात्रों के लिए इंटरएक्टिव शिक्षा वातावरण बनाता है, जो उनके सीखने के अनुभव को बेहतर बनाता है।
4. **सामाजिक संपर्क और चर्चा का प्लेटफार्म:** मीडिया सामाजिक संपर्क के अवसर पैदा करता है, जहाँ छात्र एक-दूसरे के साथ विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। यह उनके विचारों और अनुभवों को साझा करके एक समृद्ध चर्चा का निर्माण करता है।
5. **संयोजन और सहयोग:** शिक्षा में मीडिया शिक्षकों, छात्रों और अभिभावकों के बीच संयोजन और सहयोग के अवसर पैदा करता है। यह परिवारों और स्कूलों के बीच संवाद को बढ़ाता है और छात्रों के विकास में सहायक होता है।
6. **वैकल्पिक अध्ययन के अवसर:** ऑनलाइन पाठ्यक्रमों, वीडियो ट्यूटोरियल और वेबिनार के माध्यम से छात्र घर से बाहर जाए बिना नए विषय सीख सकते हैं। यह शिक्षा के लिए एक वैकल्पिक मार्ग बनाता है।

मीडिया शिक्षा में एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में कार्य करता है, जो जानकारी के प्रचार, जागरूकता बढ़ाने, शिक्षा के आधुनिकीकरण और सामाजिक संपर्क में मदद करता है। इसका सही उपयोग छात्रों के लिए एक अधिक प्रभावी और खुला शैक्षणिक वातावरण बनाने में सहायक हो सकता है।

2. Discuss the role of education in sustainable development. 2018, 2020, 2022

Ans:

परिचय: स्थायी विकास के लिए शिक्षा आवश्यक है। यह जागरूकता बढ़ाने, कौशल विकास करने और सामाजिक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा के माध्यम से हम पर्यावरण, अर्थव्यवस्था और समाज के विभिन्न मुद्दों के बारे में जान सकते हैं, जो स्थायी विकास में मदद करती है और भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित वातावरण बनाती है।

स्थायी विकास में शिक्षा की भूमिका: स्थायी विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करती है, बिना भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं को नुकसान पहुँचाए। इस संदर्भ में, शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षा के माध्यम से हम मानव ज्ञान, कौशल और जागरूकता को बढ़ाते हैं, जो स्थायी विकास के लिए आवश्यक हैं।

यहाँ कुछ मुख्य पहलू दिए गए हैं:

1. **जागरूकता निर्माण:** शिक्षा लोगों को पर्यावरण, सामाजिक और आर्थिक मुद्दों के प्रति जागरूक करती है। यह व्यक्तियों को स्थानीय और वैश्विक समस्याओं जैसे जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों की कमी और सामाजिक अन्याय के बारे में जागरूक करती है।
2. **कौशल विकास:** शिक्षा मानव संसाधनों के कौशल विकास में सहायक होती है। यह व्यक्तियों को जीविका और रोजगार प्राप्त करने में मदद करती है, साथ ही टिकाऊ व्यापार विचारों और प्रौद्योगिकियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती है। कुशल मानव संसाधन स्थायी विकास की नींव होते हैं।

3. **प्रौद्योगिकी विकास:** शिक्षा अनुसंधान और प्रौद्योगिकी नवाचार के लिए एक मंच प्रदान करती है। नई प्रौद्योगिकियाँ जैसे नवीकरणीय ऊर्जा और जल संरक्षण प्रौद्योगिकियाँ शिक्षा के माध्यम से विकसित होती हैं और ये स्थायी विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
4. **सामाजिक परिवर्तन लाना:** शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है। यह भेदभाव को समाप्त करने, लिंग समानता को बढ़ावा देने और सामाजिक न्याय स्थापित करने में मदद करती है। एक शिक्षित समाज विकसित और स्थायी समाज की ओर बढ़ता है।
5. **नीति निर्माण:** शिक्षा नीतियों के निर्माण और सरकार के विकास योजनाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब छात्र स्थायी विकास के महत्व को समझते हैं, तो वे भविष्य में राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तनों के लिए तैयार होते हैं।
6. **सही शासन और भागीदारी:** शिक्षा शासन और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में जनता की भागीदारी बढ़ाती है। यह लोगों को उनके अधिकारों और जिम्मेदारियों के बारे में जानने में मदद करती है, जिससे वे स्थायी विकास के प्रयासों में सक्रिय भागीदारी कर सकते हैं।

स्थायी विकास के लिए शिक्षा एक आवश्यक तत्व है। यह जागरूकता बढ़ाने, कौशल विकास, प्रौद्योगिकी नवाचार को बढ़ावा देने, सामाजिक परिवर्तन लाने, नीति निर्माण को प्रभावित करने और सही शासन में भागीदारी को प्रोत्साहित करने में मदद करती है। शिक्षा के माध्यम से एक स्थिर और विकसित समाज की नींव रखी जाती है।

3. Briefly discuss the determinants of Curriculum development. 2018, 2021

Ans: पाठ्यक्रम विकास एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो शिक्षा की गुणवत्ता और प्रभावशीलता को बढ़ाने में सहायक होती है। विभिन्न निर्धारक जैसे छात्रों की आवश्यकताएँ, सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य, शिक्षक की भूमिका, सरकारी नीतियाँ, तकनीकी प्रभाव और अनुसंधान इस प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं, जो पाठ्यक्रम के प्रभावी रूपांतरण के लिए अनिवार्य हैं।

<u>पाठ्यक्रम विकास में निर्धारक:</u>

पाठ्यक्रम विकास एक जटिल प्रक्रिया है, जो विभिन्न निर्धारकों द्वारा प्रभावित होती है। इन निर्धारकों में छात्रों की सीखने की आवश्यकताएँ, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश, और सरकारी नीतियाँ आदि शामिल हैं। यहाँ कुछ प्रमुख निर्धारक दिए गए हैं:

1. **छात्रों की आवश्यकताएँ**: छात्रों की उम्र, रुचि और क्षमता के अनुसार पाठ्यक्रम तैयार किया जाता है। उनके सीखने के प्रकार और आवश्यकताओं पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है।
2. **सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश**: समाज की संस्कृति, मूल्य और परंपराएँ पाठ्यक्रम में परिलक्षित होती हैं। स्थानीय समाज की आवश्यकताओं और समस्याओं के अनुसार शिक्षा की विषयवस्तु निर्धारित की जाती है।
3. **शिक्षक की भूमिका**: शिक्षक छात्रों की सीखने की प्रक्रिया और पाठ्यक्रम विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। उनके अनुभव और ज्ञान पाठ्यक्रम के प्रभावी रूपांतरण के लिए आवश्यक हैं।

4. **सरकारी नीतियाँ**: सरकारी शिक्षा नीति और दिशानिर्देश पाठ्यक्रम की संरचना और विषयवस्तु को निर्धारित करने में प्रभाव डालते हैं। यह शिक्षा की गुणवत्ता और समानता को बनाए रखने में सहायक होता है।
5. **तकनीकी प्रभाव**: आधुनिक तकनीक शिक्षा की विधियों और साधनों में बदलाव लाती है। तकनीकी का उपयोग छात्रों की सीखने की अनुभव को बेहतर बनाने में मदद करता है।
6. **अनुसंधान और विकास**: शिक्षा में नए अनुसंधान और नवाचार पाठ्यक्रम की संरचना और विषयवस्तु में शामिल होते हैं, जो शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाते हैं।

ये निर्धारक समन्वित रूप से कार्य करते हैं और पाठ्यक्रम विकास की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं, जिससे छात्रों के लिए एक प्रासंगिक और प्रभावी शैक्षिक वातावरण तैयार होता है।

4. State the written relevance philosophy of Swami Vivekananda in India Education. 2017, 2019, 2023

Ans: स्वामी विवेकानंद का दर्शन भारतीय शिक्षा के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने शिक्षा को आध्यात्मिक, नैतिक और सामाजिक विकास के एक साधन के रूप में देखा। उनके विचार शिक्षा की भूमिका को राष्ट्रीयता, व्यक्तित्व विकास, प्रौद्योगिकी और विज्ञान, और स्वतंत्र सोच को बढ़ावा देने में उजागर करते हैं, जो छात्रों को एक बेहतर समाज बनाने में मदद करते हैं।

<u>भारतीय शिक्षा में स्वामी विवेकानंद के दर्शन की प्रासंगिकता:</u>

स्वामी विवेकानंद एक परिवर्तनकारी व्यक्तित्व थे जिन्होंने भारत की शिक्षा प्रणाली और समाज पर गहरा प्रभाव डाला। उनके दर्शन और विचार शिक्षा के विभिन्न पहलुओं में महत्व रखते हैं। यहाँ कुछ मुख्य बिंदु दिए गए हैं:

1. **आध्यात्मिक विकास:** स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा को केवल ज्ञान की प्राप्ति के रूप में नहीं देखा, बल्कि इसे आध्यात्मिक विकास के एक साधन के रूप में माना। उन्होंने विश्वास किया कि शिक्षा मानव जीवन में सही दिशा प्रदान करती है और आध्यात्मिक जागरण के लिए आवश्यक है।
2. **स्वदेश प्रेम और राष्ट्रीयता:** विवेकानंद ने राष्ट्रीयता और देश प्रेम के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने छात्रों के बीच देश प्रेम की भावना जागृत करने के लिए शिक्षा के महत्व को रेखांकित किया, जो भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में सहायक है।
3. **व्यक्तित्व विकास:** उन्होंने शिक्षा को केवल किताबों के ज्ञान की प्राप्ति का साधन नहीं माना, बल्कि इसे मानव गुणों और व्यक्तित्व के विकास का एक साधन समझा। उन्होंने विश्वास किया कि शिक्षा किसी व्यक्ति के नैतिक और सामाजिक चरित्र को आकार देने में सहायक है।
4. **सभी के लिए शिक्षा:** स्वामी विवेकानंद ने समग्र समाज के लिए शिक्षा की आवश्यकता पर चर्चा की। उन्होंने सभी को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार मानते हुए, समाज के निचले स्तर के लोगों की शिक्षा के महत्व पर जोर दिया।
5. **प्रौद्योगिकी और विज्ञान:** विवेकानंद आधुनिक प्रौद्योगिकी और विज्ञान के महत्व के प्रति जागरूक थे। उन्होंने छात्रों को प्रौद्योगिकी शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित किया ताकि वे दुनिया के साथ तालमेल रख सकें।

6. **स्वतंत्र सोच:** उन्होंने शिक्षा के माध्यम से स्वतंत्र सोच के विकास पर जोर दिया। उन्होंने छात्रों को अपने विचार और राय बनाने के लिए प्रेरित किया, जो उनके मानसिक विकास में सहायक होती है।

स्वामी विवेकानंद का दर्शन भारतीय शिक्षा पर एक शक्तिशाली प्रभाव डालता है। उनके राष्ट्रीयता, आध्यात्मिकता और सामाजिक जिम्मेदारी के आदर्श शिक्षा को एक नए दृष्टिकोण से देखने में सहायक हैं। उनका दर्शन छात्रों के मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण आधार तैयार करता है।

5. Show your acquaintance with the programmes adopted to eradicate illiteracy in India. 2017, 2021

Ans: भारत में निरक्षरता एक गंभीर समस्या है, जो देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में बाधा डालती है। निरक्षरता दूर करने के लिए विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी पहलों को अपनाया गया है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों की शिक्षा, जागरूकता और कौशल में सुधार के लिए प्रभावी कदम उठाए जा रहे हैं।

भारत में निरक्षरता दूर करने के लिए अपनाए गए कार्यक्रम:

1. **संपूर्ण भारत स्त्री निराश्रिता अभियान (SBA):** यह पहल 2000 में शुरू हुई और 2012 में समाप्त हुई। इसका लक्ष्य देश में निरक्षरता को समाप्त करना था, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहां निरक्षरता की दर अधिक थी।
2. **राष्ट्रीय साक्षरता मिशन (NLM):** यह 2005 में स्थापित हुआ था। यह मिशन विभिन्न राज्यों में लोगों की साक्षरता बढ़ाने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों को लागू करता है, विशेष रूप से महिलाओं, वंचित और सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों को प्राथमिकता देता है।
3. **साक्षरता परियोजनाएँ:** सरकार और निजी पहलों के माध्यम से विभिन्न साक्षरता परियोजनाएँ अपनाई गई हैं, जो स्थानीय भाषाओं में शिक्षा प्रदान करने के लिए बनाई गई हैं। ये परियोजनाएँ विशेष रूप से बच्चों और युवाओं के बीच साक्षरता को बढ़ाने पर केंद्रित हैं।
4. **प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम:** निरक्षर प्रौढ़ों के लिए विशेष शिक्षा कार्यक्रम शुरू किए गए हैं, जिसमें उन्हें मौलिक ज्ञान, गणना और संचार कौशल सिखाया जाता है।
5. **मीडिया और प्रौद्योगिकी का उपयोग:** निरक्षरता दूर करने के लिए मीडिया और प्रौद्योगिकी के उपयोग में वृद्धि हुई है। टेलीविजन, रेडियो और ऑनलाइन प्लेटफार्मों के माध्यम से जागरूकता बढ़ाई जा रही है, साथ ही शैक्षिक कार्यक्रमों और पाठ्यक्रमों की पेशकश की जा रही है।
6. **विभिन्न सरकारी पहलें:** सरकार ने निरक्षरता खत्म करने के लिए कई परियोजनाएँ घोषित की हैं, जैसे "शिक्षा मिशन," "सर्व शिक्षा अभियान," और "महिला साक्षरता अभियान।" ये परियोजनाएँ समाज के विभिन्न स्तरों पर लोगों को शिक्षा का अवसर प्रदान करती हैं।
7. **स्वयंसेवी संगठनों की पहलें:** गैर-सरकारी संगठन और स्वयंसेवी समूह भी निरक्षरता दूर करने के लिए विभिन्न गतिविधियाँ चला रहे हैं। वे आम लोगों में शिक्षा के प्रचार और जागरूकता बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं।

भारत में निरक्षरता दूर करने के लिए अपनाए गए ये कार्यक्रम देश की शिक्षा प्रणाली के सुधार के लिए महत्वपूर्ण कदम हैं। हालांकि निरक्षरता की दर काफी कम हुई है, फिर भी भविष्य में सभी स्तरों के लोगों के लिए शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए और अधिक प्रभावी उपायों की आवश्यकता है।

6. Discuss the constitutional goal for Indian education. 2017

Ans: भारत के संविधानिक ढांचे में शिक्षा से संबंधित कई मुख्य लक्ष्य और नीतियाँ स्थापित की गई हैं। ये लक्ष्य शिक्षा प्रणाली को लोगों का मौलिक अधिकार मानते हैं और एक उन्नत समाज के निर्माण में प्रभावी भूमिका निभाते हैं।

भारतीय शिक्षा के संविधानिक लक्ष्य:

यहाँ भारतीय शिक्षा के संविधानिक लक्ष्यों पर चर्चा की गई है:

1. **मौलिक अधिकार:** भारतीय संविधान की धारा 21(क) में शिक्षा को मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी गई है। इस धारा में कहा गया है कि हर नागरिक को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है, जो उसके जीवन के सुधार के लिए अनिवार्य है।
2. **समता और न्याय:** भारतीय संविधान शिक्षा के मामले में समता और न्याय की स्थापना के लिए काम करता है। यह सभी वर्गों के लोगों के लिए समान अवसर सुनिश्चित करता है, विशेष रूप से निम्न आय और हाशिए पर रहने वाले लोगों के लिए।
3. **राष्ट्रीय एकता और एकजुटता:** शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय एकता और सामाजिक एकजुटता बनाए रखने का लक्ष्य है। शिक्षा विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों और भाषाओं के लोगों को एक साथ आने का अवसर प्रदान करती है, जिससे समाज में विभाजन कम होता है।
4. **आधुनिकता और विकास:** भारतीय शिक्षा का उद्देश्य आधुनिक प्रौद्योगिकी और विज्ञान से परिचित कराना है, ताकि युवा समाज विश्व के साथ तालमेल बना सकें और देश के विकास में योगदान दे सकें।
5. **न्याय और समानता की नीति:** संविधान की धारा 45 में कहा गया है कि सरकार बच्चों की शिक्षा के लिए विशेष उपाय करेगी, ताकि सभी को शिक्षा के अवसर प्राप्त हों और आर्थिक या सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों के लिए विशेष सुविधाएँ प्रदान की जाएँ।
6. **गरीबी के खिलाफ लड़ाई:** शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य सामान्य जनता के आर्थिक और सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव लाने में मदद करना है। इसके माध्यम से गरीबी, निरक्षरता और अज्ञानता के खिलाफ लड़ाई की जाती है।
7. **महिलाओं की शिक्षा:** संविधान में महिलाओं की शिक्षा पर जोर दिया गया है, ताकि वे समाज के समान सदस्य के रूप में विकसित हो सकें। महिलाओं की शिक्षा सुनिश्चित करना आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

भारतीय शिक्षा के संविधानिक लक्ष्य लोगों के मौलिक अधिकारों का समर्थन करते हैं और समाज में न्याय, समानता और एकजुटता की स्थापना के लिए काम करते हैं। इन लक्ष्यों के माध्यम से भारत एक शिक्षित, जागरूक और उन्नत राष्ट्र बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

7. Mention any Five Principles regarding framing of curriculum. 2017

Ans: पाठ्यक्रम के ढांचे का निर्माण एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो शिक्षा की गुणवत्ता और छात्रों के सीखने के अनुभव को प्रभावित करती है। इसे छात्रों की आवश्यकताओं, उद्देश्यों और विविधता के ध्यान में रखते हुए तैयार किया जाना चाहिए, ताकि वे एक प्रभावी और समावेशी शिक्षा प्राप्त कर सकें।

पाठ्यक्रम के ढांचे के निर्माण के पाँच सिद्धांत:

पाठ्यक्रम के ढांचे के निर्माण में निम्नलिखित पाँच सिद्धांतों का उल्लेख किया गया है:

1. **छात्र-केंद्रितता:** पाठ्यक्रम का ढांचा इस प्रकार से बनाया जाना चाहिए कि यह छात्रों की आवश्यकताओं, रुचियों और क्षमताओं पर केंद्रित हो। इसे सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देना और उनकी सीखने की प्रक्रिया में सहायता करनी चाहिए।
2. **मौलिक उद्देश्य:** पाठ्यक्रम के ढांचे का निर्माण करते समय यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि शिक्षा का मौलिक उद्देश्य स्पष्ट और सही ढंग से परिभाषित किया गया है। शैक्षणिक लक्ष्य छात्रों के लिए प्रासंगिक और वास्तविक जीवन के साथ जुड़े होने चाहिए।
3. **विविधता और समावेश:** पाठ्यक्रम का ढांचा विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पृष्ठभूमि के छात्रों के लिए समावेशी होना चाहिए। विविध छात्रों के अनुभव, आवश्यकताओं और क्षमताओं को समान महत्व दिया जाना चाहिए।
4. **स्वतंत्रता और अनुकूलन:** यह छात्रों में स्वतंत्र सोच और रचनात्मकता के विकास में सहायता करनी चाहिए। पाठ्यक्रम का ढांचा इस प्रकार से बनाया जाना चाहिए कि छात्रों को अपने रुचियों और पसंद के अनुसार अनुकूलन करने की अनुमति मिले।
5. **मानक और मूल्यांकन:** पाठ्यक्रम के ढांचे का निर्माण करते समय मानक और मूल्यांकन विधियों को स्थापित करना आवश्यक है। यह शैक्षणिक परिणामों और प्रभावशीलता का आकलन करने के लिए एक ठोस आधार प्रदान करेगा, और यह छात्रों की प्रगति की निगरानी करने का अवसर देगा।

पाठ्यक्रम के ढांचे के निर्माण के लिए उल्लिखित सिद्धांत छात्रों के लिए एक समृद्ध और प्रभावी शैक्षणिक अनुभव सुनिश्चित करते हैं। ये छात्रों की रुचियों, आवश्यकताओं और विविधता का सम्मान करते हैं, जो उनकी बुद्धिमत्ता और रचनात्मकता के विकास में मदद करते हैं। सही सिद्धांतों का पालन शिक्षा को और अधिक उन्नत और सुसंगत बनाता है।

8. Explain the meaning of epistemology with reference to the process of knowledge building and generation. 2018

Ans: ज्ञानमीमांसा (Epistemology) दर्शनशास्त्र की एक शाखा है जो ज्ञान की प्रकृति, स्रोत, सीमाएँ और वैधता पर चर्चा करती है। यह मुख्य रूप से सवाल करती है कि हम कैसे जानते हैं, ज्ञान कैसे अर्जित किया जाता है, और इसे कैसे स्थापित किया जाता है। ज्ञान निर्माण और उत्पादन की प्रक्रियाओं के साथ ज्ञानमीमांसा का संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमारे विचारों और ज्ञान अर्जन के तरीकों को गहराई से प्रभावित करता है।

ज्ञानमीमांसा का सिद्धांत:

1. **ज्ञान की प्रकृति:** ज्ञानमीमांसा के अनुसार, ज्ञान केवल तथ्यों या जानकारी का संग्रह नहीं है; यह विश्वास, सत्य, और तर्क का संयोजन है। किसी विषय को जानने के लिए, हमें विश्वास करना होगा कि यह सत्य है, और इस विश्वास का समर्थन तर्क द्वारा होना चाहिए।
2. **ज्ञान का अधिग्रहण:** ज्ञान अर्जन के तरीके भिन्न हो सकते हैं, जैसे अनुभव (एम्पिरिज़्म), तर्क (राशनलिज़्म), और अंतर्दृष्टि (इंट्यूशन)। ये विभिन्न तरीकों से हमारे विचारों और ज्ञान के निर्माण में मदद करते हैं।
3. **ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया:** ज्ञान का निर्माण संवाद के माध्यम से होता है। शोध, विश्लेषण, और चर्चा ज्ञान के उत्पादन के लिए आवश्यक हैं। विभिन्न दृष्टिकोणों और अनुभवों को एकीकृत करके एक व्यापक समझ बनाई जाती है।
4. **समाज और संस्कृति:** हमारा समाज और संस्कृति ज्ञान निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समाज की शैक्षिक, राजनीतिक, और सामाजिक संरचनाएँ ज्ञान के उत्पादन को प्रभावित करती हैं। जब समाज के विभिन्न स्तरों के लोग अपने अनुभव साझा करते हैं, तो नया ज्ञान उत्पन्न होता है।
5. **ज्ञान की सीमाएँ:** ज्ञानमीमांसा ज्ञान की सीमाओं पर भी चर्चा करती है। कुछ विषय या घटनाएँ हमारे ज्ञान के बाहर रखी जाती हैं, जिन्हें हम समझ नहीं सकते। ये सीमाएँ ज्ञान निर्माण और संरक्षण की प्रक्रियाओं को चिन्हित करती हैं।

ज्ञानमीमांसा और ज्ञान निर्माण की प्रक्रियाएँ एक-दूसरे के साथ गहराई से जुड़ी हुई हैं। ज्ञान अर्जन की प्रक्रिया हमारे विचारों, विश्वासों, और सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से संबंधित होती है, जो नए ज्ञान के उत्पादन के लिए एक मंच प्रदान करती है। इसके माध्यम से हम अपने पर्यावरण और अनुभवों के बारे में एक गहरी समझ विकसित कर सकते हैं।

9. Write the significance of philosophy in Education. 2018

Ans: शिक्षा में दर्शन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह शिक्षा के मौलिक उद्देश्यों और मूल्यों की स्थापना करता है, छात्रों को आलोचनात्मक सोच और रचनात्मकता विकसित करने में मदद करता है। दर्शन शिक्षा प्रणालियों, विधियों और सामाजिक परिवर्तन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो छात्रों के मानविक और सामाजिक विकास में सहायक होता है।

<u>शिक्षा में दर्शन के महत्व:</u>

1. **मूल्यों की स्थापना:** दर्शन शिक्षा प्रणाली में मूल्यों और नैतिकता को बनाने में सहायक होता है। यह छात्रों को सत्य, न्याय और समानता जैसे मौलिक मूल्यों के प्रति जागरूक करता है।
2. **विज्ञान और तर्क का विकास:** दर्शन छात्रों को तर्क, आलोचनात्मक सोच और विश्लेषणात्मक कौशल विकसित करने में मदद करता है। यह उन्हें समस्याओं को हल करने में सक्षम बनाता है और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करता है।
3. **शिक्षा का उद्देश्य:** दर्शन शिक्षा के उद्देश्यों और लक्ष्यों के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह विश्लेषण करता है कि शिक्षा कैसे समाज को बदल सकती है और मानव विकास में कैसे मदद कर सकती है।

4. **शिक्षण विधियों के लिए मार्गदर्शन:** दर्शन शिक्षा विधियों के विकास में महत्वपूर्ण है। यह निर्धारित करता है कि छात्रों के लिए किस प्रकार की शिक्षण विधियों, रणनीतियों और सर्वोत्तम वातावरण का निर्माण किया जाना चाहिए।
5. **सामाजिक परिवर्तन:** दर्शन को शिक्षा के माध्यम से समाज के परिवर्तन के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में देखा जाता है। यह छात्रों को समाज में परिवर्तन लाने और सामाजिक न्याय स्थापित करने के लिए सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करता है।
6. **स्वतंत्र सोच को प्रोत्साहन:** दर्शन छात्रों में स्वतंत्र सोच और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करता है। यह उन्हें अपने स्वयं के विचार बनाने और तर्कसंगत निर्णय लेने में मदद करता है।
7. **मानव विकास:** दर्शन शिक्षा प्रणाली में मानव विकास के लक्ष्य के प्रति कार्य करता है। यह छात्रों की बुद्धि, भावनाएँ और सामाजिक कौशल का विकास करता है।

शिक्षा में दर्शन एक आवश्यक तत्व है, जो छात्रों को मूल्यों, तर्क और सामाजिक जिम्मेदारी विकसित करने में मदद करता है। यह शिक्षा की विधियों, उद्देश्यों और मानव विकास की नींव पर काम करता है, जिससे छात्र एक जागरूक, रचनात्मक और नैतिक समाज में योगदान देने में सक्षम होते हैं।

10. State the relevance of philosophy of Gandhi in Indian Education. 2018, 2021

Ans: गांधीजी का दर्शन भारतीय शिक्षा में बहुत महत्वपूर्ण है। उनके शिक्षा के विचार और दृष्टिकोण वर्तमान शिक्षा प्रणाली के विकास और समाज के समग्र सुधार के लिए कई दिशानिर्देश प्रदान करते हैं।

<u>यहां गांधीजी के दर्शन के कुछ प्रासंगिक पहलुओं का उल्लेख किया गया है:</u>

1. **मुक्त शिक्षा और आत्मनिर्भरता:** गांधीजी ने शिक्षा को एक मुक्त प्रक्रिया के रूप में देखा, जहां छात्र अपने विचारों और अनुभवों से सीखते हैं। उन्होंने आत्मनिर्भरता पर जोर दिया, जो छात्रों को अपनी क्षमताओं और प्रतिभाओं को विकसित करने में मदद करती है।
2. **तकनीकी शिक्षा:** गांधीजी का मानना था कि तकनीकी शिक्षा और हस्तशिल्प पर जोर दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा, "शिक्षा हाथ, हृदय और मस्तिष्क का संगम है।" यह दृष्टिकोण भारतीय शिक्षा में व्यावसायिक और प्रभावी शिक्षा के महत्व को उजागर करता है।
3. **नैतिक शिक्षा:** गांधीजी ने नैतिक शिक्षा और मूल्यों के स्थापित करने पर ध्यान दिया। उन्होंने शिक्षा को एक ऐसा साधन माना जो छात्रों के नैतिक और मानविक गुणों को विकसित करने में मदद करेगा।
4. **सामाजिक न्याय:** गांधीजी का दर्शन सामाजिक न्याय और समानता पर आधारित है। उन्होंने समाज की प्रगति के लिए शिक्षा की भूमिका पर जोर दिया, जहां सभी वर्गों के लोगों को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलना चाहिए।
5. **शांति और अहिंसा की शिक्षा:** गांधीजी का अहिंसा का सिद्धांत शिक्षा प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण तत्व है। उन्होंने विश्वास किया कि शिक्षा के माध्यम से लोगों को शांति और सहयोग के महत्व को सिखाना चाहिए।
6. **विविधता का सम्मान:** गांधीजी ने भारतीय संस्कृति और विविधता के प्रति सम्मान व्यक्त किया। उनके अनुसार, शिक्षा में विविधता को पहचानना और सम्मान देना सामाजिक और सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा दे सकता है।

गांधीजी का दर्शन भारतीय शिक्षा में एक मौलिक परिवर्तन का सूत्रपात कर सकता है। यह छात्रों के समग्र विकास, मानविक मूल्यों और सामाजिक जिम्मेदारी को जोड़ता है, जिससे समाज के सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा सकती है।

11. Explain how information becomes knowledge. 2019

Ans: जानकारी कैसे ज्ञान में परिवर्तित होती है, इसे समझने के लिए हमें पहले जानकारी और ज्ञान के बीच का अंतर समझना होगा। जानकारी वह डेटा है जो संग्रहित, संग्रहीत या प्राप्त किया जाता है, जो अर्थ या अनुभव नहीं प्रदान करता। दूसरी ओर, ज्ञान एक संरचनात्मक विचार है जो जानकारी के विश्लेषण, समझ और अनुभव के आधार पर विकसित होता है। जानकारी को ज्ञान में परिवर्तित करने की प्रक्रिया निम्नलिखित चरणों का पालन करती है:

1. **जानकारी का संग्रह:** पहले जानकारी का संग्रह करना होता है। यह विभिन्न स्रोतों से आ सकता है, जैसे कि किताबें, शोध, साक्षात्कार, या अनुभव।
2. **जानकारी का विश्लेषण:** जानकारी संग्रहित करने के बाद, इसका विश्लेषण करना आवश्यक है। विश्लेषण के माध्यम से जानकारी के भीतर संबंध स्थापित किए जाते हैं और इसके अर्थ को समझा जाता है।
3. **बोध और अनुभूति:** विश्लेषण के बाद, जानकारी का अर्थ स्पष्ट होता है। यह वह चरण है जहाँ व्यक्ति जानकारी के संदर्भ में नए विचार बनाता है।
4. **संकल्पना और परिलक्षण:** जानकारी और इसके विश्लेषण के आधार पर व्यक्ति नए विचारों और अवधारणाओं का निर्माण करता है। इस चरण में व्यक्ति जानकारी की गहराई पर विचार करता है और इसे विभिन्न दृष्टिकोणों से मूल्यांकन करता है।
5. **अनुभव के साथ संबंध:** व्यक्ति का पूर्व अनुभव और ज्ञान जानकारी के साथ जुड़ता है। इससे जानकारी अधिक अर्थपूर्ण हो जाती है और व्यक्ति जानकारी के संदर्भ में एक व्यावहारिक और उपयोगी ज्ञान बनाने में सक्षम होता है।
6. **प्रयोग:** जब जानकारी को एक विशिष्ट संदर्भ में लागू किया जाता है, तो यह ज्ञान में परिवर्तित हो जाती है। इस प्रयोग के माध्यम से व्यक्ति यह सीखता है कि समस्याओं को हल करने या कुछ नया बनाने के लिए इस जानकारी का उपयोग कैसे किया जाए।
7. **ज्ञान की प्राप्ति: अंततः**, यदि जानकारी का सही ढंग से विश्लेषण किया गया है और इसे अनुभव के साथ जोड़ा गया है, तो यह एक संरचनात्मक ज्ञान बनाती है। यह ज्ञान व्यक्तियों को निर्णय लेने, समस्याओं को हल करने और नए विचार या परियोजनाएँ उत्पन्न करने में मदद करता है।

जानकारी से ज्ञान बनाने की प्रक्रिया एक निरंतर और संरचनात्मक प्रक्रिया है। जानकारी का विश्लेषण करने, उसे समझने और अनुभव के साथ जोड़ने के माध्यम से यह ज्ञान में परिवर्तित होती है। यह प्रक्रिया व्यक्तियों को निर्णय लेने और समस्याओं को हल करने में सहायता करती है, जो उनके व्यक्तिगत और पेशेवर विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

12. Mention major impacts of Globalization in Indian Higher Education. 2019

Ans: वैश्वीकरण ने वर्तमान में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाए हैं। यह भारतीय विश्वविद्यालयों के मान, शिक्षण विधियों और अनुसंधान क्षेत्रों को नए सिरे से परिभाषित कर रहा है। अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और प्रौद्योगिकी के उपयोग के माध्यम से, छात्र वैश्विक प्रतिस्पर्धा में खुद को तैयार कर रहे हैं, जो देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में सहायक हो रहा है।

भारतीय उच्च शिक्षा में वैश्वीकरण के महत्वपूर्ण प्रभाव:

1. **विश्वविद्यालय के मान में सुधार:** वैश्वीकरण के कारण भारतीय विश्वविद्यालयों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर की शिक्षा के लिए और बेहतर बनने की शुरुआत की है। वे विश्व स्तरीय शिक्षा और अनुसंधान में प्रतिस्पर्धा करने के लिए नए तरीकों और पाठ्यक्रमों को अपना रहे हैं।
2. **अंतरराष्ट्रीय सहयोग:** भारतीय विश्वविद्यालयों ने विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ सहयोग बढ़ाया है, जिसके परिणामस्वरूप अनुसंधान परियोजनाएं, छात्र विनिमय और संयुक्त कार्यक्रमों में वृद्धि हुई है।
3. **छात्रों के लिए वैश्विक अवसर:** वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप, भारतीय छात्र अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थानों में दाखिल होने के अवसर प्राप्त कर रहे हैं। इससे उनके रोजगार के क्षेत्र का विस्तार हो रहा है और अंतरराष्ट्रीय कौशल प्राप्त करना संभव हो रहा है।
4. **नई प्रौद्योगिकियों का प्रयोग:** वैश्वीकरण के कारण उच्च शिक्षा में नई प्रौद्योगिकियों, ऑनलाइन शिक्षण और डिजिटल प्लेटफार्मों का उपयोग बढ़ा है, जो छात्रों के शिक्षण अनुभव को बेहतर बनाता है।
5. **विविधता और संस्कृति:** अंतरराष्ट्रीय छात्रों के आगमन ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में विविधता बढ़ा दी है। इससे विभिन्न सांस्कृतिक विचारों और अनुभवों के आदान-प्रदान के अवसर पैदा हो रहे हैं।
6. **व्यावसायिक शिक्षा और अनुसंधान:** वैश्वीकरण के कारण भारतीय विश्वविद्यालयों ने नए व्यावसायिक पाठ्यक्रम और अनुसंधान क्षेत्रों को खोला है, जो छात्रों के लिए नए रोजगार के अवसर पैदा कर रहे हैं।
7. **नीति परिवर्तन:** उच्च शिक्षा के वैश्वीकरण ने नीति परिवर्तन की दिशा में धकेल दिया है, जिसके परिणामस्वरूप सरकारी और निजी क्षेत्रों में शिक्षा में निवेश और अनुसंधान में वृद्धि हुई है।
8. **सामाजिक और आर्थिक विकास:** उच्च शिक्षा का वैश्वीकरण भारतीय समाज के आर्थिक और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, जो देश की वैश्विक अर्थव्यवस्था में योगदान कर रहा है।

भारतीय उच्च शिक्षा में वैश्वीकरण का प्रभाव गहरा और व्यापक है। इसने नए प्रौद्योगिकियों और शिक्षण विधियों को अपनाने में सहायता की है, अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ाया है, और छात्रों को वैश्विक दृष्टिकोण प्रदान किया है। हालाँकि, यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि सभी छात्रों के लिए लाभ सुनिश्चित करने के लिए इस प्रक्रिया का सही ढंग से प्रबंधन किया जाए।

13. Evaluate the role of school as an agency of Education. 2019

Ans: विद्यालयों का शिक्षा के एक माध्यम के रूप में भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और बहुपरक है। विद्यालय केवल शिक्षा का स्थान नहीं हैं; ये सामाजिक, सांस्कृतिक और मानसिक विकास के क्षेत्र भी हैं।

विद्यालयों के माध्यम से छात्र विभिन्न विषयों पर ज्ञान प्राप्त करते हैं और जीवन के कई अनुभव हासिल करते हैं।

विद्यालयों की शिक्षा के माध्यम के रूप में भूमिका:

1. **ज्ञान का स्रोत:** विद्यालय छात्रों के लिए विभिन्न विषयों पर ज्ञान प्राप्त करने का एक मंच प्रदान करते हैं। पाठ्यपुस्तकों, परियोजनाओं और शोध गतिविधियों के माध्यम से वे नई जानकारी प्राप्त करते हैं।
2. **सामाजिक विकास:** विद्यालय सामाजिक संवाद और सहयोग का वातावरण बनाते हैं। यहां, छात्र एक-दूसरे के साथ बातचीत करते हैं, दोस्त बनाते हैं और सामाजिक कौशल विकसित करने के अवसर प्राप्त करते हैं।
3. **नैतिक और मानविक मूल्य:** विद्यालय छात्रों को नैतिक शिक्षा देते हैं। यहां वे ईमानदारी, दया, सहानुभूति और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे मूल्यों के बारे में सीखते हैं, जो उनके चरित्र निर्माण में मदद करते हैं।
4. **संस्कृति का संरक्षण और प्रचार:** विद्यालय में छात्र विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेते हैं। यह उनके अपने संस्कृति और परंपराओं के प्रति सम्मान उत्पन्न करता है और विभिन्न संस्कृतियों के प्रति उनकी समझ को बढ़ाता है।
5. **कल्पना और सृजनात्मकता:** विद्यालय सृजनात्मक सोच और नवाचार को प्रोत्साहित करते हैं। कला, संगीत और अन्य सृजनात्मक गतिविधियों के माध्यम से छात्र अपनी प्रतिभा विकसित कर सकते हैं।
6. **रोजगार के लिए तैयारी:** विद्यालय छात्रों के लिए भविष्य में रोजगार के अवसर उत्पन्न करते हैं। विभिन्न कौशल और अनुभव हासिल करके वे कार्यस्थल में प्रवेश के लिए तैयार होते हैं।
7. **आत्मविश्वास और नेतृत्व गुण:** विद्यालय में विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने के माध्यम से छात्र आत्मविश्वास प्राप्त करते हैं। वे नेतृत्व गुण विकसित करते हैं, जो उनके भविष्य के लिए महत्वपूर्ण होते हैं।

विद्यालय शिक्षा का एक आवश्यक माध्यम हैं, जो केवल ज्ञान प्रदान नहीं करते, बल्कि सामाजिक, नैतिक, और मानसिक विकास में भी मदद करते हैं। ये छात्रों को बेहतर नागरिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विद्यालयों की गतिविधियां और वातावरण छात्रों के समग्र विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

14. Write a brief note on 'the place of religion in education' as revealed in the educational philosophy of Swami Vivekananda or Dr. Sarvepalli Radhakrishnan. 2020

Ans: स्वामी विवेकानंद के शिक्षा दर्शन में 'शिक्षा में धर्म का स्थान' एक महत्वपूर्ण विषय है। वे मानते थे कि शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन के आध्यात्मिक और नैतिक विकास का भी माध्यम है। उनके अनुसार, धर्म और शिक्षा एक-दूसरे के पूरक हैं। यहाँ कुछ मुख्य बिंदु दिए गए हैं:

1. **आध्यात्मिक विकास:** स्वामी विवेकानंद के अनुसार, शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आध्यात्मिक विकास है। छात्रों में आत्मविश्वास, सद्कर्म की प्रवृत्ति और मानविक मूल्य विकसित करना चाहिए।

2. **मानविक मूल्य:** धर्म शिक्षा नैतिक शिक्षा का एक आधार प्रदान करता है। विवेकानंद मानते थे कि शिक्षा के माध्यम से धार्मिक मूल्य छात्रों में सृजित हो सकते हैं, जो उनके चरित्र निर्माण में मदद करते हैं।
3. **सभी धर्मों का सम्मान:** वे सभी धर्मों के प्रति सम्मान दिखाते थे। शिक्षा और धर्म के बीच समन्वय स्थापित करने के लिए छात्रों को सभी धर्मों के मूल्यों के प्रति जागरूक करना आवश्यक मानते थे।
4. **सेवा और मानवता:** धर्म शिक्षा और मानवता की सेवा का एक मार्ग है। विवेकानंद के अनुसार, शिक्षा लोगों में सेवा की भावना विकसित करती है, जो धार्मिक शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पहलू है।
5. **समाज का विकास:** स्वामी विवेकानंद के शिक्षा दर्शन में धर्म का स्थान समाज के विकास के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। वे मानते थे कि धार्मिक शिक्षा लोगों में सामाजिक उत्तरदायित्व और न्याय की भावना पैदा करती है।

संक्षेप में, स्वामी विवेकानंद के शिक्षा दर्शन में धर्म का स्थान मानव जीवन के आध्यात्मिक और नैतिक विकास से संबंधित है। वे शिक्षा और धर्म के समन्वय को समाज के विकास और मानवता की भलाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए देखते थे।

****

सार्वपति राधाकृष्णन के शिक्षा दर्शन में 'शिक्षा में धर्म का स्थान' एक महत्वपूर्ण विषय है। वे शिक्षा और धर्म के बीच एक गहरा संबंध स्थापित करते हैं। उनके अनुसार, शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह नैतिक और आध्यात्मिक विकास भी करती है।

<u>शिक्षा में धर्म का स्थान:</u>

1. **नैतिक शिक्षा:** राधाकृष्णन मानते हैं कि शिक्षा में धर्म का समावेश छात्रों के नैतिक मूल्यों और व्यवहार को आकार देने में मदद करता है। धर्म छात्रों में सत्य, दया, और सहानुभूति के भाव पैदा करता है।
2. **सामान्य मानवता:** धर्म शिक्षा मानव संबंधों का आधार है। राधाकृष्णन के अनुसार, धार्मिक शिक्षा छात्रों में एकता और सहानुभूति पैदा करती है। यह समाज के विभिन्न स्तरों के बीच समन्वय स्थापित करने में सहायक होती है।
3. **आध्यात्मिक विकास:** धर्म शिक्षा आध्यात्मिक मूल्यों का प्रवाह उत्पन्न करती है। यह छात्रों को जीवन को गहरे अर्थ में समझने के लिए तैयार करती है और उनके जीवन के उद्देश्य की खोज में मदद करती है।
4. **विविधता और सहिष्णुता:** धर्म शिक्षा विविधता का सम्मान करने और विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के प्रति सहिष्णुता दिखाने के महत्व पर जोर देती है। राधाकृष्णन के अनुसार, छात्रों में इस तरह के दृष्टिकोण को विकसित करना आवश्यक है।
5. **पूर्णता:** राधाकृष्णन के शिक्षा दर्शन में धर्म का स्थान शिक्षा को कई दृष्टिकोणों से पूर्णता प्रदान करता है। धर्म शिक्षा को एक समग्र और समर्पित दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो व्यक्ति और समाज के विकास में सहायक होता है।

सार्वपति राधाकृष्णन के अनुसार, शिक्षा में धर्म की उपस्थिति मानव जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा है। यह न केवल शिक्षा के स्तर पर, बल्कि समाज और संस्कृति के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

15. Write in brief the relevance of Rabindranath's philosophical thought regarding 'aim of education' with respect to the present Indian society. 2020, 2022

Ans: रवींद्रनाथ ठाकुर के 'शिक्षा का लक्ष्य' पर उनके दार्शनिक विचार वर्तमान भारतीय समाज के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक हैं। शिक्षा के बारे में उन्होंने जो दर्शन प्रस्तुत किया है, वह आज के समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर करता है। यहां कुछ प्रमुख बिंदु दिए गए हैं:

1. **समग्र विकास:** रवींद्रनाथ के अनुसार, शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का साधन नहीं है, बल्कि यह एक व्यक्ति के समग्र विकास के लिए आवश्यक है। वर्तमान भारतीय समाज में जहां प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं का दबाव बढ़ रहा है, वहां रवींद्रनाथ के विचार छात्रों की रचनात्मकता, मानविक मूल्य और भावनाओं के विकास पर जोर देते हैं।
2. **मानविक मूल्य:** रवींद्रनाथ मानते थे कि शिक्षा मानवता और सामाजिक जिम्मेदारी के विकास में सहायक होती है। वर्तमान समाज में जब सामाजिक समस्याएं बढ़ रही हैं, तब शिक्षा में मानविक मूल्यों को शामिल करना महत्वपूर्ण है। यह छात्रों में सहानुभूति, दया और सामाजिक दायित्व की भावना विकसित करने में मदद करता है।
3. **स्वतंत्र विचार:** रवींद्रनाथ ने शिक्षा प्रणाली में स्वतंत्र विचार के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने चाहा कि छात्र केवल जानकारी प्राप्त न करें, बल्कि अपने विचार और मत व्यक्त करें। आज के युग में जहां सोशल मीडिया और सूचनाओं का प्रवाह है, स्वतंत्र विचार की महत्वता बढ़ रही है।
4. **प्राकृतिक शिक्षा:** रवींद्रनाथ ने शिक्षा को प्राकृतिक वातावरण से जोड़ने की बात की। उन्होंने विश्वास किया कि प्रकृति के साथ संबंध स्थापित करने से छात्रों में रचनात्मकता और नए विचारों का जन्म होता है। वर्तमान दुनिया में जहां पर्यावरणीय समस्याएं प्रखर हैं, वहां उनके ये दार्शनिक विचार विशेष रूप से प्रासंगिक हैं।
5. **सामाजिक परिवर्तन:** रवींद्रनाथ का शिक्षा दर्शन समाज में परिवर्तन का एक माध्यम है। उन्होंने शिक्षा को समाज के विकास और परिवर्तन के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में देखा। वर्तमान भारतीय समाज में जहां परिवर्तन और प्रगति की आवश्यकता है, वहां उनके ये विचार हमें प्रेरणा दे सकते हैं।

संक्षेप में, रवींद्रनाथ ठाकुर के 'शिक्षा के लक्ष्य' संबंधी दार्शनिक विचार वर्तमान भारतीय समाज में नैतिक, सामाजिक, और पर्यावरणीय विकास के लिए महत्वपूर्ण प्रासंगिकता रखते हैं। उनका शिक्षा दर्शन नई पीढ़ी के विकास और समाज की प्रगति के लिए एक नई दृष्टिकोण प्रदान करता है।

16. Mention any five principals regarding framing of curriculum. 2020, 2021

Ans: पाठ्यक्रम की संरचना शिक्षा की सफलता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष है। यह विद्यार्थियों के ज्ञान, कौशल और मूल्यों के निर्माण की प्रक्रिया को विशिष्ट और प्रासंगिक बनाता है। एक अच्छी तरह से

निर्मित पाठ्यक्रम छात्रों की सृजनात्मकता और समस्या-समाधान क्षमताओं को बढ़ाने में सहायक होता है और शिक्षा प्रणाली में स्थिरता और आधुनिकीकरण लाता है।

<u>पाठ्यक्रम निर्माण में महत्वपूर्ण सिद्धांत:</u>

1. **विद्यार्थी केंद्रितता:** पाठ्यक्रम विद्यार्थियों की जरूरतों, रुचियों और क्षमताओं के आधार पर बनाया जाना चाहिए, ताकि वे आसानी से विषयवस्तु को समझ सकें और सृजनात्मकता का विकास कर सकें।
2. **संगतता और प्रासंगिकता:** पाठ्यक्रम की सामग्री विद्यार्थियों की आयु, मानसिक विकास और अनुभवों के अनुरूप होनी चाहिए, जिससे वे प्रासंगिक ज्ञान और कौशल प्राप्त कर सकें।
3. **स्थिरता और परिवर्तनशीलता:** पाठ्यक्रम इस तरह से संरचित होना चाहिए कि यह शिक्षा के मौलिक पक्षों को स्थिर रखे, लेकिन समय के साथ नए ज्ञान और तकनीक को भी सम्मिलित करे।
4. **विविधता:** पाठ्यक्रम में विभिन्न विषयों की विविधता होनी चाहिए, ताकि विद्यार्थी विभिन्न दृष्टिकोणों से सोच सकें और समस्याओं का समाधान कर सकें।
5. **अनुभवात्मक शिक्षा:** पाठ्यक्रम इस प्रकार निर्मित होना चाहिए कि विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन के अनुभवों और गतिविधियों के माध्यम से सीखने के लिए प्रेरित किया जाए, ताकि सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक जीवन से जोड़ा जा सके।

पाठ्यक्रम निर्माण में विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, मानसिक विकास और बदलते ज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को शामिल करने पर जोर देना चाहिए। पाठ्यक्रम विविध और अनुभवात्मक होना चाहिए, ताकि विद्यार्थी जीवन के विभिन्न पहलुओं से सीख सकें और सृजनात्मकता का विकास कर सकें।

17. Write the significance of philosophy in Education. 2020, 2022

Ans: दर्शन शिक्षा का आधार है और यह शैक्षिक प्रणाली को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षा में दर्शन के महत्व को नीचे रेखांकित किया गया है:

1. **शिक्षा के लक्ष्य निर्धारित करना:** दर्शन शिक्षा के मुख्य उद्देश्यों और लक्ष्यों को निर्धारित करने में मदद करता है। इसके माध्यम से यह दिशा दी जाती है कि शिक्षा किस प्रकार एक छात्र को आकार देगी।
2. **शिक्षण विधियों में सुधार:** दर्शन के माध्यम से शिक्षण विधियों में प्रणालीगत सुधार होता है। विभिन्न दार्शनिक सिद्धांत (जैसे आदर्शवाद, यथार्थवाद) शिक्षण के विभिन्न तरीकों और रणनीतियों को निर्धारित करने में मदद करते हैं।
3. **नैतिक और मानवीय मूल्य:** दर्शन के माध्यम से छात्रों को नैतिक शिक्षा और मानवीय मूल्यों का पाठ पढ़ाया जा सकता है, जो उनके चरित्र निर्माण में सहायक होते हैं और उन्हें समाज में जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करते हैं।
4. **समाज के विकास में सहायता:** शिक्षा में दर्शन समाज के परिवर्तन और विकास में सहायक भूमिका निभाता है। दर्शन के द्वारा समाज की आवश्यकताओं के अनुसार एक शैक्षिक प्रणाली बनाई जाती है, जो समाज की विभिन्न समस्याओं का समाधान करने में प्रभावी होती है।

5. **शिक्षा प्रणाली की स्थिरता और प्रगतिशीलता:** दर्शन के माध्यम से शिक्षा प्रणाली को एक संगठित और प्रगतिशील रूप दिया जा सकता है। यह प्रणाली को परिवर्तित होते समाज की आवश्यकताओं के साथ तालमेल बिठाने में सहायक होता है।

इस प्रकार, शिक्षा में दर्शन एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है, जो शिक्षा के लक्ष्य, पद्धति और सामाजिक जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाए रखता है और शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य को पूरा करने में सहायता करता है।

18. How information becomes Knowledge? Explain. 2022

Ans: जानकारी और ज्ञान के बीच का अंतर समझना शिक्षा के संदर्भ में महत्वपूर्ण है। जानकारी कच्चा डेटा है जो अपने आप में कोई अर्थ नहीं रखता, जबकि ज्ञान संगठित और प्रासंगिक जानकारी है जो अनुभव और विश्लेषण के माध्यम से विकसित होती है। यह प्रक्रिया शिक्षा में सुधार और निर्णय लेने में मदद करती है।

<u>जानकारी और ज्ञान:</u>

- **जानकारी:** जानकारी किसी विशेष विषय या घटना के बारे में कच्चा डेटा है। यह संख्याओं, शब्दों, छवियों या अन्य रूपों में हो सकती है, लेकिन इसका अपना कोई अंतर्निहित अर्थ या प्रासंगिकता नहीं होती जब तक कि इसे व्याख्यायित न किया जाए।
- **ज्ञान:** ज्ञान डेटा की संगठित और प्रासंगिक व्याख्या है जो अनुभव, विश्लेषण और समझ के माध्यम से विकसित होती है। यह व्यावहारिक और सैद्धांतिक दोनों तरीकों से मानव विचार को प्रभावित करता है।

<u>जानकारी से ज्ञान में परिवर्तित करने के चरण:</u>

1. **जानकारी संग्रह:** पहला चरण जानकारी का संग्रह करना है। यह पूरा और सटीक होना चाहिए, क्योंकि गलत जानकारी संग्रह से गलत ज्ञान प्राप्त होगा।
2. **जानकारी विश्लेषण:** संग्रहित जानकारी का विश्लेषण किया जाता है। इसमें डेटा के भीतर अर्थ या पैटर्न की खोज करना शामिल है जो विशेष समस्याओं के समाधान प्रदान कर सकता है या वास्तविक जीवन की स्थितियों से संबंधित हो सकता है।
3. **जानकारी प्रसंस्करण:** डेटा को विभिन्न संदर्भों में वैज्ञानिक या तार्किक तरीकों से संसाधित किया जाता है, ताकि इसे बेहतर तरीके से समझा जा सके और किसी निष्कर्ष पर पहुंचा जा सके।
4. **प्रासंगिकता और अनुभव:** जानकारी को ज्ञान में बदलने में प्रासंगिकता और अनुभव की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। अनुभव से सीखी गई जानकारी का प्रासंगिक रूप से उपयोग करने से यह ज्ञान में परिवर्तित हो जाती है। उदाहरण के लिए, जब एक शिक्षक पाठ्यपुस्तकों से डेटा लेकर इसे वास्तविक जीवन के उदाहरणों का उपयोग करके छात्रों को समझाते हैं, तो वह जानकारी ज्ञान बन जाती है।
5. **अंतर्दृष्टि और समझ:** एक बार जानकारी की व्याख्या और विश्लेषण पूरा हो जाने पर, यह व्यक्तिगत अंतर्दृष्टि और समझ को जन्म देती है, जो एक व्यक्ति के ज्ञान के निर्माण में मदद करती है। इस स्तर

पर, जानकारी केवल कच्चा डेटा नहीं रह जाती; यह व्यक्तिगत समझ या अनुभव के आधार पर एक अर्थपूर्ण अस्तित्व में बदल जाती है।

जानकारी से ज्ञान में परिवर्तित करने की प्रक्रिया एक रचनात्मक और संरचित कदम है, जो कच्चे डेटा को क्रियाशील ज्ञान में बदल देती है। इस प्रक्रिया में जानकारी का विश्लेषण, संगठन और परीक्षण हमारे निर्णय लेने की क्षमताओं को बढ़ाता है, जो वास्तविक जीवन की समस्याओं को हल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

19. Evaluate the role of school as an agency of education. 2022

Ans: विद्यालय के शिक्षा के माध्यम के रूप में भूमिका एक महत्वपूर्ण विषय है। विद्यालय केवल शिक्षा देने का स्थान नहीं है; बल्कि यह छात्रों के सामाजिक, मानसिक और नैतिक विकास के लिए एक आधार प्रदान करता है। विद्यालय की भूमिका निम्नलिखित रूप से मूल्यांकन की जा सकती है:

1. **ज्ञान प्रदान करना:** विद्यालय छात्रों को विभिन्न विषयों के बारे में मौलिक ज्ञान प्रदान करता है। पाठ्यपुस्तकों, गतिविधियों और अन्य शैक्षिक संसाधनों के माध्यम से, वे विभिन्न विषयों के आधार पर जानकारी और ज्ञान प्राप्त करते हैं।
2. **सामाजिककरण:** विद्यालय छात्रों के सामाजिककरण की प्रक्रिया में मदद करता है। यहाँ, वे सहपाठियों के साथ संवाद करते हैं, दोस्ती करते हैं, और सामाजिक कौशल सीखते हैं। यह उन्हें सामाजिक व्यवहार और संबंध विकसित करने में मदद करता है।
3. **नैतिक शिक्षा:** विद्यालय नैतिक मूल्यों को सिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विभिन्न गतिविधियों और विषयों के माध्यम से, छात्र सही और गलत के बीच अंतर करना सीखते हैं और एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित होते हैं।
4. **मानसिक विकास:** विद्यालय मानसिक विकास के लिए एक सहायक वातावरण तैयार करता है। छात्र विभिन्न समस्याओं को हल करने के लिए सोचते हैं, विश्लेषण करते हैं और निर्णय लेने की रणनीतियाँ सीखते हैं।
5. **सांस्कृतिक शिक्षा:** विद्यालय छात्रों की सांस्कृतिक पहचान को आकार देने में मदद करता है। विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों, त्योहारों और कार्यक्रमों के माध्यम से, छात्र अपनी संस्कृति, परंपराओं और विभिन्न सांस्कृतिक विविधताओं के बारे में जानने का अवसर प्राप्त करते हैं।
6. **कौशल और प्रतिभा का विकास:** विद्यालय छात्रों को विभिन्न कौशल और प्रतिभाएँ विकसित करने का अवसर प्रदान करता है। खेल, कला, संगीत, और अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेकर, वे अपनी प्रतिभा का विकास कर सकते हैं।

विद्यालय के शिक्षा के माध्यम के रूप में भूमिका केवल जानकारी और ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं है। यह एक स्थापित संस्था के रूप में छात्रों के लिए सामाजिक, नैतिक, और सांस्कृतिक शिक्षा प्रदान करता है। विद्यालय छात्रों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो उन्हें भविष्य में सफल होने में मदद करता है।

20. Discuss basic principles of curriculum construction. 2023

Ans: पाठ्यक्रम विकास के मौलिक सिद्धांत शिक्षा की प्रक्रिया में गुणात्मकता बढ़ाने और छात्रों के समग्र विकास को सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यहां पाठ्यक्रम विकास के कुछ प्रमुख सिद्धांत चर्चा किए गए हैं:

1. **छात्र-केंद्रितता:** पाठ्यक्रम को छात्रों की आवश्यकताओं, रुचियों और क्षमताओं के आधार पर तैयार किया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम की सामग्री को छात्रों की विभिन्न पसंदों और अनुभवों को ध्यान में रखते हुए बनाना चाहिए, ताकि वे आसानी से सीख सकें और रुचि बनाए रखें।
2. **सामाजिक प्रासंगिकता:** पाठ्यक्रम को समाज की मांगों और वास्तविकताओं के अनुसार संरचित किया जाना चाहिए। यह छात्रों को सामाजिक समस्याओं और वास्तविक जीवन से संबंधित विषयों के बारे में सीखने में मदद करेगा।
3. **नैतिक शिक्षा:** पाठ्यक्रम में नैतिक और मानवतावादी मूल्यों को शामिल किया जाना चाहिए। सही और गलत के बीच अंतर को समझने में मदद करने के लिए नैतिक शिक्षा आवश्यक है।
4. **स्थिरता और परिवर्तनशीलता:** पाठ्यक्रम को इस तरह से तैयार किया जाना चाहिए कि इसे समय के बदलावों के अनुसार अपडेट किया जा सके। जबकि शिक्षा के मौलिक पहलुओं को स्थिर रहना चाहिए, नई जानकारी और प्रौद्योगिकी को शामिल करने के लिए परिवर्तनशीलता भी आवश्यक है।
5. **विविधता:** पाठ्यक्रम में विभिन्न विषयों और सीखने की रणनीतियों को शामिल किया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम में विविधता छात्रों को विभिन्न दृष्टिकोणों से सोचने के अवसर प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण है।
6. **अनुभवात्मक शिक्षा:** पाठ्यक्रम को इस तरह से संरचित किया जाना चाहिए कि छात्र वास्तविक जीवन के अनुभवों से सीख सकें। प्रभावी शिक्षण और गतिविधियों के माध्यम से ज्ञान प्राप्ति सुनिश्चित की जानी चाहिए।
7. **शिक्षकों की भूमिका:** शिक्षकों का पाठ्यक्रम के विकास और कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण योगदान होता है। उनके अनुभव, कौशल और अंतर्दृष्टि पाठ्यक्रम के सुधार में सहायक हो सकते हैं।

ये मौलिक सिद्धांत पाठ्यक्रम विकास में मदद करते हैं, जो छात्रों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं और उन्हें जीवन में सफल होने में सहायता करते हैं। पाठ्यक्रम के माध्यम से शिक्षा के असली उद्देश्य और लक्ष्य प्राप्त किए जा सकते हैं।

21. Discuss different functions of school as an important agency of education. 2023

Ans: विद्यालय शिक्षा का एक महत्वपूर्ण माध्यम है, जहां विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ छात्रों के मानसिक, सामाजिक, और नैतिक विकास में मदद करती हैं। विद्यालयों की विविध गतिविधियों का नीचे चर्चा की गई है:

1. **पाठ्यक्रम गतिविधियाँ:** विद्यालयों में मुख्य रूप से पाठ्यक्रम गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं, जहां छात्र विभिन्न विषयों में सिद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करते हैं। पाठ्यपुस्तकें, प्रयोगशाला गतिविधियाँ और पाठ्यक्रम के बाहर अनुसंधान छात्रों के ज्ञान और कौशल को बढ़ाने में सहायक होती हैं।

2. **खेल:** शारीरिक और मानसिक विकास के लिए खेल अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। विद्यालयों में विभिन्न प्रकार की खेल गतिविधियाँ (जैसे फुटबॉल, क्रिकेट, बास्केटबॉल) छात्रों को टीमवर्क, नेतृत्व, और अनुशासन सिखाती हैं।
3. **सांस्कृतिक गतिविधियाँ:** विद्यालयों में गाना, नृत्य, नाटक और विभिन्न त्योहारों जैसी सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। यह छात्रों को सांस्कृतिक पहचान बनाने, आत्मविश्वास बढ़ाने और रचनात्मकता को विकसित करने में मदद करती हैं।
4. **सामाजिक सेवा गतिविधियाँ:** विद्यालयों में विभिन्न सामाजिक सेवा गतिविधियाँ (जैसे रक्तदान, पर्यावरण संरक्षण, और दान कार्य) आयोजित की जाती हैं। यह छात्रों के सामाजिक जिम्मेदारी और मानवता के मूल्यों के विकास में सहायक होती हैं।
5. **क्लब और संगठन:** विद्यालयों में विभिन्न क्लब (जैसे विज्ञान क्लब, साहित्य क्लब, पर्यावरण क्लब) छात्रों को विशेष रुचि के क्षेत्रों में काम करने का अवसर प्रदान करते हैं। यह उनके नेतृत्व, सहयोग, और रचनात्मक सोच को विकसित करने में सहायक होते हैं।
6. **आवासीय शिविर:** विद्यालय अक्सर आवासीय शिविरों का आयोजन करते हैं, जहां छात्र विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से अनुभव प्राप्त करते हैं। यह उनकी समस्या समाधान कौशल और दोस्ती के संबंध बनाने में मदद करता है।
7. **कार्यशालाएँ और सेमिनार:** विद्यालयों में नियमित रूप से कार्यशालाएँ और सेमिनार आयोजित किए जाते हैं, जहां विशेषज्ञ छात्रों के साथ संवाद करते हैं। यह छात्रों को विभिन्न विषयों में गहराई से जानने और विश्लेषण करने का अवसर प्रदान करता है।

विद्यालयों की विविध गतिविधियाँ केवल शिक्षा के क्षेत्र में सीमित नहीं हैं, बल्कि ये छात्रों के सामाजिक, मानसिक, और नैतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये गतिविधियाँ छात्रों के समग्र विकास में मदद करती हैं और उन्हें भविष्य में सफल होने के लिए तैयार करती हैं।

22. Discuss the constitutional provisions to augment the relationship of nationalism and Secularism in Indian society. 2023

Ans: <u>Hidden Curriculum (लुक्कायित पाठक्रम)</u>

<u>परिचय:</u> लुक्कायित पाठक्रम या Hidden Curriculum उस शैक्षिक प्रक्रिया को संदर्भित करता है, जिसमें छात्र विद्यालय में अपनी नियमित पाठ्यक्रम से बाहर सीखते हैं। यह शिक्षा के उन पहलुओं को शामिल करता है जो औपचारिक रूप से पाठ्यपुस्तकों में शामिल नहीं होते, लेकिन छात्रों के व्यवहार, मूल्यों और सामाजिक नीतियों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

<u>लुक्कायित पाठक्रम के तत्व:</u>

1. **मूल्य और नैतिक शिक्षा:** लुक्कायित पाठक्रम छात्रों को नैतिक मूल्यों जैसे ईमानदारी, सहयोग, और सम्मान के बारे में सिखाता है। ये मूल्य कक्षा के वातावरण, शिक्षक के व्यवहार, और सहपाठियों के साथ आपसी संबंधों के माध्यम से सिखाए जाते हैं।
2. **सामाजिक व्यवहार:** विद्यालय में छात्र एक-दूसरे के साथ कैसे व्यवहार करें, टीम में काम करें, और समस्याओं का समाधान करें, इस तरह के सामाजिक व्यवहार लुक्कायित पाठक्रम का हिस्सा हैं। यह उनके सामाजिक कौशल को विकसित करने में मदद करता है।

3. **शिक्षक-छात्र संबंध:** शिक्षक और छात्रों के बीच संबंध लुक्कायित पाठक्रम का एक महत्वपूर्ण पहलू है। शिक्षक का व्यवहार, शिक्षण तकनीक, और छात्रों पर ध्यान उन्हें जिम्मेदारी और विश्वास का अनुभव करने में मदद करता है।
4. **विद्यालय की संस्कृति:** विद्यालय की संस्कृति, व्यवहार और परंपराएँ छात्रों के बीच सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान बनाने में महत्वपूर्ण होती हैं। उदाहरण के लिए, किसी विद्यालय में आयोजित उत्सव या कार्यक्रम छात्रों के बीच एकता की भावना पैदा करते हैं।
5. **अनपेक्षित शिक्षा:** कभी-कभी छात्र सहपाठियों के व्यवहार, चर्चाओं, और विभिन्न विद्यालय गतिविधियों से अनपेक्षित शिक्षा प्राप्त करते हैं। जैसे, नेतृत्व की विशेषताएँ, सहानुभूति, और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना।

लुक्कायित पाठक्रम विद्यालय में शिक्षा का एक आवश्यक हिस्सा है, जो छात्रों के समग्र विकास में सहायक होता है। यह उनके व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विद्यालय में न केवल पाठ्यक्रम की सामग्री, बल्कि छात्रों द्वारा लुक्कायित पाठक्रम के माध्यम से प्राप्त ज्ञान और अनुभव भी उनके जीवन के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण होते हैं।

Core Curriculum (केंद्रीय पाठक्रम)

परिचय: केंद्रीय पाठक्रम या Core Curriculum एक शैक्षणिक ढांचा है जो किसी संस्थान के मुख्य शैक्षिक लक्ष्यों और उद्देश्यों पर आधारित होता है। यह छात्रों को आवश्यक ज्ञान, कौशल और अनुभव प्रदान करता है जो उनके शैक्षणिक और पेशेवर जीवन में सफलता के लिए अनिवार्य होते हैं।

केंद्रीय पाठक्रम के तत्व:

1. **मौलिक सामग्री:** केंद्रीय पाठक्रम सामान्यतः विभिन्न मौलिक विषयों को शामिल करता है, जैसे गणित, विज्ञान, भाषा, सामाजिक विज्ञान, और कला। ये विषय छात्रों के समग्र ज्ञान और कौशल के लिए आधार तैयार करने में मदद करते हैं।
2. **शिक्षा के उद्देश्य:** केंद्रीय पाठक्रम के माध्यम से छात्रों के उद्देश्यों को स्पष्ट किया जाता है। उदाहरण के लिए, आलोचनात्मक सोच, समस्या समाधान, और संचार कौशल विकसित करने पर जोर दिया जाता है।
3. **अनुभवात्मक शिक्षा:** केंद्रीय पाठक्रम में छात्रों को वास्तविक जीवन के अनुभव प्राप्त करने के अवसर दिए जाते हैं। गतिविधियों, परियोजनाओं, और अनुभवात्मक शिक्षण के माध्यम से छात्र सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक रूप में लागू करने का अवसर पाते हैं।
4. **विविधता और समावेशन:** केंद्रीय पाठक्रम में विविधता और समावेशन एक महत्वपूर्ण पहलू है। यह सभी छात्रों की आवश्यकताओं और रुचियों पर ध्यान देता है और विभिन्न शिक्षण तकनीकों को शामिल करता है।
5. **मूल्यांकन और फीडबैक:** छात्रों का मूल्यांकन केंद्रीय पाठक्रम का हिस्सा होता है ताकि उनके प्रगति और सीखने के परिणाम निर्धारित किए जा सकें। नियमित फीडबैक छात्रों के सुधार के लिए सहायक होता है।

केंद्रीय पाठक्रम शिक्षा का एक मौलिक ढांचा है, जो छात्रों को आवश्यक ज्ञान और कौशल बनाने में सहायता करता है। यह एक समग्र और एकीकृत शैक्षिक अनुभव प्रदान करता है, जो छात्रों को उनके

भविष्य के लिए तैयार करता है। केंद्रीय पाठक्रम के माध्यम से, छात्रों को अपनी पसंद के क्षेत्रों के आधार पर और अधिक उन्नत शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलता है।

Activity Curriculum (क्रियाकेंद्रित पाठ्यक्रम)

भूमिका: क्रियाकेंद्रित पाठ्यक्रम या Activity Curriculum एक शैक्षिक पद्धति है, जो छात्रों की सक्रिय भागीदारी पर आधारित होती है। यह पाठ्यक्रम छात्रों को हाथों-हाथ काम, परियोजनाओं और वास्तविक अनुभव के माध्यम से सीखने पर जोर देता है। इसका मुख्य उद्देश्य छात्रों को आवश्यक कौशल, ज्ञान और अनुभव प्रदान करना है।

क्रियाकेंद्रित पाठ्यक्रम के तत्व:

1. **अनुभव-आधारित शिक्षा:** क्रियाकेंद्रित पाठ्यक्रम छात्रों को हाथों-हाथ काम के माध्यम से सीखने पर जोर देता है। उदाहरण के लिए, विभिन्न गतिविधियों, परियोजनाओं और अनुसंधान कार्यों के माध्यम से छात्र वास्तविक जीवन की समस्याओं को हल करना सीखते हैं।
2. **सक्रिय भागीदारी:** छात्रों को गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने का अवसर दिया जाता है। यह उनके सीखने की प्रक्रिया को और अधिक आकर्षक और प्रभावी बनाता है। छात्र विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में भाग लेकर अपने कौशल और अनुभव को बढ़ा सकते हैं।
3. **टीमवर्क:** क्रियाकेंद्रित पाठ्यक्रम में टीमवर्क के माध्यम से छात्र सहयोग, नेतृत्व और सामाजिक कौशल का विकास करते हैं। वे मिलकर काम करने से समस्या समाधान की रणनीतियाँ सीखते हैं।
4. **रचनात्मकता और नवाचार:** यह पाठ्यक्रम छात्रों की रचनात्मकता और नवोन्मेषी सोच को प्रोत्साहित करता है। छात्र अपने विचारों और परियोजनाओं को लागू करने के लिए नए तरीके खोजते हैं।
5. **मूल्यांकन और आत्म-प्रतिबिंब:** क्रियाकेंद्रित पाठ्यक्रम में छात्रों का मूल्यांकन उनकी गतिविधियों के आधार पर किया जाता है। यह उनके सीखने के परिणाम और प्रगति की निगरानी में मदद करता है। आत्म-प्रतिबिंब और आत्म-आलोचना सीखने की प्रक्रिया का एक हिस्सा हैं।

क्रियाकेंद्रित पाठ्यक्रम छात्रों के लिए एक सक्रिय, आकर्षक और प्रभावी शिक्षण वातावरण बनाता है। यह उन्हें कौशल, रचनात्मकता और समस्या समाधान की सोच विकसित करने का अवसर प्रदान करता है। क्रियाकेंद्रित पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्र अपने रुचियों और आवश्यकताओं के आधार पर और गहराई से सीख सकते हैं, जिससे वे भविष्य में सफल हो सकें।

Marks: 10

1. Define 'Globalisation' state its advantages and disadvantages. 2017, 2020

Ans:

भूमिका: विश्वाकर्षण एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो दुनिया के विभिन्न देशों के बीच आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संबंध स्थापित करता है। यह लोगों, उत्पादों, तकनीक और जानकारी की सीमाओं को पार करता है। आधुनिक तकनीक के विकास और संचार की उपलब्धता ने विश्वाकर्षण को तेज किया है। इसके परिणामस्वरूप, देश एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, जिससे व्यापार, निवेश और संस्कृति

का आदान-प्रदान बढ़ रहा है। हालांकि, विश्वाकर्षण केवल लाभ नहीं देता; इसके साथ कुछ चुनौतियाँ भी आती हैं, जैसे सामाजिक विषमता और स्थानीय संस्कृति का नुकसान। इसलिए, विश्वाकर्षण के प्रभावों का उचित मूल्यांकन करना अत्यंत आवश्यक है।

विश्वाकर्षण की परिभाषा:

विश्वाकर्षण शब्द का उपयोग विभिन्न अर्थों और प्रसंगों में किया जाता है, जिससे इसका एक सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य परिभाषा देना कठिन होता है। अंग्रेजी शब्द 'ग्लोबलाइजेशन' का हिंदी अनुवाद 'विश्वाकर्षण' या 'भुवनीकरण' है। सरलता से कहें तो इसका अर्थ विश्वव्यापी तकनीक और व्यापार का विस्तार है। विश्वाकर्षण का अर्थ है कि एक देश के बाजार और दुनिया के बाजार के बीच कोई बाधा नहीं है; समग्र विश्व एक विशाल बाजार के रूप में कार्य करता है। जो देश जिस उत्पाद का अच्छा उत्पादन कर सकता है, उसे वह विदेश में निर्यात करता है और विदेशी मुद्रा से उन वस्तुओं का आयात करता है, जिन्हें वह स्वयं उत्पादन नहीं करता है।

जोसफ स्टिग्लिट्ज़ ने कहा है, "विश्वाकर्षण वास्तव में दुनिया के विभिन्न देशों और लोगों के बीच निकट एकीकरण है," जो मुख्यतः परिवहन और संचार की लागत में कमी और सामान, सेवाओं, पूंजी, ज्ञान और लोगों के प्रवाह के लिए कृत्रिम बाधाओं को तोड़ने के कारण हुआ है। दूसरी ओर, पीटर मार्कस का कहना है, "विश्वाकर्षण एक विशेष प्रकार का पूंजीवाद है, जो विश्व स्तर पर पूंजीवादी संबंधों के विस्तार के रूप में कार्य करता है।" इस प्रकार, विश्वाकर्षण कई देशों के बीच परस्पर निर्भरता का निर्माण करता है और आर्थिक संबंधों को गहरा करता है।

विश्वाकर्षण के लाभ:

1. **आर्थिक विकास:** विश्वाकर्षण विभिन्न देशों के बीच व्यापार और निवेश को बढ़ाता है, जिससे आर्थिक वृद्धि होती है। उन्नत तकनीक और विदेशी निवेश स्थानीय उद्योगों में प्रवाहित होता है, जिससे रोजगार सृजन होता है।
2. **प्रौद्योगिकी का प्रवाह:** विश्वाकर्षण के माध्यम से उन्नत देशों से नई प्रौद्योगिकी का प्रवाह होता है, जो विकासशील देशों के लिए लाभकारी होता है। इससे उत्पादकता बढ़ती है और गुणात्मक सुधार होता है।
3. **सांस्कृतिक आदान-प्रदान:** विश्वाकर्षण विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद को बढ़ाता है। इसके परिणामस्वरूप, नए विचार, कला और परंपराएं एक-दूसरे के साथ साझा की जाती हैं, जो वैश्विक जनता के बीच समझ को बढ़ावा देती हैं।
4. **बाजार का विस्तार:** विश्वाकर्षण के परिणामस्वरूप, देश अंतरराष्ट्रीय बाजार में प्रवेश कर सकते हैं, जिससे उनके उत्पादों और सेवाओं के लिए नए बाजार बनते हैं। यह देश की आर्थिक संभावनाओं को बढ़ाता है और प्रतिस्पर्धा को बढ़ाता है।

विश्वाकर्षण के असुविधाएँ:

1. **आर्थिक विषमता:** विश्वाकर्षण अधिकतर मामलों में धनी देशों के लिए लाभदायक होता है, जबकि गरीब देशों के लिए यह नकारात्मक हो सकता है। इससे आर्थिक विषमता बढ़ती है और सामाजिक अस्थिरता उत्पन्न होती है।

2. **सांस्कृतिक संकट:** विभिन्न संस्कृतियों के बीच मिश्रण होने पर स्थानीय संस्कृति को नुकसान हो सकता है। पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव स्थानीय परंपराओं और संस्कृतियों पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।
3. **रोजगार संकट:** विश्वाकर्षण के कारण स्थानीय उद्योग अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा में हार सकते हैं, जिससे स्थानीय रोजगार संकट पैदा होता है। इससे बेरोजगारी की दर बढ़ सकती है।
4. **पर्यावरणीय समस्याएँ:** व्यापार और औद्योगिकीकरण के कारण पर्यावरण पर हानिकारक प्रभाव पड़ सकता है। अधिक संसाधन निकासी और प्रदूषण जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाओं को बढ़ा सकते हैं।

उपसंहार: विश्वाकर्षण एक जटिल प्रक्रिया है, जो पृथ्वी के विभिन्न देशों के बीच आर्थिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करती है। इसके माध्यम से व्यापार, प्रौद्योगिकी, और संस्कृति का आदान-प्रदान होता है, फिर भी यह कुछ चुनौतियाँ भी पैदा करता है। आर्थिक विषमता, सांस्कृतिक संकट, रोजगार संकट, और पर्यावरणीय समस्याएँ विश्वाकर्षण के नकारात्मक पहलुओं में से हैं। इसलिए, विश्वाकर्षण के लाभ और हानियों का सही मूल्यांकन करना आवश्यक है। उचित नीतियों को अपनाकर हम विश्वाकर्षण के सकारात्मक पहलुओं को बढ़ा सकते हैं और इसके नकारात्मक प्रभावों को कम कर सकते हैं। विश्वाकर्षण हमारे समाज का एक आवश्यक हिस्सा है, जो उचित प्रबंधन के माध्यम से सुधार के अवसर पैदा कर सकता है।

2. Briefly explain four pillars of education in terms of 21st century skill. 2017, 2019, 2021

Ans: परिचय: 1996 में, पेरिस में यूनेस्को द्वारा आयोजित एक महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन में, जैक्स डेलर्स के नेतृत्व में शिक्षा के उद्देश्य को निर्धारित करने के लिए चार मुख्य स्तंभों की पहचान की गई। इन चार स्तंभों को छात्रों के जीवन के विभिन्न पहलुओं में पूर्ण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक माना गया है। ये स्तंभ हैं: जानने के लिए सीखना, करने के लिए सीखना, एक साथ रहने के लिए सीखना, और मानवता के लिए सीखना।

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवल व्यावसायिक कौशल प्राप्त करना नहीं है, बल्कि व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के हर पहलू में संतुलित विकास करना भी है। ये चार स्तंभ छात्रों की मानसिक, शारीरिक और नैतिक प्रगति में मदद करते हैं और समाज में समान रूप से सह-अस्तित्व की उनकी क्षमता को बढ़ाते हैं। इसके माध्यम से, छात्र जीवन की विभिन्न चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होते हैं और एक पूर्ण और शांतिपूर्ण समाज बनाने में योगदान देते हैं।

वर्तमान में, इन स्तंभों को शिक्षा के मुख्य उद्देश्य और दर्शन के रूप में माना जा रहा है, जो शिक्षा की भूमिका और गुणवत्ता में महत्वपूर्ण बदलाव ला रहे हैं। ये चार स्तंभ हैं:

A. जानने के लिए सीखना (Learning to Know): यह स्तंभ बुनियादी ज्ञान और समझ पर जोर देता है।

B. करने के लिए सीखना (Learning to Do): यह वास्तविक अनुभव और कौशल अर्जित करने में मदद करता है।

C. एक साथ रहने के लिए सीखना (Learning to Live Together): यह सामाजिक संबंधों और सहानुभूति को बढ़ाता है।

D. मानवता के लिए सीखना (Learning to Be): यह नैतिकता और व्यक्तित्व के विकास में सहायक होता है।

<u>शिक्षा के चार स्तंभ (Four Pillars of Education):</u>

1. **जानने के लिए सीखना (Learning to Know):** इस स्तंभ का मुख्य उद्देश्य छात्रों की बुनियादी ज्ञान और सोच को मजबूत करना है। इसके माध्यम से, छात्र विभिन्न क्षेत्रों के ज्ञान से परिचित होते हैं और गहन विश्लेषण करने की क्षमता विकसित करते हैं। यह स्तंभ छात्रों को ऐसी दक्षता प्रदान करता है जो उनकी समस्या-समाधान की क्षमता को बढ़ाता है और नए विचार उत्पन्न करने में मदद करता है। यह केवल जानकारी एकत्रित करने पर ही नहीं, बल्कि ज्ञान को विश्लेषण और अनुप्रयोग में सक्षम बनाने पर केंद्रित होता है। इसलिए, 'जानने के लिए सीखना' केवल बौद्धिक विकास नहीं है, बल्कि यह आजीवन सीखने की दिशा में एक आधारशिला बनाता है।
2. **करने के लिए सीखना (Learning to Do):** इस स्तंभ का लक्ष्य छात्रों को व्यावहारिक जीवन में लागू करने योग्य कौशल और व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करना है। यहां, छात्र केवल सैद्धांतिक ज्ञान ही प्राप्त नहीं करते, बल्कि इसे वास्तविकता में लागू करने के लिए विभिन्न कौशल भी हासिल करते हैं। परियोजनाओं और इंटर्नशिप के माध्यम से, छात्र व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करते हैं, जिससे उनकी रोजगार संभावनाएं बढ़ती हैं। इस तरह, छात्र केवल कार्यक्षेत्र के लिए तैयार नहीं होते, बल्कि नए तरीकों और नवाचारशील सोच को लागू करने की क्षमता भी प्राप्त करते हैं। कार्यस्थल में रचनात्मकता और दक्षता का संयोजन इस स्तंभ का मुख्य उद्देश्य है।
3. **एक साथ रहने के लिए सीखना (Learning to Live Together):** यह स्तंभ सामाजिक सामंजस्य, संबंधों, और विविधता में सह-अस्तित्व पर जोर देता है। छात्र यह सीखते हैं कि विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में दूसरों के साथ कैसे संबंध स्थापित किए जाते हैं। यहां सहानुभूति, सहमति, और सांस्कृतिक भिन्नताओं के प्रति सम्मान सिखाया जाता है। समूह कार्य, चर्चा, और सामाजिक समस्याओं के समाधान की प्रक्रियाओं में भाग लेकर छात्र एक-दूसरे के साथ सहयोग करना सीखते हैं। इस स्तंभ के माध्यम से, छात्र समाज में सह-अस्तित्व की दक्षता प्राप्त करते हैं और विविधता में एकता के महत्व को समझते हैं।
4. **मानवता के लिए सीखना (Learning to Be):** यह स्तंभ व्यक्तित्व और नैतिकता के विकास पर विशेष ध्यान देता है। यह छात्रों को आत्मविश्वास, स्वतंत्र सोच, और अपनी प्रतिभा और विशिष्टता को

व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है। यह छात्रों को मानसिक और भावनात्मक विकास के माध्यम से आत्म-परिचय के प्रति जागरूक बनाता है। साथ ही, यह नैतिकता, जिम्मेदारी और आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करने की दिशा में मार्गदर्शन करता है। यह स्तंभ छात्रों को इस प्रकार विकसित करता है कि वे मानसिक, शारीरिक और नैतिक संतुलन के साथ व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में सफलता प्राप्त कर सकें।

निष्कर्ष (Conclusion):

21वीं सदी की शिक्षा के ये चार स्तंभ एक समृद्ध, टिकाऊ, और उन्नत समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये न केवल छात्रों को विषय-विशिष्ट ज्ञान प्राप्त करने में मदद करते हैं, बल्कि उनके सामाजिक, नैतिक और मानव मूल्यों को विकसित करने में भी महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। 'जानने के लिए सीखना', 'करने के लिए सीखना', 'एक साथ रहने के लिए सीखना' और 'मानवता के लिए सीखना'— प्रत्येक स्तंभ छात्रों के व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के संतुलित विकास में योगदान देता है। छात्र ऐसे कौशल और मूल्य प्राप्त करते हैं जो उन्हें समाज का एक सुरक्षित और समन्वित सदस्य बनने में मदद करते हैं।

इसलिए, इन चार स्तंभों के आधार पर हमारे शिक्षा प्रणाली में सुधार करना अत्यंत आवश्यक है। एक समृद्ध भविष्य के निर्माण के लिए शिक्षा के उद्देश्यों और तरीकों का पुनर्मूल्यांकन करना और छात्रों को सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक रूप से मजबूत बनाना समय की मांग है।

3. What is informal education? Discuss the role of 'Home' as an informal agency of education. 2018, 2021, 2022

Ans:

परिचय: अप्राथमिक शिक्षा एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है जो औपचारिक स्कूलों या शैक्षिक संस्थानों के संगठित नियमों के बाहर काम करती है। यह समय, स्थान या औपचारिक पाठ्यक्रमों तक सीमित नहीं होती है और आमतौर पर व्यक्तियों या समुदायों की विशेष आवश्यकताओं के अनुसार निर्मित होती है। जीवन के विभिन्न चरणों में लोगों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अप्राथमिक शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। 'गृह' या परिवार अप्राथमिक शिक्षा का पहला और मुख्य केंद्र होता है, जहाँ बच्चे भाषा, नैतिकता, सामाजिक आचरण और जीवन प्रबंधन की कौशल प्राप्त करते हैं। इसलिए अप्राथमिक शिक्षा में गृह एक महत्वपूर्ण संस्था के रूप में कार्य करता है।

अप्राथमिक शिक्षा: अप्राथमिक शिक्षा एक प्रकार की शिक्षा प्रणाली है जो औपचारिक शिक्षा संस्थानों या विद्यालयों के नियम और संरचना से बाहर संचालित होती है। इस शिक्षा का कोई विशेष कक्षा, पाठ्यक्रम या समय सीमा नहीं होती है। बल्कि, यह समय और स्थान की सीमाओं को तोड़कर इसे अधिक सुलभ बनाती है। अप्राथमिक शिक्षा जीवन के विभिन्न समयों में, विभिन्न स्थानों पर, और कई तरीकों से प्राप्त की जा सकती है जैसे गृह शिक्षा, कार्य अनुभव, सामुदायिक शिक्षा, और वयस्क शिक्षा।

इसके माध्यम से व्यक्तिगत और सामाजिक कौशल का विकास होता है, जो औपचारिक शिक्षा के बाहर जीवन-संबंधी ज्ञान प्रदान करता है।

<u>अप्राथमिक शिक्षा संस्था के रूप में 'गृह' की भूमिका:</u>

गृह या घर का वातावरण अप्राथमिक शिक्षा में अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। घर में शिक्षा की भूमिका को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से विश्लेषित किया जा सकता है:

1. **प्राथमिक शिक्षा की शुरुआत:** बच्चे का पहला शिक्षक उसका परिवार होता है। घर में बच्चे को प्रारंभिक शिक्षा मिलती है, जैसे भाषा, आचरण, और नैतिक शिक्षा। परिवार ही बच्चे को सांस्कृतिक और सामाजिक जिम्मेदारियों के बारे में प्रारंभिक शिक्षा देता है।
2. **अनौपचारिक शिक्षा:** घर के वातावरण में बच्चे अपने दैनिक जीवन के कार्यों, आचरण, और पारिवारिक मूल्यों के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करते हैं। यह पारंपरिक स्कूल या औपचारिक शिक्षा के बाहर से आता है, जो सामाजिककरण प्रक्रिया का महत्वपूर्ण हिस्सा होता है।
3. **स्वावलंबी शिक्षा को प्रोत्साहन:** घर में बच्चे विभिन्न प्रकार के रचनात्मक कार्य और जिम्मेदारियों को निभाना सीखते हैं। जैसे, खाना बनाना, घर के काम, हस्तकला आदि। इस प्रकार वे स्वावलंबी बनना सीखते हैं।
4. **मूल्य और नैतिक शिक्षा का विस्तार:** परिवार के बड़े सदस्यों का आचरण, नैतिकता, और जिम्मेदारी बच्चों के लिए महत्वपूर्ण शिक्षा के स्रोत बनते हैं। ये शिक्षा उनके भविष्य के सामाजिक जीवन के निर्माण में सहायक होती हैं।
5. **प्रौद्योगिकी का उपयोग और सूचना का प्रवाह:** वर्तमान युग में कई परिवारों में बच्चे इंटरनेट, टीवी और अन्य मीडिया से शैक्षिक सामग्री प्राप्त करने में सक्षम होते हैं। इस प्रकार, 'गृह' एक अप्राथमिक शिक्षा संस्था के रूप में कार्य करता है।
6. **रचनात्मकता का विकास:** घर के मुक्त और तनाव रहित वातावरण में बच्चे विभिन्न रचनात्मक कार्यों के माध्यम से जैसे चित्र बनाना, कहानियां सुनाना, गाना गाने आदि में अपनी प्रतिभा को विकसित कर सकते हैं। घर उन्हें औपचारिक शिक्षा के बाहर स्वतंत्र रूप से सोचने में सहायक बनता है।
7. **पारिवारिक बंधन और पारस्परिक संबंधों की शिक्षा:** बच्चे घर में परिवार के सदस्यों के साथ संबंध बनाने और उसे संचालित करने का तरीका सीखते हैं। माता-पिता, भाई-बहनों के साथ सहयोग, आदर, और प्रेम के माध्यम से उनके सामाजिक कौशल का विकास होता है।
8. **पारस्परिक शिक्षा:** घर में परिवार के सदस्य अपने अनुभव, कौशल, और ज्ञान का आदान-प्रदान करके पारस्परिक शिक्षा का माहौल बनाते हैं। विशेष रूप से माता-पिता या बड़े सदस्य छोटे बच्चों को सिखाने के साथ-साथ उनसे भी सीख सकते हैं।
9. **आर्थिक और सामाजिक वास्तविकता:** घर में रहकर बच्चे वास्तविक जीवन की आर्थिक और सामाजिक समस्याओं के समाधान के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं। जैसे बजट बनाने की कला, दैनिक खर्च, और सामाजिक मांगों को पूरा करने के तरीके।
10. **कौशल विकास:** घर में विभिन्न कार्यों के माध्यम से, जैसे बागवानी, मरम्मत कार्य, या खाना पकाने के द्वारा, बच्चे कौशल अर्जित करते हैं। ये कौशल उन्हें भविष्य में जीवन की विभिन्न स्थितियों में लाभकारी होते हैं, जो औपचारिक शिक्षा से सीधे संबंधित नहीं होते।

अप्राथमिक शिक्षा, विशेष रूप से 'गृह' की भूमिका, शिक्षा का एक महत्वपूर्ण घटक है। यह औपचारिक शिक्षा के बाहर व्यक्तिगत, सामाजिक और नैतिक विकास के अवसर प्रदान करती है। घर में शिक्षा के माध्यम से बच्चे अपने पारिवारिक परिवेश में भाषा, आचरण, मूल्य और कौशल प्राप्त करते हैं, जो उनके भविष्य के जीवन में सहायक होते हैं। रचनात्मकता, पारस्परिक संबंध, और वास्तविक जीवन के बारे में शिक्षा घर के वातावरण में आसानी से संभव होती है। इस प्रकार अप्राथमिक शिक्षा विद्यार्थियों को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सही दिशा निर्देश प्रदान करती है और उन्हें स्वावलंबी और जागरूक नागरिक के रूप में आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

4. Discuss the contribution of Aurobindo as a philosopher of education. 2018, 2020

Ans:

भूमिका: अरोबिंदो घोष एक प्रभावशाली दार्शनिक और शिक्षाविद् थे, जिन्होंने भारतीय शिक्षादर्शन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके शिक्षादर्शन का मुख्य आधार पूर्ण शिक्षा और आत्मसिद्धि के विचारों पर आधारित है। उन्होंने विश्वास किया कि शिक्षा का उद्देश्य केवल मस्तिष्क का विकास नहीं है, बल्कि मानव जीवन के प्रत्येक पहलू का समग्र विकास करना है। अरोबिंदो के अनुसार, शिक्षा आध्यात्मिकता से गहराई से जुड़ी हुई है और यह व्यक्ति की रचनात्मकता, सामाजिक संबंधों और आत्मविश्वास को विकसित करने में सहायक है। इसलिए, उनका दृष्टिकोण शिक्षा के लिए एक नई दिशा खोलता है, जो आज भी प्रासंगिक है।

अरोबिंदो का जीवन दर्शन: श्री अरोबिंदो घोष, जिन्हें अरोबिंदो के नाम से जाना जाता है, एक प्रमुख भारतीय दार्शनिक, कवि, और शिक्षाविद् थे। उनके जीवन दर्शन का निर्माण मानव जीवन की प्रकृति, आत्मा, और आध्यात्मिक विकास की गहन समझ पर आधारित है। अरोबिंदो के दर्शन के कुछ महत्वपूर्ण पहलू निम्नलिखित हैं:

1. **आत्मसिद्धि का मार्ग:** मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य अंतर्निहित आत्मा की प्रकृति की पहचान और विकास है।
2. **समग्र शिक्षा:** शिक्षा शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्तर पर संतुलित विकास साधित करती है।
3. **रचनात्मकता:** रचनात्मकता मानव आत्मा का स्वाभाविक प्रदर्शन है, जो विकास के लिए आवश्यक है।
4. **आध्यात्मिक शक्ति:** योग साधना आत्मा की शक्ति और चेतना के विकास के माध्यम से अंतर्दृष्टि को जागृत करती है।
5. **सामाजिक परिवर्तन:** आध्यात्मिक विकास के साथ समाज में परिवर्तन संभव है, जहां सहयोग की आवश्यकता होती है।
6. **भारतीय संस्कृति का पुनरुत्थान:** भारत की प्राचीन संस्कृति और धर्म की मौलिक चेतना को आधुनिक विश्व में नए तरीके से व्यक्त किया जाना चाहिए।
7. **वैश्विकता का विचार:** सभी धर्म और संस्कृतियाँ एक सामान्य धागे में बंधी हैं, मानवता नई सभ्यता की नींव रख सकती है।

शिक्षादर्श के रूप में अरोबिंदो का योगदान:

श्री अरोबिंदो घोष, जो एक महान दार्शनिक, कवि और शिक्षाविद् थे, ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में अद्भुत योगदान दिया है। उनका शिक्षादर्शन मानव जीवन के आध्यात्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास पर केंद्रित है। नीचे अरोबिंदो के शिक्षादर्शन के कुछ मुख्य पहलुओं पर चर्चा की गई है:

1. **आत्मसिद्धि के लिए शिक्षा:** अरोबिंदो के शिक्षादर्शन का मुख्य आधार आत्मसिद्धि है। उन्होंने विश्वास किया कि शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि आत्मा की पहचान और विकास की प्रक्रिया है। उन्होंने छात्रों को अपनी आत्मा की प्रकृति को समझने और अपनी अंतर्निहित शक्तियों को पहचानने के लिए प्रेरित किया।
2. **समग्र शिक्षा:** उन्होंने शिक्षा प्रक्रिया में शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास के महत्व पर जोर दिया। अरोबिंदो के अनुसार, शिक्षा एक समग्र प्रक्रिया है, जो व्यक्तित्व के सभी पहलुओं को विकसित करती है। उन्होंने विश्वास किया कि शिक्षा को केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं रखना चाहिए।
3. **आध्यात्मिक शिक्षा:** अरोबिंदो ने योग और आध्यात्मिकता को शिक्षा के महत्वपूर्ण तत्व के रूप में अपनाया। उन्होंने छात्रों को आध्यात्मिक अनुभवों के माध्यम से उनकी अंतर्दृष्टि विकसित करने में सहायता करने की कोशिश की। उनके शिक्षण विधियों में ध्यान, आत्म-नियंत्रण और आध्यात्मिक अध्ययन का महत्व था।
4. **रचनात्मकता का विकास:** अरोबिंदो ने रचनात्मकता पर विशेष महत्व दिया। उन्होंने विश्वास किया कि रचनात्मकता मानव जीवन का एक आवश्यक भाग है और इसे शिक्षा के माध्यम से विकसित किया जाना चाहिए। छात्रों को उनकी प्रतिभा विकसित करने के लिए रचनात्मक गतिविधियों का अवसर मिलना चाहिए, जो कल्पना, कला, साहित्य, और विज्ञान से संबंधित हैं।
5. **सामाजिक परिवर्तन:** अरोबिंदो को शिक्षा के सामाजिक परिवर्तन में भूमिका का ज्ञान था। उन्होंने विश्वास किया कि एक शिक्षित राष्ट्र सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। उनके अनुसार, शिक्षा को व्यक्तियों में सामाजिक जिम्मेदारी का विकास करना चाहिए।
6. **शिक्षा की स्वतंत्रता:** अरोबिंदो ने शिक्षा की स्वतंत्रता का समर्थन किया। उन्होंने छात्रों को अपने विचार और राय व्यक्त करने का महत्व बताया। यह स्वतंत्रता छात्रों के आत्मविश्वास और रचनात्मकता को बढ़ाने में मदद करती है।
7. **मानव मूल्य:** अरोबिंदो ने शिक्षा के माध्यम से मानव मूल्यों के विकास पर जोर दिया। उन्होंने छात्रों को नैतिकता, सहानुभूति, और सामाजिक जिम्मेदारी के महत्व के बारे में सिखाया।
8. **प्रकृति और पर्यावरण:** अरोबिंदो ने प्रकृति के प्रति सम्मान और पर्यावरण संरक्षण के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने विश्वास किया कि प्रकृति से संबंधित शिक्षा व्यक्तियों को जागरूक और जिम्मेदार बनाती है।
9. **अनुसंधान और विश्लेषण:** अरोबिंदो ने छात्रों को अनुसंधान और विश्लेषणात्मक सोच के माध्यम से सीखने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने विश्वास किया कि छात्रों में प्रश्न पूछने और विषयों को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखने की क्षमता होनी चाहिए।
10. **सामाजिक न्याय और समानता:** अरोबिंदो ने सामाजिक न्याय और समानता पर जोर दिया। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से हर व्यक्ति के अधिकार और गरिमा के महत्व को उजागर किया, जिससे समाज में समानता स्थापित होती है।

11. **शिक्षा का मानवीकरण:** अरोबिंदो ने शिक्षा के मानवीकरण पर जोर दिया। उन्होंने विश्वास किया कि शिक्षा केवल ज्ञान का प्रसार नहीं है, बल्कि हृदय और मानसिकता के विकास के लिए भी आवश्यक है।
12. **आध्यात्मिक साधना:** उन्होंने छात्रों को आध्यात्मिक साधना के महत्व के बारे में जागरूक किया। उन्होंने विश्वास किया कि जब आध्यात्मिक साधना को शिक्षा के साथ जोड़ा जाता है, तो शिक्षा का सच्चा उद्देश्य पूरा होता है।
13. **सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता:** अरोबिंदो ने छात्रों को सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने विश्वास किया कि शिक्षित व्यक्ति समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं।
14. **शिक्षा के कार्यान्वयन:** अरोबिंदो ने विश्वास किया कि शिक्षा के कार्यान्वयन के लिए आवश्यक मूलभूत अवसर और वातावरण सुनिश्चित किया जाना चाहिए ताकि छात्र अपने सीखने को वास्तविक जीवन में लागू कर सकें।
15. **अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा:** उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा और सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर जोर दिया, ताकि छात्र वैश्विक चेतना और विविधता के प्रति सम्मान प्राप्त कर सकें।

श्री अरोबिंदो घोष का शिक्षादर्शन मानव जीवन के आध्यात्मिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है। उनकी शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन के माध्यम से नहीं, बल्कि आत्मसिद्धि, रचनात्मकता, और आध्यात्मिकता के विकास के माध्यम से पूर्णता प्राप्त करती है। उन्होंने विश्वास किया कि सामाजिक परिवर्तन और मानव मूल्यों का विकास शिक्षा के माध्यम से संभव है। उनका दर्शन छात्रों को स्वतंत्रता, अनुसंधान, और सामाजिक जिम्मेदारी की ओर प्रेरित करता है। अरोबिंदो के अद्भुत योगदान आज के शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण हैं, जो नए चुनौतियों का सामना करने में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। उनका दर्शन आज भी हमारे शिक्षा और जीवन के दिशा में मार्गदर्शन करता है।

5. State the relevance of Educational Philosophy of Rabindranath Tagore in Indian education. 2017, 2019, 2021, 2022

Ans:

<u>भूमिका:</u> रवींद्रनाथ ठाकुर, विश्वकवि के साथ-साथ एक प्रभावशाली शिक्षाविद, भारतीय शिक्षाशास्त्र में एक विशेष स्थान रखते हैं। उन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञान अर्जन का एक साधन नहीं, बल्कि व्यक्ति के समग्र विकास की एक प्रक्रिया के रूप में देखा। ठाकुर के अनुसार, शिक्षा शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास के लिए एक समन्वित प्रयास है, जो मानवता के मूल्यों, रचनात्मकता और सामाजिक जिम्मेदारी को विकसित करता है। उनका शिक्षादर्शन वर्तमान पीढ़ी के लिए प्रासंगिक है, क्योंकि यह छात्रों को अपनी पहचान और संस्कृति के प्रति जागरूक करता है और उन्हें एक वैश्विक नागरिक के रूप में विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

<u>रवींद्रनाथ ठाकुर का शिक्षादर्शन:</u>

रवींद्रनाथ ठाकुर का शिक्षादर्शन मानव जीवन के मौलिक मूल्यों और रचनात्मकता के विकास पर आधारित है। उनका मानना था कि शिक्षा केवल पुस्तकों से ज्ञान अर्जित करने का एक साधन नहीं है,

बल्कि यह आध्यात्मिक और सामाजिक विकास का एक माध्यम भी है। नीचे ठाकुर के शिक्षादर्शन के कुछ मुख्य पहलुओं का उल्लेख किया गया है:

1. **समग्र शिक्षा:** ठाकुर ने शिक्षा प्रणाली में शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास के समन्वय को महत्व दिया। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य एक संपूर्ण व्यक्ति बनाना है।
2. **रचनात्मकता का मूल्य:** ठाकुर रचनात्मकता पर विशेष महत्व देते थे। उन्होंने छात्रों को रचनात्मक सोच और अभिव्यक्ति के अवसर देने के लिए प्रोत्साहित किया, ताकि वे अपनी प्रतिभा के विकास का अवसर प्राप्त कर सकें।
3. **आध्यात्मिक शिक्षा:** रवींद्रनाथ के अनुसार, शिक्षा आध्यात्मिकता से गहराई से संबंधित है। उन्होंने छात्रों को आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया, ताकि वे अपने आत्मा और जीवन के वास्तविक उद्देश्य को समझ सकें।
4. **सामाजिक जिम्मेदारी:** ठाकुर का मानना था कि शिक्षा के माध्यम से सामाजिक जिम्मेदारी का निर्माण होना चाहिए। उन्होंने छात्रों को समाज के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया, ताकि वे जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित हो सकें।
5. **प्रकृति के प्रति सम्मान:** रवींद्रनाथ के शिक्षादर्शन में प्रकृति और पर्यावरण का महत्व भी उल्लिखित है। उन्होंने शिक्षा प्रणाली में मानव जीवन के साथ प्रकृति के संबंध को शामिल करने की इच्छा जताई।
6. **शिक्षा का मानवीकरण:** रवींद्रनाथ के दृष्टिकोण में, शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह मानवीय संबंधों और मानसिकता के विकास के लिए भी अनिवार्य है।
7. **अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता:** उन्होंने छात्रों को अपने विचार और राय व्यक्त करने की स्वतंत्रता प्रदान करने पर जोर दिया। यह छात्रों की आत्मविश्वास और रचनात्मकता को बढ़ाता है।

भारतीय शिक्षा में रवींद्रनाथ ठाकुर के शिक्षादर्शन की प्रासंगिकता:

रवींद्रनाथ ठाकुर का शिक्षादर्शन मानव जीवन के मौलिक मूल्यों और रचनात्मकता के विकास पर आधारित है। उनका मानना था कि शिक्षा केवल पुस्तकों से ज्ञान अर्जित करने का एक साधन नहीं है, बल्कि यह आध्यात्मिक और सामाजिक विकास का एक माध्यम भी है। नीचे ठाकुर के शिक्षादर्शन के कुछ मुख्य पहलुओं का उल्लेख किया गया है:

1. **समग्र शिक्षा:** ठाकुर के शिक्षादर्शन में समग्र शिक्षा को प्राथमिकता दी जाती है। वे शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास के समन्वय पर जोर देते हैं, जो छात्रों की प्रतिभा और क्षमताओं के विकास के लिए एक संपूर्ण वातावरण का निर्माण करता है।
2. **रचनात्मकता का मूल्य:** ठाकुर ने शिक्षा के माध्यम से रचनात्मकता के विकास को अत्यंत महत्वपूर्ण माना। उन्होंने छात्रों को अपने विचारों और कल्पना के लिए अवसर प्रदान किए, जिससे उनकी भविष्य की प्रगति में मदद मिली।
3. **आध्यात्मिक शिक्षा:** रवींद्रनाथ का शिक्षादर्शन आध्यात्मिकता से जुड़ा हुआ है। उन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञान अर्जन का साधन नहीं, बल्कि आत्मा की प्रकृति को समझने के लिए एक मार्ग के रूप में देखा, जो जीवन के सत्य को समझने के लिए आवश्यक है।
4. **मानव मूल्य:** ठाकुर ने शिक्षा के माध्यम से मानव मूल्यों के विकास पर जोर दिया। उन्होंने छात्रों को नैतिकता, सहानुभूति, और मानवता के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित करने के लिए प्रेरित किया, जो सामाजिक विकास और उचित व्यवहार के लिए महत्वपूर्ण हैं।

5. **सामाजिक जिम्मेदारी:** रवींद्रनाथ का मानना था कि शिक्षा को सामाजिक जिम्मेदारी को बढ़ावा देना चाहिए। उन्होंने छात्रों को विभिन्न सामाजिक मुद्दों के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया ताकि वे जिम्मेदार नागरिक के रूप में सकारात्मक परिवर्तन ला सकें।
6. **शिक्षा की स्वतंत्रता:** ठाकुर ने शिक्षा की स्वतंत्रता पर जोर दिया। उन्होंने छात्रों को अपने विचार और राय व्यक्त करने के लिए स्वतंत्रता देने के महत्व को बताया। यह स्वतंत्रता छात्रों की आत्मविश्वास को बढ़ाती है और रचनात्मक सोच का विस्तार करती है।
7. **प्रकृति और पर्यावरण का महत्व:** रवींद्रनाथ ने प्रकृति और पर्यावरण के प्रति सम्मान का महत्व बताया। उन्होंने यह माना कि प्रकृति से संबंधित शिक्षा छात्रों को जागरूक और जिम्मेदार बनाती है, जो आधुनिक समय में अत्यधिक प्रासंगिक है।
8. **अनुसंधान और विश्लेषणात्मक सोच:** ठाकुर ने अनुसंधान और विश्लेषणात्मक सोच के माध्यम से सीखने को बढ़ावा दिया। उनका मानना था कि सवाल पूछने और विषयों को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखने की क्षमता एक शिक्षित व्यक्ति के लिए आवश्यक है।
9. **मानवीकरण:** ठाकुर ने शिक्षा के मानवीकरण पर जोर दिया। उनका मानना था कि शिक्षा केवल जानकारी प्रदान करने का साधन नहीं है, बल्कि हृदय और मानसिकता के विकास के लिए भी आवश्यक है।
10. **अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण:** ठाकुर का शिक्षादर्शन अंतरराष्ट्रीय शिक्षा और सांस्कृतिक विनिमय के महत्व पर जोर देता है। उन्होंने छात्रों को विविधता का सम्मान करने और वैश्विक चेतना को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया।
11. **शिक्षा के कार्यान्वयन:** ठाकुर का मानना था कि शिक्षा के कार्यान्वयन के लिए मौलिक अवसर और पर्यावरण सुनिश्चित करना चाहिए ताकि छात्र अपने ज्ञान को वास्तविक जीवन में लागू कर सकें, जो आज एक महत्वपूर्ण चुनौती है।
12. **सामाजिक न्याय और समानता:** ठाकुर ने सामाजिक न्याय और समानता के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति के अधिकार और गरिमा की महत्वपूर्णता को उजागर किया, जिससे समाज में समानता की स्थापना हो सके।
13. **आध्यात्मिक अभ्यास:** ठाकुर ने छात्रों को आध्यात्मिक अभ्यास के महत्व से अवगत कराया। उनका मानना था कि जब आध्यात्मिक अभ्यास को शिक्षा से जोड़ा जाता है, तो शिक्षा का असली उद्देश्य पूरा होता है, जो मानव जीवन के लिए अनिवार्य है।
14. **रचनात्मकता को प्रोत्साहन:** ठाकुर ने छात्रों में रचनात्मकता के विकास के लिए विशेष प्रोत्साहन दिया। उनका मानना था कि रचनात्मकता शिक्षा का एक प्रमुख आधार है और छात्रों के सोचने और नवाचार की प्रतिभा के विकास में मदद करती है।
15. **शिक्षा का मानवीकरण:** ठाकुर के अनुसार, शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन के लिए नहीं है, बल्कि मानव संबंधों और मानसिकता के विकास के लिए भी आवश्यक है। उन्होंने शिक्षा को मानवीय गुणों के विकास के लिए एक माध्यम के रूप में देखा।

<u>निष्कर्ष:</u>

रवींद्रनाथ ठाकुर का शिक्षादर्शन भारतीय शिक्षा में एक मौलिक परिवर्तन की शुरुआत करता है। उन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञान अर्जन का साधन नहीं, बल्कि मानव, आध्यात्मिक और सामाजिक विकास के लिए एक आवश्यक उपकरण के रूप में देखा। उनके शिक्षादर्शन की प्रासंगिकता आज भी अपरिवर्तित है,

जहां छात्रों में रचनात्मकता, मानव मूल्यों और सामाजिक जिम्मेदारी को बढ़ावा देने पर जोर दिया जाता है। ठाकुर का आदर्श शिक्षा प्रगतिशील, समानतावादी, और मानवता आधारित समाज की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो हमारे भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक मार्गदर्शक प्रकाश बनता है।

6. What is meant by Curriculum? Discuss the National Curriculum Framework-2005 in India. 2019, 2022

Ans:

<u>भूमिका:</u> पाठ्यक्रम शिक्षा का केंद्रबिंदु है, जो छात्रों के सीखने के अनुभवों को आकार देता है। यह केवल पाठ्यपुस्तकों को ही नहीं, बल्कि शैक्षिक उद्देश्यों, विषयवस्तु, शिक्षण विधियों और मूल्यांकन रणनीतियों को भी शामिल करता है। भारत में, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढांचा 2005 (NCF 2005) एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है, जिसका उद्देश्य शिक्षा के मान और संरचना को सुधारना है। यह ढांचा शिक्षा के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाता है, जो छात्रों के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास में मदद करता है। यह शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने और छात्रों के लिए एक सकारात्मक सीखने का वातावरण बनाने में मदद करता है।

पाठ्यक्रम की धारणा: पाठ्यक्रम का अर्थ उस ढांचे या रूपरेखा से है, जो यह निर्धारित करता है कि छात्र शिक्षा के दौरान कौन-से विषयवस्तु, कौशल और अनुभव प्राप्त करेंगे। यह एक योजनाबद्ध प्रक्रिया है, जिसमें छात्रों की सीखने के लिए उपयुक्त विषयवस्तु, शिक्षण विधियाँ, मूल्यांकन रणनीतियाँ और शैक्षिक उद्देश्य शामिल होते हैं। पाठ्यक्रम में पाठ्यपुस्तकें, पाठ्यक्रम, गतिविधियाँ, परियोजनाएँ, शिक्षण रणनीतियाँ और मूल्यांकन विधियाँ शामिल होती हैं। यह शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता करता है और छात्रों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पाठ्यक्रम छात्रों के सामाजिक, मानसिक और सांस्कृतिक विकास के लिए एक आधार प्रदान करता है, जिसमें शामिल हैं:

- **शिक्षा के लक्ष्य:** छात्रों के लिए निर्धारित लक्ष्य और उद्देश्य।
- **विषयवस्तु:** पाठ्यपुस्तकें, जानकारी और सामग्री जो छात्रों को पढ़ाने के लिए उपयोग की जाती हैं।
- **शिक्षण रणनीतियाँ:** शिक्षक और छात्रों के बीच जानकारी का आदान-प्रदान करने की विधियाँ।
- **मूल्यांकन विधियाँ:** छात्रों की सीखने के परिणामों का मूल्यांकन करने की विधियाँ।

<u>भारत में राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढांचा 2005:</u> भारत का राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढांचा 2005 (NCF 2005) एक समग्र पाठ्यक्रम है, जो भारत की शिक्षा प्रणाली में सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाना और छात्रों के लिए एक समग्र और बहुआयामी शिक्षा वातावरण बनाना है। नीचे इसके मुख्य विशेषताएँ चर्चा की गई हैं:

1. **शिक्षा की सार्वभौमिकता:** पाठ्यक्रम सभी छात्रों के लिए उपयुक्त है, ताकि छात्र अपनी सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना शिक्षा प्राप्त कर सकें।
2. **साक्षरता और गणित का महत्व:** छात्रों को मौलिक साक्षरता और गणित के कौशल प्राप्त करने पर जोर दिया जाता है, ताकि वे ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में प्रभावी हो सकें।
3. **गुणात्मक शिक्षा पर जोर:** शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए शैक्षिक प्रक्रिया और सामग्री की गुणवत्ता में सुधार पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

4. **जीवनमुखी शिक्षा:** पाठ्यक्रम छात्रों को जीवन की वास्तविक समस्याओं को हल करने के लिए तैयार करता है, ताकि वे समाज के सक्रिय भागीदार बन सकें।
5. **सृजनात्मकता का विकास:** छात्रों को सृजनात्मक सोच और नए विचारों के विकास के लिए अवसर प्रदान करने के लिए गतिविधियों का आयोजन किया जाता है।
6. **मूलभूत मानव मूल्यों:** पाठ्यक्रम में मानव मूल्यों, नैतिक शिक्षा और सामाजिक जिम्मेदारी को विकसित करने पर जोर दिया जाता है।
7. **शिक्षण विधियों की विविधता:** विभिन्न शिक्षण विधियों का उपयोग, जैसे परियोजना आधारित शिक्षा, चर्चा और समूह गतिविधियों के माध्यम से शिक्षा के वातावरण को और गतिशील बनाया जाता है।
8. **मूल्यांकन विधियों में परिवर्तन:** सीखने की प्रक्रिया का निरंतर मूल्यांकन और प्रतिबिंब छात्रों की प्रगति को मापने का माध्यम है।
9. **सांस्कृतिक समावेशन:** भारत की विभिन्न सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमियों का सम्मान करते हुए पाठ्यक्रम में स्थानीय संस्कृति और परंपराओं को शामिल किया जाता है।
10. **प्रौद्योगिकी का उपयोग:** शिक्षा की प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ावा दिया जाता है, ताकि छात्र आधुनिक दुनिया के साथ तालमेल बना सकें।

उपसंहार: राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढांचा 2005 भारतीय शिक्षा प्रणाली के सुधार का एक मौलिक उपकरण है। यह छात्रों के लिए एक समग्र और जीवनमुखी शिक्षा वातावरण तैयार करता है, जो उनके मानव मूल्य, सृजनात्मकता और सामाजिक जिम्मेदारी के विकास में सहायता करता है। पाठ्यक्रम की समावेशिता जीवन की वास्तविक समस्याओं के समाधान और प्रौद्योगिकी के उपयोग को प्रोत्साहित करती है। इस ढांचे के माध्यम से, छात्र समृद्ध शिक्षा प्राप्त करते हैं, जो उनके भविष्य में सफलता प्राप्त करने में मदद करती है। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढांचा 2005 भारत की विविध संस्कृतियों और परंपराओं को सम्मानित करता है, जो छात्रों को समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करता है।

7. Write down the wider concept of curriculum? State how it is different from syllabus. Who are responsible for curriculum construction? What is the role of state regarding curriculum construction? What is the role of state regarding curriculum construction? 2023

Ans:

भूमिका: पाठ्यक्रम शिक्षा की मूलभूत नींव है, जो छात्रों के सीखने के अनुभव को आकार देती है और उनके विकास में सहायक भूमिका निभाती है। यह केवल पाठ्यपुस्तकों का संकलन नहीं है, बल्कि इसमें शैक्षिक उद्देश्य, सामग्री, शिक्षण विधियाँ और मूल्यांकन रणनीतियाँ शामिल हैं। एक प्रभावी पाठ्यक्रम छात्रों के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास के लिए एक मजबूत मंच तैयार करता है। शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार और रचनात्मकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पाठ्यक्रम को एकीकृत और विस्तारित करने की आवश्यकता है। इसलिए, पाठ्यक्रम विकास की प्रक्रिया महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह शैक्षिक गुणवत्ता को बेहतर बनाने और छात्रों के लिए एक सकारात्मक सीखने का वातावरण बनाने में मदद करती है।

<u>पाठ्यक्रम की अवधारणा:</u> पाठ्यक्रम उस ढांचे या रूपरेखा को संदर्भित करता है जो यह निर्धारित करती है कि छात्र अपनी शिक्षा के दौरान कौन-सी सामग्री, कौशल और अनुभव प्राप्त करेंगे। यह एक योजनाबद्ध प्रक्रिया है, जिसमें छात्रों के सीखने के लिए उपयुक्त सामग्री, शिक्षण विधियाँ, मूल्यांकन रणनीतियाँ और शैक्षिक उद्देश्य शामिल हैं। पाठ्यक्रम में पाठ्यपुस्तकें, पाठ्यक्रम, गतिविधियाँ, परियोजनाएँ, शिक्षण रणनीतियाँ और मूल्यांकन विधियाँ शामिल होती हैं। यह शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायता करती है और छात्रों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पाठ्यक्रम में शामिल हैं:

- **शैक्षिक उद्देश्य:** छात्रों के लिए निर्धारित लक्ष्य और उद्देश्य।
- **सामग्री:** पाठ्यपुस्तकें, जानकारी और सामग्री जो छात्रों को पढ़ाने के लिए उपयोग की जाती हैं।
- **सीखने की रणनीतियाँ:** शिक्षकों और छात्रों के बीच जानकारी के आदान-प्रदान की विधियाँ।
- **मूल्यांकन विधियाँ:** छात्रों के सीखने के परिणामों का मूल्यांकन करने की विधियाँ।

<u>पाठ्यक्रम और पाठ्यक्रम की सूची के बीच का अंतर:</u>

1. **<u>परिभाषा:</u>**
- **पाठ्यक्रम:** यह शिक्षा प्रणाली के लक्ष्यों, उद्देश्यों, सामग्री, शिक्षण विधियों और मूल्यांकन रणनीतियों का एक व्यापक ढांचा है। यह छात्रों के सीखने के अनुभवों के सभी पहलुओं को संबोधित करता है।
- **पाठ्यक्रम की सूची:** यह विशेष सामग्री और सामग्री की एक विशिष्ट सूची है, जिसमें पाठ्यपुस्तकें शामिल हैं, जो छात्र एक विशेष कक्षा या स्तर में अध्ययन करते हैं।

2. **<u>दृष्टिकोण:</u>**
- **पाठ्यक्रम:** यह शिक्षा पर एक सार्वभौमिक दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो छात्रों के समग्र विकास में सहायता करता है।
- **पाठ्यक्रम की सूची:** यह विशेष सामग्री और पाठ्यपुस्तकों की सामग्री पर केंद्रित है।

3. **<u>उद्देश्य:</u>**
- **पाठ्यक्रम:** इसका उद्देश्य शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना और छात्रों की रचनात्मकता और मानव मूल्यों का विकास करना है।
- **पाठ्यक्रम की सूची:** इसे छात्रों को विशेष ज्ञान और कौशल प्रदान करने के लिए तैयार किया गया है।

4. **<u>उपयोग:</u>**
- **पाठ्यक्रम:** यह शिक्षकों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है, जिससे उन्हें शिक्षण विधियों और मूल्यांकन रणनीतियों को निर्धारित करने में सहायता मिलती है।
- **पाठ्यक्रम की सूची:** यह छात्रों के लिए एक रूपरेखा के रूप में कार्य करता है, जिससे उन्हें पता चलता है कि वे कौन-कौन से विषयों का अध्ययन करेंगे।

5. **<u>व्यापारिता:</u>**
- **पाठ्यक्रम:** यह एक व्यापक और अधिक समग्र अवधारणा है, जिसमें शिक्षा के विभिन्न पहलू शामिल होते हैं।
- **पाठ्यक्रम की सूची:** यह एक विशिष्ट और सीमित सामग्री की सूची है।

<u>पाठ्यक्रम विकास की जिम्मेदारी:</u> पाठ्यक्रम विकास एक जटिल प्रक्रिया है, और इसकी जिम्मेदारी विभिन्न स्तरों के व्यक्तियों के बीच वितरित होती है। आमतौर पर, पाठ्यक्रम विकास के लिए निम्नलिखित समूह जिम्मेदार होते हैं:

1. **शिक्षक:** शिक्षक छात्रों की आवश्यकताओं और कक्षा में अनुभवों के आधार पर पाठ्यक्रम घटकों को संकलित करने और डिजाइन करने में सहायता करते हैं। वे अपने शिक्षण तरीकों और छात्रों की क्षमताओं के आधार पर पाठ्यक्रम की व्यावहारिक पहलुओं को तैयार करते हैं।
2. **शिक्षा विशेषज्ञ:** शैक्षणिक शोधकर्ता, विशेषज्ञ और पेशेवर पाठ्यक्रम की संरचना और घटकों का विकास करते हैं। वे नवीनतम शैक्षिक अनुसंधान और नीतियों के आधार पर पाठ्यक्रम विकास में योगदान करते हैं।
3. **शिक्षा बोर्ड और संगठन:** राष्ट्रीय और राज्य स्तर के शिक्षा बोर्ड, जैसे NCERT और SCERT, पाठ्यक्रम नीतियों और ढाँचों को बनाने में भूमिका निभाते हैं। वे शैक्षिक मानकों और नीतियों को स्थापित करते हैं और एकीकृत पाठ्यक्रम बनाते हैं।
4. **नीति निर्माता:** शिक्षा विभाग में नीति निर्माता शैक्षिक उद्देश्यों, मूल्यांकन विधियों और पाठ्यक्रम संरचना के बारे में निर्णय लेते हैं। वे समग्र शैक्षिक विकास और गुणवत्ता आश्वासन में योगदान करते हैं।
5. **अभिभावक और समुदाय:** पाठ्यक्रम विकास में अभिभावकों और स्थानीय समुदाय की राय और भागीदारी भी महत्वपूर्ण है। उनकी आवश्यकताएँ और अपेक्षाएँ छात्रों के सीखने के अनुभव को आकार देती हैं।
6. **शोधकर्ता और मनोवैज्ञानिक:** शोधकर्ता और मनोवैज्ञानिक विभिन्न शैक्षणिक पहलुओं के अनुसंधान और विश्लेषण के माध्यम से पाठ्यक्रम की गुणवत्ता को बढ़ाने में सहायता करते हैं। वे छात्रों के मनोवैज्ञानिक विकास और सीखने की प्रक्रियाओं के आधार पर पाठ्यक्रम विकसित करते हैं।

<u>पाठ्यक्रम विकास में राज्य की भूमिका:</u> पाठ्यक्रम विकास में राज्य की भूमिका महत्वपूर्ण है, और यह विभिन्न पहलुओं में परिलक्षित होती है। राज्य सरकारें शिक्षा प्रणाली के विकास और नीति निर्माण में निम्नलिखित जिम्मेदारियों का पालन करती हैं:

1. **नीति और ढांचे का निर्धारण:** राज्य सरकारें शिक्षा के लिए मूलभूत नीतियों और ढांचों की स्थापना करती हैं। वे पाठ्यक्रम के उद्देश्यों, संरचना और गुणवत्ता सुधार के लिए दिशा-निर्देश प्रदान करती हैं।
2. **शिक्षा बोर्डों का गठन:** राज्य सरकारें शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न शिक्षा बोर्डों का गठन करती हैं, जैसे SCERT। ये बोर्ड राज्य की शिक्षा नीति के अनुरूप पाठ्यक्रम का विकास और निर्माण करते हैं।
3. **शिक्षक प्रशिक्षण:** राज्य सरकारें शिक्षकों के लिए नए पाठ्यक्रमों और शिक्षण विधियों से अवगत कराने के लिए प्रशिक्षण और कार्यशालाओं का आयोजन करती हैं। इससे शिक्षकों का व्यावसायिक विकास और शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार होता है।
4. **संसाधन और समर्थन:** राज्य सरकारें स्कूलों और कॉलेजों को पाठ्यक्रम के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए आवश्यक संसाधन और समर्थन प्रदान करती हैं। इसमें पाठ्यपुस्तकों, शैक्षिक सामग्री, प्रौद्योगिकी और शिक्षण विधियों के लिए धन शामिल होता है।

5. **सामाजिक और सांस्कृतिक सुसंगतता:** राज्य सरकारें पाठ्यक्रम का विकास करते समय राज्य की सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता का ध्यान रखती हैं। इससे छात्रों को स्थानीय संस्कृति और परंपराओं से अवगत होने में मदद मिलती है।
6. **निगरानी और मूल्यांकन:** राज्य सरकारें पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता की निगरानी करती हैं और आवश्यकता अनुसार परिवर्तन या सुधार करती हैं। वे छात्र परिणामों और विकास के आधार पर पाठ्यक्रम की गुणवत्ता और प्रभावशीलता का मूल्यांकन करती हैं।
7. **अभिभावकों और समुदाय की भागीदारी:** राज्य सरकारें पाठ्यक्रम विकास की प्रक्रिया में अभिभावकों और समुदाय को शामिल करती हैं। उनकी प्रतिक्रिया और अपेक्षाएँ शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार में योगदान करती हैं।

निष्कर्ष: पाठ्यक्रम विकास में राज्य की भूमिका महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता को बढ़ाने में सहायता करती है। राज्य सरकारें नीतियों का निर्धारण, शिक्षा बोर्डों का गठन, शिक्षकों का प्रशिक्षण और आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करके पाठ्यक्रम के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित करती हैं। इसके अतिरिक्त, यह सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता के प्रति ध्यान देती है और प्रक्रिया में अभिभावकों और समुदाय को शामिल करती है। इन उपायों के माध्यम से, राज्य छात्रों के लिए एक व्यापक और प्रगतिशील शैक्षिक वातावरण बनाता है, जो उनके मानव मूल्यों, रचनात्मकता और सामाजिक जिम्मेदारी का समर्थन करता है।

8. Briefly narrate the concept of Laboratory school as conceived by John Dewey. 2023

Ans:

भूमिका: जॉन ड्यूई की प्रयोगशाला स्कूल, जो 1896 में स्थापित हुई, आधुनिक शिक्षा के एक महत्वपूर्ण मॉडल के रूप में पहचानी जाती है। जॉन ड्यूई के शिक्षा दर्शन के अनुसार, शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है जो छात्रों के अनुभवों के माध्यम से निर्मित होती है। स्कूल का मुख्य उद्देश्य छात्रों को वास्तविक जीवन की समस्याओं से परिचित कराना और उनकी समस्या समाधान करने की क्षमता विकसित करना है। अनुभव के आधार पर शिक्षा, छात्रों की रुचियों पर जोर देना, और सामाजिक कौशल के विकास पर ध्यान देना इस स्कूल की प्रमुख विशेषताएँ हैं। ड्यूई के दृष्टिकोण से, शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति नहीं है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का एक शक्तिशाली माध्यम है।

जॉन ड्यूई की प्रयोगशाला स्कूल: जॉन ड्यूई की प्रयोगशाला स्कूल, 1896 में अमेरिका के शिकागो में स्थापित, आधुनिक शिक्षा में एक मौलिक मॉडल है। इस स्कूल का मुख्य उद्देश्य छात्रों को वास्तविक जीवन के अनुभवों के माध्यम से सिखाना है। ड्यूई के शिक्षा दर्शन के अनुसार, शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है और यह छात्रों की सक्रिय भागीदारी के माध्यम से होती है। स्कूल का पाठ्यक्रम विभिन्न गतिविधियों, परियोजनाओं और छात्रों की रुचियों के आधार पर सीखने के सामग्री को शामिल करता था। यहां छात्र समस्या समाधान की क्षमता विकसित करते हैं, सहयोगात्मक कार्य सीखते हैं, और सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में अपनी पहचान बनाते हैं। ड्यूई की प्रयोगशाला स्कूल ने शिक्षा के मूल उद्देश्य को नए रूप में परिभाषित किया है, जहां शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्ति के रूप में नहीं,

बल्कि सामाजिक परिवर्तन के माध्यम के रूप में देखा गया है। यह स्कूल शिक्षाविदों के लिए एक उदाहरण के रूप में कार्य करता है, जो वर्तमान शिक्षा प्रणाली के सुधार पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है।

स्कूल की मुख्य विशेषताएँ:

- **अनुभव के आधार पर शिक्षा:** छात्रों को अनुभवों के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। यहां पाठ्यपुस्तकों के बजाय गतिविधियों और परियोजनाओं के माध्यम से सिखाया जाता है।
- **शिक्षा और समाज का संबंध:** ड्यूई के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य समाज का सुधार करना है। इसलिए छात्रों को सामाजिक समस्याओं को समझने और उनके समाधान करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
- **छात्रों की रुचियाँ:** पाठ्यक्रम छात्रों की रुचियों और आवश्यकताओं के आधार पर बनाया जाता है, जिससे उन्हें अपने सीखने में अधिक स्वतंत्रता मिलती है।
- **सामाजिक कौशल का विकास:** स्कूल सामाजिक संवाद, सहयोग और समस्या समाधान की क्षमताओं के विकास पर जोर देता है।
- **शिक्षकों की भूमिका:** शिक्षक मार्गदर्शक या सुविधाकर्ता के रूप में काम करते हैं, जो छात्रों को उनकी सीखने की प्रक्रिया में सहायता करते हैं।

लैबोरेटरी स्कूल के लक्ष्य और उद्देश्य:

जॉन ड्यूई की प्रयोगशाला स्कूल के लक्ष्य और उद्देश्य एक नए शिक्षा मॉडल का निर्माण करना था, जो छात्रों को सामाजिक और वास्तविक अनुभवों के माध्यम से सीखने का अवसर प्रदान करे। ये उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- **अनुभवात्मक शिक्षा:** छात्रों को व्यावहारिक अनुभवों के माध्यम से सीखने का अवसर प्रदान करना, जिससे वे वास्तविक जीवन की समस्याओं का सामना कर सकें।
- **सामाजिक और सांस्कृतिक विकास:** छात्रों की सामाजिक जिम्मेदारी और सांस्कृतिक जागरूकता बढ़ाने में मदद करना, जो उन्हें समाज से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करता है।
- **सहयोगात्मक सीखने का वातावरण:** एक सहयोगी सीखने का वातावरण बनाना, जहां छात्र एक-दूसरे के साथ बातचीत करते हैं और समस्याओं के समाधान में एक साथ काम करते हैं।
- **समस्या समाधान क्षमता का विकास:** छात्रों के भीतर चिंतनशीलता और समस्या समाधान की क्षमताओं का विकास करना, जो उनके जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के लिए लाभकारी है।
- **स्वतंत्र सोच और रचनात्मकता:** छात्रों को स्वतंत्र रूप से सोचने के लिए प्रोत्साहित करना और रचनात्मकता का विकास करना, जिससे वे नए विचारों और समाधानों का आविष्कार कर सकें।
- **योजित पाठ्यक्रम:** एक योजनाबद्ध और वास्तविक पाठ्यक्रम का निर्माण करना, जो छात्रों की रुचियों और आवश्यकताओं के अनुरूप हो।

उपसंहार: जॉन ड्यूई की प्रयोगशाला स्कूल आधुनिक शिक्षा का एक उदाहरण है, जहां अनुभवात्मक शिक्षा और सामाजिक-सांस्कृतिक विचार छात्रों के समग्र विकास में सहायक भूमिका निभाते हैं। स्कूल के लक्ष्य और उद्देश्य छात्रों के समस्या समाधान की क्षमताओं, स्वतंत्र सोच और सामाजिक जिम्मेदारी के विकास पर ध्यान केंद्रित करते हैं। ड्यूई के इस शिक्षा दर्शन ने हमें सिखाया है कि शिक्षा केवल जानकारी देने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह एक जीवित प्रक्रिया है जिसमें छात्र सक्रिय रूप से भाग लेते

हैं। इसलिए, जॉन ड्यूई की प्रयोगशाला स्कूल आज भी नवाचारपूर्ण शैक्षणिक दृष्टिकोण के लिए एक मुख्य मॉडल के रूप में मानी जाती है।

Course: 1.2.9 (Assessment for Learning)

1st Half (Assessment of the Learning Process)

Marks: 2

1. Write two objectives of evaluation. 2017, 2020

Ans: मूल्यांकन के दो उद्देश्य हैं:

1. **छात्रों की प्रगति मापना:** मूल्यांकन के माध्यम से छात्रों की सीखने की प्रक्रिया और ज्ञान अधिग्रहण के स्तर को निर्धारित किया जाता है। यह शिक्षकों को छात्रों की क्षमताओं, कौशल और सुधार के लिए आवश्यक सहायता प्रदान करने में मदद करता है।
2. **शिक्षा योजना और विकास:** मूल्यांकन के परिणाम शिक्षा योजना और पाठ्यक्रम के विकास में मदद करते हैं। यह शिक्षकों और शैक्षिक संस्थानों को शैक्षिक गतिविधियों की प्रभावशीलता का आकलन करने और आवश्यक परिवर्तन एवं सुधार करने में सक्षम बनाता है।

2. What is Sociogram? 2017, 2021

Ans: समाजमिति एक शोध और विश्लेषण की पद्धति है, जो समाज के सदस्यों के बीच संबंधों और सामाजिक संबंधों के गठन को मानचित्र पर दर्शाती है। यह समाजशास्त्र की एक शाखा है जो सामाजिक संरचना, समूह संबंध और सामाजिक संचार की गति को समझने में मदद करती है।

समाजमिति के मुख्य विशेषताएँ हैं:

1. **संबंधों का विश्लेषण:** यह सामाजिक संबंधों के गठन और प्रवाह का विश्लेषण करती है, जैसे व्यक्तियों के बीच मित्रता, शत्रुता, और सहयोग।
2. **ग्राफिक प्रस्तुति:** समाजमिति के माध्यम से संबंधों के मानचित्र बनाए जाते हैं, जो विभिन्न सदस्यों के बीच संबंधों का चित्रण करते हैं।
3. **नेतृत्व और स्थिति:** इसका उपयोग समूह के भीतर नेतृत्व और सदस्यों की स्थिति को समझने के लिए किया जाता है, जो सामाजिक गतिशीलता को समझने में मदद करता है।
4. **शोध उपकरण:** इसका उपयोग विभिन्न सामाजिक शोध में किया जाता है, जैसे शैक्षिक संस्थानों, संगठनों, और समुदायों के भीतर संबंधों का विश्लेषण करना।

समाजमिति मानव सामाजिक जीवन को समझने और उसके अनुसार हस्तक्षेप के लिए महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है।

3. What is life-skill training? 2017, 2020

Ans: जीवन कौशल प्रशिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्तियों के जीवन की गुणवत्ता को सुधारने में मदद करती है। यह विभिन्न कौशल और ज्ञान प्रदान करती है, जिन्हें व्यक्ति अपने दैनिक जीवन, पेशेवर सेटिंग और सामाजिक संबंधों में लागू कर सकते हैं। इस प्रकार के प्रशिक्षण के कुछ मुख्य उद्देश्य और घटक निम्नलिखित हैं:

1. **स्व-विकास:** यह व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक कौशल जैसे समय प्रबंधन, संचार, और समस्या समाधान की क्षमताएँ सिखाता है।
2. **सामाजिक कौशल:** यह सहयोग, संवाद, और दूसरों के साथ संबंध बनाने की क्षमता को बढ़ाने में मदद करता है।
3. **मानसिक स्वास्थ्य:** यह मानसिक स्वास्थ्य और तनाव प्रबंधन पर काम करता है, जिससे व्यक्ति अपनी भावनाओं और मानसिक दबाव को बेहतर ढंग से प्रबंधित कर सकें।
4. **वित्तीय शिक्षा:** यह वित्त प्रबंधन और बजट बनाने के लिए आवश्यक ज्ञान प्रदान करता है।
5. **स्वास्थ्य और पोषण:** यह स्वस्थ जीवन जीने के लिए आवश्यक जानकारी और आदतें सिखाता है, जैसे सही आहार और नियमित शारीरिक व्यायाम।

जीवन कौशल प्रशिक्षण व्यक्ति और समाज दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह व्यक्तियों को स्वतंत्र और प्रभावी जीवन जीने में सक्षम बनाता है।"

4. Mention two major differences between Measurement and Evaluation. 2017, 2021

Ans: परिमाण और मूल्यांकन के बीच दो मुख्य अंतर हैं:

1. परिभाषा और उद्देश्य:

- **परिमाण:** यह विशेष जानकारी या डेटा का संख्यात्मक मान निर्धारित करने की प्रक्रिया है। यह आमतौर पर संख्याओं के माध्यम से प्राप्त जानकारी को प्रदर्शित करता है और मानदंडों के आधार पर किसी विशेष विषय की स्थिति या मात्रा को दर्शाता है।
- **मूल्यांकन:** यह जानकारी का गुणात्मक विश्लेषण करने की प्रक्रिया है। यह सामान्यतः छात्रों के ज्ञान, कौशल और प्रदर्शन के मान या मानक का मूल्यांकन करता है और निर्णय लेने के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान करता है।

2. परिणाम:

- **परिमाण:** इसे संख्याओं या मात्रा के रूप में व्यक्त किया जाता है, जो विशिष्ट मानों के आधार पर जानकारी प्रदान करता है।
- **मूल्यांकन:** यह छात्रों की प्रभावशीलता या प्रदर्शन का मूल्यांकन करता है, जिसमें गुणात्मक विश्लेषण और राय शामिल होती है, और भविष्य में सुधार के लिए सुझाव प्रदान करता है।

5. Mention any two causes of low reliability of a test. 2017, 2020, 2022

Ans: <u>मूल्यांकन की कम विश्वसनीयता के दो कारण हैं:</u>

1. **मानव पूर्वाग्रह:** मूल्यांकन करने वाले व्यक्ति का पूर्वाग्रह या पक्षपात परिणामों को प्रभावित कर सकता है। यदि परीक्षक या शिक्षक के पास कोई व्यक्तिगत पूर्वाग्रह या पक्षपात है, तो यह छात्रों के मूल्यांकन की विश्वसनीयता को कम कर सकता है।
2. **अस्पष्ट निर्देश या मूल्यांकन रणनीतियाँ:** यदि मूल्यांकन के लिए उपयोग किए गए निर्देश या रणनीतियाँ अस्पष्ट या असंगत हैं, तो छात्रों को उनके प्रदर्शन के मूल्यांकन के बारे में निश्चित नहीं हो सकता। इसके परिणामस्वरूप, मूल्यांकन के परिणाम अस्थिर हो जाते हैं, जिससे विश्वसनीयता कम हो जाती है।

6. What do you mean by objectivity of a test? 2017, 2020

Ans: अभिक्षा की नाइर्व्यक्तिकता (Objectivity in Assessment) का मतलब है कि मूल्यांकन प्रक्रिया को इस तरह से संचालित किया जाए कि व्यक्तिगत पूर्वाग्रह, भावनाएं या पूर्वधारणाएं प्रभावित न हों। यह सुनिश्चित करता है कि मूल्यांकन के परिणाम और निर्णय केवल विषयवस्तु और छात्र के प्रदर्शन के आधार पर निर्धारित किए जाएं, और मूल्यांकनकर्ता के व्यक्तिगत दृष्टिकोण पर निर्भर न हों। नाइर्व्यक्तिकता सुनिश्चित करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण तत्व हैं:

1. **मानकीकृत दिशानिर्देश:** मूल्यांकन के लिए स्पष्ट और मानकीकृत दिशानिर्देश होना, जो सभी छात्रों के लिए समान रूप से लागू होते हैं।
2. **मात्रात्मक मानदंड:** परिणामों को मापने के लिए संख्यात्मक या मानदंड आधारित माप निर्धारित करना, ताकि सभी छात्रों का मूल्यांकन एक ही मानक पर किया जाए।
3. **अनेक मूल्यांकनकर्ता:** विभिन्न परीक्षकों या मूल्यांकनकर्ताओं द्वारा मूल्यांकन करना, ताकि व्यक्तिगत पक्षपात को कम किया जा सके।
4. **पारदर्शी प्रक्रिया:** मूल्यांकन प्रक्रिया और परिणामों को स्पष्ट और सही ढंग से रिकॉर्ड करना, ताकि समीक्षा और विश्लेषण के लिए खुले रहें।

इस प्रकार, नाइर्व्यक्तिकता मूल्यांकन की विश्वसनीयता और सटीकता को बढ़ाती है, जो छात्रों की वास्तविक क्षमताओं और ज्ञान को दर्शाती है।

7. What is Criterion Reference Test (CRT)? 2017, 2019, 2021

Ans: कृतित्व-आधारित मूल्यांकन (Performance-Based Assessment) एक ऐसा मूल्यांकन विधि है जिसका उपयोग छात्रों की क्षमताओं, ज्ञान और कार्यक्षमता को निर्धारित करने के लिए किया जाता है। इस पद्धति में छात्रों को विशिष्ट कार्य या परियोजनाएँ पूरी करने के लिए कहा जाता है, जो दर्शाते हैं कि वे वास्तविक जीवन की स्थितियों में कैसे काम करते हैं।

<u>कृतित्व-आधारित मूल्यांकन के कुछ प्रमुख विशेषताएँ:</u>

1. **वास्तविक गतिविधियाँ:** छात्रों को ऐसे कार्य या परियोजनाएँ पूरी करने के लिए कहा जाता है जो वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से संबंधित हों, जैसे रिपोर्ट लिखना, प्रस्तुतियाँ देना, या परियोजनाएँ बनाना।
2. **क्षमता का मूल्यांकन:** यह छात्रों की क्षमताओं, समस्या-समाधान की क्षमताओं, और सोचने की रणनीतियों का मूल्यांकन करता है, जो दर्शाता है कि वे जानकारी का कैसे उपयोग कर रहे हैं और समस्याओं को कैसे हल कर रहे हैं।
3. **परिणाम का मूल्यांकन:** परिणाम केवल सही उत्तरों पर आधारित नहीं होते, बल्कि छात्र की सोच, योजना और व्यावहारिक कार्य पर भी निर्भर करते हैं।
4. **प्रक्रिया और परिणाम दोनों का मूल्यांकन:** छात्रों के कार्य की प्रक्रिया और उनके परिणाम दोनों का मूल्यांकन किया जाता है, जिससे सुधार के लिए सिफारिशें की जा सकती हैं।

कृतित्व-आधारित मूल्यांकन छात्रों को वास्तविक जीवन की क्षमताएँ विकसित करने में मदद करता है और उनकी रचनात्मकता और समस्या-समाधान की क्षमताओं को प्रोत्साहित करता है।

8. Mention two differences between 'Criterion- referenced Test' and 'Norm-referenced Test'. 2018

Ans: 'निर्णायक आधारित मूल्यांकन' और 'मानक आधारित मूल्यांकन' के बीच दो मुख्य भेद हैं:

1. परिभाषा और उद्देश्य:

- **निर्णायक आधारित मूल्यांकन:** यह पद्धति छात्रों का मूल्यांकन विशिष्ट उपलब्धियों या कौशल के आधार पर करती है। यह निर्धारित करती है कि छात्र ने निश्चित शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त किया है या नहीं।
- **मानक आधारित मूल्यांकन:** यह पद्धति छात्रों के प्रदर्शन का मूल्यांकन एक विशिष्ट समूह की तुलना में करती है। यह छात्रों के प्रदर्शन को औसत या तुलनात्मक स्थिति पर रखती है।

2. परिणाम:

- **निर्णायक आधारित मूल्यांकन:** परिणाम विशिष्ट मानदंडों या लक्ष्यों के अनुसार व्यक्त किए जाते हैं, जो छात्र के ज्ञान और कौशल का सटीक स्तर दर्शाते हैं।
- **मानक आधारित मूल्यांकन:** परिणाम एक स्केल पर प्रदर्शित किए जाते हैं, जो छात्रों के प्रदर्शन की तुलना अन्य छात्रों के साथ करता है, जैसे प्रतिशत या ग्रेड के रूप में।

इस प्रकार, दोनों विधियों के उद्देश्य और परिणाम भिन्न हैं, जो शैक्षिक मूल्यांकन में विभिन्न दृष्टिकोणों और उद्देश्यों को दर्शाते हैं।

9. What is construct validity? 2018, 2020, 2022

Ans: संरचनात्मक वैधता (Construct Validity) किसी मूल्यांकन पद्धति की वैधता सुनिश्चित करने का एक महत्वपूर्ण घटक है, जो एक परीक्षण या मूल्यांकन के उद्देश्य और सामग्री के साथ काम करता है।

यह सुनिश्चित करता है कि मूल्यांकन पद्धति उस अवधारणा या कौशल को सही ढंग से माप रही है, जिसकी वह दावा करती है।

संरचनात्मक वैधता सामान्यतः दो मुख्य पहलुओं पर विचार करती है:

1. **सैद्धांतिक आधार:** यह निर्धारित करता है कि मूल्यांकन की सामग्री और संरचना सैद्धांतिक आधार से कैसे संबंधित है, अर्थात यह उस सिद्धांत या अवधारणा को कितनी अच्छी तरह दर्शाता है।
2. **अनुभव और डेटा:** यह सत्यापित करता है कि मूल्यांकन के परिणाम पूर्ववर्ती शोध के परिणामों के साथ संगत हैं या नहीं, और इस प्रकार यह सुनिश्चित करता है कि मूल्यांकन जो माप रहा है, वह वास्तविक परिस्थितियों में उपयोगी और प्रभावी है।

संरचनात्मक वैधता को सुनिश्चित करना मूल्यांकन की सटीकता और विश्वसनीयता को बढ़ाता है, और यह छात्रों के वास्तविक ज्ञान और कौशल का प्रदर्शन करता है।

10. Write the definition of IQ. 2018, 2021

Ans: बुद्ध्यांक (Intelligence Quotient या IQ) मानसिक क्षमता का एक माप है, जो किसी व्यक्ति के सामान्य बुद्धिमत्ता के स्तर को दर्शाता है। यह एक संख्यात्मक मान है जो विभिन्न मानसिक परीक्षणों के माध्यम से निर्धारित किया जाता है, और सामान्यतः बुद्धिमत्ता के विभिन्न पहलुओं जैसे समस्या समाधान, तर्क, गणना, भाषा, और विशेष रूप से वास्तविक जीवन की स्थितियों में सोचने की क्षमता का मूल्यांकन करता है।

बुद्ध्यांक की सामान्य परिभाषा निम्नलिखित है:

1. **मापने का आधार:** बुद्ध्यांक सामान्यतः एक मानसिक परीक्षण के परिणामों के माध्यम से निर्धारित किया जाता है, जो तुलनात्मक रूप से कई जनसंख्या के लिए बनाया गया होता है।
2. **सामाजिक संबंध:** यह किसी व्यक्ति की बुद्धिमत्ता के स्तर की तुलना सामान्य जनसंख्या के औसत के साथ करता है, आमतौर पर 100 को एक औसत मान के रूप में स्वीकार किया जाता है।
3. **उपयोग:** बुद्ध्यांक विभिन्न परिस्थितियों में किसी व्यक्ति की क्षमताओं, समस्या समाधान कौशल, और मानसिक क्षमता को समझाने के लिए उपयोग किया जाता है, जो शिक्षा, प्रदर्शन, और विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों में संबंध स्थापित करता है।

संक्षेप में, बुद्ध्यांक मानव बुद्धिमत्ता का एक मानसिक संकेतक है, जो किसी व्यक्ति की सोचने और समस्या समाधान की क्षमताओं का प्रतिबिंब है।

11. What is an achievement test? 2018, 2020

Ans: प्रवीणता मूल्यांकन एक मूल्यांकन विधि है जिसका उपयोग छात्रों के विशिष्ट कौशल, ज्ञान, और प्रदर्शन के स्तर को निर्धारित करने के लिए किया जाता है। यह विधि आमतौर पर विशिष्ट विषयों या गतिविधियों में छात्रों की प्रवीणता का आकलन करने के लिए डिज़ाइन की गई है।

<u>प्रवीणता मूल्यांकन की कुछ प्रमुख विशेषताएँ हैं:</u>

1. **विशिष्ट ध्यान:** यह आमतौर पर किसी विशिष्ट कौशल या ज्ञान के क्षेत्र पर केंद्रित होती है, जैसे गणित की समस्याओं को हल करना, भाषा का उपयोग करना, या तकनीकी कौशल।
2. **व्यवहारिक मूल्यांकन:** प्रवीणता मूल्यांकन में छात्रों के कौशल के वास्तविक जीवन की स्थितियों में आवेदन का परीक्षण किया जाता है, जैसे प्रोजेक्ट बनाना, समस्याओं को हल करना, या व्यावहारिक कार्यों को पूरा करना।
3. **परिणाम आधारित मूल्यांकन:** परिणाम केवल सही उत्तरों के आधार पर नहीं, बल्कि छात्रों द्वारा प्रदर्शित प्रभावशीलता और कौशल के आधार पर निर्धारित किए जाते हैं।
4. **सुधार के लिए प्रतिबिंब:** प्रवीणता मूल्यांकन छात्रों के प्रदर्शन के आधार पर सुधार के लिए मार्गदर्शन और सिफारिशें प्रदान करता है।

प्रवीणता मूल्यांकन छात्रों के व्यावहारिक ज्ञान और कौशल के अनुप्रयोग का मूल्यांकन करने में सहायक है, जो उनकी प्रगति और भविष्य में सफलता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है।

12. Distinguish between 'Educational Test' and 'Psychological Test'. 2018

Ans: <u>शिक्षात्मक आकलन और मनोवैज्ञानिक आकलन के बीच मुख्य भिन्नताएँ:</u>

उद्देश्य:

- **शिक्षात्मक आकलन:** इसका उपयोग छात्रों की सीखने और कौशल का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है, जो शैक्षिक परिणामों और पाठ्यक्रम से संबंधित उनके ज्ञान स्तर को निर्धारित करता है।
- **मनोवैज्ञानिक आकलन:** यह एक व्यक्ति की मानसिक प्रक्रियाओं, व्यवहारों और भावनाओं का मूल्यांकन करता है, जो उनके मानसिक स्वास्थ्य और व्यवहार संबंधी समस्याओं को समझने में सहायक है।

विधियाँ:

- **शिक्षात्मक आकलन:** आमतौर पर लिखित परीक्षाओं, परियोजनाओं या पाठ्यक्रम के माध्यम से किया जाता है।
- **मनोवैज्ञानिक आकलन:** आमतौर पर साक्षात्कार और मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के माध्यम से किया जाता है, जो एक व्यक्ति की आंतरिक भावनाओं और विचारों का विश्लेषण करते हैं।

इस प्रकार, दोनों प्रकार के आकलनों के उद्देश्य और विधियाँ भिन्न होती हैं, जो उनके मूल्यांकन के क्षेत्रों को अलग करती हैं।

13. Write two characteristics of child with learning problems. 2018, 2021

Ans: <u>शिक्षण समस्याग्रस्त बच्चों की दो विशेषताएँ हैं:</u>

1. **शिक्षात्मक अक्षमता:** इन बच्चों में अक्सर एक या अधिक शिक्षण अक्षमताएँ होती हैं, जैसे कि डिस्लेक्सिया (पढ़ने में कठिनाई), डिस्ग्राफिया (लिखने में कठिनाई), या डिस्कैल्कुलिया (गणना में कठिनाई), जो उनके शैक्षिक कार्यों में बाधा डालती हैं।
2. **चिंतन और समस्या समाधान में कमजोरी:** इन बच्चों की चिंतन क्षमता और समस्या समाधान कौशल सामान्य बच्चों की तुलना में अक्सर कम होते हैं, जिससे उनके लिए नई जानकारी को ग्रहण करना और लागू करना मुश्किल हो जाता है।

14. What is dyslexia? 2018, 2020, 2022

Ans: डिस्लेक्सिया एक शिक्षण अक्षमता है जो मुख्यतः पढ़ने की प्रक्रिया को प्रभावित करती है। यह एक न्यूरोडेवलपमेंटल स्थिति का हिस्सा है, जहां किसी व्यक्ति के शब्दों और अक्षरों की पहचान, शब्द निर्माण, और पढ़ने की गति और सटीकता प्रभावित होती है। डिस्लेक्सिया से प्रभावित व्यक्तियों को अक्सर निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ता है:

1. **पढ़ने में कठिनाई:** उन्हें अक्षरों और शब्दों की पहचान करने, उन्हें मिलाने और पढ़ना शुरू करने में समस्या होती है।
2. **उच्चारण और शब्दों का उपयोग:** शब्दों के उच्चारण, शब्दावली के प्रयोग, और वाक्य बनाने में समस्या हो सकती है।
3. **शब्दों में भ्रम:** शब्दों के उच्चारण या लेखन में भ्रम हो सकता है, जैसे 'ब' और 'द' अक्षरों के बीच भ्रम।
4. **गति और समय:** पढ़ने की गति धीमी हो सकती है, जिसके कारण पढ़ने की समझने की क्षमता कम हो जाती है।

डिस्लेक्सिया आमतौर पर अन्य बुद्धिमत्ता संबंधी समस्याओं से संबंधित नहीं होती है; बल्कि, यह व्यक्ति की सामान्य बुद्धिमत्ता और क्षमताओं को प्रभावित करती है। उपचार और समर्थन की रणनीतियाँ डिस्लेक्सिया के कारण उत्पन्न चुनौतियों का सामना करने में मदद कर सकती हैं।

15. Define Educational Measurement. 2019, 2022

Ans: शिक्षा में मापन छात्रों की शिक्षा, कौशल और उपलब्धियों को निर्धारित करने की प्रक्रिया है। यह एक स्थापित विधि है जो मानसिक, शारीरिक और सामाजिक क्षमताओं के विभिन्न स्तरों का मूल्यांकन करती है और छात्रों के सीखने के परिणामों का आकलन करती है। शिक्षा में मापन के कुछ महत्वपूर्ण पहलू हैं:

1. **निर्धारण:** मापन के माध्यम से छात्रों के कौशल और प्रगति के विभिन्न स्तर निर्धारित किए जाते हैं, जो शिक्षकों के लिए मूल्यवान जानकारी प्रदान करते हैं।

2. **सांख्यिकी:** इसका उपयोग छात्रों के प्रदर्शन के सांख्यिकी बनाने के लिए किया जाता है, जो उनके ताकत और कमजोरियों की पहचान करने में मदद करता है।
3. **निर्णय लेना:** मापन शिक्षकों को निर्णय लेने में सहायता करता है, जैसे कि छात्रों के लिए उपयुक्त पाठ्यक्रम विकसित करना या यह निर्धारित करना कि अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता है या नहीं।
4. **परिवर्तन:** मापन के परिणामों का उपयोग शिक्षण विधियों और रणनीतियों में परिवर्तन करने के लिए किया जा सकता है, जो छात्रों के लिए बेहतर शिक्षा सुनिश्चित करता है।

संक्षेप में, शिक्षा में मापन शैक्षिक प्रक्रिया का एक मौलिक घटक है जो छात्रों के विकास के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान करता है।

16. What are the various types of data necessary for guidance? 2019

Ans: <u>छात्रों के लिए मार्गदर्शन के लिए आवश्यक विभिन्न प्रकार की जानकारी निम्नलिखित हैं:</u>

1. **छात्र का पूर्व ज्ञान:** छात्र की पूर्व की शिक्षा, अनुभव और कौशल स्तर के बारे में जानकारी, जो नए सीखने से संबंधित है।
2. **शिक्षण लक्ष्य और उद्देश्य:** छात्रों के लिए निर्धारित विशिष्ट लक्ष्य और उद्देश्य को स्पष्ट करना चाहिए, ताकि वे समझ सकें कि वे क्या सीखेंगे और क्यों।
3. **शिक्षण विधियाँ और रणनीतियाँ:** छात्र के लिए उपयोग की जाने वाली शिक्षण विधियों और रणनीतियों के बारे में जानकारी, जैसे प्रभावी पाठ योजना, चर्चा, खेल और अन्य गतिविधियाँ।
4. **मूल्यांकन विधियाँ:** छात्र के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के लिए उपयोग किए जाने वाले मानदंडों और विधियों के बारे में जानकारी, ताकि वे अपनी प्रगति और सुधार को समझ सकें।
5. **समर्थन और संसाधन:** छात्रों के लिए उपलब्ध समर्थन, जैसे पाठ्यपुस्तकें, ऑनलाइन संसाधन, और अन्य सामग्री, जो उनकी शिक्षण प्रक्रिया का समर्थन करती हैं।

यह जानकारी छात्रों के सीखने के लिए प्रभावी मार्गदर्शन और समर्थन प्रदान करने में मदद करती है।

17. What is formative evaluation approach in education? 2019, 2022

Ans: शिक्षा में गठनात्मक मूल्यांकन का दृष्टिकोण एक शैक्षिक मूल्यांकन पद्धति है, जो छात्रों की सीखने की प्रक्रिया और उनकी प्रगति पर ध्यान केंद्रित करती है। इसके कुछ मुख्य दृष्टिकोण हैं:

1. **सीखने की प्रक्रिया का मूल्यांकन:** गठनात्मक मूल्यांकन छात्रों की सीखने की प्रक्रिया का मूल्यांकन करता है, जो उनकी तर्कशक्ति, सोचने और समस्या समाधान करने की क्षमताओं को बढ़ाता है।
2. **आंतरिक प्रतिबिंब:** छात्रों को अपनी खुद की सीखने के अनुभवों और प्रगति पर विचार करने का अवसर दिया जाता है, जो आत्म-आलोचना और सुधार में मदद करता है।
3. **निर्देशनात्मक जानकारी:** गठनात्मक मूल्यांकन शिक्षकों के लिए जानकारी प्रदान करता है, जिससे उन्हें छात्रों की ताकत और कमजोरियों की पहचान करने और उस अनुसार शिक्षण रणनीतियों को समायोजित करने में मदद मिलती है।

4. **व्यक्तिगत शिक्षण:** यह छात्रों के लिए व्यक्तिगत और विशिष्ट शिक्षण अनुभव बनाने में सहायक होता है, जो उनके अद्वितीय आवश्यकताओं और रुचियों के आधार पर शिक्षण का समर्थन करता है।

यह दृष्टिकोण छात्रों के लिए प्रभावी सीखने और विकास के लिए एक सहयोगात्मक वातावरण बनाने में सहायक है।

19. State two needs of a diagnostic test. 2019, 2021

Ans: <u>निर्णायक मूल्यांकन (Summative Assessment) की दो आवश्यकताएँ हैं:</u>

1. **शैक्षणिक परिणामों का मूल्यांकन:** निर्णायक मूल्यांकन छात्रों की सीखने की सफलता और शैक्षणिक परिणामों को निर्धारित करने में सहायक है। यह पाठ्यक्रम के अंत में छात्रों द्वारा प्राप्त ज्ञान और कौशल का एक समग्र चित्र प्रदान करता है, जो शिक्षकों के लिए मूल्यवान जानकारी है।
2. **अध्ययन रणनीतियों और पाठ्यक्रम का सुधार:** इस प्रकार के मूल्यांकन के परिणाम शिक्षकों को उनकी शिक्षण रणनीतियों और पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता की समीक्षा और सुधार करने का अवसर प्रदान करते हैं। यह शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने में सहायक है और भविष्य के छात्रों के लिए अधिक प्रभावी पाठ योजनाएँ बनाने का मार्ग प्रशस्त करता है।

20. Write two advantages of grading compared to marking system. 2019, 2022

Ans: ग्रेडिंग पद्धति की तुलना में अंक पद्धति के कुछ फायदे हैं, लेकिन ग्रेडिंग पद्धति के भी कुछ फायदे हैं। नीचे ग्रेडिंग पद्धति के दो मुख्य फायदे दिए गए हैं:

1. **मानसिक तनाव को कम करना:** ग्रेडिंग पद्धति छात्रों के बीच प्रतिस्पर्धात्मक दबाव को कम करने में मदद करती है। अंक पद्धति में प्रत्येक अंक निश्चित होता है और मानसिक तनाव पैदा कर सकता है, जबकि ग्रेडिंग पद्धति में छात्र अपनी शैक्षणिक प्रगति के आधार पर ग्रेड प्राप्त करते हैं, जो उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहायक है।
2. **समग्र मूल्यांकन:** ग्रेडिंग पद्धति छात्रों की समग्र क्षमताओं और कौशल का मूल्यांकन करने में अधिक प्रभावी है। यह केवल परीक्षा या परीक्षण के आधार पर नहीं, बल्कि कक्षा के प्रदर्शन, प्रोजेक्ट और अन्य गतिविधियों के आधार पर मूल्यांकन करती है, जो छात्रों के सुधार का एक और पहलू उजागर करती है।

ये फायदे छात्रों के लिए शैक्षणिक प्रक्रिया को और अधिक आसान और उत्पादक बनाते हैं।

21. Indicate two importances of life skill training. 2019, 2021

Ans: <u>जीवनशैली प्रशिक्षण की दो मुख्य आवश्यकताएँ निम्नलिखित हैं:</u>

1. **स्वास्थ्य और स्वास्थ्य जागरूकता:** जीवनशैली प्रशिक्षण लोगों को स्वस्थ आदतें अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है, जैसे उचित पोषण, नियमित व्यायाम और मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखना। यह रोगों की रोकथाम में सहायक है और दीर्घकालिक स्वास्थ्य बनाए रखने में मदद करता है।
2. **तनाव प्रबंधन और मानसिक स्वास्थ्य:** जीवनशैली प्रशिक्षण मानसिक तनाव का सामना करने की रणनीतियाँ सिखाता है और जीवनशैली से संबंधित दबाव को कम करने में मदद करता है। यह चिंता, अवसाद और अन्य मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान में प्रभावी है, जो समग्र जीवन की गुणवत्ता को सुधारता है।

ये आवश्यकताएँ मानव जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने में सहायक होती हैं।

22. Mention two differences between Criterion-referenced Test' and 'Norm-referenced Test'. 2022

Ans: <u>'निर्णायक आधारित मूल्यांकन' और 'मान आधारित मूल्यांकन' के बीच के दो प्रमुख भेद निम्नलिखित हैं:</u>

1. <u>मूल्यांकन का उद्देश्य:</u>

- **निर्णायक आधारित मूल्यांकन:** इस प्रकार के मूल्यांकन का उद्देश्य यह है कि यह निर्धारित मानदंड या शिक्षण लक्ष्य पूरे हुए हैं या नहीं। छात्र का प्रदर्शन उनकी विशिष्ट क्षमताओं या ज्ञान के स्तर के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है।
- **मान आधारित मूल्यांकन:** इस मूल्यांकन का उद्देश्य छात्रों के प्रदर्शन की तुलना करना है। यह आमतौर पर समूह के भीतर छात्रों के प्रदर्शन को निर्धारित और तुलना करता है।

2. <u>परिणाम और निष्कर्ष:</u>

- **निर्णायक आधारित मूल्यांकन:** परिणाम छात्रों की ताकत और कमजोरियों की पहचान करने में मदद करते हैं और उनके शिक्षण प्रगति के बारे में स्पष्ट विचार प्रदान करते हैं।
- **मान आधारित मूल्यांकन:** परिणाम केवल छात्र की स्थिति को संकेत करते हैं (जैसे, वे कक्षा में कितने अच्छे कर रहे हैं) और यह नहीं बताते कि कोई विशेष शिक्षण लक्ष्य पूरे हुए हैं या नहीं।

ये भेद शिक्षा मूल्यांकन प्रक्रिया में दो प्रकार के मूल्यांकन की महत्वता और उपयोग को स्पष्ट करते हैं।

23. What is self-reporting Technique? 2023

Ans: स्व-रिपोर्ट तकनीक एक शोध पद्धति है जिसमें किसी व्यक्ति के अपने विचारों, भावनाओं, व्यवहारों या अनुभवों के आधार पर जानकारी एकत्र की जाती है। यह तकनीक मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, शिक्षाशास्त्र और जन स्वास्थ्य अनुसंधान जैसे विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग की जाती है। स्व-रिपोर्ट तकनीक की कुछ प्रमुख विशेषताएँ हैं:

1. **व्यक्तिगत जानकारी:** इस तकनीक में, भागीदार अपने अनुभवों या भावनाओं के बारे में जानकारी प्रदान करता है। यह व्यक्ति के अपने दृष्टिकोण से होती है, जो उनके दृष्टिकोण और व्यवहार का सटीक चित्र प्रस्तुत करती है।
2. **प्रश्नावली या सर्वेक्षण:** स्व-रिपोर्ट तकनीक सामान्यतः प्रश्नावली, सर्वेक्षण, या साक्षात्कार के माध्यम से संचालित होती है। भागीदार अपने विचारों, भावनाओं, और व्यवहारों के बारे में प्रश्नों के उत्तर देते हैं।
3. **आसान और तेज:** यह तकनीक जल्दी और आसानी से जानकारी एकत्र करने के लिए प्रभावी है। इसे बड़े नमूनों से डेटा एकत्र करने के लिए उपयोग किया जा सकता है, जो शोध में विशाल आयाम जोड़ता है।
4. **स्व-आकलन:** भागीदार अपने अनुभवों के आधार पर खुद का मूल्यांकन कर सकते हैं, जो व्यक्तिगत परिवर्तन और सुधार के लिए सहायक हो सकता है।

हालांकि स्व-रिपोर्ट तकनीक जानकारी एकत्र करने के लिए एक प्रभावी पद्धति है, लेकिन इसके साथ कुछ सीमाएँ भी होती हैं, जैसे व्यक्तिगत पक्षपाती, झूठी जानकारी देने की संभावना, या गलत व्याख्या करना। इसलिए, इस तकनीक के साथ अन्य शोध विधियों का उपयोग करना अधिक सटीक परिणाम प्राप्त करने में मदद कर सकता है।

24. What do you mean by Validity of a Test? 2023

Ans: एक अभिक्षा की उचितता (Validity) का अर्थ है कि वह अभिक्षा वास्तव में जिसे मापने के लिए बनाई गई है, उसे कितनी सटीकता और विश्वसनीयता से मापती है। दूसरे शब्दों में, यह निर्धारित करता है कि अभिक्षा के परिणाम उस विशेष विषय, कौशल, या धारणा का वास्तविक रूप से प्रतिबिंबित करते हैं या नहीं। अभिक्षा में उचितता के मुख्य पहलू हैं:

1. **विषयवस्तु उचितता (Content Validity):** यह सुनिश्चित करता है कि अभिक्षा के प्रश्न या परीक्षण के तत्व निर्धारित विषय या कौशल का सही प्रतिनिधित्व करते हैं। जैसे, यदि एक परीक्षा गणितीय कौशल को परखने के लिए डिज़ाइन की गई है, तो उस परीक्षा में गणितीय विषय का सही और संपूर्ण विषयवस्तु शामिल होना चाहिए।
2. **निर्माण उचितता (Construct Validity):** यह जांचता है कि क्या अभिक्षा किसी विशेष धारणा या गुण का मूल्यांकन कर रही है। जैसे, यदि एक परीक्षा आत्मविश्वास के स्तर को मापने के लिए डिज़ाइन की गई है, तो यह सुनिश्चित करना होगा कि प्रश्न वास्तव में आत्मविश्वास से संबंधित हैं।
3. **मानदंड-संबंधित उचितता (Criterion-Related Validity):** यह जांचता है कि अभिक्षा के परिणाम किसी अन्य विश्वसनीय और स्वीकार्य मानक के साथ कितनी अच्छी तरह से संबंधित हैं। अर्थात, यदि अभिक्षा के परिणाम किसी अन्य परीक्षा के परिणामों के साथ संगत हैं, तो यह उच्च मानदंड-संबंधित उचितता को दर्शाता है।

अभिक्षा की उचितता सुनिश्चित करना छात्रों की क्षमताओं, कौशल और शिक्षा की प्रगति का सही मूल्यांकन करने में सहायक होता है।

25. Write two Characteristic of child with learning problems. 2023

Ans: <u>शिक्षण समस्याग्रस्त बच्चों के दो लक्षण</u>

1. **शैक्षणिक कठिनाइयाँ:** शिक्षण समस्याग्रस्त बच्चों को अक्सर पढ़ने, लिखने, गणित हल करने, या अन्य शैक्षणिक कार्यों में समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अन्य बच्चों की तुलना में वे कुछ शिक्षण क्षेत्रों में धीमी प्रगति करते हैं और विभिन्न शिक्षण रणनीतियों को प्रभावी ढंग से लागू करने में कठिनाई महसूस कर सकते हैं।
2. **अभिव्यक्ति और संचार में समस्याएँ:** ऐसे बच्चे अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। वे अपने विचारों को स्पष्ट रूप से समझाने या सामाजिक स्थितियों में प्रभावी ढंग से संवाद करने में कठिनाई महसूस कर सकते हैं, जो उनके सामाजिक और भावनात्मक विकास में बाधा उत्पन्न कर सकता है।

ये लक्षण ऐसे बच्चों के लिए विशेष शिक्षा और सहायता की आवश्यकता को दर्शाते हैं।

26. Write two differences between Summative and Formative test. 2023

Ans: <u>समष्टिगत और संरचनात्मक मूल्यांकन के दो अंतर</u>

1. <u>उद्देश्य:</u>

- **संरचनात्मक मूल्यांकन:** इसका उपयोग सीखने की प्रक्रिया के दौरान छात्रों की प्रगति की निगरानी के लिए किया जाता है। यह छात्रों की ताकत और कमजोरी को पहचानकर उनके सीखने में सहायता करता है।
- **समष्टिगत मूल्यांकन:** इसे सीखने की अवधि के अंत में छात्रों की संपूर्ण उपलब्धि का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है।

2. <u>प्रतिक्रिया या परिणाम:</u>

- **संरचनात्मक मूल्यांकन:** इस मूल्यांकन में तुरंत प्रतिक्रिया दी जाती है, जिससे छात्रों को त्वरित सुधार करने में मदद मिलती है।
- **समष्टिगत मूल्यांकन:** यहां परिणाम शैक्षणिक वर्ष या सत्र के अंत में दिए जाते हैं, जो छात्रों की कुल शैक्षणिक उपलब्धि को मापते हैं।

27. What is Prognosis test? 2023

Ans: भविष्य संभाव्यता परीक्षण (Prognosis Test) एक मूल्यांकन पद्धति है, जिसका उपयोग किसी छात्र की भविष्य की शैक्षणिक प्रगति या संभावित विकास का पूर्वानुमान लगाने के लिए किया जाता है। यह छात्र की कौशल, बुद्धिमत्ता और सीखने की प्रगति में सुधार की संभावना को निर्धारित करने में मदद करता है।

यह परीक्षण आमतौर पर तब लागू किया जाता है जब कोई छात्र सीखने में कठिनाई का सामना कर रहा हो या किसी विशेष क्षेत्र में सुधार की आवश्यकता हो। भविष्य संभाव्यता परीक्षण के माध्यम से शिक्षक

या माता-पिता यह समझ सकते हैं कि छात्र को सफलता प्राप्त करने के लिए किस क्षेत्र में अतिरिक्त सहायता या मार्गदर्शन की आवश्यकता हो सकती है।

28. Write the two disadvantages of essay type test. 2023

Ans: <u>निबंध-आधारित मूल्यांकन की दो असुविधाएँ</u>

1. **मूल्यांकन में पक्षपात का जोखिम:** निबंध-आधारित मूल्यांकन में शिक्षक के व्यक्तिगत विचार या पूर्वधारणाएं मूल्यांकन प्रक्रिया को प्रभावित कर सकती हैं। इससे छात्र की वास्तविक कौशल का सटीक मापन नहीं हो पाता है, जिससे विश्वसनीयता और निष्पक्षता में कमी आ सकती है।
2. **समय और श्रम-साध्य:** निबंध-आधारित मूल्यांकन में बहुत समय और मेहनत लगती है। प्रत्येक छात्र के निबंध का विश्लेषण और अंकन करने में समय लगता है, जिससे बड़े वर्गों या परीक्षाओं में इसे प्रबंधित करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

ये असुविधाएँ निबंध-आधारित मूल्यांकन की सटीकता और प्रभावशीलता में बाधा उत्पन्न करती हैं।

29. Find out the median of the following data:18, 15, 20, 16, 22, 24 2023

Ans: मीडियन का पता लगाने के लिए, सबसे पहले हमें डेटा को आरोही क्रम में व्यवस्थित करना होगा।

आरोही क्रम में व्यवस्थित करने के बाद हमें मिलता है: 15, 16, 18, 20, 22, 24

यहाँ कुल 6 संख्याएँ हैं, जो एक सम संख्या है। इसलिए, मीडियन का पता लगाने के लिए हमें मध्य की दो संख्याओं का औसत लेना होगा।

मध्य की दो संख्याएँ हैं 18 और 20।

अतः, मीडियन = (18 + 20) / 2
= 38 / 2
= 19

इसलिए, मीडियन = 19।

Marks: 5

1. Distinguish between formative and summative evaluation. 2020, 2017

Ans: गठनात्मक और समष्टिमूलक मूल्यांकन छात्र की सीखने की प्रगति का आकलन करने के दो महत्वपूर्ण तरीके हैं। गठनात्मक मूल्यांकन सीखने की अवधि के दौरान सुधार पर जोर देता है, जबकि समष्टिमूलक मूल्यांकन सीखने की समाप्ति पर प्राप्त परिणामों का आकलन करता है।

<u>गठनात्मक और समष्टिमूलक मूल्यांकन के बीच अंतर:</u>

उद्देश्य:

- **गठनात्मक मूल्यांकन:** यह छात्रों की सीखने की प्रक्रिया के दौरान उनकी सुधार और कमजोरियों को निर्धारित करने में मदद करता है। यह सीखने की अवधि के दौरान शिक्षक और छात्र दोनों को फीडबैक प्रदान करता है।
- **समष्टिमूलक मूल्यांकन:** यह एक निर्धारित समय सीमा या अध्याय के अंत में छात्रों की उपलब्धियों का आकलन करता है। यह छात्र के समग्र प्रदर्शन या ज्ञान का मूल्यांकन करता है।

समय:

- **गठनात्मक मूल्यांकन:** यह लगातार और नियमित रूप से किया जाता है। उदाहरण: कक्षा परीक्षण, होमवर्क, समूह चर्चा।
- **समष्टिमूलक मूल्यांकन:** यह समय सीमा के अंत में या अध्याय की समाप्ति के बाद किया जाता है। उदाहरण: अंतिम परीक्षा, वार्षिक परीक्षा।

फोकस:

- **गठनात्मक मूल्यांकन:** सीखने की प्रक्रिया और सुधार के अवसरों पर ध्यान केंद्रित करता है।
- **समष्टिमूलक मूल्यांकन:** सीखने के परिणामों और छात्रों द्वारा प्राप्त ज्ञान की मात्रा पर ध्यान केंद्रित करता है।

फीडबैक:

- **गठनात्मक मूल्यांकन:** यह तत्काल और प्रभावी फीडबैक प्रदान करता है जो छात्रों की मदद करता है।
- **समष्टिमूलक मूल्यांकन:** आमतौर पर इसके बाद कोई फीडबैक नहीं दिया जाता है या बहुत कम दिया जाता है।

प्रभाव:

- **गठनात्मक मूल्यांकन:** छात्रों की सीखने की आदतों और विधियों को सुधारने में मदद करता है।
- **समष्टिमूलक मूल्यांकन:** छात्र का समग्र मूल्यांकन या ग्रेड प्रदान करता है, जिसका उपयोग शैक्षणिक प्रगति के संकेतक के रूप में किया जाता है।

अंत में, गठनात्मक मूल्यांकन छात्रों की सीखने की प्रक्रिया में सुधार करने में सहायक है, जबकि समष्टिमूलक मूल्यांकन छात्रों के ज्ञान और कौशल का समग्र मूल्यांकन करता है। दोनों मूल्यांकन विधियाँ शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

2. Write the advantages and disadvantages of oral test. 2017, 2018, 2020, 2022

Ans: मौखिक परीक्षा छात्रों के ज्ञान, संचार कौशल, और आत्मविश्वास के मूल्यांकन का एक महत्वपूर्ण तरीका है। यह छात्रों की सोचने की क्षमता और समस्या समाधान के कौशल को परखता है, लेकिन इसमें परीक्षक का पक्षपात और समयसीमा जैसी कुछ सीमाएँ भी होती हैं।

मौखिक परीक्षा के लाभ और हानियाँ:

लाभ:

1. **तत्काल मूल्यांकन**: शिक्षक द्वारा छात्रों के ज्ञान और विचारों का सीधा परीक्षण किया जा सकता है, जिससे तेज और सही मूल्यांकन का अवसर मिलता है।
2. **संचार कौशल का मूल्यांकन**: मौखिक परीक्षा में छात्रों की भाषा, संचार कौशल और आत्मविश्वास का मूल्यांकन करना संभव है।
3. **स्पष्ट अवधारणा**: यदि किसी विषय में छात्र को असुविधा होती है, तो शिक्षक के प्रश्नों के माध्यम से उसे तत्काल स्पष्ट किया जा सकता है।
4. **छात्रों की सोचने की शक्ति का परीक्षण**: यह छात्रों की रचनात्मक सोच, विश्लेषणात्मक क्षमता और समस्या समाधान की योग्यता का मूल्यांकन करने में सहायक है।
5. **उच्च स्तर के प्रश्न**: मौखिक परीक्षा में शिक्षक विभिन्न स्तरों के प्रश्न पूछ सकते हैं, जिससे छात्रों की गहरी समझ और ज्ञान का मूल्यांकन होता है।

हानियाँ:

1. **समय-साध्य**: एक-एक कर सभी छात्रों की मौखिक परीक्षा लेना अधिक समय लेता है, जो बड़े समूहों में समस्या उत्पन्न कर सकता है।
2. **भावनात्मक दबाव**: कई छात्र मौखिक परीक्षा के दौरान घबराहट या दबाव महसूस करते हैं, जिससे वे अपनी वास्तविक योग्यता नहीं दिखा पाते।
3. **परीक्षक का पक्षपात**: मौखिक परीक्षा में शिक्षक के व्यक्तिगत विचार या पक्षपात का प्रभाव हो सकता है, जिससे मूल्यांकन की सटीकता कम हो सकती है।
4. **दस्तावेजीकरण का अभाव**: लिखित परीक्षा की तरह मौखिक परीक्षा के परिणाम को आसानी से दस्तावेजीकृत नहीं किया जा सकता, जिससे पुनः मूल्यांकन का अवसर कम हो जाता है।
5. **समान मूल्यांकन का अभाव**: मौखिक परीक्षा में प्रश्नों का स्वरूप और जटिलता एक छात्र से दूसरे छात्र के लिए अलग हो सकती है, जिससे मूल्यांकन में असमानता पैदा हो सकती है।

निष्कर्ष: कहा जा सकता है कि मौखिक परीक्षा छात्रों के संचार कौशल और सोचने की शक्ति के परीक्षण के लिए प्रभावी है, लेकिन यह समय-साध्य है और मानसिक दबाव का कारण बन सकती है। उचित योजना और निष्पक्ष मूल्यांकन के माध्यम से इसकी हानियों को दूर किया जा सकता है।

3. State and explain the criteria of a good test. 2019, 2022

Ans: परिचय: शिक्षा प्रणाली में परीक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ये छात्रों के ज्ञान और कौशल का आकलन करने के लिए उपयोग की जाती हैं। एक अच्छी परीक्षा सुनिश्चित करती है कि छात्र अपने विषय को सही तरीके से समझते हैं और उनकी प्रगति का सही ढंग से मूल्यांकन किया जा रहा है।

सु-आविक्षा की गुणता और व्याख्या: एक अच्छी परीक्षा को छात्रों के ज्ञान, कौशल और क्षमताओं का उचित आकलन करने में सक्षम होना चाहिए। एक अच्छी परीक्षा की कुछ विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

1. **वैधता (Validity):** एक परीक्षा की वैधता यह दर्शाती है कि परीक्षा वास्तव में जिस चीज़ का आकलन करने के लिए बनाई गई है, क्या वह सही तरीके से मापती है। अर्थात, यदि परीक्षा छात्रों के ज्ञान या कौशल का आकलन करने के लिए है, तो इसे उन क्षमताओं को सही तरीके से मापना चाहिए। **उदाहरण:** यदि एक गणितीय परीक्षा में भाषाई प्रश्न शामिल होते हैं, तो यह अप्रासंगिक होगा और इसकी वैधता खो देगी।
2. **विश्वसनीयता (Reliability):** एक परीक्षा की विश्वसनीयता यह दर्शाती है कि यदि परीक्षा को एक से अधिक बार लिया जाए, तो क्या परिणाम लगातार होंगे। यदि एक ही छात्र एक से अधिक बार परीक्षा देता है और हर बार परिणामों में बड़ा परिवर्तन होता है, तो परीक्षा विश्वसनीय नहीं है। **उदाहरण:** यदि परीक्षा के प्रश्न स्पष्ट हैं और छात्रों को आवश्यक निर्देश दिए गए हैं, तो परिणाम विश्वसनीय होंगे।
3. **वस्तुनिष्ठता (Objectivity):** एक अच्छी परीक्षा में परीक्षक की व्यक्तिगत राय या पक्षपात का कोई प्रभाव नहीं होना चाहिए। परीक्षा के परिणामों के आधार पर छात्रों का उचित मूल्यांकन किया जाना चाहिए। **उदाहरण:** यदि प्रश्नों में बहुविकल्पीय (MCQ) प्रश्न हैं, तो परीक्षक की व्यक्तिगत राय छात्रों के उत्तरों पर कोई प्रभाव नहीं डालती है, जिससे यह वस्तुनिष्ठ होती है।
4. **व्यवहारिकता (Practicability):** एक परीक्षा की व्यवहारिकता का अर्थ है कि इसे संचालित करना कितना आसान और व्यावहारिक है। जैसे: समय, लागत, और आवश्यक सामग्री की उपलब्धता होनी चाहिए। **उदाहरण:** ऐसे प्रश्न तैयार किए जाने चाहिए जिन्हें निर्धारित समय में पूरा किया जा सके और जिनका मूल्यांकन करना सरल हो।
5. **समग्रता (Comprehensiveness):** एक अच्छी परीक्षा छात्रों के समग्र ज्ञान और कौशल का आकलन करती है। अर्थात, इसे किसी विशेष विषय के विभिन्न पहलुओं को शामिल करना चाहिए। **उदाहरण:** अंग्रेजी भाषा की परीक्षा में केवल लेखन का ही नहीं, बल्कि श्रवण और बोलने के कौशल का भी मूल्यांकन किया जाना चाहिए।
6. **लचीलापन (Flexibility):** एक अच्छी परीक्षा छात्रों की विभिन्न प्रकार की क्षमताओं और आवश्यकताओं के अनुसार अनुकूल होनी चाहिए। इसे छात्रों की विभिन्न शिक्षण विधियों और परिवेशों को ध्यान में रखकर तैयार किया जाना चाहिए। **उदाहरण:** यदि परीक्षा ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरीकों से ली जा सके, तो यह लचीली होगी।

एक अच्छी परीक्षा शिक्षा के स्तर को सुधारने में मदद करती है और छात्रों की वास्तविक कौशल और ज्ञान के मूल्यांकन में प्रभावी भूमिका निभाती है। एक अच्छी परीक्षा छात्रों और शिक्षकों दोनों के लिए सटीक और गुणवत्ता वाले परिणाम प्रदान करती है।

4. What is projective test of personality? Write in brief any two type of projective tests. 2017, 2020, 2022

Ans: व्यक्तित्व की प्रक्षिप्ति मूल्यांकन एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन विधि है, जो प्रतिभागियों के अवचेतन विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने में मदद करती है। ये परीक्षण उनके व्यक्तित्व और मानसिक स्थिति के गहरे पहलुओं का विश्लेषण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

व्यक्तित्व की प्रक्षिप्ति:

व्यक्तित्व की प्रक्षिप्ति एक मानसिक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अपनी भावनाओं, विचारों या अनुभवों को दूसरों में स्थानांतरित करता है। इस प्रक्रिया में, व्यक्ति अपनी आंतरिक मानसिक स्थिति को बाहरी दुनिया के लोगों पर प्रक्षिप्त करता है, जो उनके व्यवहार, प्रतिक्रियाओं और दृष्टिकोण में परिलक्षित होती है।

प्रक्षिप्ति की विशेषताएँ:

- **अवचेतन मन:** एक व्यक्ति के अवचेतन मन से आने वाली भावनाएँ और विचार प्रक्षिप्ति के माध्यम से व्यक्त होते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई अन्य लोगों में दोष ढूंढता है, तो यह उनकी अपनी असुविधा या आंतरिक संघर्ष का प्रतिबिंब हो सकता है।
- **रिश्तों पर दृष्टिकोण:** प्रक्षिप्ति व्यक्ति के संबंधों के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकती है। उदाहरण के लिए, यदि कोई दूसरों पर संदेह करता है, तो यह उनके अपने विश्वासघात की भावनाओं के कारण हो सकता है।
- **मानसिक स्वास्थ्य:** प्रक्षिप्ति किसी व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण हो सकता है। विशेष रूप से, मनोविश्लेषण में इसका उपयोग किया जाता है, जहां एक विशेषज्ञ व्यक्ति की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करके उनके आंतरिक स्थिति का अनुमान लगा सकता है।

प्रक्षिप्ति मूल्यांकन की दो प्रकारें:

1. **रोर्शाच परीक्षण:** रोर्शाच परीक्षण एक स्याही धब्बा विश्लेषण विधि है, जिसमें प्रतिभागियों को विभिन्न अस्पष्ट स्याही धब्बे दिखाए जाते हैं और उनसे प्रत्येक धब्बे के बारे में अपने विचार और भावनाएँ वर्णन करने के लिए कहा जाता है। यह परीक्षण प्रतिभागी के अवचेतन मन और व्यक्तित्व लक्षणों का विश्लेषण करता है।
2. **थीमैटिक एपरसेप्शन टेस्ट (TAT):** TAT में, प्रतिभागियों को विभिन्न चित्र दिखाए जाते हैं और उनसे उन चित्रों के आधार पर एक कहानी बनाने के लिए कहा जाता है। यह कहानी उनके आंतरिक विचारों, भावनाओं और संबंधों के पहलुओं को प्रकट करने में मदद करती है, जो उनके व्यक्तित्व के गहरे स्तरों को समझने में सहायक होती है।

रोर्शाच परीक्षण और थीमैटिक एपरसेप्शन परीक्षण दोनों ही व्यक्तित्व की प्रक्षिप्ति मूल्यांकन के प्रभावी तरीके हैं। ये परीक्षण प्रतिभागी के अवचेतन मन और आंतरिक भावनाओं का विश्लेषण करने में मदद करते हैं, जो उनके मानसिक स्वास्थ्य और व्यवहार में सुधार के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

5. How does observational Technique and self-reporting technique help in evolution process of learners? 2019

Ans: परिचय: पर्यवेक्षण पद्धति और आत्म-प्रतिबिंबित पद्धति शिक्षण और मूल्यांकन के महत्वपूर्ण घटक हैं। ये विधियाँ छात्रों के व्यवहार, विचारों और भावनाओं का विश्लेषण करने में सहायता करती हैं, जिससे शिक्षकों को शिक्षण प्रक्रिया की गहरी समझ प्राप्त होती है और गुणवत्ता में सुधार करने में मदद मिलती है।

पर्यवेक्षण पद्धति और आत्म-प्रतिबिंबित पद्धति का मूल्यांकन:

1. **पर्यवेक्षण पद्धति:**

- **विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण:** पर्यवेक्षण पद्धति में छात्रों के व्यवहार, दृष्टिकोण और गतिविधियों का सीधे अवलोकन किया जाता है। यह छात्रों के वास्तविक व्यवहार को समझने में मदद करता है, जो परीक्षा के परिणामों की तुलना में अधिक प्रभावी होता है।
- **विविधता को समझना:** यह पद्धति शिक्षकों को विभिन्न छात्रों और उनके व्यवहार की विविधता के बारे में जानकारी देती है। शिक्षक विभिन्न छात्रों के शिक्षण प्रक्रिया और प्रतिक्रियाओं के बारे में गहराई से जान सकते हैं।
- **मूल्यांकन की समय सीमा:** पर्यवेक्षण पद्धति के माध्यम से, शिक्षक विभिन्न परिस्थितियों और समय में छात्रों के व्यवहार का अवलोकन कर सकते हैं, जिससे मूल्यांकन के लिए अधिक विस्तृत और सटीक जानकारी प्राप्त होती है।

2. **आत्म-प्रतिबिंबित पद्धति:**

- **स्व-चेतना:** आत्म-प्रतिबिंबित पद्धति में, छात्र अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को व्यक्त करते हैं। यह उनकी स्व-चेतना को बढ़ाता है और उन्हें अधिक आत्मविश्वासी बनने में मदद करता है।
- **मानसिक स्थिति:** यह पद्धति शिक्षकों को छात्रों की मानसिक स्थिति और उनके शिक्षण अनुभवों के बारे में जानने में मदद करती है। यह शिक्षकों को छात्रों की ताकत और कमजोरियों को पहचानने में सहायता करती है।
- **प्रतिक्रिया और प्रतिबिंब:** आत्म-प्रतिबिंबित पद्धति के माध्यम से, छात्र अपनी शिक्षण प्रक्रियाओं पर विचार करने में सक्षम होते हैं। यह उन्हें अपने शिक्षण अनुभवों का मूल्यांकन करने और भविष्य के लिए सुधार के मार्ग खोजने में मदद करता है।

पर्यवेक्षण पद्धति और आत्म-प्रतिबिंबित पद्धति दोनों ही मूल्यांकन प्रक्रियाओं को अधिक प्रभावी और गहरी समझ के लिए सहायक हैं। ये शिक्षकों को छात्रों के व्यवहार और मानसिक स्थितियों का विश्लेषण करने में मदद करती हैं, जो शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

6. What do you mean by Reliability of a test? Briefly describe two ways in which reliability is determined. What are the factors (intrinsic & extrinsic) that affect the reliability of test scores? 2018, 2021, 2023

Ans: मूल्यांकन की विश्वसनीयता मूल्यांकन की विश्वसनीयता मानसिक मूल्यांकन का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो सुनिश्चित करता है कि परीक्षा के परिणाम लगातार और सटीक होते हैं। विश्वसनीय माप विधियाँ परीक्षा की सटीकता और छात्र की मानसिक स्थिति का सही विश्लेषण करने के लिए अत्यावश्यक होती हैं।

मूल्यांकन की विश्वसनीयता: मूल्यांकन की विश्वसनीयता एक विशिष्ट परीक्षण या मूल्यांकन विधि की स्थिरता और निरंतरता को संदर्भित करती है। इसका मतलब है कि यदि मूल्यांकन को कई बार लिया जाता है या विभिन्न परिस्थितियों में किया जाता है, तो परिणाम स्थिर और समान रहेंगे। उच्च विश्वसनीयता यह दर्शाती है कि परीक्षण परिणामों में पुनरावृत्ति के समय बहुत अधिक परिवर्तन नहीं होगा।

विश्वसनीयता के गुण:

1. **निरंतरता:** परिणामों को कई बार परीक्षण करने पर लगभग समान होना चाहिए। यह सुनिश्चित करता है कि परीक्षण समय के साथ समान क्षमता को माप रहा है।
2. **स्थिरता:** एक विश्वसनीय परीक्षण विभिन्न समयों पर लिया जाने पर या विभिन्न परिस्थितियों में किया जाने पर समान परिणाम देता है।
3. **निर्भरता:** यह सुनिश्चित करना कि परिणाम विश्वसनीय और भरोसेमंद हैं।
4. **जानकारी की सटीकता:** विश्वसनीय परीक्षणों के माध्यम से प्रदान किए गए परिणाम सही और सटीक होते हैं, जो छात्र की वास्तविक क्षमताओं को दर्शाते हैं।

<u>विश्वसनीय माप के तरीके:</u>

1. **पुनरावृत्ति विधि (Test-Retest Method):** समान परीक्षण को एक ही व्यक्ति पर कई बार लिया जाता है। परिणामों की तुलना करके विश्वसनीयता निर्धारित की जाती है। उदाहरण के लिए, यदि एक छात्र दो सप्ताह के अंतराल पर वही गणित परीक्षा देता है, तो उसके अंक करीब होने चाहिए।
2. **आंतरिक संगति विधि (Internal Consistency Method):** मूल्यांकन के कई हिस्सों के बीच संगति को मापता है। उदाहरण के लिए, यदि एक परीक्षण के पहले और दूसरे आधे में छात्र के उत्तरों के बीच संगति है, तो मूल्यांकन आंतरिक रूप से विश्वसनीय है।

मूल्यांकन स्कोर की विश्वसनीयता को प्रभावित करने वाले कारक
मूल्यांकन स्कोर की विश्वसनीयता आंतरिक और बाह्य कारकों से प्रभावित होती है। मुख्य बिंदुओं में शामिल हैं:

<u>आंतरिक कारक:</u>

- शिक्षक का अनुभव और प्रशिक्षण
- मूल्यांकन के डिज़ाइन और मूल्यांकन विधियाँ
- छात्र की तैयारी और ध्यान

<u>बाह्य कारक:</u>

- परीक्षा का वातावरण (शांत, अनुकूल, या विघटनकारी)
- समय का दबाव
- छात्र की मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य स्थिति

मूल्यांकन स्कोर की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए आंतरिक और बाह्य दोनों कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रश्नों की गुणवत्ता, मूल्यांकन के दौरान का वातावरण और छात्र की मानसिक स्थिति विश्वसनीयता को प्रभावित करते हैं, जो शैक्षणिक प्रक्रिया की गुणवत्ता को सुधारने में सहायक होते हैं।

सारांश में, मूल्यांकन की विश्वसनीयता सुनिश्चित करना मानसिक मूल्यांकन का एक मूलभूत आधार है, जो छात्रों की वास्तविक क्षमताओं का निर्धारण करने में सहायक होता है।

7. Discuss about nature and purposes of evaluation. 2018, 2020, 2023

Ans: मूल्यांकन शिक्षण प्रक्रिया का एक अविभाज्य हिस्सा है। यह छात्रों के ज्ञान, कौशल और व्यवहार का विश्लेषण करने में सहायक होता है। मूल्यांकन की प्रकृति और उद्देश्य को समझना शिक्षकों की शिक्षण रणनीतियों को सुधारने और छात्रों की प्रगति की निगरानी करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मूल्यांकन की प्रकृति और उद्देश्य: मूल्यांकन की प्रकृति और उद्देश्य एक शैक्षिक प्रक्रिया के महत्वपूर्ण घटक हैं। ये छात्रों की सीखने की प्रगति और प्रभावशीलता का विश्लेषण करने में सहायक होते हैं।

मूल्यांकन की प्रकृति:

1. **आवश्यकता:** मूल्यांकन एक प्रक्रिया है जो शिक्षकों और छात्रों को सीखने के अनुभव को समझने में मदद करती है। यह छात्रों के वास्तविक ज्ञान और कौशल का प्रतिबिंब होती है।
2. **डेटा संकलन:** मूल्यांकन जानकारी इकट्ठा करने का एक तरीका है, जो छात्रों के व्यवहार, मनोभाव और शिक्षण प्रक्रिया के बारे में जानकारी प्रदान करता है।
3. **व्यापक:** मूल्यांकन केवल परीक्षा के परिणामों पर आधारित नहीं होता, बल्कि यह परियोजनाओं, प्रस्तुतियों और अन्य गतिविधियों के आधार पर भी हो सकता है।
4. **नियमित:** इसे लगातार संचालित किया जाता है, जो समय-समय पर छात्रों की प्रगति को समझने में मदद करता है।
5. **प्रतिक्रिया प्रदान करना:** यह छात्रों के लिए आत्म-मूल्यांकन और शिक्षकों के लिए फीडबैक प्रदान करता है, जो उनके सुधार के लिए महत्वपूर्ण होता है।

मूल्यांकन के उद्देश्य:

1. **छात्र की दक्षता मापना:** मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य छात्रों के सीखने के स्तर और उनकी दक्षताओं को मापना है।
2. **शिक्षण रणनीतियों को सुधारना:** शिक्षकों के लिए मूल्यांकन शिक्षण रणनीतियों और विधियों को सुधारने के अवसर पैदा करता है।
3. **आंतरिक और बाह्य समीक्षा:** यह छात्रों की ताकत और कमजोरियों की पहचान करने में सहायक होता है और शिक्षण प्रक्रिया को संशोधित करने के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान करता है।
4. **निर्देश प्रदान करना:** यह शिक्षकों को यह बताता है कि किन क्षेत्रों पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।
5. **गुणवत्ता में सुधार:** मूल्यांकन सीखने की गुणवत्ता में सुधार करने में सहायक होता है ताकि छात्र अपनी क्षमता को पूरी तरह से विकसित कर सकें।
6. **संरचना बनाना:** यह एक शैक्षिक ढांचा बनाने में मदद करता है, जो शिक्षकों और छात्रों के लिए दिशा प्रदान करता है।

मूल्यांकन की प्रकृति और उद्देश्य शिक्षण प्रक्रिया की गुणवत्ता में सुधार के लिए अनिवार्य हैं। यह शिक्षकों के निर्णय लेने की प्रक्रिया को सरल बनाता है और छात्रों के विकास और शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायता करता है, जो समग्र शैक्षिक परिणामों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

8. Briefly write the interrelation between Measurement Assessment and Evaluation. 2017, 2021

Ans: शिक्षा के क्षेत्र में मापन, मानककरण और मूल्यांकन के बीच का अंतरसंबंध अत्यंत महत्वपूर्ण है। ये तीनों अवधारणाएँ एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं और एक प्रक्रिया के रूप में एक साथ कार्य करती हैं।

1. मापन (Measurement) मापन एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से किसी वस्तु का गुणात्मक या मात्रात्मक मापन किया जाता है। यह एक निश्चित सीमा या पैमाने पर जानकारी एकत्र करता है। उदाहरण के लिए, छात्रों के परीक्षा में प्राप्त अंकों का मापन करना।

2. मानककरण (Evaluation) मानककरण एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से किसी जानकारी का मूल्यांकन किया जाता है। यह मापन द्वारा एकत्रित जानकारी के आधार पर होता है। मानककरण के माध्यम से यह निर्णय लिया जाता है कि मापन के परिणाम वांछित मानकों को पूरा कर रहे हैं या नहीं।

3. मूल्यांकन (Assessment) मूल्यांकन एक समग्र प्रक्रिया है जो मापन और मानककरण का मिश्रण है। मूल्यांकन के माध्यम से छात्रों के सीखने की स्थिति, कौशल और प्रगति का चित्रण प्राप्त होता है। यह शिक्षकों को अपनी शिक्षण योजना और रणनीति निर्धारित करने में सहायक होता है।

अंतरसंबंध

- **मापन और मानककरण का संबंध**: मापन द्वारा एकत्रित जानकारी मानककरण के लिए आधार तैयार करती है।
- **मानककरण और मूल्यांकन का संबंध**: मानककरण का परिणाम मूल्यांकन का हिस्सा होता है, जिसमें यह निर्णय लिया जाता है कि छात्र या प्रक्रिया कितनी प्रभावी है।
- **मापन और मूल्यांकन का संबंध**: मापन से प्राप्त जानकारी के आधार पर मूल्यांकन किया जाता है, जिससे छात्र की शिक्षा के स्तर और आवश्यक सुधार की दिशा निर्धारित होती है।

ये तीनों प्रक्रियाएँ शिक्षा में एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं और शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने में सहायक होती हैं। शिक्षकों के लिए इनका समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है, ताकि वे अपने शिक्षण की रणनीति और छात्रों की प्रगति को और अधिक प्रभावी ढंग से प्रबंधित कर सकें।

9. What is content validity? How can you determaine this validity? 2017, 2021

Ans: विषयगत यथार्थता (Content Validity) एक मूल्यांकन पद्धति की उस विशेषता को संदर्भित करती है जो यह सुनिश्चित करती है कि मूल्यांकन उपकरण (जैसे, प्रश्नपत्र या मूल्यांकन रणनीति) उस विषयवस्तु या अवधारणा का एक प्रमाणित और उचित प्रतिनिधित्व प्रदान करता है जिसे यह मापना चाहता है। विषयगत यथार्थता यह सुनिश्चित करती है कि प्रश्न या मूल्यांकन तत्व विशेष शैक्षिक लक्ष्यों या मानकों के साथ संगत हैं।

विषयगत यथार्थता निर्धारित करने की विधियाँ:

1. **शैक्षिक उद्देश्यों का विश्लेषण:** पहले, शैक्षिक उद्देश्य या मानदंडों को स्पष्ट रूप से निर्धारित करना होगा। ये उद्देश्य उस विषयवस्तु या अवधारणाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्हें मूल्यांकित किया जाएगा।
2. **प्रश्नों का विकास:** इसके बाद, ऐसे प्रश्न या मूल्यांकन तत्व बनाए जाने चाहिए जो सीधे निर्धारित लक्ष्यों से संबंधित हों। प्रश्न उस प्रासंगिक विषयवस्तु या अवधारणाओं पर आधारित होने चाहिए।
3. **विशेषज्ञों की राय:** विषयगत यथार्थता को विशेषज्ञों द्वारा मूल्यांकन करके परीक्षण किया जाना चाहिए। विशेषज्ञ मूल्यांकन सामग्री और उनके शैक्षिक लक्ष्यों या मानदंडों के साथ संगति की जांच कर सकते हैं।
4. **प्रतिक्रिया एकत्रित करना:** छात्रों से प्रतिक्रिया ली जा सकती है ताकि यह पता चल सके कि वे मूल्यांकन तत्वों को सटीक रूप से दर्शाते हैं या नहीं।
5. **परीक्षा परिणामों का विश्लेषण:** इसके बाद, परीक्षा परिणामों का विश्लेषण किया जाना चाहिए ताकि यह देखा जा सके कि प्रश्नों के उत्तर छात्रों के वास्तविक कौशल और ज्ञान को दर्शाते हैं या नहीं।
6. **पुनरीक्षण:** मूल्यांकन तत्वों का पुनरीक्षण किया जा सकता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे सही तरीके से निर्धारित लक्ष्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

विषयगत यथार्थता सुनिश्चित करना शैक्षिक मूल्यांकन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो छात्रों के वास्तविक ज्ञान और कौशल की पुष्टि के लिए आवश्यक है। सही मूल्यांकन शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद करता है।

10. What is meant by Problem Learner? Mention the different types of problems usually found in classroom. 2017, 2021, 2023

Ans: समस्यामूलक विद्यार्थी उन विद्यार्थियों को कहते हैं जो विभिन्न कारणों से शिक्षण प्रक्रिया में चुनौतियों या बाधाओं का सामना करते हैं। इस प्रकार के विद्यार्थी आमतौर पर कक्षा में ध्यान केंद्रित करने में असमर्थ होते हैं, सही तरीके से सीखने की क्षमता खो देते हैं या व्यवहार संबंधी समस्याएं उत्पन्न करते हैं। समस्यामूलक विद्यार्थियों के साथ काम करने के लिए शिक्षकों को उचित रणनीतियों और सहानुभूति का उपयोग करने की आवश्यकता होती है।

<u>कक्षा में सामान्यतः देखे जाने वाले विभिन्न प्रकार के समस्याएं:</u>

1. **<u>आंतरिक समस्याएं:</u>**
    - **ध्यान की कमी:** विद्यार्थी कक्षा में ध्यान केंद्रित करने में असफल रहता है।
    - **चिंता और तनाव:** परीक्षा या कार्य के दबाव के कारण चिंतित रहना।
    - **कम आत्म-विश्वास:** अपनी क्षमताओं पर अनुचित विश्वास न होना।
2. **<u>बाह्य समस्याएं:</u>**
    - **सामाजिक व्यवहार:** सहपाठियों के साथ अच्छे संबंध न होना।
    - **पारिवारिक समस्याएं:** पारिवारिक अशांति या तनाव।
    - **बीमारियाँ:** शारीरिक या मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं।
3. **<u>शैक्षिक समस्याएं:</u>**

- **पढ़ाई के प्रति रुचि की कमी:** विषयों में रुचि न होना।
- **कमजोर लेखन कौशल:** लेखन की दक्षता की कमी।
- सीखने की गति के साथ तालमेल न बिठाना।

4. **आदत संबंधी समस्याएं:**
   - **समय प्रबंधन की कमी:** कार्यों के लिए समय का सही उपयोग न कर पाना।
   - **स्व-अनुशासन की कमी:** नियमित रूप से अध्ययन और कार्यों को पूरा करने में असमर्थ होना।
5. **व्यवहारिक समस्याएं:**
   - **विघटनकारी व्यवहार:** कक्षा में विघ्न उत्पन्न करना या सहपाठियों के प्रति हिंसा प्रदर्शित करना।
   - **प्राधिकार के प्रति अवज्ञा:** शिक्षकों के निर्देशों की अनदेखी करना।

ये समस्याएं उन चुनौतियों में से हैं जो शिक्षकों के लिए कठिनाई उत्पन्न करती हैं और विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए शिक्षकों को उचित सहायता और रणनीतियों को लागू करना आवश्यक है।

11. What do you meant by intelligence test? What are the importances in education to measure intelligence of learners? 2018, 2020, 2022

Ans: बुद्धि परीक्षा (Intelligence Test) से सामान्यतः एक मानसिक परीक्षण के संकलन को समझा जाता है जो छात्रों की बुद्धिमत्ता, समस्या हल करने की क्षमता और मानसिक कौशल को मापता है। ये परीक्षण विभिन्न प्रकार की रचनात्मक, तार्किक, और गणनात्मक क्षमताओं का मूल्यांकन करते हैं और सामान्यतः एक संख्या या स्कोर के माध्यम से परिणाम प्रदान करते हैं।

छात्रों की बुद्धि मापने का महत्व:

1. **शिक्षा का अनुकूलन:** छात्रों की बुद्धिमत्ता के स्तर को निर्धारित करके शिक्षक उनके लिए उपयुक्त शिक्षा रणनीतियों और पाठ्यक्रमों को विकसित कर सकते हैं।
2. **शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान:** बुद्धि परीक्षण के माध्यम से निर्धारित परिणाम छात्रों की शक्तियों और कमजोरियों की पहचान करने में मदद करते हैं, जिससे विशेष सहायता की आवश्यकता को समझने में सहायता मिलती है।
3. **छात्रों का मानसिक विकास:** बुद्धि परीक्षण छात्रों के मानसिक विकास के विभिन्न स्तरों और उनके विकास की अवधि निर्धारित करने में मदद करते हैं।
4. **सही मार्गदर्शन प्रदान करना:** बुद्धि परीक्षण शिक्षकों और अभिभावकों को छात्रों के लिए उपयुक्त करियर मार्गदर्शन प्रदान करने में मदद करते हैं।
5. **शैक्षिक परिणामों की भविष्यवाणी:** परीक्षण के परिणाम छात्रों की भविष्य की शैक्षिक सफलता और अन्य सामाजिक गतिविधियों के बारे में पूर्वानुमान प्रदान कर सकते हैं।
6. **सामाजिक संबंध:** छात्रों के बुद्धि स्तर को निर्धारित करके सामाजिक और पारस्परिक संबंधों को सुधारने में मदद मिल सकती है।

7. **संशोधन और विकास:** बुद्धि परीक्षण के परिणाम शिक्षकों को शिक्षा पद्धतियों में परिवर्तन और सुधार का अवसर प्रदान करते हैं।

बुद्धि परीक्षा छात्रों की बुद्धिमत्ता और संभावनाओं को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो शिक्षा की संरचना और प्रभावशीलता को बढ़ाने में सहायक होती है। यह छात्रों के विकास और सफलता के लिए एक मूल्यवान उपकरण के रूप में कार्य करती है।

12. Briefly illustrate different tools and techniques for identification of 'Problem Learners'. Write the roles of teachers in guidance and counselling. 2018

Ans: <u>परिचय:</u> समस्यामूलक छात्र वे छात्र हैं जो विभिन्न कारणों से शिक्षा में चुनौतियों का सामना करते हैं। उनकी सही पहचान और आवश्यक सहायता सुनिश्चित करने के लिए शिक्षकों को विभिन्न उपकरणों और रणनीतियों का उपयोग करने की आवश्यकता है, जो शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने में मदद करते हैं।

<u>समस्यामूलक छात्रों की पहचान के उपकरण और रणनीतियाँ:</u>

1. **मनो-सामाजिक मूल्यांकन:** छात्रों के सामाजिक और मानसिक स्वास्थ्य के आधार पर पहचान करना। यह उनके व्यवहार संबंधी समस्याओं, आत्मविश्वास और तनाव के स्तर का विश्लेषण करता है।
2. **शिक्षा मूल्यांकन:** परीक्षा परिणामों और अन्य शैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से छात्रों की क्षमता और प्रगति का निर्धारण करना।
3. **कक्षा पर्यावरण अवलोकन:** कक्षा में छात्रों के व्यवहार और ध्यान के स्तर का अवलोकन करना। यदि कोई छात्र नियमित रूप से कक्षा में विघ्न डालता है या सीखने के लिए अनिच्छुक है, तो उसे आसानी से पहचाना जा सकता है।
4. **क्षेत्र अवलोकन:** सहपाठियों के साथ छात्रों के व्यवहार की निगरानी करना ताकि उनके सामाजिक संबंधों और आचरण की पुष्टि की जा सके।
5. **विशेषज्ञ मूल्यांकन:** मनोवैज्ञानिक या परामर्शदाताओं द्वारा छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य का मूल्यांकन करना, जो मानसिक या सीखने की समस्याओं की पहचान करने में मदद कर सकते हैं।
6. **फीडबैक सत्र:** नियमित रूप से छात्रों से फीडबैक प्राप्त करना, जो उनकी सीखने की प्रक्रिया और समस्याओं के बारे में जानकारी प्रदान करता है।
7. **अभिभावक परामर्श:** अभिभावकों के साथ चर्चा करके छात्रों की समस्याओं और आदतों के बारे में जानकारी एकत्र करना।

<u>निर्देश और परामर्श में शिक्षकों की भूमिका:</u>

1. **ध्यानपूर्वक सुनना:** शिक्षकों को छात्रों की बातों को ध्यान से सुनना चाहिए और उनकी चिंताओं और समस्याओं को समझने की कोशिश करनी चाहिए।
2. **सहानुभूति दिखाना:** शिक्षकों को छात्रों के प्रति सहानुभूति दिखानी चाहिए और उनकी समस्याओं पर चर्चा करने के लिए खुले रहना चाहिए।

3. **योजना बनाना:** शिक्षकों को समस्यामूलक छात्रों के लिए व्यक्तिगत योजनाएँ बनानी चाहिए, ताकि वे उनकी समस्याओं को सुलझाने में मदद कर सकें।
4. **अभिभावकों और विशेषज्ञों के साथ सहयोग:** शिक्षकों को अभिभावकों और अन्य विशेषज्ञों के साथ सहयोग करना चाहिए ताकि छात्रों की समस्याओं के समाधान के लिए एक सामूहिक प्रयास किया जा सके।
5. **शिक्षण रणनीतियाँ विकसित करना:** शिक्षकों को विभिन्न शिक्षण रणनीतियों का उपयोग करना चाहिए, जैसे कि छोटे समूहों में काम करना, ताकि छात्र अपनी समस्याओं पर चर्चा और समाधान कर सकें।
6. **सकारात्मक वातावरण बनाना:** कक्षा में एक सकारात्मक और सहायक वातावरण स्थापित करना जहाँ छात्र स्वतंत्र रूप से सीख सकें और अपनी समस्याओं पर चर्चा कर सकें।

निष्कर्ष: शिक्षकों को समस्यामूलक छात्रों की पहचान के लिए विभिन्न उपकरणों और रणनीतियों का उपयोग करना चाहिए और उन्हें उचित मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करनी चाहिए, ताकि छात्र सुधार कर सकें और अपनी शैक्षिक यात्रा में आगे बढ़ सकें।

13. Briefly discuss different steps involved in the construction of an achievement test. 2019, 2022

Ans: प्रवीणता परीक्षण का निर्माण एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो छात्रों की कौशल और ज्ञान को मापता है। जब इस प्रक्रिया में सही चरणों का पालन किया जाता है, तो परीक्षण के परिणाम शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद कर सकते हैं और छात्रों की प्रगति में योगदान कर सकते हैं।

प्रवीणता परीक्षण के निर्माण के लिए आवश्यक चरण:

1. **अनुसंधान का उद्देश्य निर्धारित करें:** परीक्षण का उद्देश्य और इसके परिणाम स्पष्ट रूप से निर्धारित करें।
2. **मूल्यांकन नीतियां स्थापित करें:** प्रवीणता के मानदंड और मूल्यांकन के तरीकों को निर्धारित करें।
3. **पूर्व शोध:** पहले से मौजूद मूल्यांकन विधियों और परीक्षणों का अध्ययन करें, जो नए परीक्षण के लिए उपयोगी हो सकते हैं।
4. **सामग्री का चयन:** परीक्षण संचालन के लिए आवश्यक सामग्री, जैसे प्रश्नावली, ग्राफ, केस स्टडी आदि तैयार करें।
5. **परीक्षा निर्माण:** परीक्षण के प्रश्न और समस्याएँ बनाएं, ताकि छात्रों की कौशल और प्रवीणता को मापा जा सके।
6. **पायलट परीक्षण:** परीक्षण को एक छोटे समूह पर लागू करके इसकी प्रभावशीलता और स्पष्टता सुनिश्चित करें।
7. **डेटा संग्रह:** परीक्षण के परिणाम एकत्र करें और उनका मूल्यांकन करें।
8. **विश्लेषण:** परिणामों का विश्लेषण करें और आवश्यकता अनुसार मानदंडों को संशोधित करें।
9. **समापन और रिपोर्टिंग:** परीक्षण निर्माण के सभी चरणों पर एक रिपोर्ट तैयार करें और इसे भविष्य के उपयोग के लिए सुरक्षित रखें।

10. **पुनर्मूल्यांकन:** परीक्षण लागू करने के बाद छात्रों की प्रवीणता का मूल्यांकन करें और आवश्यकतानुसार पुनर्विचार और संशोधन करें।

प्रवीणता परीक्षण के निर्माण में सही चरणों का पालन करने से छात्रों की वास्तविक कौशल और ज्ञान का निर्धारण संभव हो जाता है। यह शिक्षकों के लिए प्रभावी दिशा-निर्देश प्रदान करता है, जो शिक्षा की गुणवत्ता और छात्रों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

14. Why do both written test and oral test are essential to evaluate a learner`s achievement? 2019

Ans: छात्र की दक्षता का मूल्यांकन करने के लिए लिखित और मौखिक परीक्षण दोनों की महत्ता अत्यधिक है। एक ओर, लिखित परीक्षण ज्ञान और कौशल की गहराई को मापता है, जबकि मौखिक परीक्षण संचार कौशल और आत्मविश्वास को बढ़ाने में मदद करता है। दोनों विधियाँ शिक्षा के मान में सुधार के लिए महत्वपूर्ण हैं।

लिखित परीक्षण की आवश्यकता:

- **सटीक माप:** लिखित परीक्षण छात्रों के ज्ञान, विश्लेषणात्मक क्षमताओं और समस्या समाधान कौशल को मापने में सहायक होते हैं। यह परीक्षा के परिणामों का सांख्यिकी के माध्यम से विश्लेषण करने की अनुमति देता है।
- **शिक्षा की गहराई:** लिखित प्रश्न छात्रों को विषय के बारे में गहराई से सोचने के लिए मजबूर करते हैं, जो उनके विचार और लेखन कौशल को विकसित करने में मदद करता है।
- **सुसंगत मूल्यांकन:** इस प्रकार के परीक्षण छात्रों के लिए एक सुसंगत मूल्यांकन पद्धति प्रदान करते हैं, जो उनकी क्षमताओं की तुलना करने में सहायक है।
- **वस्तुनिष्ठ स्कोरिंग:** लिखित परीक्षण के परिणामों को आसानी से स्कोर किया जा सकता है, और इसकी तटस्थता अधिक होती है, जिससे सभी छात्रों के लिए समान अवसर उत्पन्न होते हैं।

मौखिक परीक्षण की आवश्यकता:

- **समझ का प्रदर्शन:** मौखिक परीक्षण छात्रों की मौखिक संचार, तर्क लगाने की क्षमता और आत्मविश्वास के स्तर को निर्धारित करने में सहायक होते हैं। यह उन्हें अपने विचारों को व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है।
- **तत्काल प्रतिक्रिया:** शिक्षक छात्रों के उत्तरों पर तुरंत प्रतिक्रिया प्रदान कर सकते हैं, जिससे छात्रों के लिए सीखने में अधिकता होती है।
- **नए विचारों की खोज:** मौखिक परीक्षण के दौरान शिक्षकों के प्रश्न छात्रों में नए विचार और सोचने की प्रक्रिया को जन्म दे सकते हैं, जो उनके सीखने की प्रक्रिया को बेहतर बनाते हैं।
- **व्यक्तिगत संबंध:** मौखिक परीक्षण शिक्षकों और छात्रों के बीच संबंध बनाने का अवसर प्रदान करते हैं, जो शिक्षा के मान में सुधार में सहायक होता है।

लिखित और मौखिक परीक्षण दोनों ही छात्रों की दक्षता के मूल्यांकन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एक ओर, जहाँ लिखित परीक्षण सटीक और सुसंगत माप का अवसर प्रदान करते हैं, वहीं मौखिक

परीक्षण छात्रों की सोचने और संचार करने की क्षमताओं को सुधारने में मदद करते हैं। दोनों का संयोजन एक समृद्ध और प्रभावी मूल्यांकन प्रक्रिया स्थापित करने में संभव है।

15. What is attitude test? Describe any one Interest Inventory in detail. 2019, 2023

Ans: मनोभाव मूल्यांकन एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो छात्रों के व्यवहार, भावनाओं और विश्वासों को निर्धारित करने और मूल्यांकन करने में सहायक होती है। यह शिक्षकों को छात्रों की रुचियों और क्षमताओं को समझने का एक तरीका प्रदान करता है, जो शिक्षण प्रक्रिया को सुधारने और उचित मार्गदर्शन प्रदान करने में मदद करता है।

1. **मनोभाव मूल्यांकन:** मनोभाव मूल्यांकन एक प्रक्रिया है जिसका उपयोग लोगों के मनोभाव, भावनाओं और विश्वासों को निर्धारित और मूल्यांकित करने के लिए किया जाता है। यह छात्रों के मनोभाव, मूल्य और व्यवहार को समझने में मदद करता है, जो उनके शिक्षण प्रक्रिया और विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। मनोभाव मूल्यांकन का उपयोग करके, शिक्षक छात्रों की रुचियों और क्षमताओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, जो शिक्षण रणनीतियों को सुधारने में सहायक होती है।
2. **रुचि इन्वेंटरी:** हाफस्टेडर का रुचि इन्वेंटरी: विवरण: हाफस्टेडर का रुचि इन्वेंटरी एक लोकप्रिय रुचि इन्वेंटरी है, जिसका उपयोग छात्रों की विभिन्न क्षेत्रों के प्रति रुचि निर्धारित करने के लिए किया जाता है। यह छात्रों की पारदर्शिता और उनके पसंदीदा क्षेत्रों को पहचानने में मदद करता है।
3. **संरचना:** यह इन्वेंटरी सामान्यतः प्रश्नावली के रूप में प्रस्तुत की जाती है, जिसमें छात्रों को 30-50 प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं। प्रत्येक प्रश्न में विभिन्न व्यवसायों, शौकों और रुचियों के क्षेत्रों का उल्लेख होता है, और छात्र अपनी रुचि के स्तर के अनुसार स्केल (जैसे: 1-5) का उपयोग करके उत्तर देते हैं।

<u>प्रश्न के उदाहरण:</u>

1. विज्ञान में प्रयोग करना।
2. सामाजिक समस्याओं पर चर्चा करना।
3. साहित्य या नाटक पढ़ना और उसका विश्लेषण करना।
4. तकनीकी परियोजनाओं पर काम करना।

<u>मूल्यांकन:</u> छात्रों के उत्तरों का विश्लेषण करके, शिक्षक उनकी रुचि के क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि एक छात्र विज्ञान में उच्च स्कोर प्राप्त करता है, तो वह विज्ञान संबंधित पेशों या विषयों में रुचि रख सकता है। यह शिक्षक को छात्र के लिए उपयुक्त पाठ योजना बनाने में सहायता करता है।

मनोभाव मूल्यांकन, विशेष रूप से रुचि इन्वेंटरी, शिक्षकों के लिए एक मूल्यवान उपकरण है, जो छात्रों के व्यवहार और मनोभाव को समझने के साथ-साथ उनके विकास में सहायता करता है। यह छात्रों की ताकत और कमजोरियों की पहचान करता है, जो उनके सीखने के तरीकों और भविष्य के करियर चयन को प्रभावित कर सकता है।

16. How does self-reporting technique help in evaluation process of learners? 2021

Ans: स्व-रिपोर्टिंग तकनीक छात्रों को अपने व्यक्तिगत अनुभव, विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का एक तरीका है। यह मूल्यांकन प्रक्रिया में विभिन्न तरीकों से सहायता कर सकती है:

1. **आत्म-विश्लेषण और सुधार:** स्व-रिपोर्टिंग तकनीक छात्रों को अपनी शक्तियों और कमजोरियों की पहचान करने में मदद करती है। वे सुधार के लिए विशेष क्षेत्रों को समझ सकते हैं, जो शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने में मदद करती है।
2. **व्यक्तिगत दृष्टिकोण:** छात्र अपने व्यक्तिगत दृष्टिकोण और अनुभव साझा कर सकते हैं, जो शिक्षकों को उनके मनोविज्ञान और सीखने की प्रक्रिया के बारे में गहरी समझ देता है। यह शिक्षकों को छात्रों की रुचियों और क्षमताओं को समझने का अवसर प्रदान करता है।
3. **आत्म-विश्वास बढ़ाना:** स्व-रिपोर्टिंग तकनीक छात्रों के आत्म-विश्वास को बढ़ाने में मदद करती है। जब छात्र अपने विचारों और अनुभवों को व्यक्त करते हैं, तो वे अधिक आत्म-विश्वासी हो जाते हैं, जो सीखने की प्रक्रिया पर सकारात्मक प्रभाव डालता है।
4. **सृजनात्मक सोच:** यह तकनीक छात्रों की सृजनात्मक सोच और समस्या समाधान की क्षमताओं को बढ़ाने में मदद करती है। उन्हें नए विचारों और समाधानों की खोज करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जो उनकी सीखने की प्रक्रिया को और समृद्ध करता है।
5. **मूल्यांकन प्रक्रिया का विस्तार:** स्व-रिपोर्टिंग तकनीक मूल्यांकन प्रक्रिया में स्पष्टता और व्यापकता लाती है। यह केवल परीक्षा परिणामों पर ध्यान नहीं देती, बल्कि छात्रों के समग्र विकास पर भी ध्यान केंद्रित करती है।
6. **रिश्ते बनाना:** यह तकनीक शिक्षकों और छात्रों के बीच मजबूत संबंधों को बढ़ावा देती है, जो एक अधिक सहायक और सकारात्मक सीखने के वातावरण का निर्माण करती है।

कुल मिलाकर, स्व-रिपोर्टिंग तकनीक शिक्षा में एक समग्र और व्यक्तिगत मूल्यांकन प्रक्रिया विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह छात्रों की आत्म-प्रेरणा और सीखने के प्रति रुचि को बढ़ाती है, जो शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार करने में सहायक होती है।

17. What are the importances in Education to measure personality of learners. 2023

Ans: छात्रों के व्यक्तित्व का मापन शिक्षा में एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। यह शिक्षकों को छात्रों के व्यवहार, दृष्टिकोण और सीखने की प्रवृत्तियों को समझने में मदद करता है, जिससे शिक्षण की गुणवत्ता बढ़ाने और उनके समग्र विकास के लिए उचित दिशा-निर्देश प्रदान किए जा सकते हैं। छात्रों के व्यक्तित्व का मापन शिक्षा में कई महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाता है:

1. **सीखने की शैलियों की पहचान:** छात्रों के व्यक्तित्व के गुण उनकी सीखने की शैलियों और प्राथमिकताओं को इंगित करते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ छात्र दृश्य शिक्षार्थी हो सकते हैं, जबकि अन्य श्रवण या काइनेस्टेटिक शिक्षार्थी हो सकते हैं। यह जानकारी शिक्षकों को उनके पाठ योजनाओं और शिक्षण विधियों को अनुकूलित करने में मदद करती है।

2. **व्यवहार और दृष्टिकोण में सुधार:** छात्रों के व्यक्तित्व का मापन उनके व्यवहार और दृष्टिकोण को समझने में मदद करता है। यह शिक्षकों को छात्रों के दृष्टिकोण में बदलाव को पहचानने और तदनुसार सहायता प्रदान करने में मदद करता है।
3. **सामाजिक कौशल का विकास:** व्यक्तित्व का मापन छात्रों के सामाजिक कौशल की पहचान में मदद करता है। यह उनके बीच सहानुभूति, सहयोग, और दूसरों के साथ संबंध बनाने की क्षमता को बढ़ाता है।
4. **आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता बढ़ाना:** छात्रों के व्यक्तित्व का विश्लेषण उनके आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता में वृद्धि करने में मदद कर सकता है। व्यक्तित्व के गुण उनके विश्वास और आत्म-सम्मान को प्रभावित कर सकते हैं।
5. **मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण:** छात्रों के व्यक्तित्व का मापन उनके मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण का संकेत दे सकता है। शिक्षकों को इस जानकारी का उपयोग करके मानसिक तनाव, चिंता या अन्य समस्याओं की पहचान करने और आवश्यक सहायता प्रदान करने में मदद मिलती है।
6. **कैरियर मार्गदर्शन:** छात्रों के व्यक्तित्व का प्रकार उनके भविष्य के करियर के विकल्पों को प्रभावित कर सकता है। शिक्षकों को इस जानकारी का उपयोग करके छात्रों के लिए उपयुक्त करियर पथ प्रदान करने में मदद मिलती है।
7. **भागीदारी को प्रोत्साहित करना:** जब छात्रों के व्यक्तित्व के गुणों को ध्यान में रखा जाता है, तो वे विभिन्न गतिविधियों में अधिक रुचि लेने लगते हैं। इससे उनके शैक्षिक अनुभव को और समृद्ध किया जाता है।

छात्रों के व्यक्तित्व का मापन शैक्षणिक प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और लाभदायक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह शिक्षकों को छात्रों के व्यवहार, दृष्टिकोण, और सुधार के क्षेत्रों की पहचान करने में मदद करता है, जो मिलकर शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने में सहायक होता है।

Marks: 10

1. What is achievement test? Briefly discuss the steps followed in construction of an achievement test. 2017, 2020

Ans:

भूमिका: अर्जन परीक्षण एक मूल्यांकन पद्धति है, जिसके माध्यम से किसी व्यक्ति की विशिष्ट कौशल या ज्ञान का माप लिया जाता है। इसका उपयोग सामान्यत: शैक्षणिक या पेशेवर संदर्भ में किया जाता है, जहां उम्मीदवार की एक विशिष्ट स्तर की योग्यताओं या कौशलों का मूल्यांकन किया जाता है। भाषा शिक्षा से लेकर तकनीकी कौशल तक, इस परीक्षण का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में होता है। अर्जन परीक्षण का मुख्य लक्ष्य उम्मीदवार की दक्षता का मूल्यांकन करना है, ताकि उसे संबंधित क्षेत्र में प्रभावी ढंग से काम करने के लिए तैयार किया जा सके। ये परीक्षण शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार और कौशलों के मूल्यांकन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अर्जन परीक्षण: अर्जन परीक्षण ऐसे मूल्यांकन होते हैं जो छात्र या शिक्षार्थी द्वारा एक विशिष्ट समय में प्राप्त ज्ञान, कौशल या सीखने की सामग्री पर आधारित होते हैं। ये सामान्यत: शैक्षणिक शिक्षा में उपयोग

होते हैं, जहां यह निर्धारित किया जाता है कि छात्र ने कितना सीखा है या विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त किया है।

<u>अर्जन परीक्षण की विशेषताएँ:</u>

- **विशिष्ट उद्देश्य:** परीक्षण के माध्यम से एक विशिष्ट विषय या कौशल स्तर का मूल्यांकन किया जाता है।
- **योजित संरचना:** परीक्षण प्रश्नों को विशिष्ट पाठ्यक्रम के अनुसार व्यवस्थित किया जाता है और यह स्पष्ट योजना के अनुसार तैयार किया जाता है।
- **मापने योग्य परिणाम:** छात्रों की सीख और कौशलों के मूल्यांकन के लिए परीक्षण के परिणाम मापने योग्य होते हैं।
- **शैक्षणिक मूल्यांकन:** यह शिक्षकों के शिक्षण की प्रभावशीलता और छात्रों की सीखने की गुणवत्ता को निर्धारित करने में सहायक होता है।
- **फीडबैक प्रदान करना:** ये परीक्षण छात्रों को अपनी ताकत और कमजोरियों के बारे में जानने में मदद करते हैं, जो भविष्य में सुधार के लिए आवश्यक होता है।
- **मानकीकरण परीक्षण:** कई मामलों में, अर्जन परीक्षण मानकीकरण परीक्षण के रूप में उपयोग किए जाते हैं, जहां समान प्रकार के प्रश्न विभिन्न छात्रों के लिए समान रूप से लागू होते हैं।
- **मूल्यांकन मानदंड:** यह विशिष्ट मानदंडों के अनुसार छात्रों के अर्जित ज्ञान और कौशल का मूल्यांकन करता है, जैसे परीक्षण में प्राप्त अंक या ग्रेड।

<u>अर्जन परीक्षण निर्माण के चरण:</u>

अर्जन परीक्षण (Achievement Test) बनाने के लिए कुछ चरणों का पालन करना आवश्यक है। ये चरण परीक्षण की गुणवत्ता और छात्र के सही मूल्यांकन को सुनिश्चित करने में सहायक होते हैं।

1. **उद्देश्य निर्धारित करना:** अर्जन परीक्षण का पहला चरण परीक्षण के उद्देश्य को स्पष्ट करना है। यहाँ यह निर्धारित किया जाता है कि परीक्षण किस विषय या कौशल का मूल्यांकन करेगा। उदाहरण के लिए, यदि एक अंग्रेजी भाषा के परीक्षण की तैयारी की जा रही है, तो उद्देश्य होगा छात्रों की भाषा कौशल, जैसे पढ़ना, लिखना, सुनना और बोलना का मूल्यांकन करना। उद्देश्य को स्पष्ट रूप से निर्धारित करना परीक्षण की गुणवत्ता को बढ़ाता है और यह सुनिश्चित करता है कि परीक्षण के परिणामों का सही ढंग से उपयोग किया जाए।
2. **परीक्षण संरचना की योजना:** परीक्षण संरचना की योजना बनाई जाती है ताकि प्रश्नों के प्रारूप और संरचना का निर्धारण किया जा सके। उदाहरण के लिए, एक गणित परीक्षण में प्रश्नों का प्रकार बहुविकल्पीय प्रश्न, सही उत्तर लिखने वाले प्रश्न और समस्या समाधान हो सकता है। इस प्रकार, परीक्षण संरचना की तैयारी के दौरान छात्रों की कौशलों का मूल्यांकन करने के लिए उपयुक्त प्रारूप का चयन किया जाता है, ताकि परीक्षण के परिणामों का सही विश्लेषण किया जा सके।
3. **प्रश्नपत्र तैयार करना:** इस चरण में परीक्षण के लिए प्रश्न बनाए जाते हैं, जो छात्र के कौशल स्तर को निर्धारित करेंगे। प्रश्न स्पष्ट, संगत और विशिष्ट कौशल का परीक्षण करने के लिए उपयुक्त होना चाहिए। उदाहरण के लिए, एक इतिहास परीक्षण के लिए प्रश्न हो सकते हैं, "भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नेता कौन थे?" या "बंगभंग आंदोलन के कारण क्या थे?" इस प्रकार के प्रश्न निर्माण से छात्र के वास्तविक ज्ञान का मूल्यांकन करने में सहायता मिलती है।

4. **परीक्षण का संचालन:** परीक्षण को निर्धारित समय और वातावरण में संचालित किया जाता है। यहाँ छात्रों के लिए एक सुव्यवस्थित और आरामदायक वातावरण बनाने की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, परीक्षण के दौरान यह सुनिश्चित करना चाहिए कि छात्र शांत वातावरण में परीक्षण दे रहे हैं और कोई प्रकार की विघ्न नहीं हो रही है। छात्रों के बीच तनाव कम करने के लिए उन्हें विचार करने का समय दिया जा सकता है।
5. **मूल्यांकन:** परीक्षण के परिणामों का मूल्यांकन किया जाता है ताकि छात्र की कौशल स्तर का निर्धारण किया जा सके। परिणामों का विश्लेषण करते समय यह देखा जाता है कि छात्रों ने किन प्रश्नों में सफलता पाई है और किनमें असफलता। उदाहरण के लिए, यदि 80% छात्र किसी विशेष प्रश्न का सही उत्तर देते हैं, तो यह इंगित करता है कि उस विषय को छात्रों के बीच अच्छी तरह से समझाया गया है। परिणामों का विश्लेषण करने से शिक्षा प्रक्रिया में सुधार के अवसर प्राप्त होते हैं।
6. **परिणामों का विश्लेषण:** इस चरण में परीक्षण परिणामों का विश्लेषण किया जाता है। यहाँ, विभिन्न प्रश्नों पर छात्रों के प्रदर्शन के आधार पर डेटा एकत्र किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि 60% छात्र विज्ञान परीक्षण में अच्छा अंक प्राप्त करते हैं, तो यह इंगित करता है कि छात्रों की उस विषय में ताकत है। परिणामों के विश्लेषण के माध्यम से पाठ्यक्रम विकास और शिक्षण रणनीतियों के सुधार की आवश्यकता की पहचान की जा सकती है।

निष्कर्ष: अर्जन परीक्षण छात्रों के कौशल और ज्ञान के मूल्यांकन के लिए एक महत्वपूर्ण विधि हैं। इन परीक्षणों के माध्यम से हम छात्रों की ताकत और कमजोरियों की पहचान कर सकते हैं, जो शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने में मदद करता है। उचित रूप से निर्मित परीक्षण निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने की संभावना को संभव बनाते हैं, और परिणाम शिक्षा प्रक्रिया के विकास और परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। जब परीक्षण प्रक्रिया सफलतापूर्वक संपन्न होती है, तो यह छात्रों के आत्मविश्वास को बढ़ाने और उनके सीखने के अनुभव को बढ़ावा देने में मदद करती है। इसलिए, अर्जन परीक्षण को हमारी शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण घटक माना जाता है।

3. Briefly discuss about identification and nurturance of creative child 2018, 2020, 2022

Ans: <u>भूमिका:</u> रचनात्मक बच्चों की पहचान और पोषण एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो बच्चों की रचनात्मकता और मौलिकता को चिन्हित करती है। इस प्रक्रिया के माध्यम से, शिक्षक और अभिभावक बच्चों की विशेष प्रतिभा, कौशल और विचारों की गहराई को समझ सकते हैं। रचनात्मकता केवल कलाकारों या संगीतकारों तक सीमित नहीं है; यह विज्ञान, तकनीक, और सामान्य जीवन में नए विचारों और समस्याओं के समाधान की क्षमता को बढ़ाती है। रचनात्मक बच्चों की पहचान करके उन्हें विकासात्मक गतिविधियों के माध्यम से पोषित किया जाए, तो वे स्वाभाविकता और नवोन्मेषी सोच के माध्यम से समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। परिणामस्वरूप, वे भविष्य में सफल और प्रतिभाशाली नागरिक के रूप में उभरते हैं।

<u>रचनात्मक बच्चों की धारणा:</u> रचनात्मक बच्चों की धारणा एक मानसिकता और गतिविधि को संदर्भित करती है, जो बच्चों में नए विचार, सोच और समाधान उत्पन्न करने की क्षमता को दर्शाती है। यह केवल कला या रचनात्मकता तक सीमित नहीं है, बल्कि विभिन्न क्षेत्रों जैसे विज्ञान, प्रौद्योगिकी, साहित्य, और

दैनिक जीवन में समस्याओं के समाधान के लिए प्रयोग की जाती है। रचनात्मक बच्चों के कुछ प्रमुख लक्षण हैं:

1. **नवीनता:** वे नए और असामान्य विचार उत्पन्न कर सकते हैं और प्रचलित धारणाओं को चुनौती देते हैं।
2. **नवोन्मेषी सोच:** रचनात्मक बच्चे जटिल समस्याओं पर गहराई से विचार करते हैं और विभिन्न दृष्टिकोणों से समाधान खोजने में सक्षम होते हैं।
3. **रचनात्मक अभिव्यक्ति:** वे अपने विचारों और भावनाओं को विभिन्न माध्यमों में व्यक्त करना पसंद करते हैं, जैसे चित्रकला, लेखन, संगीत, और अभिनय।
4. **जिज्ञासा:** रचनात्मक बच्चे आमतौर पर नई चीजें जानने के लिए उत्सुक होते हैं और विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछते हैं, जो उनकी सीखने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करता है।
5. **स्वतंत्रता:** वे स्वतंत्र रूप से सोचने और अपने कार्यों में स्वतंत्रता प्रदर्शित करने की प्रवृत्ति रखते हैं।

रचनात्मक बच्चों की पहचान: रचनात्मक बच्चों की पहचान एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो शिक्षकों और अभिभावकों को बच्चों की विशेष प्रतिभा और क्षमता को चिन्हित करने में मदद करती है। रचनात्मकता एक व्यापक धारणा है, और यह विभिन्न तरीकों से प्रकट हो सकती है। रचनात्मक बच्चों की पहचान के लिए कुछ महत्वपूर्ण विधियाँ और लक्षण इस प्रकार हैं:

1. **पर्यवेक्षण:** बच्चों के व्यवहार और गतिविधियों को देखकर उनकी रचनात्मकता का पता लगाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, वे कैसे समस्याओं को हल करते हैं, नए विचार लाते हैं, या विभिन्न गतिविधियों में कितनी रुचि लेते हैं।
2. **कार्य का विश्लेषण:** बच्चों द्वारा बनाई गई कलाकृतियाँ, लेखन, या परियोजनाओं का विश्लेषण करके उनकी रचनात्मकता का स्तर निर्धारित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, चित्रकला या कहानी लिखते समय यदि वे नए तरीकों से सोच सकते हैं, तो यह उनकी रचनात्मकता का परिचायक है।
3. **प्रश्नों की रुचि:** रचनात्मक बच्चे आमतौर पर जिज्ञासु होते हैं और विभिन्न विषयों पर प्रश्न पूछते हैं। उनके प्रश्नों की गहराई और व्यापकता को समझकर उनकी रचनात्मकता की पहचान की जा सकती है।
4. **विभिन्न दृष्टिकोण:** जब बच्चे किसी समस्या का समाधान विभिन्न दृष्टिकोणों से ढूंढने में सक्षम होते हैं, तो यह उनकी रचनात्मकता का एक महत्वपूर्ण संकेत होता है।
5. **संरचनात्मक प्रतिक्रिया:** बच्चे जब संरचनात्मक फीडबैक लेते हैं और उसके अनुसार अपने कार्यों में सुधार करते हैं, तो वे रचनात्मकता में और सुधार करने में सक्षम होते हैं।
6. **मनोवैज्ञानिक परीक्षण:** रचनात्मकता मापने के लिए विभिन्न मनोवैज्ञानिक परीक्षण और गतिविधियाँ उपयोग की जा सकती हैं, जो बच्चों की सोच और समाधान ढूंढने की क्षमता का मूल्यांकन करती हैं।

रचनात्मक बच्चों का पोषण: रचनात्मक बच्चों का पोषण करने का मतलब है उनकी रचनात्मक क्षमताओं को विकसित और उन्नत करने के लिए उचित वातावरण और समर्थन प्रदान करना।

रचनात्मकता को बढ़ाने के लिए कुछ विशेष तकनीकें और गतिविधियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, जो बच्चों के विचारों और धारणाओं को समृद्ध करती हैं। नीचे रचनात्मक बच्चों के पोषण के कुछ तरीके दिए गए हैं:

1. **स्वतंत्र सोच का अवसर देना:** बच्चों की रचनात्मकता बढ़ाने के लिए उन्हें स्वतंत्र रूप से सोचने देना आवश्यक है। एक खुले वातावरण में, जहाँ उन्हें प्रश्न पूछने या नए विचार व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, रचनात्मकता के विकास में सहायता मिलती है।
2. **नवोन्मेषी गतिविधियों के माध्यम से शिक्षा:** शिक्षा में नवोन्मेषी गतिविधियाँ शामिल करने से बच्चे रचनात्मकता को बढ़ा सकते हैं। जैसे परियोजनाओं पर आधारित शिक्षा, जहाँ बच्चे अनुसंधान कर सकते हैं और नए तरीकों से समाधान ढूंढने का प्रयास कर सकते हैं।
3. **जिज्ञासा और अन्वेषण को प्रोत्साहित करना:** जब बच्चे कुछ नया जानने के लिए प्रश्न करते हैं या अन्वेषण करना चाहते हैं, तो उनकी जिज्ञासा को प्रोत्साहित करना चाहिए। यह उनके रचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करता है।
4. **कला और संगीत में संलग्नता:** कला और संगीत बच्चों की रचनात्मकता के प्रमुख माध्यम होते हैं।
5. **संरचनात्मक आलोचना और फीडबैक:** बच्चों के कार्यों पर सकारात्मक फीडबैक देना उनके आत्मविश्वास को बढ़ाता है और उन्हें बेहतर करने के लिए प्रेरित करता है।
6. **सहयोगात्मक कार्य का अवसर:** समूह के माध्यम से बच्चे एक-दूसरे के विचारों से सीख सकते हैं।

उपसंहार: रचनात्मक बच्चों की सही पहचान और पोषण करना शिक्षा प्रणाली की एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। उनकी कल्पनाशक्ति और रचनात्मकता के विकास के लिए खुले और प्रोत्साहनपूर्ण वातावरण की आवश्यकता होती है, जहाँ वे स्वतंत्र रूप से सोच सकें और नए विचार उत्पन्न कर सकें। रचनात्मकता केवल उनकी शैक्षिक उन्नति के लिए ही नहीं, बल्कि व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में सफल होने में भी मदद करती है।

4. Write a short note on: (a) Validity of a test & (b) Histogram. 2019, 2021

Ans: एक परीक्षण की वैधता: एक परीक्षण की वैधता उस मात्रा को संदर्भित करती है, जिसके द्वारा एक परीक्षण वास्तव में उस उद्देश्य को सफलतापूर्वक मापता है जिसके लिए इसे निर्मित किया गया है। दूसरे शब्दों में, यह आकलन करता है कि एक परीक्षण कितनी सटीकता से वास्तविक और सही परिणाम प्रदान करता है। वैधता सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित प्रमुख पहलुओं पर विचार करना चाहिए:

<u>वैधता के प्रकार:</u>

1. **सामग्री वैधता (Content Validity):** यह मूल्यांकन करता है कि परीक्षण की सामग्री और संरचना कितनी अच्छी तरह से विषय को मापती है। इस प्रकार की वैधता यह सुनिश्चित करती है कि परीक्षण में विषय के सभी महत्वपूर्ण पहलुओं को शामिल किया गया है।
2. **संरचना वैधता (Construct Validity):** यह विश्लेषण करता है कि एक परीक्षण द्वारा मापी जा रही धारणा को कितनी सटीकता से मापा जा रहा है। यह आमतौर पर माप के सैद्धांतिक आधार और संबंधित व्यवहारों के बीच संबंध के माध्यम से मूल्यांकन किया जाता है।

3. **मानदंड संबंधी वैधता (Criterion-related Validity):** यह प्रकार यह दिखाता है कि एक परीक्षण के परिणाम किसी अन्य मानदंड या परीक्षण से कैसे संबंधित हैं। इसे दो तरीकों से मूल्यांकन किया जाता है:

- **समकालिक वैधता (Concurrent Validity):** एक साथ किए गए दो परीक्षणों की तुलना।
- **भविष्यवाणी वैधता (Predictive Validity):** एक परीक्षण के परिणाम भविष्य के परिणामों की भविष्यवाणी कैसे करते हैं, इसका मूल्यांकन।

वैधता सुनिश्चित करने के तरीके:

- **विश्लेषण और सत्यापन:** विभिन्न शोधों और विश्लेषणों के माध्यम से परीक्षण की वैधता का सत्यापन करना।
- **कई स्रोतों का उपयोग:** परीक्षण के परिणामों की सत्यापन के लिए विभिन्न स्रोतों से जानकारी का उपयोग करना।
- **संबंधित सिद्धांतों का समर्थन:** परीक्षण के मापदंड का वैज्ञानिक आधार होना।

निष्कर्ष: एक परीक्षण की वैधता सुनिश्चित करना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह मूल्यांकन की सटीकता और विश्वसनीयता का प्रमाण प्रदान करता है। सही परीक्षण शिक्षण और मूल्यांकन में प्रभावी परिणाम प्रदान करता है और सही निर्णय लेने में मदद करता है।

(b) Histogram.

Ans: हिस्टोग्राम: हिस्टोग्राम एक ग्राफिकल प्रस्तुति है जो वर्गीकृत व्यवस्था में डेटा के वितरण को दिखाती है। यह निरंतर या मात्रात्मक डेटा को विभिन्न श्रेणियों में विभाजित करती है, प्रत्येक श्रेणी के लिए एक बार का उपयोग करती है, जहाँ बार की ऊँचाई उस श्रेणी के लिए डेटा के बिंदुओं या आवृत्ति की संख्या को दर्शाती है।

घटक:

- **श्रेणियाँ (Classes):** डेटा की मात्रा को विशिष्ट श्रेणियों में विभाजित किया जाता है। प्रत्येक श्रेणी की एक परिभाषित सीमा होती है।
- **आवृत्ति (Frequency):** यह दर्शाता है कि प्रत्येक श्रेणी में कितनी अवलोकन हैं।
- **बार (Bars):** प्रत्येक श्रेणी की आवृत्ति का प्रतिनिधित्व करने के लिए बार बनाए जाते हैं, जो सामान्यतः एक-दूसरे से जुड़े होते हैं।

अक्ष (Axes):

- **क्षैतिज अक्ष (X-axis):** श्रेणियों की सीमाएँ।
- **ऊर्ध्वाधर अक्ष (Y-axis):** आवृत्ति या संख्या।

विशेषताएँ:

- **निरंतर डेटा के लिए उपयुक्त:** हिस्टोग्राम आमतौर पर निरंतर डेटा के लिए उपयोग किया जाता है।
- **बार की चौड़ाई:** प्रत्येक श्रेणी की चौड़ाई सामान्यतः समान होती है।

- **व्यवस्था:** बार जुड़े होते हैं, जो वर्गीकृत जानकारी की निरंतरता को दर्शाते हैं।
- **आवृत्ति:** हिस्टोग्राम प्रत्येक श्रेणी की आवृत्ति को प्रदर्शित करता है।

लाभ:

- **डेटा की दृश्यता:** डेटा का वितरण आसानी से देखा जा सकता है, जो विश्लेषण में सहायक होता है।
- **सैद्धांतिक मूल्यांकन:** यह डेटा के आधार पर विभिन्न सैद्धांतिक निष्कर्षों की अनुमति देता है।
- **मूलभूत अवधारणाओं का विकास:** हिस्टोग्राम का उपयोग करके विशेषताओं के बीच संबंध और मूलभूत अवधारणाओं को समझना आसान होता है।
- **तुलना:** विभिन्न डेटा सेटों की तुलना करने के लिए हिस्टोग्राम प्रभावी होते हैं।

हिस्टोग्राम डेटा वितरण के विश्लेषण के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है, जो शोध, व्यापार, शिक्षा और विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है। यह जानकारी को दृश्य बनाने में मदद करता है और निर्णय लेने की प्रक्रिया का समर्थन करता है। जब सही तरीके से बनाया और विश्लेषण किया जाए, तो एक हिस्टोग्राम प्रभावी और जानकारीपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है।

5. Write a short note on: a. Creativity (सृजनात्मकता), b. CRT and c. NRT 2023

Ans:

a. Creativity (सृजनात्मकता):

सृजनात्मकता नए और मौलिक विचार, अवधारणाएँ या तरीके बनाने की क्षमता है। यह विभिन्न क्षेत्रों, जैसे कला, विज्ञान, व्यवसाय और शिक्षा में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। सृजनात्मकता केवल कलाकारों के लिए नहीं है; यह सभी के लिए एक मूल्यवान गुण है जो समस्या समाधान, नए उत्पादों या सेवाओं के विकास और नए विचारों को बढ़ावा देने में सहायक है।

सृजनात्मकता के तत्व:

- **मौलिकता:** नए और अप्रचलित विचार बनाना।
- **विश्लेषणात्मक सोच:** समस्याओं का एक नए दृष्टिकोण से विश्लेषण करना।
- **लचीलापन:** विभिन्न तरीकों और दृष्टिकोणों के बीच स्थानांतरित होने की क्षमता।
- **दृश्यता:** विचारों को वास्तविकता में बदलने की क्षमता।

सृजनात्मकता की विशेषताएँ:

- **स्वतंत्र विचार:** सृजनात्मक व्यक्ति पारंपरिक सोच के बंधनों से मुक्त होकर नए विचार उत्पन्न करते हैं।
- **कल्पना:** सृजनात्मकता कल्पना पर आधारित है, जो सृजनात्मक सोच के मूल में है।
- **जोखिम लेने की क्षमता:** कुछ नया बनाने के लिए जोखिम उठाने की तत्परता।
- **सहयोग:** दूसरों के साथ काम करके नए विचारों का निर्माण करना।

सृजनात्मकता के लाभ:

- **नए समाधान:** सृजनात्मकता नए समस्याओं के समाधान में सहायक होती है।
- **प्रगतिशील सोच:** सृजनात्मक सोच सुधार और नवाचार को प्रोत्साहित करती है।
- **व्यक्तिगत विकास:** सृजनात्मकता व्यक्तिगत कौशल और आत्मविश्वास को बढ़ाती है।
- **सामाजिक परिवर्तन:** सृजनात्मक व्यक्ति सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सृजनात्मकता मानव जीवन का एक आवश्यक तत्व है। यह विभिन्न क्षेत्रों में नवाचार के माध्यम से समाज में परिवर्तन लाती है और व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में सुधार करती है। सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करना और इसके विकास के लिए अवसर प्रदान करना हमारे समाज के लिए एक बेहतर भविष्य बनाने में मदद करेगा।

b. CRT (Criterion-Referenced Test)

परिभाषा:

CRT एक परीक्षण के प्रकार में शामिल है, जिसमें परीक्षण के परिणामों का मूल्यांकन विशिष्ट मानदंडों या गुणात्मक मानकों के आधार पर किया जाता है। इस प्रकार के परीक्षण में छात्र के कौशल और ज्ञान के स्तर को एक विशिष्ट विषय वस्तु के खिलाफ मापा जाता है।

मुख्य विशेषताएँ:

- **उद्देश्य:** एक विशिष्ट प्रदर्शन स्तर को प्राप्त करने की क्षमता का आकलन करना।
- **परिणाम:** परिणाम विशिष्ट मानदंडों के आधार पर होते हैं, जैसे: 60% या 70% पास मार्क।
- **उदाहरण:** किसी विशेष विषय या कौशल के आधार पर तैयार किए गए परीक्षण, जैसे: गणित के एक विशेष पाठ पर परीक्षण।

लाभ:

- विशिष्ट कौशल या ज्ञान के स्तर का आकलन करने के लिए प्रभावी।
- छात्र की प्रगति और कमजोरियों की पहचान करने में सहायक।

c. NRT (Norm-Referenced Test)

परिभाषा: NRT एक परीक्षण के प्रकार में शामिल है, जिसमें छात्र के परिणामों की तुलना अन्य छात्रों के परिणामों के साथ की जाती है। इस परीक्षण में छात्र के प्रदर्शन को एक सामान्य (मानदंड) समूह के खिलाफ मापा जाता है।

मुख्य विशेषताएँ:

- **उद्देश्य:** छात्रों के बीच तुलना करके उनके स्थान का निर्धारण करना।
- **परिणाम:** परिणाम आमतौर पर प्रतिशत, रैंक या स्कोर के रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं, जैसे: 70% के नीचे या ऊपर होना।
- **उदाहरण:** SAT या GRE जैसे मानकीकृत परीक्षण।

लाभ:

- बड़े समूह के भीतर छात्र के स्थान का निर्धारण करने में सहायक।
- प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में छात्रों के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने में प्रभावी।

CRT और NRT दोनों परीक्षणों के अपने-अपने लाभ और उपयोग हैं। CRT छात्रों के विशिष्ट कौशल का मूल्यांकन करने में मदद करता है, जबकि NRT छात्रों के प्रदर्शन का तुलनात्मक विश्लेषण करने का अवसर प्रदान करता है। ये दोनों परीक्षण प्रकार शैक्षणिक परिस्थितियों के आधार पर लागू किए जा सकते हैं।

Course: 1.2.9 (Assessment for Learning)

2nd Half (Assessment of the Learning System)

Marks: 2

1. What do you mean by Infrastructural facility in school? 2017, 2021

Ans: विद्यालय में परिकाठामिक सुविधाएँ उन विभिन्न अवसंरचनात्मक घटकों और सुविधाओं को संदर्भित करती हैं जो शैक्षणिक गतिविधियों का समर्थन करती हैं और छात्रों को एक अनुकूल वातावरण में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करती हैं। इसमें शामिल हो सकते हैं:

1. **शिक्षण भवन:** कक्षाओं, पुस्तकालयों, प्रयोगशालाओं और कार्यालयों के लिए बनाए गए संरचनाएँ।
2. **खेल के मैदान और मनोरंजन सुविधाएँ:** शारीरिक गतिविधियों और विश्राम के लिए मैदान, पार्क और मनोरंजन केंद्र।
3. **बिजली और पानी की आपूर्ति:** बिजली, पीने के पानी और निकासी के लिए उचित व्यवस्थाएँ।
4. **तकनीकी सुविधाएँ:** जैसे कंप्यूटर लैब, इंटरनेट कनेक्टिविटी और अन्य तकनीकी उपकरण।
5. **सुरक्षा उपाय:** विद्यालय की सुरक्षा के लिए सीसीटीवी कैमरे, गेट और अन्य सुरक्षा व्यवस्थाएँ।

इन सभी को विद्यालय की बुनियादी सुविधाएँ माना जाता है, जो छात्रों के लिए शैक्षणिक गतिविधियों को आसान और अधिक प्रभावी बनाती हैं।

2. State the role of teacher in learner-centered teaching. 2017

Ans: छात्र-केंद्रित शिक्षा में शिक्षक की भूमिका काफी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह छात्रों को सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल करता है। यहां पांच मुख्य बिंदु प्रस्तुत किए गए हैं:

1. **मेंटोर और गाइड:** शिक्षक छात्रों के लिए एक मेंटोर के रूप में कार्य करते हैं, जो उनकी शिक्षा और विकास में मार्गदर्शन और समर्थन प्रदान करते हैं।
2. **शिक्षण प्रक्रिया के सुविधाकर्ता:** शिक्षक छात्रों के लिए शिक्षण प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए विभिन्न रणनीतियों और गतिविधियों का उपयोग करते हैं, जिससे छात्र सक्रिय रूप से भाग ले सकें।

3. **विशेषज्ञ की भूमिका:** शिक्षक विषय सामग्री के बारे में गहरा ज्ञान प्रदान करते हैं और छात्रों को प्रासंगिक प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करते हैं।
4. **प्रेरक और प्रोत्साहक:** शिक्षक छात्रों को उनके सीखने के प्रति रुचि और आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए प्रेरित करते हैं।
5. **छात्रों का मूल्यांकन:** शिक्षक नियमित रूप से छात्रों की क्षमताओं और प्रगति का मूल्यांकन करते हैं ताकि उनकी सुधार के लिए विशिष्ट दिशा-निर्देश दिए जा सकें।

इस प्रकार, शिक्षक छात्र-केंद्रित शिक्षा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो छात्रों की अंतर्निहित क्षमताओं और रुचियों को उजागर करता है।

3.What is the index of teacher-student ratio? 2017

Ans: शिक्षक-छात्र अनुपात का सूचक एक माप है जो एक शैक्षिक संस्थान में शिक्षकों की संख्या और छात्रों की संख्या के बीच के संबंध को दर्शाता है। यह एक महत्वपूर्ण सूचक है जो शिक्षा की गुणवत्ता और छात्रों के सीखने के वातावरण पर प्रभाव डालता है। आमतौर पर, इस अनुपात की गणना करने के लिए निम्नलिखित सूत्र का उपयोग किया जाता है:

शिक्षक-छात्र अनुपात=शिक्षकों की संख्या / छात्रों की संख्या

<u>सूचक की महत्वता:</u>

1. **शिक्षा की गुणवत्ता:** कम शिक्षक-छात्र अनुपात सामान्यतः शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करता है, क्योंकि यह शिक्षकों को प्रत्येक छात्र पर अधिक ध्यान देने की अनुमति देता है।
2. **व्यक्तिगत समर्थन:** उच्च अनुपात का अर्थ है कि प्रत्येक शिक्षक के पास कई छात्र होते हैं, जो शिक्षकों के लिए प्रत्येक छात्र को व्यक्तिगत रूप से समर्थन देना कठिन बना सकता है।
3. **शिक्षा की प्रभावशीलता:** यह सूचक कक्षा प्रबंधन, छात्रों की प्रतिक्रिया, और सीखने की प्रक्रिया पर प्रभाव डालता है।
4. **सामाजिक वातावरण:** शिक्षक-छात्र अनुपात स्कूल के सामाजिक वातावरण और छात्रों के बीच के संबंधों पर भी प्रभाव डालता है।

इस प्रकार, शिक्षक-छात्र अनुपात का सूचक शैक्षिक नीतियों और प्रक्रियाओं के विकास में एक मौलिक भूमिका निभाता है।

4. Write two functions of school managing committee. 2017

Ans: <u>विद्यालय प्रबंधन समिति (SMC) की दो मुख्य गतिविधियाँ हैं:</u>

1. **शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार:** विद्यालय प्रबंधन समिति शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए विभिन्न योजनाएं और नीतियाँ बनाती है। यह छात्रों की शिक्षण गतिविधियों में सुधार, शिक्षकों के प्रशिक्षण और विद्यालय की बुनियादी सुविधाओं को बढ़ाने के लिए काम करती है।

2. **बजट और वित्तीय प्रबंधन:** प्रबंधन समिति विद्यालय का बजट तैयार करती है और वित्तीय प्रबंधन करती है। यह सरकारी और निजी अनुदानों, दान, और अन्य फंड्स का सही उपयोग सुनिश्चित करती है और विद्यालय के लिए सभी आवश्यक खर्चों के बारे में निर्णय लेती है।

ये गतिविधियाँ विद्यालय के प्रभावी प्रबंधन में मदद करती हैं और छात्रों के लिए एक बेहतर शिक्षण वातावरण बनाने में सहायक होती हैं।

5. Mention different types of books to be kept in school library. 2017

Ans: <u>विद्यालय ग्रंथालय में रखने के लिए विभिन्न प्रकार की किताबें निम्नलिखित हैं:</u>

1. **पाठ्यपुस्तकें:** विशिष्ट कक्षाओं के लिए आवश्यक पाठ्यपुस्तकें।
2. **कहानी की किताबें:** बच्चों और किशोरों के लिए कहानियाँ और उपन्यास।
3. **शैक्षिक पुस्तकें:** विज्ञान, गणित, इतिहास, भूगोल आदि विषयों पर जानकारीपूर्ण किताबें।
4. **संदर्भ पुस्तकें:** शब्दकोश, विश्वकोश, और गाइडबुक।
5. **कविता और साहित्य की पुस्तकें:** कविता, नाटक, और साहित्य के विभिन्न संग्रह।
6. **जीवनी और साक्षात्कार:** महत्वपूर्ण व्यक्तियों की जीवनी और साक्षात्कार।
7. **आत्म-विकास की किताबें:** जीवन कौशल, प्रेरणा, और आत्म-सहायता पर किताबें।

ये पुस्तकें छात्रों को विभिन्न विषयों पर ज्ञान प्राप्त करने और उनकी पठन आदतों को सुधारने में मदद करती हैं।

6. Write two importance of Parent-Teacher Association. 2017, 2020

Ans: <u>अभिभावक-शिक्षक संघ की दो मुख्य महत्वपूर्णताएं हैं:</u>

1. **छात्रों के विकास में सहायक भूमिका निभाना:** अभिभावक-शिक्षक संघ, छात्रों और शिक्षकों के बीच प्रभावी संवाद स्थापित करता है। इससे छात्रों की शैक्षिक और व्यवहार संबंधी समस्याओं का शीघ्र समाधान संभव होता है और यह छात्रों के समग्र विकास में सहायक भूमिका निभाता है।
2. **विद्यालय के वातावरण में सुधार:** इस संघ के माध्यम से अभिभावक और शिक्षक मिलकर विद्यालय की विभिन्न समस्याओं का समाधान कर सकते हैं और वातावरण को बेहतर बना सकते हैं। विद्यालय की अवसंरचना, सुरक्षा और शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने के लिए अभिभावक-शिक्षक का संयुक्त प्रयास विद्यालय के लिए लाभकारी होता है।

7. Mention two Importance of school playground. 2017, 2020

Ans: <u>विद्यालय में खेल के मैदान के दो मुख्य महत्वपूर्णताएं हैं:</u>

1. **शारीरिक और मानसिक विकास में सहायक:** खेल के मैदान में खेलकूद के अवसर से छात्रों की शारीरिक क्षमता बढ़ती है और मानसिक तनाव कम करने में सहायता मिलती है। यह छात्रों को स्वस्थ

और सक्रिय रखता है, जो शिक्षा के साथ-साथ व्यक्तिगत विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

2. **सामाजिक कौशल और टीम भावना का विकास:** खेल के मैदान में विभिन्न टीम खेलों के माध्यम से छात्र सहयोग, नेतृत्व और टीम भावना जैसी गुणों को प्राप्त करते हैं। इससे उनके बीच दोस्ती, सहानुभूति और सामाजिक कौशल का विकास होता है, जो भविष्य में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सहायक सिद्ध होते हैं।

8. Write two characteristics of hygienic drinking water facility in schools. 2018, 2021, 2023

Ans: <u>विद्यालय में स्वच्छ पेयजल सुविधा के दो मुख्य विशेषताएं हैं:</u>

1. **छात्रों के स्वास्थ्य की सुरक्षा:** विद्यालय में स्वच्छ पेयजल की सुविधा छात्रों के स्वास्थ्य की सुरक्षा में सहायक भूमिका निभाती है। शुद्ध पानी पीने से छात्र जलजनित बीमारियों से बच सकते हैं और स्वस्थ और सक्रिय रह सकते हैं।
2. **एकाग्रता और सीखने की क्षमता बढ़ाना:** जब विद्यालय में पर्याप्त और स्वच्छ पेयजल उपलब्ध होता है, तो छात्र थकान और निर्जलीकरण से बचे रहते हैं, जिससे उनकी एकाग्रता और सीखने की क्षमता में सुधार होता है। इससे वे कक्षा में बेहतर ध्यान दे सकते हैं और शैक्षिक सफलता प्राप्त करने में सक्षम होते हैं।

9. Mention the human resources present in a secondary school. 2018, 2020, 2021

Ans<u>: एक माध्यमिक विद्यालय में मुख्य रूप से निम्नलिखित मानव संसाधन शामिल होते हैं:</u>

1. **शिक्षक:** विभिन्न विषयों के शिक्षक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने और छात्रों को सही मार्गदर्शन देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
2. **प्रधानाचार्य:** प्रधानाचार्य विद्यालय के प्रशासनिक और शैक्षिक गतिविधियों की देखरेख करते हैं और विद्यालय के सुचारू संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
3. **हेडमास्टर/सहायक हेडमास्टर:** वे प्रशासनिक और शैक्षणिक योजना और निर्णय लेने में सहायता करते हैं और विभिन्न मामलों में शिक्षकों और छात्रों का सहयोग करते हैं।
4. **ऑफिस स्टाफ:** ऑफिस स्टाफ विद्यालय की ऑफिस गतिविधियों का प्रबंधन, रिकॉर्ड की देखभाल, और विभिन्न प्रशासनिक कार्यों की जिम्मेदारी निभाते हैं।
5. **लाइब्रेरियन:** लाइब्रेरियन विद्यालय के पुस्तकालय का प्रबंधन और रखरखाव करते हैं और छात्रों को अध्ययन सामग्री प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
6. **स्वच्छता कर्मचारी:** विद्यालय में स्वच्छता और स्वास्थ्यकर वातावरण बनाए रखने के लिए स्वच्छता कर्मचारियों की भूमिका आवश्यक है।
7. **तकनीकी सहायक कर्मचारी:** विद्यालय में तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए, जैसे कंप्यूटर और मल्टीमीडिया उपकरण का संचालन और रखरखाव के लिए, तकनीकी सहायक कर्मचारियों की आवश्यकता होती है।

8. **सुरक्षा कर्मचारी:** सुरक्षा कर्मचारी विद्यालय की सुरक्षा बनाए रखने और छात्रों, शिक्षकों, और संसाधनों की सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

ये सभी मानव संसाधन विद्यालय के सुचारू संचालन और छात्रों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

10. Give two reasons for keeping records in School 2018, 2021

Ans: <u>विद्यालय में रिकॉर्ड रखने के दो मुख्य कारण हैं:</u>

1. **प्रशासनिक कार्यों में सटीकता और व्यवस्था बनाए रखना:** रिकॉर्ड रखने से विभिन्न प्रशासनिक गतिविधियों जैसे छात्र प्रवेश, प्रस्तुतिकरण, परिणाम और उपस्थिति के सही प्रबंधन में सहायता मिलती है। यह विद्यालय की प्रशासनिक प्रक्रिया को व्यवस्थित और अनुशासित बनाए रखता है।
2. **भविष्य के लिए जानकारी संरक्षित करना:** छात्रों और कर्मचारियों से संबंधित जानकारी भविष्य में आवश्यक हो सकती है। रिकॉर्ड संरक्षित करने से, पिछले डेटा को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है, जो आवश्यक समय पर निर्णय लेने में सहायक होता है।

11. What is meant by staff welfare service? 2018, 2020, 2022

Ans: कर्मचारी विकास सेवाएं मुख्य रूप से कर्मचारियों की कौशल, ज्ञान और क्षमताओं को बढ़ाने के लिए लागू की गई विभिन्न गतिविधियों और नीतियों को संदर्भित करती हैं। ये सेवाएं कर्मचारियों के पेशेवर और व्यक्तिगत विकास में सहायक होती हैं और इनमें शामिल हो सकती हैं:

1. **प्रशिक्षण और कार्यशालाएं:** कर्मचारियों को नई क्षमताएं सीखने और मौजूदा क्षमताओं में सुधार करने में मदद करने के लिए प्रशिक्षण और कार्यशालाओं का आयोजन करना।
2. **कैरियर विकास योजना:** कर्मचारियों के भविष्य के कैरियर विकास में सहायता के लिए योजना और मार्गदर्शन प्रदान करना।
3. **सहायक और स्वस्थ कार्य वातावरण बनाना:** कर्मचारियों की स्वास्थ्य और कल्याण सुनिश्चित करने के लिए कार्यस्थल पर सहायक वातावरण बनाना, ताकि वे प्रभावी ढंग से काम कर सकें।
4. **मेंटोरिंग और कोचिंग:** नए या कम अनुभवी कर्मचारियों को अधिक अनुभवी कर्मचारियों द्वारा मार्गदर्शन करना ताकि वे अपनी क्षमताओं और कौशल को बढ़ा सकें।
5. **फीडबैक और मूल्यांकन:** कर्मचारियों के कार्य प्रदर्शन का मूल्यांकन करना और उनके सुधार के लिए आवश्यक फीडबैक प्रदान करना।

ये सभी सेवाएं कर्मचारियों की क्षमताओं और स्वास्थ्य के विकास में योगदान करती हैं, जो संगठन की समग्र सफलता में सहायक होती हैं।

12. What are the objectives of book-bank formation? 2018, 2019, 2020, 2023

Ans: <u>बुक-बैंक गठन के उद्देश्य मुख्यतः निम्नलिखित हैं:</u>

1. **छात्रों के लिए पाठ्यपुस्तकों का संग्रह:** विद्यालय के छात्रों के लिए पाठ्यपुस्तकों की उपलब्धता सुनिश्चित करना, ताकि वे समय पर अपनी पुस्तकें प्राप्त कर सकें और अध्ययन पर ध्यान केंद्रित कर सकें।
2. **विषयवस्तु के अनुसार उपयुक्त पुस्तक का चयन:** छात्रों के लिए विभिन्न विषयों पर उपयुक्त और गुणवत्तापूर्ण पुस्तकों का चयन करना, ताकि उनकी शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ सके।
3. **शिक्षकों और छात्रों के बीच सहयोग:** शिक्षकों और छात्रों के बीच पुस्तकों के उपयोग और आवश्यकताओं के बारे में जागरूकता पैदा करना, ताकि वे पुस्तकों का अधिकतम उपयोग कर सकें।
4. **शिक्षा के लिए प्रोत्साहन उत्पन्न करना:** पुस्तकों को पढ़ने में रुचि बढ़ाना और छात्रों के बीच पाठ्यवोध की विकास करना, जो उनकी सामान्य ज्ञान और विश्लेषणात्मक क्षमताओं में सहायता करता है।
5. **नई पुस्तकों की जानकारी प्रदान करना:** छात्रों और शिक्षकों को नई पुस्तकों की जानकारी और समाचार प्रदान करना, ताकि वे अपडेटेड रहें और नई पुस्तकों के साथ परिचित हो सकें।
6. **संसाधन निर्माण का अवसर:** विद्यालय के छात्रों के लिए पाठ्यपुस्तकों का एक स्थानीय पुस्तकालय स्थापित करना ताकि उनके अध्ययन और विकास के लिए आवश्यक जानकारी और सामग्री प्रदान की जा सके।
7. **आर्थिक लाभ:** छात्र पुस्तक खरीदने के खर्च से मुक्त होकर अपनी शैक्षणिक गतिविधियों में आर्थिक रूप से लाभान्वित होते हैं।

ये उद्देश्य बुक-बैंक की स्थापना के माध्यम से छात्रों की शिक्षा की गुणवत्ता और अनुभव में सुधार करने में सहायक होते हैं।

13. Mention two benefits of students' self-governance. 2018,2020, 2022

Ans: <u>छात्रों के स्वशासन के दो लाभ हैं:</u>

1. **आत्मनिर्भरता में वृद्धि:** स्वशासन के माध्यम से छात्र अपने निर्णय लेने की क्षमता प्राप्त करते हैं। वे अपनी समस्याओं का समाधान करना और अपने कार्यों के लिए जिम्मेदार होना सीखते हैं, जो उनकी आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास को बढ़ाता है।
2. **समस्या समाधान कौशल का विकास:** स्वशासन के माध्यम से छात्र विभिन्न परिस्थितियों में निर्णय लेने और समस्या समाधान में कुशलता प्राप्त करते हैं। इससे उनकी विश्लेषणात्मक सोच, रचनात्मकता और टीम में काम करने की क्षमता में सुधार होता है, जो भविष्य में उनके करियर में सहायक होगा।

14. What do you mean by cordial school community relationship? 2018, 2022

Ans: विद्यालय और समाज के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध का तात्पर्य है विद्यालय और उसके आस-पास के समुदाय के बीच एक सहयोगी और समृद्धिपूर्ण संबंध। इस संबंध में विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया है:

1. **मौलिक शिक्षा का विकास:** विद्यालय की गतिविधियों और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए स्थानीय समुदाय का सहयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है। समुदाय के सदस्य विद्यालय की गतिविधियों में भाग लेते हैं और शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर अपनी राय देते हैं।
2. **सामाजिक सहायता:** विद्यालय की सामाजिक गतिविधियों, जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल प्रतियोगिताएँ, और समाज सेवा कार्यक्रमों में समुदाय के सदस्यों का भाग लेना विद्यालय की प्रतिष्ठा और स्थापना के लिए सहायक होता है।
3. **छात्रों के लिए अनुकूल वातावरण:** यदि विद्यालय समाज के साथ अच्छे संबंध विकसित करता है, तो यह छात्रों के लिए एक सुरक्षित और स्वास्थ्यवर्धक वातावरण बना सकता है, जो उनकी शिक्षा और विकास में सहायक होता है।
4. **सामाजिक मूल्यों का अभ्यास:** विद्यालय के माध्यम से छात्रों में सामाजिक मूल्य जैसे सहानुभूति, सहयोग, और कर्तव्यबोध का अभ्यास होता है, जो समाज के लिए सकारात्मक परिणाम लाता है।

इस प्रकार, विद्यालय और समाज के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध छात्रों के समग्र विकास और समाज की भलाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

15. Give two uses of playground in a school. 2019

Ans: <u>विद्यालय के खेल के मैदान के दो कार्यकारिता हैं:</u>

1. **शारीरिक विकास और स्वास्थ्य बनाए रखना:** खेल का मैदान छात्रों के शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार के लिए महत्वपूर्ण है। यहां खेलों के माध्यम से वे शारीरिक व्यायाम करते हैं, जो उनकी ताकत, सहनशक्ति और धैर्य को बढ़ाता है। इसके परिणामस्वरूप, वे स्वस्थ रहते हैं और विभिन्न शारीरिक समस्याओं से सुरक्षित रहते हैं।
2. **सामाजिक संबंध और टीम कार्य कौशल का विकास:** खेल के मैदान में, छात्र एक साथ खेलकर सामाजिक संबंध बनाते हैं। वे टीम के काम का अनुभव प्राप्त करते हैं, जो सहयोग, नेतृत्व और संबंध बनाने की क्षमताओं को बढ़ाता है। यह कार्यकारिता उनके सामाजिक कौशल और दोस्ताना स्वभाव के विकास में भी सहायक होती है।

16. Mention two aims of special education. 2019, 2021, 2023

Ans: <u>विशेष शिक्षा के दो लक्ष्य हैं:</u>

1. **समावेशन और समानता:** विशेष शिक्षा का एक प्रमुख लक्ष्य सभी छात्रों के लिए समावेशी शिक्षा सुनिश्चित करना है, जिससे विकलांगता और विशेष आवश्यकताओं वाले छात्र सामान्य शिक्षा के वातावरण में सीख सकें। इस प्रक्रिया के माध्यम से उनके सामाजिक, शारीरिक और मानसिक विकास में मदद मिलती है।
2. **स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता:** विशेष शिक्षा छात्रों को उनकी क्षमताओं के अनुसार सीखने और काम करने के अवसर प्रदान करती है, जो उन्हें स्वतंत्र रूप से जीवन जीने और अपनी क्षमताओं को बढ़ाने में मदद करती है। यह उनके आत्म-विश्वास और आत्म-सम्मान को बढ़ावा देती है।

17. What is the role of community in education? 2019, 2020, 2022

Ans: <u>शिक्षा प्रणाली में समुदाय की भूमिका है:</u>

1. **सहयोग और समर्थन:** समुदाय विद्यालय की गतिविधियों में भाग लेता है, जैसे कि शिक्षा के मान को सुधारने, विभिन्न कार्यक्रमों और पहलों के माध्यम से विद्यालय के विकास का समर्थन करता है।
2. **समीक्षा और प्रतिक्रियाएं:** समुदाय विद्यालय की गतिविधियों के बारे में समीक्षाएं प्रदान करता है, जो विद्यालय की नीतियों और योजनाओं को प्रभावित करती हैं।
3. **संसाधन प्रदान करना:** समुदाय विद्यालय के लिए वित्तीय सहायता, शैक्षिक सामग्री और अन्य संसाधन प्रदान करता है, जो छात्रों की शिक्षा में सुधार करने में सहायक होते हैं।
4. **सामाजिक मूल्यों का प्रचार:** समुदाय छात्रों में सहानुभूति, सहयोग और सामूहिक जिम्मेदारी जैसे सामाजिक मूल्यों को बढ़ावा देता है।

इस प्रकार, समुदाय शिक्षा प्रणाली के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

18. Mention any two importance of time table. 2019, 2021

Ans: <u>समय सारणी के दो महत्व हैं:</u>

1. **सृजनात्मकता और योजना:** समय सारणी बनाने से कार्यों के लिए समयसीमा निर्धारित की जा सकती है, जो कार्य को सही ढंग से पूरा करने के लिए योजना बनाने में मदद करती है। यह गतिविधियों के सुचारू प्रबंधन में सहायता करती है और सभी कार्यों के लिए आवश्यक समय का सही उपयोग सुनिश्चित करती है।
2. **उत्पादकता और कार्यक्षमता में वृद्धि:** समय सारणी के माध्यम से कार्यों की प्राथमिकता निर्धारित की जा सकती है, जो उत्पादकता और कार्यक्षमता को बढ़ाती है। यह छात्रों या कर्मचारियों को अपने समय का सही ढंग से उपयोग करने के लिए प्रेरित करती है और तनाव को कम करती है, जिससे वे और अधिक प्रभावी ढंग से काम कर सकते हैं।

19. What is learning disability? 2019, 2022

Ans: शिक्षण अक्षमता का मतलब है वह स्थिति जिसमें एक छात्र किसी विशेष विषय में या सामान्यतः सीखने में असमर्थ होता है। यह विभिन्न कारणों से हो सकता है, जैसे:

1. **शारीरिक कारण:** शारीरिक अक्षमताएँ, जैसे सुनने या देखने में समस्या, जो शिक्षण प्रक्रिया में बाधा डालती हैं।
2. **मानसिक कारण:** मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ या भावनात्मक समस्याएँ, जैसे चिंता या अवसाद, जो शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं।
3. **शिक्षात्मक कारण:** शिक्षण विधियों की अनुपयुक्तता या सीखने के वातावरण में कठिनाइयाँ, जो छात्रों के लिए शिक्षण प्रक्रिया को बाधित करती हैं।

4. **ज्ञानात्मक कारण:** कुछ छात्रों के लिए विशिष्ट विषयों में ज्ञानात्मक कौशल की कमी, जैसे गणित या पढ़ाई में कठिनाइयाँ।

शिक्षण अक्षमताओं की पहचान करना और सहायक उपाय करना महत्वपूर्ण है, ताकि प्रत्येक छात्र अपनी अधिकतम क्षमता के अनुसार सीख सके।

20. What is the difference between remedial teaching and classroom teaching? 2019

Ans: <u>निवारक शिक्षण और कक्षा शिक्षण के बीच का अंतर:</u>

1. **<u>उद्देश्य:</u>**
   - **निवारक शिक्षण:** छात्रों की विशिष्ट समस्याओं की पहचान करना और उनकी शैक्षणिक कमजोरियों को दूर करने का लक्ष्य रखता है। यह छात्रों को पिछले सीखने में कठिनाइयों से उबरने में मदद करता है।
   - **कक्षा शिक्षण:** यह एक सामान्य शिक्षण गतिविधि है जहां छात्र एक निश्चित पाठ्यक्रम का पालन करते हैं, और शिक्षक उन्हें विषयवस्तु सिखाते हैं।
2. **<u>शिक्षण विधि:</u>**
   - **निवारक शिक्षण:** व्यक्तिगत या छोटे समूह आधारित शिक्षण विधियों का उपयोग करता है जो छात्र की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार तैयार की जाती हैं।
   - **कक्षा शिक्षण:** यह बड़े कक्षा में छात्रों के लिए सामूहिक शिक्षण विधि का उपयोग करता है।
3. **<u>अवधि:</u>**
   - **निवारक शिक्षण:** सामान्यतः लंबे समय के लिए और एक निश्चित समय सीमा के लिए योजना बनाई जाती है।
   - **कक्षा शिक्षण:** इसे एक निश्चित समय सीमा के भीतर नियमित शिक्षण गतिविधियों के रूप में संचालित किया जाता है।

22. State the role of teacher in learner-centred teaching. 2020, 2022

Ans: <u>छात्र-केंद्रित शिक्षा में शिक्षक की भूमिका है:</u>

1. **राय और सहयोग प्रदान करना:** शिक्षक छात्रों की राय को महत्व देते हैं और उनकी राय के आधार पर शैक्षणिक प्रक्रिया को आकार देते हैं। इससे छात्रों का आत्मविश्वास और संलग्नता बढ़ती है।
2. **पाठ्यक्रम का मार्गदर्शन:** शिक्षक छात्रों के लिए एक उपयुक्त पाठ्यक्रम बनाते हैं, जो उनके रुचियों और क्षमताओं से संबंधित होता है।
3. **छात्रों की सुविधाओं के अनुसार समर्थन:** शिक्षक छात्रों की विभिन्न प्रकार की क्षमताओं और जरूरतों के आधार पर समर्थन और मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, जिससे वे अपनी गतिशीलता बनाए रख सकें।

4. **स्वत: स्फूर्तता का स्रोत:** शिक्षक एक सुरक्षित और सहायक वातावरण बनाते हैं, जिससे छात्र स्वत: स्फूर्तता से अपने विचार और प्रश्न व्यक्त कर सकें।
5. **मूल्यांकन और प्रतिक्रिया:** शिक्षक छात्रों के कार्य की गुणवत्ता का मूल्यांकन करते हैं और परिणामस्वरूप प्रतिक्रिया देते हैं, जो उनके सुधार के रास्ते में सहायक होती है।

इस प्रकार, छात्र-केंद्रित शिक्षा में शिक्षक छात्रों के लिए शिक्षण प्रक्रिया को सरल और अधिक प्रभावी बनाते हैं।

23. What do you mean by infrastructural facilities in school? 2023

Ans: विद्यालय परिकाठामिक सुविधाओं का तात्पर्य है विद्यालय की भौतिक और संगठनात्मक संरचना, जो शैक्षिक वातावरण और गतिविधियों को सहायता प्रदान करती है। इन सुविधाओं में शामिल हो सकते हैं:

1. **शिक्षा अवसंरचना:** कक्षाओं, प्रयोगशालाओं, पुस्तकालयों, कंप्यूटर कक्षों और अन्य शिक्षण संसाधनों के लिए उपयुक्त स्थान।
2. **खेल का मैदान और मनोरंजन:** खेल के लिए मैदान, खेल उपकरण, और छात्रों के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए स्थान।
3. **परिवहन सुविधाएं:** छात्रों के लिए सुरक्षित और सुविधाजनक परिवहन व्यवस्था।
4. **स्वास्थ्य सेवा:** विद्यालय में स्वास्थ्य केंद्र या चिकित्सा कक्ष, जहां आपातकालीन स्वास्थ्य सेवा प्रदान की जा सके।
5. **सुरक्षा उपाय:** विद्यालय की सुरक्षा और सुरक्षा के लिए सीसीटीवी, गेट, और सुरक्षा कर्मी।
6. **स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण:** विद्यालय की स्वच्छता और स्वास्थ्यवर्धक वातावरण, ताकि छात्र सुरक्षित और सुखद वातावरण में अध्ययन कर सकें।

इन सुविधाओं का छात्रों की शिक्षा और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

24. What is the necessity of para teacher in School? 2023

Ans: <u>विद्यालय में पार्श्व शिक्षकों की आवश्यकता इस प्रकार है:</u>

1. **शिक्षा में समर्थन:** पार्श्व शिक्षक मुख्य शिक्षक के साथ मिलकर छात्रों की शिक्षण प्रक्रिया में सहायता करते हैं। वे पाठ्यक्रम के अनुसार छात्रों के लिए अतिरिक्त समर्थन और मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।
2. **छात्रों की अवलोकन करना:** पार्श्व शिक्षक छात्रों की विभिन्न आवश्यकताओं और चुनौतियों की निगरानी करते हैं और उनके विकास के लिए आवश्यक कदम उठाते हैं।
3. **कक्षा का वातावरण विकसित करना:** पार्श्व शिक्षक कक्षा में एक सकारात्मक और सहायक वातावरण बनाने में मदद करते हैं, जो छात्रों को स्वयं व्यक्त करने और विकसित होने का अवसर देता है।

4. **टीमवर्क और सहयोग:** वे समूह गतिविधियों का प्रबंधन करने में सहायता करते हैं और छात्रों के बीच सहयोगात्मक भावना को विकसित करते हैं।
5. **विशेष शिक्षा के लिए सहायता:** जिनको विशेष शिक्षा की आवश्यकता होती है, उनके लिए पार्श्व शिक्षक एक संवेदनशील और सहायक वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
6. **शैक्षणिक और सामाजिक कौशल का विकास:** पार्श्व शिक्षक छात्रों को उनके शैक्षणिक और सामाजिक कौशल में सुधार करने में मदद करते हैं, जो उनके समग्र विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

इस प्रकार, विद्यालय में पार्श्व शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने और छात्रों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।"

25. Write any two objectives of Mid-Day Meal in School 2023

Ans: <u>विद्यालयों में मध्याह्न भोजन के दो उद्देश्य हैं:</u>

1. **पोषण सुधार:** मध्याह्न भोजन के माध्यम से छात्रों की दैनिक पोषण आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है, जो उनके शारीरिक और मानसिक विकास में सहायक होता है। यह बच्चों के खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने और कुपोषण की दर को कम करने में मदद करता है।
2. **शिक्षा का विकास:** मध्याह्न भोजन की व्यवस्था छात्रों की विद्यालय में नियमित उपस्थिति और शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ाने में सहायक होती है। यह उन्हें विद्यालय में रहने और अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित करती है, जिससे शिक्षा के परिणामों में सुधार होता है।

26. Mention any two necessities of time table in school. 2023

Ans: <u>विद्यालय में समय तालिका की दो आवश्यकताएँ हैं:</u>

1. **अनुशासन और संगठन:** समय तालिका छात्रों के लिए एक संगठित वातावरण बनाती है, जो उन्हें अपने दैनिक कार्यों की सही योजना बनाने में मदद करती है। यह कक्षा में अनुशासन बनाए रखने और छात्रों को समय प्रबंधन में सहायता करती है।
2. **प्राथमिकता निर्धारण:** समय तालिका के माध्यम से छात्र विभिन्न गतिविधियों के बीच प्राथमिकता निर्धारित कर सकते हैं। यह उन्हें ध्यान केंद्रित करने और अपने समय का कुशलतापूर्वक उपयोग करने में मदद करता है, जिससे वे अधिक प्रभावी और उत्पादक ढंग से काम कर सकते हैं।

Marks: 5

1. Describe the functions of school managing committee. 2018, 2021

Ans: विद्यालय प्रबंधन समिति (SMC) एक महत्वपूर्ण संगठन है, जो विद्यालय की गतिविधियों और नीति निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विद्यालय प्रबंधन समिति की कार्यप्रणाली निम्नलिखित है:

1. **नीति निर्धारण:** यह विद्यालय के अच्छे शासन और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए नीतियों और प्रक्रियाओं का निर्माण करती है। यह विद्यालय के उद्देश्यों और लक्ष्यों को निर्धारित करने में मदद करती है।
2. **शिक्षा में गुणवत्ता सुधार:** शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए काम करती है। विभिन्न कार्यक्रमों और योजनाओं के कार्यान्वयन के माध्यम से शिक्षा के मानकों में सुधार करने में मदद करती है।
3. **वित्तीय प्रबंधन:** विद्यालय के बजट और आर्थिक मामलों का प्रबंधन करती है। यह समिति शैक्षणिक संस्थानों में धन के उचित आवंटन, व्यय और उपयोग को सुनिश्चित करती है।
4. **संरचना विकास:** विद्यालय की भौतिक संरचना के विकास में सहायता करती है। विद्यालय की इमारतों, कक्षाओं, पुस्तकालयों और अन्य सुविधाओं के सुधार के लिए योजना बनाती है।
5. **शिक्षकों और कर्मचारियों का चयन:** शिक्षकों और कर्मचारियों की चयन प्रक्रिया में भाग लेती है। यह उनके प्रशिक्षण और विकास को सुनिश्चित करने के लिए भी काम करती है।
6. **छात्र विकास:** छात्रों के व्यक्तिगत और सामाजिक विकास के लिए विभिन्न गतिविधियों का कार्यान्वयन करती है। इसमें सांस्कृतिक, खेल और अन्य कार्यक्रम शामिल हैं।
7. **अभिभावक भागीदारी:** अभिभावकों को विद्यालय प्रबंधन में शामिल करने के लिए विभिन्न पहलों को अपनाती है। यह अभिभावकों की राय और सुझावों को एकत्रित करती है।
8. **रिपोर्टिंग और मूल्यांकन:** विद्यालय की गतिविधियों का मूल्यांकन करती है और रिपोर्ट तैयार करती है। विभिन्न गतिविधियों के परिणामों का विश्लेषण करती है।
9. **स्थानीय समुदाय के साथ संपर्क:** स्थानीय समुदाय के साथ संपर्क स्थापित करती है और उनके सहयोग की प्राप्ति करती है। विद्यालय के विकास में समाज की भूमिका को मजबूत करती है।

विद्यालय प्रबंधन समिति विद्यालय के प्रशासन और शिक्षा के सुधार में एक आवश्यक भूमिका निभाती है। इसकी गतिविधियाँ विद्यालय के समग्र विकास और छात्रों की सफलता के लिए महत्वपूर्ण हैं।

2. Discuss about the problems of Scheduled Tribe students in the schools of West Bengal. 2019

Ans: पश्चिम बंगाल के विद्यालयों में अनुसूचित जनजाति (Scheduled Tribe - ST) के छात्रों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याएं विभिन्न कारकों से प्रभावित होती हैं। यहां कुछ महत्वपूर्ण समस्याओं को उजागर किया गया है:

1. **शिक्षा में प्रवेश की कमी:** कई अनुसूचित जनजाति के छात्र विद्यालयों में प्रवेश करने में असमर्थ होते हैं। यह अक्सर आर्थिक कारणों से होता है, जहां परिवार की आर्थिक स्थिति शिक्षा के लिए आवश्यक खर्चों को उठाने में असमर्थ होती है।
2. **भाषाई बाधाएं:** इन छात्रों को बंगाली और अंग्रेजी भाषा में दक्षता न होने के कारण पाठ्यपुस्तकों और अन्य शैक्षिक सामग्रियों को समझने में कठिनाई होती है। कई मामलों में, अपनी मातृभाषा से बंगाली या अंग्रेजी में स्थानांतरित होना मुश्किल होता है।
3. **संस्कृतिक असमानता:** अनुसूचित जनजाति के छात्रों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अक्सर विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण के साथ मेल नहीं खाती। नतीजतन, वे सामाजिक रूप से अलग-थलग महसूस कर सकते हैं, जो उनके शिक्षण पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।

4. **मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं:** आर्थिक और सामाजिक दबावों के कारण ये छात्र मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का सामना कर सकते हैं। अवसाद, चिंता, और आत्म-विश्वास की कमी उनके शैक्षिक गतिविधियों पर नकारात्मक प्रभाव डालती है।
5. **शिक्षकों और सहपाठियों से सहयोग की कमी:** अक्सर, शिक्षकों और सहपाठियों के बीच जागरूकता की कमी के कारण अनुसूचित जनजाति के छात्रों को आवश्यक सहायता नहीं मिलती। यह उनके लिए समावेशी वातावरण बनाने में बाधा उत्पन्न करता है।
6. **आवश्यक शैक्षिक सामग्रियों की कमी:** अनुसूचित जनजाति के छात्रों के लिए आवश्यक शैक्षिक सामग्रियों और संसाधनों की कमी है, जो उनकी शिक्षा के मानक और अनुभव को प्रभावित करता है।
7. **आर्थिक-सामाजिक समस्याएं:** इनमें से कई छात्रों के परिवार गरीबी की रेखा से नीचे रहते हैं, जिससे उनके शिक्षा के लिए बुनियादी सुविधाओं और अन्य आवश्यकताओं की कमी हो जाती है।

पश्चिम बंगाल के विद्यालयों में अनुसूचित जनजाति के छात्रों द्वारा सामना की जाने वाली विभिन्न समस्याएं उनके शिक्षा में बाधाएं उत्पन्न करती हैं। इन समस्याओं का समाधान करने के लिए जागरूकता बढ़ाने, आर्थिक सहायता, और समावेशी शैक्षिक वातावरण बनाने की आवश्यकता है।

3. Briefly discuss about the remedial teaching. 2017, 2019, 2020, 2022, 2023

Ans: संशोधनात्मक शिक्षण एक शैक्षिक प्रक्रिया है जो विशेष रूप से छात्रों द्वारा उनके शिक्षण और अध्ययन में सामने आने वाली समस्याओं की पहचान करती है और उन्हें हल करने में सहायता करती है। यह सामान्यतः उनकी कमजोरियों और अक्षमताओं को निर्धारित करती है और उसके अनुसार योजना बनाकर पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों का उपयोग करती है। निम्नलिखित बिंदुओं में संशोधनात्मक शिक्षण के मुख्य पहलुओं का संक्षेप में वर्णन किया गया है:

1. **लक्ष्य और उद्देश्य:** संशोधनात्मक शिक्षण का मुख्य लक्ष्य छात्रों के अध्ययन अनुभव को सुधारना और उनके अध्ययन प्रक्रिया में आने वाली बाधाओं की पहचान करना और उनका समाधान करना है। यह छात्रों का आत्मविश्वास बढ़ाने और अध्ययन में उनकी रुचि बढ़ाने में सहायक है।
2. **मूल सिद्धांत:** इस शिक्षण पद्धति का मुख्य सिद्धांत है छात्रों की व्यक्तिगत अध्ययन आवश्यकताओं और अनुभवों के अनुसार अध्ययन अनुभव बनाना। इसमें विभिन्न शिक्षण रणनीतियाँ शामिल होती हैं, जैसे कि व्यक्तिगत शिक्षण, छोटे समूह चर्चा, और शिक्षकों के साथ प्रत्यक्ष संवाद।
3. **रणनीतियाँ और विधियाँ:** संशोधनात्मक शिक्षण विभिन्न विधियों का उपयोग करता है, जैसे:

- **विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण:** छात्रों की कमजोरियों का विश्लेषण करके उनकी आवश्यकताओं के अनुसार कस्टमाइज्ड पाठ योजना बनाना।
- **व्यावहारिक दृष्टिकोण:** छात्रों के साथ सक्रिय भागीदारी वाली गतिविधियों में संलग्न करना, जैसे कि परियोजना-आधारित कार्य और अनुभवात्मक अध्ययन।
- **दृश्यात्मक दृष्टिकोण:** छात्रों के अध्ययन को वास्तविक जीवन के उदाहरणों और अनुभवों से जोड़कर सिखाना।

4. **मूल्यांकन:** शिक्षण प्रक्रिया के परिणामों का मूल्यांकन करना बहुत महत्वपूर्ण है। यह शिक्षकों और छात्रों के बीच फीडबैक प्रदान करता है और छात्रों के सुधार के क्षेत्रों को पहचानने में सहायक होता है।

5. **संशोधनात्मक शिक्षण का अनुप्रयोग:** यह विशेष रूप से उन छात्रों के लिए महत्वपूर्ण है जो पाठ्यक्रम के विशिष्ट भागों में समस्याओं का सामना करते हैं, जैसे गणित, भाषा या विज्ञान। शिक्षक इस प्रक्रिया के माध्यम से छात्रों को आवश्यक सहायता और मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।

संशोधनात्मक शिक्षण छात्रों के लिए शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए एक अनिवार्य पद्धति है। यह छात्रों की समस्याओं का समाधान करने में मदद करता है और उनके अध्ययन अनुभव को समृद्ध करता है, जिससे वे अधिक आत्मविश्वासी और सक्रिय रूप से शिक्षा में भाग लेने में सक्षम होते हैं।

4. Mention the functions of Academic Council in school. 2017, 2019, 2020, 2022

Ans: एक विद्यालय का शैक्षणिक परिषद (Academic Council) एक महत्वपूर्ण संगठन है, जो शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार और शैक्षणिक गतिविधियों की नीतियों को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शैक्षणिक परिषद की गतिविधियाँ निम्नलिखित हैं:

1. **शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार:** शैक्षणिक परिषद विद्यालय में शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए नीतियों का निर्माण और कार्यान्वयन करता है।
2. **पाठ्यक्रम की योजना:** यह पाठ्यक्रम और शैक्षणिक सामग्री के विकास में सहायता करता है, ताकि यह छात्रों की आवश्यकताओं और वर्तमान शिक्षा नीतियों के अनुरूप हो।
3. **शिक्षक चयन और विकास:** परिषद शिक्षक चयन प्रक्रिया की निगरानी करता है और उनके पेशेवर विकास के लिए प्रशिक्षण और कार्यशालाओं का आयोजन करता है।
4. **छात्र मूल्यांकन:** यह छात्रों के मूल्यांकन और परीक्षा के लिए नीतियाँ निर्धारित करता है ताकि यह उनकी प्रगति और गुणवत्ता की शिक्षा सुनिश्चित कर सके।
5. **विभागीय पर्यवेक्षण:** परिषद विद्यालय के विभिन्न विभागों की गतिविधियों की निगरानी करता है और उनके बीच सहयोग और समन्वय सुनिश्चित करता है।
6. **अनुसंधान और विकास:** यह विद्यालय में अनुसंधान गतिविधियों और विकास के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है, जो शिक्षा के क्षेत्र में नए विचार और विधियाँ बनाता है।
7. **अभिभावक और समुदाय की भागीदारी:** परिषद अभिभावकों और स्थानीय समुदाय के साथ संबंध सुधारने के लिए प्रयास करता है ताकि वे विद्यालय की गतिविधियों में भाग ले सकें।
8. **शिक्षा का प्रचार और जन जागरूकता:** यह विद्यालय की शैक्षणिक कार्यक्रमों के प्रचार और शिक्षा की आवश्यकता के बारे में जन जागरूकता बढ़ाने के लिए गतिविधियाँ संचालित करता है।
9. **मध्यस्थता और समाधान:** परिषद छात्रों की समस्याओं को हल करने के लिए एक मंच प्रदान करता है और विद्यालय के आंतरिक मामलों के लिए मध्यस्थता और समाधान का प्रस्ताव करता है।
10. **वार्षिक योजना:** यह विद्यालय की वार्षिक योजना बनाने और उसे लागू करने में सहायता करता है ताकि विद्यालय की गतिविधियाँ सुचारू रूप से संचालित हो सकें।

शैक्षणिक परिषद विद्यालय में शैक्षणिक गतिविधियों के प्रभावी प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और छात्रों के लिए शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार में योगदान करता है।

5. Discuss the effectiveness of tutorial for weaker students. 2018, 2021, 2023

Ans: कमज़ोर छात्रों के लिए ट्यूटोरियल शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये छात्रों को विशिष्ट मुद्दों को सुलझाने और उनके सीखने के अनुभव को सुधारने में मदद करते हैं। ट्यूटोरियल की प्रभावशीलता नीचे चर्चा की गई है:

1. **व्यक्तिगत शिक्षण:** ट्यूटोरियल छात्रों के लिए एक व्यक्तिगत शिक्षण अनुभव प्रदान करते हैं। शिक्षक या ट्यूटर छात्र की कमजोरियों को पहचानते हैं और उसी के अनुसार सामग्री प्रस्तुत करते हैं, जो उनकी विशेष आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक होता है।
2. **स्वतंत्र शिक्षण गति:** कमजोर छात्र आमतौर पर अन्य छात्रों की तुलना में धीमी गति से सीखते हैं। ट्यूटोरियल में छात्र अपनी गति से सीख सकते हैं, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और सीखने में रुचि बढ़ती है।
3. **अतिरिक्त सहायता और समर्थन:** कमजोर छात्र कभी-कभी कक्षा में प्रश्न पूछने में संकोच करते हैं। ट्यूटोरियल के माध्यम से वे बिना किसी हिचकिचाहट के प्रश्न पूछ सकते हैं और अपनी समस्याओं को हल करने के लिए अतिरिक्त सहायता प्राप्त कर सकते हैं।
4. **विषय-विशिष्ट गहराई:** ट्यूटोरियल विशेष विषयों में गहराई से जाने में मदद करते हैं। छात्र अपनी कमजोरियों पर विशेष ध्यान केंद्रित कर सकते हैं और उन क्षेत्रों में विशेषज्ञों से मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं।
5. **सीखने की नई रणनीतियाँ:** ट्यूटोरियल के माध्यम से छात्र विभिन्न शिक्षण रणनीतियों और तकनीकों के बारे में जान सकते हैं। इससे उनके शिक्षण विधियों और समस्या समाधान कौशल में सुधार करने में मदद मिलती है।
6. **मूल्यांकन और फीडबैक:** ट्यूटोरियल छात्रों की प्रगति का मूल्यांकन करने में सहायता करते हैं। ट्यूटर छात्रों के काम की समीक्षा करते हैं और रचनात्मक फीडबैक प्रदान करते हैं, जिससे उन्हें और बेहतर होने में मदद मिलती है।
7. **सामाजिक और मानसिक समर्थन:** कमजोर छात्रों को कभी-कभी सामाजिक और मानसिक दबाव का अनुभव होता है। ट्यूटोरियल सत्र उन्हें अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए एक सुरक्षित स्थान प्रदान करते हैं।

कमज़ोर छात्रों के लिए ट्यूटोरियल एक आवश्यक शैक्षिक प्रक्रिया हैं। ये सीखने के अनुभव को बढ़ाते हैं, आत्मविश्वास को बढ़ाते हैं और शिक्षा प्राप्त करने के लिए एक मजबूत आधार बनाते हैं। ट्यूटोरियल छात्रों की विशेष आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक होते हैं और सामाजिक और मानसिक समर्थन प्रदान करते हैं, जो उनके समग्र शैक्षणिक विकास में योगदान करते हैं।

6. Explain the necessity of time table. 2017, 2020, 2022

Ans: समयतालिका शिक्षा प्रणाली का एक आवश्यक घटक है। इसका उपयोग छात्रों की शैक्षिक गतिविधियों, कक्षा के समय, पाठ्यक्रम और अन्य गतिविधियों के सही प्रबंधन के लिए किया जाता है। समयतालिका की आवश्यकता निम्नलिखित प्रकार से स्पष्ट की जा सकती है:

1. **अनुशासन और संगठन:** समयतालिका छात्रों को उनके दैनिक जीवन में अनुशासन और संगठन स्थापित करने में मदद करती है। यह छात्रों को अपने समय का सही प्रबंधन करने में सहायता करती है, ताकि वे समय पर पढ़ाई और अन्य गतिविधियाँ पूरी कर सकें।
2. **प्राथमिकता निर्धारण:** समयतालिका छात्रों को उनके कार्यों की प्राथमिकता निर्धारित करने में मदद करती है। यह उन्हें बताती है कि किस विषय की तैयारी कब करनी है और किन गतिविधियों पर अधिक ध्यान देना चाहिए।
3. **गतिविधियों का समन्वय:** स्कूल में विभिन्न गतिविधियों जैसे कक्षाएँ, परीक्षा, परियोजना कार्य, और अन्य कार्यों का समन्वय करने के लिए समयतालिका आवश्यक है। यह शिक्षकों और छात्रों दोनों के लिए एक स्पष्ट दृष्टिकोण प्रदान करती है।
4. **निर्णय लेने में आसानी:** समयतालिका के माध्यम से, छात्र आसानी से तय कर सकते हैं कि कब किस विषय का अध्ययन करना है और कब अवकाश का समय लेना है। यह उन्हें पढ़ाई और मनोरंजन के बीच संतुलन बनाए रखने में मदद करती है।
5. **शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि:** ठीक से तैयार की गई समयतालिका शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने में मदद करती है। यह शिक्षकों को अपने समय का प्रभावी ढंग से उपयोग करने में सक्षम बनाती है और छात्रों को बेहतर तैयारी करने का अवसर देती है।
6. **योजना और तैयारी की सुविधा:** समयतालिका के माध्यम से, छात्र समय से पहले योजना और तैयारी कर सकते हैं। यह उन्हें पढ़ाई और अन्य गतिविधियों के लिए तैयारी करने का समय प्रदान करती है।
7. **सामाजिक और मानसिक स्वास्थ्य:** यदि छात्र अपने समय का सही प्रबंधन कर सकते हैं, तो वे मानसिक तनाव को कम करने में सक्षम होते हैं। समयतालिका उन्हें विशेष समय के अनुसार कार्य करने में मदद करती है, जिससे वे अधिक दबाव का अनुभव नहीं करते हैं।

समयतालिका शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण तत्व है, जो छात्रों को अनुशासन, संगठन, और गतिविधियों का समन्वय स्थापित करने में मदद करती है। यह उनकी तैयारी और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को सरल बनाती है, जो उनकी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार में सहायक होती है।

7. Discuss different aspects of community involvement in decision making process of schools. 2017

Ans: विद्यालय के निर्णय लेने की प्रक्रिया में समाज की भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह छात्रों की शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार और विद्यालय की गतिविधियों की सफलता के लिए आवश्यक है। समाज की भागीदारी के विभिन्न क्षेत्र निम्नलिखित हैं:

1. **अभिभावकों की भागीदारी:** अभिभावक विद्यालय की शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनके विचार, चिंताएँ और अपेक्षाएँ विद्यालय की नीतियों और निर्णयों में परिलक्षित होनी चाहिए। अभिभावकों को विद्यालय की बैठकों, पेरेंट-टीचर एसोसिएशन (PTA), और विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से भाग लेने के अवसर दिए जाने चाहिए।
2. **स्थानीय समुदाय का सहयोग:** विद्यालय एक समुदाय का हिस्सा है, और स्थानीय समुदाय के सदस्यों की राय और सहयोग विद्यालय के विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। स्थानीय व्यवसायों, शिक्षकों,

और समाज के अनुभवी व्यक्तियों की राय लेना और उनसे सहायता प्राप्त करना विद्यालय के विकास को बढ़ावा दे सकता है।

3. **छात्रों की भूमिका:** छात्रों की स्वयं की राय और समस्याओं को उजागर करना विद्यालय के निर्णय लेने की प्रक्रिया में अत्यंत महत्वपूर्ण है। छात्रों की भागीदारी के माध्यम से उनकी आवश्यकताएँ और रुचियाँ ज्ञात होती हैं, जो विद्यालय की गतिविधियों और पाठ्यक्रम के विकास में सहायक होती हैं।
4. **स्थानीय प्रशासन का सहयोग:** स्थानीय सरकार और प्रशासन विद्यालय की गतिविधियों में सहायक भूमिका निभा सकते हैं। शिक्षा के विकास से संबंधित नीतियों और फंडिंग प्रदान करने में उनकी भागीदारी महत्वपूर्ण है।
5. **समाज के विभिन्न संगठनों की भागीदारी:** समाज में विभिन्न सामाजिक संगठन, एनजीओ, और स्वैच्छिक संस्थाएँ विद्यालय के विकास और शिक्षा की गुणवत्ता में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। वे विशेष परियोजनाओं और गतिविधियों के माध्यम से विद्यालय के साथ जुड़ सकते हैं।
6. **शिक्षकों की भागीदारी:** शिक्षकों की राय और अनुभव विद्यालय के निर्णय लेने की प्रक्रिया का एक अनिवार्य हिस्सा हैं। शिक्षकों के प्रस्ताव और विचार छात्रों की सीखने की गुणवत्ता में सुधार के लिए सहायक होते हैं।
7. **संस्कृतिक और धार्मिक संस्थाएँ:** स्थानीय सांस्कृतिक और धार्मिक संस्थाएँ भी विद्यालय की गतिविधियों में भाग ले सकती हैं, जो छात्रों को सामाजिक, सांस्कृतिक, और धार्मिक मूल्यों के विकास में मदद करती हैं।

विद्यालय के निर्णय लेने की प्रक्रिया में समाज की भागीदारी एक समन्वित और उन्नत शैक्षणिक वातावरण बनाने में सहायक होती है। यह विभिन्न समुदाय के सदस्यों के बीच सहयोग और एकता को बढ़ावा देती है और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने में प्रभावी भूमिका निभाती है।

8. How can the non-teaching staff of a school accelerate educational activities? 2017, 2022

Ans: विद्यालय के अंश शिक्षकों का शैक्षणिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका होती है और वे विभिन्न तरीकों से इन गतिविधियों को तेज करने में मदद कर सकते हैं। उनकी प्रभावी भूमिकाएँ निम्नलिखित हैं:

1. **प्रशासनिक समर्थन:** अंश शिक्षकों विद्यालय के प्रशासनिक कार्यों का समर्थन करते हैं। वे कक्षा के समय सारणी, प्रशासनिक कार्यालय की गतिविधियों, और शिक्षकों और छात्रों के बीच संचार की व्यवस्था करते हैं। इससे शिक्षकों की गतिविधियों का सुचारु संचालन सुनिश्चित होता है।
2. **सहायक सेवाएँ प्रदान करना:** अंश शिक्षकों विभिन्न सहायक सेवाएँ जैसे पुस्तकालय का संचालन, कंप्यूटर प्रयोगशाला की गतिविधियों की देखरेख, और अनुसंधान सामग्री प्रदान करके शिक्षकों और छात्रों का समर्थन करते हैं। इससे शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ती है।
3. **गतिविधियों की योजना और कार्यान्वयन:** अंश शिक्षकों विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों जैसे समर कैम्प, कार्यशाला, और सेमिनार आयोजित करते हैं। वे इन गतिविधियों की योजना बनाते हैं, कार्यान्वयन करते हैं, और परिणामों की निगरानी करते हैं, जो छात्रों को सीखने के लिए प्रोत्साहित करता है।

4. **विशेष सहायता:** अंश शिक्षकों विशेष रूप से अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता वाले छात्रों के लिए सहायता प्रदान करते हैं। वे परामर्श सेवाएँ, मनोवैज्ञानिक समर्थन, और शैक्षणिक ट्यूटरिंग के माध्यम से छात्रों की आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं।
5. **सुरक्षा और स्वास्थ्य:** विद्यालय के अंश शिक्षकों सुरक्षा और स्वास्थ्य संबंधी नीतियों को लागू करते हैं। वे विद्यालय के वातावरण को सुरक्षित और स्वास्थ्यवर्धक बनाए रखने में मदद करते हैं, जो छात्रों की ध्यान और प्रगति में सहायक होता है।
6. **समुदाय के साथ संबंध निर्माण:** अंश शिक्षकों विद्यालय के समुदाय के साथ संबंध बनाने और विद्यालय की गतिविधियों के लिए समर्थन प्राप्त करने में मदद करते हैं। वे पेरेंट-टीचर मीटिंग, स्थानीय निवासियों के साथ संचार, और समर्थन निर्माण के माध्यम से विद्यालय के विकास में भूमिका निभाते हैं।
7. **प्रौद्योगिकी का उपयोग:** अंश शिक्षकों शैक्षणिक गतिविधियों को तेजी लाने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग कर सकते हैं। वे डिजिटल उपकरणों और ऑनलाइन प्लेटफार्मों का उपयोग करके छात्रों के सीखने के अनुभव को सुधारने में सहायता करते हैं।

विद्यालय के अंश शिक्षकों शैक्षणिक गतिविधियों के सुधार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनकी प्रभावी भूमिकाएँ और सहयोग के माध्यम से छात्रों के लिए शिक्षा की प्रक्रिया को तेज करना संभव होता है।

9. Briefly explain the health service programme in school. 2018, 2021

Ans: विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण पहल है जो छात्रों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को सुधारने के लिए निर्धारित की गई है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों को स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करना, स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाना और स्वस्थ आदतें विकसित करना है। विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम के प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं:

1. **स्वास्थ्य जांच:** विद्यालयों में नियमित स्वास्थ्य जांच आयोजित की जाती है ताकि छात्रों के शारीरिक स्वास्थ्य का आकलन किया जा सके। इन जांचों में ऊंचाई, वजन, दृष्टि और श्रवण परीक्षण शामिल होते हैं।
2. **टीकाकरण:** विभिन्न रोगों से छात्रों की रक्षा करने के लिए टीकाकरण कार्यक्रम लागू किए जाते हैं। यह बीमारियों को रोकने का एक महत्वपूर्ण तरीका है।
3. **पोषण शिक्षा:** छात्रों के बीच स्वस्थ भोजन और पोषण के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए पोषण शिक्षा गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। इसमें सही आहार की आदतों और पौष्टिक भोजन के महत्व को समझाया जाता है।
4. **मानसिक स्वास्थ्य समर्थन:** छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए काउंसलिंग और मनोवैज्ञानिक सहायता प्रदान की जाती है। तनाव और चिंता से निपटने के लिए गतिविधियाँ संचालित की जाती हैं।
5. **स्वास्थ्य जागरूकता शिविर:** विद्यालयों में स्वास्थ्य जागरूकता शिविरों का आयोजन किया जाता है, जहाँ स्वस्थ जीवनशैली, व्यायाम और सुरक्षा से संबंधित विभिन्न स्वास्थ्य विषयों पर कार्यशालाएँ होती हैं।

6. **सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण:** विद्यालयों में सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण सुनिश्चित करने के लिए स्वास्थ्य नीतियाँ और सुरक्षा उपाय स्थापित किए जाते हैं। यह छात्रों की मानसिक और शारीरिक भलाई के लिए सहायक होता है।
7. **स्वास्थ्य रिपोर्ट:** छात्रों के स्वास्थ्य स्थिति के आधार पर नियमित स्वास्थ्य रिपोर्ट तैयार की जाती है, जिसे अभिभावकों को सूचित किया जाता है। यह परिवारों के साथ संपर्क बनाए रखने और स्वास्थ्य सुधारने में मदद करता है।

विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम छात्रों के समग्र स्वास्थ्य और विकास के लिए अनिवार्य है। यह स्वास्थ्य जागरूकता, पोषण शिक्षा और मानसिक स्वास्थ्य समर्थन के माध्यम से स्वास्थ्य सुधार सुनिश्चित करता है।

10. Discuss the advantages and disadvantages of para-teacher appointment. 2018, 2020

Ans: पार्श्व-शिक्षक की नियुक्ति शिक्षा क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। वे मुख्य शिक्षकों के सहायक के रूप में काम करते हैं और छात्रों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस लेख में, पार्श्व-शिक्षक की नियुक्ति के लाभ और हानियों पर चर्चा की जाएगी, जो शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकते हैं।

लाभ (Advantages):

1. **विविध शिक्षा:** पार्श्व-शिक्षक विभिन्न पृष्ठभूमियों और अनुभवों के साथ आते हैं, जिससे छात्रों के लिए विभिन्न दृष्टिकोण और शैलियों से सीखने का अवसर मिलता है।
2. **अतिरिक्त समर्थन:** कक्षा में पार्श्व-शिक्षक होने से शिक्षकों को अतिरिक्त समर्थन मिलता है, जो पाठ्यक्रम को अधिक प्रभावी और संगठित बनाता है।
3. **छात्र-शिक्षक संबंधों में सुधार:** पार्श्व-शिक्षक छात्रों के साथ व्यक्तिगत संबंध बनाने में मदद कर सकते हैं, जिससे उनके आत्मविश्वास में वृद्धि होती है और सामाजिक संपर्क में सुधार होता है।
4. **विशेष शिक्षा सहायता:** पार्श्व-शिक्षक विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों के लिए अतिरिक्त सहायता प्रदान कर सकते हैं, जैसे अकादमिक ट्यूटरिंग या मनोवैज्ञानिक समर्थन।
5. **अन्य गतिविधियों का कार्यान्वयन:** पार्श्व-शिक्षक विभिन्न क्लबों, गतिविधियों और परियोजनाओं में सहायता कर सकते हैं, जो छात्रों के लिए नए अनुभव पैदा करता है।

हानियां (Disadvantages):

1. **अनुभव की कमी:** कई पार्श्व-शिक्षकों के पास पर्याप्त शिक्षा या अनुभव की कमी हो सकती है, जिससे उनकी प्रभावशीलता कम हो जाती है।
2. **पूर्णता की कमी:** पार्श्व-शिक्षक कभी-कभी स्थायी शिक्षकों की तरह कक्षा की पूर्ण जिम्मेदारी नहीं ले सकते, जिसके परिणामस्वरूप छात्रों के लिए एक सुसंगत शैक्षिक अनुभव की कमी हो सकती है।
3. **प्रशासनिक और समन्वय समस्या:** पार्श्व-शिक्षकों और मुख्य शिक्षकों के बीच समन्वय की कमी हो सकती है, जो कक्षा प्रबंधन में समस्याएँ पैदा करती है।

4. **अतिरिक्त व्यय:** पार्श्व-शिक्षकों की नियुक्ति में अतिरिक्त व्यय हो सकता है, विशेष रूप से यदि उनकी वेतन और प्रशिक्षण के लिए सरकारी आवंटन नहीं है।
5. **शिक्षकों की भूमिका में कमी:** कुछ मामलों में, पार्श्व-शिक्षकों की उपस्थिति मुख्य शिक्षकों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को कम कर सकती है, जो शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकती है।

पार्श्व-शिक्षक की नियुक्ति के लाभ और हानियों की जांच करना आवश्यक है। उचित योजना और प्रबंधन के माध्यम से, उनकी नियुक्ति के लाभों को बढ़ाया जा सकता है, ताकि वे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए प्रभावी भूमिका निभा सकें।

11. Explain the necessity of establishing good teacher-parent relationship. 2018, 2020

Ans: शिक्षक-अभिभावक के बीच अच्छे संबंध स्थापित करना शिक्षा में एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। यह संबंध छात्रों के सीखने के अनुभव, सामाजिक विकास और मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डालता है। शिक्षकों और अभिभावकों के बीच खुला संवाद और सहयोग छात्रों की सफलता और विकास के लिए अनिवार्य है।

<u>शिक्षक-अभिभावक संबंध स्थापित करने की आवश्यकता को निम्नलिखित मुख्य बिंदुओं द्वारा समझाया जा सकता है:</u>

1. **छात्रों का विकास:** शिक्षक और अभिभावकों के बीच अच्छे संबंध छात्रों के लिए एक सकारात्मक वातावरण पैदा करते हैं, जो उनके मानसिक और शैक्षणिक विकास को सुनिश्चित करता है। एक साथ काम करके, वे छात्रों को आवश्यक सहायता प्रदान कर सकते हैं।
2. **सही जानकारी का आदान-प्रदान:** शिक्षकों और अभिभावकों के बीच खुला संवाद छात्रों की सीखने में सुधार करने और समस्याओं की पहचान करने में मदद करता है। अभिभावक अपने बच्चों के व्यवहार और रुचियों के बारे में शिक्षकों को सूचित कर सकते हैं, जिससे शैक्षणिक रणनीतियों में सुधार होता है।
3. **शैक्षणिक वातावरण का निर्माण:** एक अच्छी तरह से स्थापित शिक्षक-अभिभावक संबंध छात्रों के लिए एक स्वस्थ और सहायक शैक्षणिक वातावरण तैयार करता है। इसके परिणामस्वरूप, छात्र स्कूल में अधिक सहज महसूस करते हैं और अपनी सोच और समस्याओं को व्यक्त कर सकते हैं।
4. **छात्रों का आत्मविश्वास बढ़ाना:** जब शिक्षकों और अभिभावकों के बीच संबंध मजबूत होता है, तो छात्रों का आत्मविश्वास बढ़ता है। वे समझते हैं कि उनके विकास और सफलता के लिए सभी मिलकर काम कर रहे हैं।
5. **आपसी समर्थन:** शिक्षक और अभिभावक एक-दूसरे का समर्थन कर सकते हैं, जैसे अभिभावक विद्यालय के आयोजनों में भाग ले सकते हैं और शिक्षकों की पहलों में सहयोग कर सकते हैं। इससे विद्यालय की गतिविधियाँ अधिक सफल बनती हैं।
6. **समाज में योगदान:** शिक्षक-अभिभावक संबंध समाज में शिक्षा के मान को सुधारने में सहायक है। जब अभिभावक शिक्षकों का सम्मान करते हैं और उन पर विश्वास करते हैं, तो वे विद्यालय की गतिविधियों में अधिक सक्रियता से भाग लेते हैं, जिससे शैक्षणिक वातावरण में सुधार होता है।

शिक्षक-अभिभावक संबंध स्थापित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह छात्रों के विकास, मानसिक स्वास्थ्य में सुधार, और विद्यालय के समग्र वातावरण के लिए फायदेमंद है। सही संचार और सहयोग सुनिश्चित करने से शिक्षा के मान में वृद्धि होगी और छात्रों की जीवन की गुणवत्ता में सुधार होगा।

12. What are the utilities of maintaining records in a school. 2019, 2021

Ans: विद्यालयों में सूचना संग्रहण एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो शिक्षा के गुणवत्ता और प्रशासनिक कार्यों में सुधार में सहायक होती है। सूचना संग्रहण की कुछ मुख्य उपयोगिताएँ निम्नलिखित हैं:

1. **अध्ययन और मूल्यांकन:** छात्रों की प्रगति का डेटा संग्रहण शिक्षकों को उनका मूल्यांकन करने और शिक्षा के स्तर में सुधार के लिए प्रभावी रणनीतियाँ विकसित करने में मदद करता है।
2. **पंजीकरण और प्रवेश:** छात्रों के पंजीकरण, प्रवेश और स्थानांतरण से संबंधित जानकारी का संग्रहण प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सरल बनाता है। यह नए छात्रों की जानकारी एकत्र करने और पुराने छात्रों के डेटा को अद्यतन करने में सहायक होता है।
3. **अभिभावकों के साथ संचार**: सूचना संग्रहण अभिभावकों के साथ संचार के लिए महत्वपूर्ण है। यह छात्रों के व्यवहार, उपस्थिति और परीक्षा परिणामों के बारे में अभिभावकों को सूचित करने में मदद करता है।
4. **योजना और निर्णय लेना:** विद्यालय की गतिविधियों और संसाधनों की योजना बनाने में सूचना संग्रहण सहायक है। यह शिक्षकों और प्रशासकों के लिए समय पर निर्णय लेने में मदद करता है।
5. **नियंत्रण और ऑडिट:** विद्यालय के कार्यों की गतिशीलता और प्रभावशीलता की निगरानी करने के लिए सूचना संग्रहण अनिवार्य है। यह विद्यालय की पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करता है।
6. **कानूनी और नीतिगत आवश्यकताएँ:** विद्यालय में सूचना संग्रहण कानूनी और नीतिगत आवश्यकताओं के प्रति सम्मान बनाए रखने में मदद करता है। यह सरकारी निर्देशों और शिक्षा नीतियों के साथ समन्वय बनाए रखता है।
7. **दीर्घकालिक योजना:** सूचना संग्रहण विद्यालय के भविष्य की योजना के लिए एक मूल्यवान संसाधन के रूप में कार्य करता है। यह शिक्षकों और प्रशासकों को समय-समय पर विश्लेषण और शोध करने में सहायता करता है।

विद्यालय में सूचना संग्रहण केवल प्रशासनिक कार्यों के लिए नहीं, बल्कि शिक्षा के गुणवत्ता और छात्रों के विकास के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह विद्यालय की गतिविधियों को सुव्यवस्थित करता है और सभी हितधारकों के बीच संबंधों को सुधारने में सहायता करता है।

13. Briefly discuss an ideal sanitation system of a school. 2019, 2021, 2023

Ans: विद्यालय में एक आदर्श स्यानिटेशन व्यवस्था छात्रों के स्वास्थ्य, सुरक्षा और आराम सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है। सही स्यानिटेशन व्यवस्था शिक्षण वातावरण को सुधारती है और छात्रों के शारीरिक और मानसिक विकास का समर्थन करती है। एक आदर्श स्यानिटेशन व्यवस्था के निम्नलिखित घटक शामिल हैं:

1. **सुरक्षित जल आपूर्ति:** विद्यालय में सुरक्षित और परिशोधित जल की आपूर्ति सुनिश्चित की जानी चाहिए। पीएच और बैक्टीरियाल परीक्षणों के माध्यम से नियमित जल परीक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए।
2. **शौचालय सुविधाएँ:** विद्यालय में पर्याप्त संख्या में शौचालय होने चाहिए, जिन्हें लड़कों और लड़कियों के लिए अलग किया जाना चाहिए। शौचालयों की सफाई सुनिश्चित करने के लिए नियमित रूप से साफ करने की व्यवस्था होनी चाहिए।
3. **जल निकासी प्रबंधन:** विद्यालय के मैदान और शौचालयों के आस-पास पानी जमा न होने देने के लिए उपाय किए जाने चाहिए। पानी के बहाव के लिए उचित नाली व्यवस्था होनी चाहिए।
4. **सही अपशिष्ट प्रबंधन:** विद्यालय में उत्पन्न सभी प्रकार के अपशिष्ट, विशेष रूप से जैविक और अजैविक अपशिष्ट को सही ढंग से एकत्र और नष्ट किया जाना चाहिए।
5. **स्वास्थ्य और स्यानिटेशन शिक्षा:** छात्रों को स्यानिटेशन और स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों के प्रति जागरूक करने के लिए नियमित कार्यशालाएं और प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए जाने चाहिए।
6. **विशेष जरूरतें:** विशेष जरूरत वाले छात्रों के लिए स्यानिटेशन सुविधाओं को सुधारना चाहिए, ताकि वे सुरक्षित और आराम से सुविधाओं का उपयोग कर सकें।
7. **नियमित मूल्यांकन:** स्यानिटेशन व्यवस्था की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के लिए नियमित निरीक्षण और ऑडिट की व्यवस्था होनी चाहिए।

एक आदर्श स्यानिटेशन व्यवस्था विद्यालय के छात्रों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ाने के साथ-साथ शिक्षा की गुणवत्ता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह छात्रों को स्वस्थ और सुरक्षित वातावरण में सीखने का अवसर देती है, जो उनके भविष्य के विकास के लिए सहायक है।

14. Discuss the major functions of Academic Council in school. 2020, 2022

Ans: विद्यालय का शिक्षा परिषद एक महत्वपूर्ण संस्था है, जो विद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों की योजना और प्रबंधन करती है। यह शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए विभिन्न गतिविधियाँ संचालित करती है और शिक्षकों के पेशेवर विकास, छात्रों के मूल्यांकन, अभिभावकों के साथ संवाद, और सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विद्यालय के शिक्षा परिषद की प्रमुख गतिविधियाँ निम्नलिखित हैं:

1. **शिक्षा नीति निर्धारण:** शिक्षा परिषद विद्यालय की शिक्षा नीति और कार्यक्रम बनाती है, जो शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लक्ष्य से संचालित होते हैं।
2. **पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक चयन:** शिक्षा परिषद पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के विषयवस्तु के चयन के लिए जिम्मेदार है। यह सुनिश्चित करती है कि पाठ्यक्रम छात्रों की जरूरतों और समकालीन शैक्षणिक दृष्टिकोणों के अनुसार प्रासंगिक है।
3. **शिक्षकों का पेशेवर विकास:** शिक्षा परिषद शिक्षकों के लिए कार्यशालाएँ, प्रशिक्षण और विकासात्मक गतिविधियों का आयोजन करती है, जिससे उनके पेशेवर कौशल को बढ़ावा मिलता है।
4. **मूल्यांकन और समीक्षा:** शिक्षा परिषद नियमित रूप से छात्रों के मूल्यांकन पद्धतियों और परिणामों की समीक्षा करती है, ताकि शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हो सके।

5. **अभिभावकों के साथ संवाद:** शिक्षा परिषद अभिभावकों के साथ संबंध स्थापित करने और संवाद के लिए विभिन्न पहलों को अपनाती है। यह अभिभावकों को शैक्षणिक गतिविधियों में भाग लेने का अवसर देती है।
6. **सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ:** शिक्षा परिषद विद्यालय में सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन करती है, जो छात्रों के मानसिक और सामाजिक विकास में सहायक होती हैं।
7. **शिक्षा से संबंधित समस्याओं का समाधान:** शिक्षा परिषद विद्यालय में उत्पन्न समस्याओं के समाधान के लिए पहल करती है और आवश्यक कदम उठाती है।
8. **वित्तपोषण और बजट योजना:** शिक्षा परिषद विद्यालय के बजट योजना और वित्तपोषण के विषय में निर्णय लेती है, जो विकास गतिविधियों का समर्थन करती है।

विद्यालय का शिक्षा परिषद एक महत्वपूर्ण संस्था है, जो विद्यालय के विकास, शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि, और छात्रों के समग्र विकास के लिए कार्य करती है। इसकी गतिविधियाँ विद्यालय के आंतरिक कार्यों को सुव्यवस्थित रखने और छात्रों के लिए शैक्षणिक वातावरण को सुधारने में सहायक होती हैं।

15. Discuss the role of teacher and learner in reflective level of teaching. 2022

Ans: <u>शिक्षण के प्रतिफलन स्तर पर शिक्षकों और विद्यार्थियों की भूमिका</u>

शिक्षण का प्रतिफलन स्तर शिक्षा की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण पहलू है, जहाँ विद्यार्थी अपने सीखने के अनुभवों का विश्लेषण करते हैं और शिक्षा का अर्थ समझने का प्रयास करते हैं। इस स्तर पर शिक्षकों और विद्यार्थियों की भूमिकाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण होती हैं।

<u>शिक्षकों और विद्यार्थियों की भूमिकाएँ:</u>

1. <u>शिक्षक:</u>

- **मार्गदर्शक:** शिक्षक विद्यार्थियों को उनके सीखने के अनुभवों का विश्लेषण करने और उन पर विचार करने में मदद करते हैं। वे विद्यार्थियों के विचारों को उजागर करने के लिए प्रश्न पूछते हैं।
- **प्रेरक:** शिक्षकों की प्रेरणा और सहायता विद्यार्थियों को उनके अनुभवों और सीखने पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करती है। वे विद्यार्थियों को अपने अनुभवों का मूल्यांकन करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
- **फीडबैक प्रदाता:** शिक्षक विद्यार्थियों के प्रतिफलन पर फीडबैक प्रदान करते हैं, जो उनकी सीखने की प्रक्रिया में सुधार करने में सहायक होता है।
- **शिक्षण रणनीतियाँ:** शिक्षकों को विभिन्न शिक्षण रणनीतियाँ जैसे चर्चा, समूह गतिविधियाँ, और व्यक्तिगत प्रतिफलन का उपयोग करना चाहिए, जो विद्यार्थियों को सक्रिय रूप से सीखने में मदद करती हैं।

2. <u>विद्यार्थी:</u>

- **स्वतंत्र सोच:** विद्यार्थी अपने अनुभवों के बारे में सोचना सीखते हैं और अपनी सीखने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वे अपनी शिक्षा की प्रक्रिया के प्रति जागरूक होते हैं।
- **मूल्यांकन:** विद्यार्थी अपने सीखने के अनुभवों का मूल्यांकन करते हैं और उनसे सीखने का प्रयास करते हैं। वे यह जान पाते हैं कि कौन से पहलू प्रभावी थे और कौन से नहीं।

- **सक्रिय भागीदारी:** विद्यार्थी अपने विचारों और राय व्यक्त करते हैं। वे चर्चाओं और समूह गतिविधियों में भाग लेते हैं, जो उनके प्रतिफलन को गहरा बनाते हैं।
- **व्यक्तिगत दृष्टिकोण:** विद्यार्थी अपनी दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षा की प्रक्रिया का विश्लेषण करते हैं और अपने व्यक्तिगत विकास के लिए योजना बनाते हैं।

शिक्षण के प्रतिफलन स्तर पर शिक्षकों और विद्यार्थियों की भूमिकाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। शिक्षकों का मार्गदर्शन और सहायता विद्यार्थियों को उनके सीखने के अनुभवों का गहराई से विश्लेषण करने में मदद करती है, जबकि विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी और विचारशीलता उनकी सीखने की प्रक्रियाओं को बढ़ावा देती है। एक प्रभावी प्रतिफलन स्तर शिक्षा प्रक्रिया की समग्र गुणवत्ता में योगदान करता है।

16. Describe the structure of an ideal Managing Committee in School. 2023

Ans: विद्यालय में एक आदर्श प्रबंधन समिति का गठन एक महत्वपूर्ण विषय है, जो विद्यालय की गतिविधियों और प्रबंधन पर प्रभाव डालता है। जब इस समिति का सही ढंग से गठन किया जाता है, तो विद्यालय के विकास और शिक्षा के मान को बढ़ाना संभव होता है। एक आदर्श प्रबंधन समिति के गठन के मुख्य तत्व निम्नलिखित हैं:

1. **अध्यक्ष:** अध्यक्ष आमतौर पर विद्यालय के प्रधान या प्राचार्य होते हैं। वे प्रबंधन समिति की गतिविधियों की निगरानी करते हैं और समिति की बैठकों का संचालन करते हैं।
2. **उपाध्यक्ष:** उपाध्यक्ष अध्यक्ष के सहायक के रूप में कार्य करते हैं और अध्यक्ष की अनुपस्थिति में उनकी जिम्मेदारियों का पालन करते हैं।
3. **सचिव:** सचिव समिति के दस्तावेजों, बैठकों के कार्यविवरण और अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेजों का प्रबंधन करते हैं। वे समिति की गतिविधियों की जानकारी को बनाए रखते हैं।
4. **कोषाध्यक्ष:** कोषाध्यक्ष विद्यालय के बजट, वित्तीय प्रबंधन और निधियों की जिम्मेदारी संभालते हैं। वे धन के सही उपयोग के लिए रिपोर्ट तैयार करते हैं।
5. **सदस्य:** प्रबंधन समिति में विभिन्न सदस्य हो सकते हैं, जैसे: शिक्षक प्रतिनिधि, अभिभावक प्रतिनिधि, स्थानीय शिक्षा अधिकारी, समाज के महत्वपूर्ण व्यक्ति, और छात्रों के प्रतिनिधि। सदस्य विभिन्न दृष्टिकोणों से विद्यालय के विकास पर चर्चा करते हैं और निर्णय लेने में सहायता करते हैं।
6. **उप-समितियां:** प्रबंधन समिति की आवश्यकताओं के अनुसार विभिन्न उप-समितियों का गठन किया जा सकता है, जैसे: शैक्षिक विकास, अवसंरचना विकास, स्वच्छता, स्वास्थ्य, और सांस्कृतिक गतिविधियाँ।
7. **नियमित बैठकें:** प्रबंधन समिति के सदस्यों के बीच नियमित बैठकों का आयोजन किया जाना चाहिए, ताकि वे विद्यालय की वर्तमान स्थिति, समस्याओं और विकासात्मक गतिविधियों पर चर्चा कर सकें।

विद्यालय में एक आदर्श प्रबंधन समिति का गठन शिक्षा के मान को बढ़ाने और विद्यालय के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह एक सुव्यवस्थित और प्रभावी प्रबंधन प्रणाली सुनिश्चित करता है, जो छात्रों के लिए एक अनुकूल शिक्षण वातावरण बनाता है।

17. State the role of library in School. 2023

Ans: विद्यालय का पुस्तकालय एक अत्यंत महत्वपूर्ण संस्था है, जो विद्यार्थियों को ज्ञान अर्जित करने और सृजनात्मकता बढ़ाने में सहायता करती है। यह विद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों को समृद्ध करता है और विद्यार्थियों के विभिन्न विषयों पर शोध और अध्ययन में सहायक भूमिका निभाता है। विद्यालय के पुस्तकालय की प्रमुख भूमिकाएँ निम्नलिखित हैं:

1. **ज्ञान अर्जन:** पुस्तकालय विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों पर ज्ञान अर्जित करने का अवसर प्रदान करता है। यहाँ विभिन्न पुस्तकें, जर्नल, पत्रिकाएँ और अन्य सूचना स्रोत संग्रहीत होते हैं, जो विद्यार्थियों के ज्ञान को बढ़ाने में मदद करते हैं।
2. **शैक्षणिक सहायता:** पुस्तकालय पाठ्यक्रम से संबंधित विभिन्न शैक्षणिक सामग्रियाँ प्रदान करता है। यह शिक्षकों की पाठ्यक्रम संबंधी गतिविधियों का समर्थन करता है और विद्यार्थियों को सामग्री समझने में सहायता करता है।
3. **शोध और सूचना खोज:** विद्यार्थी शोध और परियोजनाओं के लिए जानकारी खोजने के लिए पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। पुस्तकालय का डेटा बेस उनके शोध कार्य को सरल बनाता है और विभिन्न दृष्टिकोणों से विषयों का विश्लेषण करने में सहायता करता है।
4. **सृजनात्मकता और विचार विकास:** पुस्तकालय विद्यार्थियों की सृजनात्मकता और विचारों के विकास में सहायता करता है। वे विभिन्न साहित्यिक कार्य, कलाकृतियाँ और ऐतिहासिक दस्तावेज़ पढ़कर नए विचार और दृष्टिकोण प्राप्त कर सकते हैं।
5. **नियमित पढ़ने की आदतें बनाना:** पुस्तकालय पढ़ने की आदतें बनाने में सहायता करता है। यह विद्यार्थियों को विषयों के प्रति रुचि जगाता है और नियमित पुस्तक पढ़ने की आदत विकसित करता है।
6. **शिक्षा के लिए समर्थन:** पुस्तकालय अभिभावकों और शिक्षकों के लिए एक संसाधन केंद्र के रूप में कार्य करता है। यह विद्यार्थियों को विद्यालय की सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करता है।
7. **सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग:** आधुनिक पुस्तकालय सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करके जानकारी तक आसान पहुंच सुनिश्चित करते हैं। विद्यार्थी डिजिटल संसाधनों के माध्यम से ऑनलाइन शोध कर सकते हैं और जानकारी एकत्र कर सकते हैं।

विद्यालय का पुस्तकालय विद्यार्थियों के ज्ञान और सृजनात्मकता के विकास में एक आवश्यक भूमिका निभाता है। यह विभिन्न विषयों में रुचि उत्पन्न करता है और उनके शैक्षणिक और सामाजिक विकास में सहायता करता है। एक समृद्ध पुस्तकालय विद्यालय में शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

Marks: 10

1. Write the importance and advantages of self-government in school. 2017, 2020, 2022

Ans: <u>परिचय:</u> विद्यालय स्वायत्तता प्रणाली एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो विद्यालय के संचालन और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद करती है। इस प्रणाली के माध्यम से विद्यालयों को स्थानीय समुदाय की आवश्यकताओं के अनुसार निर्णय लेने की स्वतंत्रता मिलती है, जिससे शिक्षा की प्रक्रिया अधिक प्रासंगिक और प्रभावी हो जाती है। स्वायत्तता शिक्षकों की नवोन्मेषी सोच को बढ़ाती है और अभिभावकों की भागीदारी को भी बढ़ाती है, जो विद्यालय के विकास पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। इस प्रणाली के माध्यम से छात्र एक समृद्ध और जिम्मेदार शिक्षा के वातावरण में सीख सकते हैं, जो उनके समग्र विकास में सहायक होता है। परिणामस्वरूप, विद्यालयों की स्वायत्तता शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

विद्यालय स्वायत्तता प्रणाली का अवधारणा: विद्यालय स्वायत्तता प्रणाली एक ऐसा ढांचा है, जहां विद्यालयों को अपने शिक्षण गतिविधियों, नीतियों और प्रशासन में स्वतंत्रता मिलती है। इस प्रणाली का मुख्य उद्देश्य स्थानीय समुदाय की आवश्यकताओं और विशेषताओं के अनुसार शिक्षा गतिविधियों का संचालन करना और निर्णय लेने की प्रक्रिया में स्थानीय भागीदारों (जैसे: अभिभावक, शिक्षक, और छात्र) की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना है।

स्वायत्तता के माध्यम से विद्यालय अपने बजट, पाठ्यक्रम, शिक्षक भर्ती, और अन्य प्रशासनिक मामलों में स्वतंत्र रूप से निर्णय ले सकते हैं। इसके परिणामस्वरूप विद्यालयों की शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होता है, क्योंकि वे स्थानीय संदर्भ और आवश्यकताओं के अनुसार अपनी गतिविधियों की योजना बना सकते हैं। इस प्रणाली के कारण शिक्षकों का पेशेवर विकास, छात्रों की सृजनात्मकता और अभिभावकों की भागीदारी बढ़ती है, जो समग्र शिक्षा वातावरण को और बेहतर बनाती है।

विद्यालय स्वायत्तता प्रणाली का महत्व: विद्यालय स्वायत्तता प्रणाली शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो विभिन्न कारणों से महत्वपूर्ण है:

1. **स्थानीय संदर्भ के अनुसार शिक्षा:** विद्यालय स्थानीय समुदाय की आवश्यकताओं और संस्कृति के साथ मेल खाते हुए पाठ्यक्रम और गतिविधियाँ तैयार कर सकते हैं, जिससे शिक्षा की प्रासंगिकता बढ़ती है और छात्रों की भागीदारी भी बढ़ती है।
2. **निर्णय लेने की स्वायत्तता:** विद्यालय अपने बजट, शिक्षक भर्ती, और प्रशासनिक मामलों में स्वतंत्र निर्णय ले सकते हैं, जिससे उनके कार्य और भी प्रभावी और तात्कालिक होते हैं।
3. **शिक्षकों का पेशेवर विकास:** स्वायत्त विद्यालय अपने शिक्षक दल के लिए विभिन्न प्रशिक्षण और कार्यशालाओं का आयोजन करने में सक्षम होते हैं, जो शिक्षकों की क्षमताओं और पेशेवर मानकों को बढ़ाता है।
4. **अभिभावकों और समुदाय की भागीदारी:** इस प्रणाली में अभिभावक और स्थानीय समुदाय के सदस्यों की भागीदारी सुनिश्चित होती है, जो विद्यालय के कार्यों की गुणवत्ता में सहायक होती है।

5. **शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार:** जब विद्यालय स्वायत्त होते हैं, तो वे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए आवश्यक कदम उठा सकते हैं, जैसे छात्रों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों और उन्नत पाठ्यक्रमों का परिचय।
6. **स्वतंत्रता और नवाचार:** विद्यालय नई शिक्षण विधियों और नवोन्मेषी गतिविधियों को अपनाने का अवसर पाते हैं, जो छात्रों के शिक्षण अनुभव को समृद्ध करता है।

विद्यालय स्वायत्तता प्रणाली के लाभ: विद्यालय स्वायत्तता प्रणाली के कई लाभ हैं, जो विद्यालय के कार्यों और शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने में सहायक हैं:

1. **स्थानीय आवश्यकताओं के प्रति प्रतिक्रिया:** विद्यालय स्थानीय समुदाय की आवश्यकताओं और संस्कृति के आधार पर कार्यक्रमों और पाठ्यक्रमों का निर्माण कर सकते हैं, जिससे छात्रों के लिए शिक्षा अधिक प्रासंगिक हो जाती है।
2. **शिक्षकों का पेशेवर विकास:** विद्यालय अपने शिक्षक दल को उन्नत प्रशिक्षण और कार्यशालाओं के माध्यम से पेशेवर विकास का अवसर देते हैं, जो उनके शिक्षण विधियों में सुधार करता है।
3. **अभिभावकों की भागीदारी:** स्वायत्तता प्रणाली अभिभावकों को विद्यालय के निर्णय लेने में भाग लेने का अवसर देती है, जिससे विद्यालय के कार्यों को और अधिक पारदर्शी और लोकतांत्रिक बना दिया जाता है।
4. **शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार:** विद्यालय अपने लक्ष्य और उद्देश्यों के अनुसार शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए आवश्यक कदम उठा सकते हैं, जैसे नए पाठ्यक्रम का परिचय और छात्रों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों का आयोजन।
5. **आर्थिक स्वतंत्रता:** विद्यालय अपने बजट और धन के प्रबंधन में स्वतंत्रता पाते हैं, जिससे वे अपने कार्यों को अधिक प्रभावी ढंग से संचालित कर सकते हैं।
6. **स्वतंत्र निर्णय लेना:** विद्यालय शिक्षा के मुद्दों पर तेजी से निर्णय लेने में सक्षम होते हैं, जिससे उनके कार्य और भी प्रभावी और उत्पादक बनते हैं।
7. **छात्रों के अनुभव को बढ़ाना:** विद्यालय विभिन्न सृजनात्मक गतिविधियों और परियोजनाओं को अपनाने का अवसर पाते हैं, जो छात्रों के शिक्षण अनुभव को समृद्ध करता है।
8. **सामाजिक जागरूकता बढ़ाना:** विद्यालय स्थानीय समस्याओं के प्रति जागरूकता बढ़ा सकते हैं और समाज में सकारात्मक बदलाव के लिए काम कर सकते हैं।

निष्कर्ष: विद्यालय स्वायत्तता प्रणाली शिक्षा की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह विद्यालयों को स्थानीय आवश्यकताओं के प्रति प्रतिक्रिया देने, शिक्षकों के पेशेवर विकास के अवसर बनाने और अभिभावकों की भागीदारी सुनिश्चित करने में मदद करती है। परिणामस्वरूप, विद्यालय के कार्य अधिक प्रभावी, पारदर्शी और लोकतांत्रिक हो जाते हैं। विद्यालय अपने लक्ष्यों के अनुसार शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए तात्कालिक निर्णय लेने की क्षमता प्राप्त करते हैं और विभिन्न सृजनात्मक गतिविधियों के माध्यम से छात्रों के अनुभवों को समृद्ध करते हैं। कुल मिलाकर, विद्यालय स्वायत्तता प्रणाली न केवल शिक्षा के वातावरण में सुधार करती है, बल्कि एक समृद्ध और सामाजिक रूप से जागरूक पीढ़ी के निर्माण में भी मदद करती है। इसलिए, यह विद्यालयों के समग्र विकास और छात्रों के उज्ज्वल भविष्य के लिए आवश्यक है।

2. Prepare an elaborate design to maintain student`s overall performance record in a school. 2017, 2021, 2023

Ans: <u>भूमिका:</u> विद्यालय स्वायत्तता प्रणाली एक शैक्षिक ढांचा है जो विद्यालयों को उनकी गतिविधियों का प्रबंधन करने के लिए अधिक स्वायत्तता प्रदान करता है। यह प्रणाली शिक्षकों, अभिभावकों और छात्रों के बीच सहयोग और भागीदारी को बढ़ाती है। इसके माध्यम से विद्यालय स्थानीय जरूरतों और संस्कृति का जवाब दे सकते हैं। स्वायत्तता प्रणाली के तहत विद्यालयों को अपने बजट, पाठ्यक्रम और शैक्षिक रणनीतियों को निर्धारित करने की स्वतंत्रता मिलती है, जो शिक्षा के गुणवत्ता में सुधार में मदद करता है। यह प्रक्रिया शिक्षा में जनसामान्य का विश्वास बढ़ाने और छात्रों के लिए एक उचित और उत्पादक शिक्षा वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

<u>शिक्षार्थियों के समग्र परिणामों का रिकॉर्ड बनाए रखने के लिए विस्तृत डिज़ाइन:</u>

1. **उद्देश्य:** शिक्षार्थियों के समग्र परिणामों का रिकॉर्ड बनाए रखने का उद्देश्य उनके शैक्षणिक, सामाजिक, और व्यक्तिगत विकास की निगरानी करना और उनके सुधार के लिए आवश्यक जानकारी एकत्र करना है।
2. **डेटा संग्रह के घटक:**
   a. **शैक्षणिक प्रदर्शन:** विभिन्न विषयों में परीक्षा के परिणाम, कक्षा परीक्षाओं में अंक, परीक्षा के परिणामों का विश्लेषण।
   b. **शिक्षक मूल्यांकन:** कक्षा में छात्रों की भागीदारी, व्यवहार, और ध्यान की शिक्षकों द्वारा मूल्यांकन।
   c. **सामाजिक गतिविधियाँ:** क्लब, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल, और अन्य अतिरिक्त पाठ्यक्रम गतिविधियों में भागीदारी।
   d. **शारीरिक स्वास्थ्य:** स्वास्थ्य परीक्षण के परिणाम और शारीरिक शिक्षा गतिविधियों में भागीदारी।
   e. मानसिक स्वास्थ्य: परामर्श सत्रों और मानसिक स्वास्थ्य पर रिपोर्ट।
3. **दस्तावेज़ प्रक्रिया:**
   a. **डेटाबेस निर्माण:** एक डिजिटल डेटाबेस बनाना जहाँ सभी छात्रों की जानकारी संग्रहीत होगी।
   b. **डेटा अपडेट:** शिक्षकों द्वारा मासिक या सेमेस्टर के अनुसार जानकारी अपडेट की जाएगी।
   c. रिकॉर्ड रखरखाव: सुनिश्चित करें कि सभी जानकारी सही तरीके से रखी गई है ताकि वह आसानी से पहुँच योग्य और विश्लेषण योग्य हो।
4. **रिपोर्टिंग प्रणाली:**
   a. **मासिक/त्रैमासिक रिपोर्ट:** प्रत्येक माह या त्रैमासिक के लिए छात्रों के परिणाम, भागीदारी, और विकास पर रिपोर्ट तैयार करना।
   b. **अभिभावक-शिक्षक बैठकें:** अभिभावकों के साथ चर्चा करना ताकि वे अपने बच्चे के विकास के बारे में अवगत रह सकें।
5. **विश्लेषण और मूल्यांकन:**
   a. **डेटा विश्लेषण:** छात्रों के परिणामों का विश्लेषण करना ताकि यह पहचाना जा सके कि किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है।

b. **समीक्षा बैठकें:** शिक्षकों के साथ बैठकें करना ताकि छात्रों के सुधार के लिए रणनीतियाँ विकसित की जा सकें।

6. छात्रों के लिए समर्थन:

a. **पाठ्यक्रम विकास:** शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए एक योजना बनाना जो छात्रों की जरूरतों का जवाब दे।

b. **पुनरुत्थान और सहयोग:** छात्रों के लिए अतिरिक्त कक्षाएँ या सहायता समूह स्थापित करना।

7. प्रौद्योगिकी का उपयोग:

a. ऑनलाइन प्लेटफार्म: छात्रों के परिणामों और जानकारी को ऑनलाइन उपलब्ध कराना ताकि अभिभावक देख सकें।

b. **ऐप्स और सॉफ़्टवेयर**: डेटा संग्रह और विश्लेषण के लिए विशेष ऐप्स या सॉफ़्टवेयर का उपयोग करना।

8. परिणाम और सुधार:

a. **समग्र परिणाम:** छात्रों के परिणामों का विश्लेषण करना ताकि विद्यालय के विकास की जरूरतों का पता लगाया जा सके।

b. **सुधारात्मक उपाय:** प्राप्त जानकारी के आधार पर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए कदम उठाना।

<u>उपसंहार:</u> छात्रों के समग्र परिणामों का रिकॉर्ड बनाए रखने के लिए यह डिज़ाइन विद्यालय की गतिविधियों को अधिक प्रभावी और संगठित बनाने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है। इसके माध्यम से छात्रों के शैक्षणिक, सामाजिक, और शारीरिक स्वास्थ्य से संबंधित जानकारी को सही तरीके से एकत्रित और विश्लेषित किया जाएगा। मासिक और त्रैमासिक रिपोर्टिंग प्रणाली अभिभावकों के साथ संवाद बनाए रखेगी और छात्रों के सुधार के लिए उपयुक्त सहायता सुनिश्चित करेगी। प्रौद्योगिकी का उपयोग जानकारी को आसानी से उपलब्ध बनाएगा, जो छात्रों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। कुल मिलाकर, यह प्रणाली विद्यालय में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने और छात्रों के समग्र विकास को सुनिश्चित करने में सहायक होगी।

3. Explain the importance of mid-day-meal program in school. 2020, 2018

Ans: <u>भूमिका:</u> विद्यालय में मध्याह्न भोजन कार्यक्रम छात्रों के लिए एक महत्वपूर्ण खाद्य सुरक्षा प्रणाली है। यह छात्रों की पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक है, विशेषकर उन छात्रों के लिए जो वित्तीय रूप से कमजोर हैं। यह कार्यक्रम छात्रों में स्वास्थ्यवर्धक आहार की आदतें विकसित करने के साथ-साथ विद्यालय में उपस्थिति बढ़ाने में मदद करता है। मध्याह्न भोजन शैक्षणिक गुणवत्ता में भी योगदान करता है, क्योंकि पौष्टिक भोजन छात्रों की ध्यान और एकाग्रता को बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त, यह सामाजिक समानता को बढ़ावा देता है क्योंकि सभी छात्र एक ही भोजन प्राप्त करते हैं। परिणामस्वरूप, मध्याह्न भोजन कार्यक्रम विद्यालय के वातावरण और शैक्षणिक गुणवत्ता दोनों को सुधारता है।

<u>विद्यालय में मध्याह्न भोजन कार्यक्रम की धारणा:</u> विद्यालय में मध्याह्न भोजन कार्यक्रम एक राष्ट्रीय कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य सरकारी और सहायता प्राप्त विद्यालयों में छात्रों को दोपहर के भोजन की आपूर्ति करना है। इसका मुख्य लक्ष्य छात्रों की पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करना और

विद्यालय में उनकी उपस्थिति बढ़ाना है। यह कार्यक्रम खाद्य सुरक्षा और पोषण पर विशेष ध्यान देता है, विशेषकर समाज के गरीब और वंचित वर्गों में।

मध्याह्न भोजन कार्यक्रम छात्रों को एक पोषणयुक्त और सस्ती भोजन व्यवस्था प्रदान करता है, जिससे वे विद्यालय में पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित कर सकें। इस कार्यक्रम के माध्यम से सरकार यह सुनिश्चित करती है कि छात्रों की दैनिक पोषण संबंधी आवश्यकताएँ पूरी हो रही हैं, जो उनके शारीरिक और मानसिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

इसके अलावा, मध्याह्न भोजन कार्यक्रम सामाजिक समानता और एकता की धारणा को भी सशक्त बनाता है, क्योंकि सभी छात्र एक साथ भोजन करते हैं। इससे विद्यालय का वातावरण और अधिक मित्रवत और सहयोगात्मक बनता है, जहाँ सभी छात्र एक साथ समय बिताते हैं और भोजन साझा करते हैं। इसलिए, मध्याह्न भोजन कार्यक्रम केवल खाद्य सुरक्षा के लिए नहीं, बल्कि शैक्षणिक गुणवत्ता और सामाजिक एकता के विकास के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

<u>विद्यालय में मध्याह्न भोजन कार्यक्रम का महत्व:</u>

1. **पोषण और स्वास्थ्य:** मध्याह्न भोजन कार्यक्रम छात्रों की दैनिक पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करता है। यह खाने की आदतें विकसित करता है और सही पोषण सुनिश्चित करता है, जो शारीरिक और मानसिक विकास के लिए आवश्यक है।
2. **विद्यालय में उपस्थिति वृद्धि:** छात्रों को दोपहर के भोजन के लिए विद्यालय आने के लिए आकर्षित किया जाता है। मध्याह्न भोजन के कारण अभिभावक अपने बच्चों को विद्यालय भेजने के लिए प्रेरित होते हैं, जिससे उपस्थिति बढ़ती है।
3. **शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार:** पोषणयुक्त भोजन छात्रों की ध्यान और एकाग्रता को बढ़ाता है, जो उनके अध्ययन की गुणवत्ता में मदद करता है। स्वस्थ और पोषित छात्र बेहतर पढ़ाई कर सकते हैं।
4. **सामाजिक एकता:** मध्याह्न भोजन के माध्यम से सभी छात्र एक साथ भोजन करते हैं, जो सामाजिक एकता और मित्रवत वातावरण बनाता है। यह कक्षा में सहानुभूति और आपसी संबंधों को बढ़ाता है।
5. **आर्थिक सहायता:** गरीब परिवारों के लिए मध्याह्न भोजन एक आर्थिक सहायता के रूप में कार्य करता है। यह परिवार के खाद्य खर्च को कम करता है और छात्रों के लिए एक नियमित भोजन के स्रोत को सुनिश्चित करता है।
6. **शिक्षकों की भूमिका:** मध्याह्न भोजन कार्यक्रम शिक्षकों के लिए भी एक अवसर प्रदान करता है, क्योंकि वे छात्रों के स्वास्थ्य पर नजर रख सकते हैं और उनके पोषण संबंधी आवश्यकताओं के प्रति जागरूकता बढ़ा सकते हैं।
7. **विद्यालय का विकास:** मध्याह्न भोजन कार्यक्रम विद्यालयों के विकास पर ध्यान केंद्रित करता है, क्योंकि यह स्थानीय खाद्य उत्पादकों और किसानों का समर्थन करता है, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है।

<u>उपसंहार:</u> विद्यालय में मध्याह्न भोजन कार्यक्रम शिक्षा के वातावरण को समृद्ध करने के साथ-साथ छात्रों के पोषण, उपस्थिति और स्वास्थ्य को सुनिश्चित करता है। यह सामाजिक एकता को बढ़ाता है और विद्यालय में एक मित्रवत वातावरण पैदा करता है। मध्याह्न भोजन कार्यक्रम छात्रों के लिए एक महत्वपूर्ण खाद्य स्रोत के रूप में कार्य करता है, जो उनके मानसिक और शारीरिक विकास में सहायक है। इसके माध्यम से शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार और गरीब परिवारों के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

इसलिए, मध्याह्न भोजन कार्यक्रम विद्यालयों के विकास और छात्रों के समग्र विकास के लिए आवश्यक है, जो एक स्वस्थ और जागरूक पीढ़ी के निर्माण में मदद करता है।

4. What are the needs of school library? Comment on the present condition of secondary school library. 2018

Ans: <u>भूमिका:</u> विद्यालय पुस्तकालय छात्रों के लिए ज्ञान और जानकारी का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। यह एक सुरक्षित और शांतिपूर्ण वातावरण बनाता है, जहाँ छात्र पठन-पाठन के माध्यम से अपनी दक्षताओं को बढ़ा सकते हैं। विद्यालय पुस्तकालय शिक्षा की प्रक्रिया को समृद्ध करता है, क्योंकि यह विभिन्न विषयों पर किताबें, पत्रिकाएँ, और डिजिटल संसाधन प्रदान करता है। विशेष रूप से वर्तमान प्रौद्योगिकी युग में, जानकारी खोजने की दक्षता प्राप्त करने के लिए पुस्तकालयों का महत्व बढ़ गया है। पाठ्यपुस्तकों के बाहर और ज्ञान अर्जन के अवसर देने के लिए पुस्तकालय अनिवार्य है। इसलिए, विद्यालय पुस्तकालय छात्रों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

<u>विद्यालय पुस्तकालय की धारणा:</u> विद्यालय पुस्तकालय एक विशेष स्थान है जहाँ छात्रों की शैक्षिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न किताबें, पत्रिकाएँ, जानकारी सामग्री और डिजिटल संसाधन संरक्षित रहते हैं। यह विद्यालय का एक अभिन्न हिस्सा है, जो छात्रों को ज्ञान बढ़ाने और पाठ्यविषयों की गहन समझ का अवसर प्रदान करता है। विद्यालय पुस्तकालय पाठक-केंद्रित वातावरण बनाते हैं, जहाँ छात्र अपनी रुचि के विषय के अनुसार किताबें चुन सकते हैं और नई जानकारी खोज सकते हैं। पुस्तकालय केवल पाठ्यपुस्तकों का स्रोत नहीं है, बल्कि यह अनुसंधान, प्रोजेक्ट और रचनात्मक सोच के लिए भी एक महत्वपूर्ण स्थान है। इसके माध्यम से छात्र जानकारी खोजने, आलोचनात्मक सोच और स्वतंत्रता हासिल करने की दक्षता विकसित कर सकते हैं। इसलिए, विद्यालय पुस्तकालय शिक्षा के गुणात्मक मान में सुधार में अनिवार्य भूमिका निभाता है।

<u>विद्यालय पुस्तकालय की आवश्यकता:</u>

1. **ज्ञान और जानकारी का स्रोत:** विद्यालय पुस्तकालय छात्रों के लिए विभिन्न विषयों पर किताबें, पत्रिकाएँ और शोध पत्र संग्रहित करता है, जो उनके ज्ञान और जानकारी के प्रवाह को बढ़ाता है।
2. **पाठ्यविषयों की समृद्धि:** पुस्तकालय छात्रों को पाठ्यविषयों की गहन समझ हासिल करने में मदद करता है, क्योंकि वे पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य संबंधित विषयों के बारे में जान सकते हैं।
3. **शिक्षा में सुधार:** पढ़ाई और अनुसंधान के लिए एक उपयुक्त स्थान के रूप में पुस्तकालय छात्रों की ध्यान केंद्रित करने की क्षमता बढ़ाता है और उन्हें पढ़ाई में रुचि दिलाता है, जो शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार में सहायक होता है।
4. **समाज और संस्कृति की पहचान:** पुस्तकालय स्थानीय संस्कृति और इतिहास पर आधारित विभिन्न किताबें प्रदान करता है, जो छात्रों को समाज के प्रति जागरूक बनाता है।
5. **सृजनात्मकता और आलोचनात्मक सोच का विकास:** विभिन्न प्रकार की जानकारी और साहित्य पुस्तकालय में उपलब्ध रहने के कारण छात्र अपनी सृजनात्मकता और आलोचनात्मक सोच की दक्षता बढ़ा सकते हैं।

6. **ऑनलाइन संसाधनों का उपयोग:** आधुनिक विद्यालय पुस्तकालय डिजिटल संसाधनों और ऑनलाइन डेटाबेस के माध्यम से जानकारी संग्रहित करने का अवसर प्रदान करते हैं, जिससे छात्रों के लिए अनुसंधान का काम सरल हो जाता है।
7. **शिक्षकों का सहयोग:** पुस्तकालय शिक्षकों के लिए एक उपयोगी स्थान है, जहाँ वे छात्रों के लिए गतिविधियाँ और पाठ योजनाएँ बना सकते हैं।
8. **सामाजिक एकता:** पुस्तकालय एक सामाजिक स्थान है, जहाँ छात्र एक साथ समय बिताते हैं और चर्चा करते हैं, जो सामाजिक एकता बढ़ाता है।

वर्तमान में माध्यमिक स्तर के विद्यालय पुस्तकालयों की स्थिति: वर्तमान में, जबकि कुछ माध्यमिक विद्यालय पुस्तकालयों में सुधार हुआ है, वे कई महत्वपूर्ण समस्याओं का सामना कर रहे हैं:

1. **सुविधाओं की कमी:** कई विद्यालयों के पुस्तकालयों में पर्याप्त किताबें, हालिया शोध और आधुनिक पाठ्यविषयों के उपकरण नहीं हैं। परिणामस्वरूप, छात्रों का ज्ञान का विस्तार नहीं हो पाता।
2. **सामान्य पहुँच:** अधिकांश विद्यालयों के पुस्तकालय छात्रों के लिए आसानी से उपलब्ध नहीं हैं। कई मामलों में, छात्रों को केवल सीमित समय के लिए पुस्तकालय जाने की अनुमति होती है, जो उनके पढ़ाई की आदत को बाधित करता है।
3. **डिजिटल संसाधनों की कमी:** हालाँकि आधुनिक पुस्तकालय डिजिटल संसाधनों और ऑनलाइन डेटाबेस की ओर बढ़ रहे हैं, लेकिन कई विद्यालयों में इस तरह के अवसरों की कमी है। इसलिए, छात्र आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी के लाभ से वंचित हो रहे हैं।
4. **अनुभवहीन पुस्तकालयाध्यक्ष:** कुछ विद्यालयों में पुस्तकालय की जिम्मेदारी संभालने वाले व्यक्ति पर्याप्त प्रशिक्षित नहीं होते, जिससे वे छात्रों की जानकारी खोजने में सहायता नहीं कर पाते।
5. **पाठ्यपुस्तक केंद्रितता:** कई विद्यालयों के पुस्तकालय पाठ्यपुस्तक केंद्रित होते हैं, जहाँ अन्य विषयों के अनुसंधान या साहित्य की किताबें नहीं मिलतीं। यह प्रवृत्ति छात्रों की सृजनात्मकता और विस्तृत ज्ञान के अर्जन में बाधा डालती है।
6. **सामाजिक संवाद की कमी:** पुस्तकालय सामान्यतः छात्रों के लिए सामाजिक स्थान के रूप में प्रभावी नहीं होते। इसके परिणामस्वरूप, छात्र एक साथ काम करने और चर्चा करने के अवसर से वंचित रहते हैं।
7. **पर्यवेक्षण की कमी:** विद्यालय पुस्तकालयों की गतिविधियाँ अक्सर विद्यालय प्रशासन द्वारा पर्याप्त निगरानी या सहायता नहीं पाती हैं, जिससे उनकी प्रभावशीलता घटती है।

निष्कर्ष: वर्तमान में, माध्यमिक विद्यालय पुस्तकालयों की स्थिति संतोषजनक नहीं है। जबकि पुस्तकालय शिक्षा और अनुसंधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, उनकी प्रभावशीलता आवश्यक किताबों और आधुनिक प्रौद्योगिकी की कमी, सीमित पहुँच, और अनुभवहीन पुस्तकालयाध्यक्षों के कारण बाधित होती है। एक कार्यशील पुस्तकालय छात्रों की सृजनात्मकता और ज्ञान विकास के लिए अनिवार्य है। इसलिए, विद्यालयों को अपने पुस्तकालयों के सुधार पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए ताकि ये छात्रों के लिए आकर्षक और सहायक स्थान बन सकें। प्रशासन की शुभचिंता और शिक्षकों का सहयोग पुस्तकालयों के विकास के लिए अनिवार्य है।

5. Write down different functions of teacher parent Association of a school. 2019, 2021, 2020, 2023

Ans: <u>भूमिका:</u> विद्यालय के शिक्षक- अभिभावक संघ (PTA) छात्रों और विद्यालय के बीच एक महत्वपूर्ण पुल स्थापित करता है। यह अभिभावकों और शिक्षकों के बीच संबंध और सहयोग को बढ़ावा देता है, जो शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए सहायक है। PTA की गतिविधियाँ छात्रों के सही विकास और विद्यालय के समग्र सुधार पर ध्यान केंद्रित करती हैं। अभिभावकों के विचारों और सुझावों को ध्यान में रखकर विद्यालय की नीतियों और गतिविधियों के मान को बढ़ाया जाता है। इसके अतिरिक्त, PTA शैक्षिक कार्यशालाओं, सामाजिक कार्यक्रमों और धन संग्रह के माध्यम से विद्यालय के वातावरण को और समृद्ध करता है। इसलिए, यह छात्रों की शिक्षा के मार्ग को सरल बनाने के लिए एक आवश्यक मंच है।

<u>विद्यालय के शिक्षक- अभिभावक संघ का विचार:</u> विद्यालय का शिक्षक- अभिभावक संघ (PTA) एक संगठन है, जो विद्यालय के शिक्षकों और अभिभावकों के बीच समन्वय और सहयोग स्थापित करता है। यह संगठन आमतौर पर विद्यालय के विकास, शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि, और छात्रों के सही विकास के लक्ष्यों के प्रति काम करता है।

<u>PTA के मुख्य उद्देश्य हैं:</u>

1. **संपर्क स्थापित करना:** अभिभावकों और शिक्षकों के बीच संपर्क और सहयोग बढ़ाना, ताकि छात्रों की शिक्षा और कल्याण सुनिश्चित किया जा सके।
2. **पाठ्यक्रम का विकास:** छात्रों के लिए प्रभावी पाठ्यक्रम और शिक्षा के अवसर बढ़ाने के लिए शिक्षकों और अभिभावकों के बीच चर्चा और विचारों का आदान-प्रदान करना।
3. **शिक्षा गतिविधियों का समर्थन:** विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों जैसे खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम और सामाजिक पहलों में भाग लेना और समर्थन करना।
4. **जागरूकता बढ़ाना:** अभिभावकों के बीच विद्यालय की नीतियों, गतिविधियों और शिक्षा की गुणवत्ता के बारे में जागरूकता बढ़ाना।
5. **सहयोग और समर्थन:** विद्यालय के विकासात्मक कार्यों में आर्थिक और नैतिक समर्थन प्रदान करना।

<u>विद्यालय के शिक्षक- अभिभावक संघ की विभिन्न गतिविधियाँ:</u> विद्यालय के शिक्षक- अभिभावक संघ (PTA) की विभिन्न गतिविधियाँ हैं:

1. **शिक्षा और जागरूकता बैठकें:** अभिभावकों को शिक्षा के महत्व, विद्यालय की नीतियों और छात्रों के विकास के बारे में जागरूक करने के लिए नियमित बैठकें आयोजित की जाती हैं।
2. **विभिन्न गतिविधियों का आयोजन:** खेल प्रतियोगिताएं, सांस्कृतिक कार्यक्रम और त्योहारों का आयोजन करके अभिभावकों और शिक्षकों के बीच सहयोग बढ़ाना।
3. **छात्र विकास योजनाएँ:** छात्रों के मानसिक और शारीरिक विकास के लिए विभिन्न कार्यक्रम और प्रशिक्षण का आयोजन करना।

4. **चुनाव और प्रबंधन:** अभिभावकों और शिक्षकों के बीच चुनाव प्रक्रिया संचालित करके समिति की गतिविधियों को प्रभावी बनाना।
5. **सूचनाएं और जानकारी वितरण:** विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों और नीतियों के बारे में अभिभावकों को सूचनाएं पहुंचाने के लिए समाचार पत्र और अन्य माध्यमों का उपयोग करना।
6. **विद्यालय के विकास परियोजनाएं:** विद्यालय के बुनियादी ढाँचे, शिक्षा उपकरण और अन्य विकास के लिए धन संग्रह और योजना बनाना।
7. **विशेषज्ञ वार्ता और कार्यशालाएँ:** अभिभावकों और शिक्षकों के लिए विशेषज्ञों द्वारा शिक्षा और माता-पिता की भूमिका पर कार्यशालाओं और वार्ताओं का आयोजन करना।
8. **समस्या समाधान:** विद्यालय में चल रही समस्याओं के समाधान पर चर्चा करना और समाधान निकालना।
9. **सामाजिक सेवा गतिविधियाँ:** समुदाय सेवा परियोजनाओं और गतिविधियों का आयोजन करके विद्यालय और समाज के बीच संबंध स्थापित करना।
10. **फीडबैक संग्रह:** छात्रों और अभिभावकों से फीडबैक लेकर विद्यालय की गतिविधियों के मान को सुधारना।

निष्कर्ष: विद्यालय का शिक्षक- अभिभावक संघ (PTA) एक महत्वपूर्ण मंच है, जो छात्रों के विकास के लिए अभिभावकों और शिक्षकों के बीच सहयोग और संचार स्थापित करता है। PTA की गतिविधियाँ शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार, सामाजिक जागरूकता बढ़ाने, और विद्यालय की विभिन्न समस्याओं का समाधान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अभिभावक विद्यालय की गतिविधियों में भाग लेकर अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति अधिक सावधान बनते हैं। इसलिए, छात्रों के समग्र विकास और विद्यालय की सफलता को सुनिश्चित करने के लिए विद्यालय और अभिभावकों के बीच सक्रिय सहयोग और समन्वय सुनिश्चित करना आवश्यक है। PTA की गतिविधियाँ शैक्षिक वातावरण को बेहतर बनाती हैं और विद्यालय और समाज के बीच संबंध स्थापित करती हैं।

6. Discuss the facilities to be developed in a school for inclusive education. 2019

Ans: भूमिका: समावेशी शिक्षा एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें सभी छात्र, चाहे उनके शारीरिक, मानसिक या सामाजिक अंतर कुछ भी हों, समान शिक्षा के अवसर प्राप्त करते हैं। यह शिक्षा के क्षेत्र में समानता और न्याय सुनिश्चित करने का एक महत्वपूर्ण कदम है। समावेशी शिक्षा के माध्यम से विविध छात्रों के लिए स्कूलों में एक सहयोगी और सहायक वातावरण बनाया जाता है, जहाँ वे अपनी पूरी क्षमता के अनुसार विकास कर सकते हैं। इस प्रकार की शिक्षा छात्रों के बीच आपसी समझ और सामाजिक एकता को बढ़ावा देती है, जो समाज में समावेशी दृष्टिकोण का निर्माण करती है।

स्कूलों में समावेशी शिक्षा की अवधारणा: समावेशी शिक्षा एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है जिसमें हर छात्र, विशेष रूप से शारीरिक या मानसिक विकलांगता वाले छात्रों को शिक्षा प्राप्त करने का समान अवसर दिया जाता है। इस व्यवस्था में छात्रों के शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक या भाषाई अंतर को ध्यान में रखते हुए उनके लिए एक समान, स्वीकार्य और सहयोगात्मक वातावरण बनाया जाता है। स्कूलों में समावेशी शिक्षा का उद्देश्य केवल शारीरिक उपस्थिति तक सीमित नहीं है, बल्कि छात्रों की विभिन्न आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर उन्हें उचित शिक्षा और आवश्यक सुविधाएं प्रदान करना है।

समावेशी शिक्षा व्यवस्था में शिक्षकों, अभिभावकों और छात्रों के बीच परस्पर समन्वय और सहानुभूति का महत्व है। यह न केवल शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने में मदद करती है, बल्कि छात्रों में सामाजिक मूल्यों और सहअस्तित्व की भावना का विकास करती है। इस शिक्षा व्यवस्था में प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत आवश्यकताओं और क्षमताओं के आधार पर पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों की योजना बनाई जाती है। समावेशी शिक्षा के माध्यम से समाज में भेदभाव को दूर किया जा सकता है और एक स्वस्थ, समानता और न्याय आधारित समाज का निर्माण किया जा सकता है।

<u>स्कूलों में समावेशी शिक्षा व्यवस्था की सुविधाएँ:</u>

1. **सुगम्य बुनियादी ढाँचा:** स्कूल की इमारतों, कक्षाओं और अन्य सुविधाओं को विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए अनुकूलित किया जाना चाहिए, जैसे रैंप, व्हीलचेयर की सुविधा, और ब्रेल बोर्ड की व्यवस्था।
2. **विशेष शिक्षण सामग्री और तकनीक:** श्रवण, दृष्टि और अन्य विकलांगता वाले छात्रों के लिए उपयुक्त शिक्षण सामग्री और तकनीक, जैसे ब्रेल किताबें, ऑडियो-विज़ुअल सामग्री और सहायक सॉफ़्टवेयर की व्यवस्था की जानी चाहिए।
3. **व्यक्तिगत सहायता:** छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार विशेष शिक्षक या सहायक नियुक्त किए जाने चाहिए, जैसे रिसोर्स शिक्षक या थेरेपिस्ट।
4. **शिक्षकों का प्रशिक्षण:** शिक्षकों को विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के साथ प्रभावी ढंग से काम करने के लिए विशेष प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए, ताकि वे समावेशी शिक्षा की रणनीतियों को अपना सकें।
5. **अनुकूलित पाठ्यक्रम:** छात्रों की विभिन्न क्षमताओं और रुचियों के अनुसार पाठ्यक्रम को बदलना या सरल बनाना चाहिए, ताकि प्रत्येक छात्र अपनी गति से सीख सके।
6. **सामाजिक समावेश:** सभी छात्रों को सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों में शामिल करना चाहिए, ताकि वे एक-दूसरे के साथ मेलजोल बढ़ा सकें और सहयोग तथा मित्रता को विकसित कर सकें।
7. **निगरानी और मूल्यांकन:** छात्रों की प्रगति का नियमित रूप से मूल्यांकन करना चाहिए और उनकी विशेष आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण विधियों का समन्वय करना चाहिए।
8. **परामर्श और मार्गदर्शन:** छात्रों और उनके परिवारों के लिए नियमित रूप से परामर्श और मानसिक समर्थन की व्यवस्था की जानी चाहिए, ताकि वे शिक्षा के प्रत्येक चरण में सहायता प्राप्त कर सकें।
9. **जागरूकता कार्यक्रम:** समावेशी शिक्षा के महत्व के बारे में अभिभावकों और छात्रों को जागरूक करने के लिए कार्यशालाओं और जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।
10. **छात्रवृत्ति और आर्थिक सहायता:** विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए छात्रवृत्ति और आर्थिक सहायता की व्यवस्था की जानी चाहिए, ताकि वे बिना किसी बाधा के शिक्षा प्राप्त कर सकें।

<u>निष्कर्ष:</u> स्कूलों में समावेशी शिक्षा व्यवस्था को स्थापित करने के लिए उचित बुनियादी ढाँचा, विशेष शिक्षण सामग्री, प्रशिक्षित शिक्षक और सहायक वातावरण आवश्यक हैं। यह व्यवस्था न केवल विकलांग छात्रों के शिक्षा के अधिकार को सुनिश्चित करती है, बल्कि सभी छात्रों के बीच सहानुभूति, सहयोग और सामाजिक मूल्यों को विकसित करने में भी सहायक होती है। समावेशी शिक्षा एक मानवीय और जिम्मेदार समाज की नींव रखती है, जहाँ प्रत्येक छात्र अपनी क्षमताओं के अनुसार सीख सकता है और

समाज की मुख्यधारा में पूर्ण रूप से भाग ले सकता है। उचित योजना और सहयोग के माध्यम से इस प्रणाली का सफल कार्यान्वयन संभव है।

7. Discuss the role of Para teachers in school. 2022

Ans: <u>भूमिका:</u> विद्यालयों में पार्श्वशिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे प्राथमिक शिक्षकों की सहायता से शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और सफल बनाने में मदद करते हैं। पार्श्वशिक्षक छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जैसे विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों के लिए अलग सहायता प्रदान करना, छोटे समूहों में शिक्षण करना, और शिक्षा के गुणवत्ता में सुधार के लिए सहायक होना। वे कक्षा में अनुशासन बनाए रखते हैं, छात्रों की प्रगति का मूल्यांकन करते हैं, और विद्यालय की विभिन्न सह-शिक्षा गतिविधियों के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार, पार्श्वशिक्षक विद्यालय के समग्र शिक्षण प्रक्रिया में सुधार करने में सहायता करते हैं।

<u>विद्यालय में पार्श्वशिक्षकों की भूमिका:</u>

1. **कक्षा में सहायता:** पार्श्वशिक्षक मुख्य शिक्षक की सहायता से कक्षा की गतिविधियों का संचालन करते हैं, जिससे छात्रों का शिक्षण अनुभव बढ़ता है और एक सहयोगी वातावरण बनता है।
2. **विशेष छात्रों की सहायता:** पार्श्वशिक्षक विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों को व्यक्तिगत सहायता प्रदान करते हैं, ताकि वे कक्षा में अपने अधिकतम संभावनाओं तक पहुंच सकें।
3. **शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार:** छात्रों की प्रगति की निगरानी और मूल्यांकन के माध्यम से, पार्श्वशिक्षक शिक्षा प्रक्रिया की गुणवत्ता में योगदान करते हैं, जो छात्रों के विकास में सहायक होता है।
4. **सामाजिक कौशल विकास:** पार्श्वशिक्षक सामाजिक कौशल और आपसी संबंधों को विकसित करने के लिए गतिविधियों का आयोजन करते हैं, जो छात्रों को सहानुभूति और सहयोग सिखाते हैं।
5. **कक्षा प्रबंधन:** शिक्षक और छात्रों के बीच अनुशासन बनाए रखने में पार्श्वशिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो कक्षा में एक अनुशासित वातावरण सुनिश्चित करता है।
6. **समूह गतिविधियाँ:** पार्श्वशिक्षक छोटे समूहों में काम करते समय छात्रों का मार्गदर्शन करते हैं, जो सहयोगी शिक्षण अनुभव प्रदान करता है और छात्रों को एक-दूसरे से सीखने में मदद करता है।
7. **सह-शिक्षा गतिविधियाँ:** पाठ्यक्रम के बाहर विभिन्न सह-शिक्षा गतिविधियों में पार्श्वशिक्षक भाग लेते हैं, जो छात्रों के समग्र विकास में सहायक होता है।
8. **शिक्षण सामग्री की तैयारी:** पार्श्वशिक्षक पाठों के लिए शिक्षण सामग्री तैयार और व्यवस्थित करने में सहायता करते हैं, ताकि छात्र अधिक प्रभावी तरीके से सीख सकें।
9. **भावनात्मक सहायता:** पार्श्वशिक्षक छात्रों को भावनात्मक रूप से सहायता करते हैं, जो उनके मनोबल और आत्मविश्वास को बढ़ाता है।
10. **अभिभावकों के साथ संपर्क:** पार्श्वशिक्षक अभिभावकों के साथ संपर्क बनाए रखते हैं, उनके बच्चों की प्रगति के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं और सहयोग बढ़ाते हैं।
11. **शिक्षकों के प्रशिक्षण:** पार्श्वशिक्षक मुख्य शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण और सहायता प्रदान करते हैं, ताकि वे नए शिक्षण तकनीकों और विधियों को सीख सकें।
12. **स्मार्ट कक्षाओं में तकनीक के उपयोग में सहायता:** पार्श्वशिक्षक शिक्षकों को तकनीक के उपयोग को बढ़ाने में मदद करते हैं, जो कक्षा में आधुनिक और प्रभावी शिक्षण को सरल बनाता है।

13. **मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता:** छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित जागरूकता बढ़ाने के लिए पार्श्वशिक्षक गतिविधियाँ और चर्चाएँ आयोजित करते हैं, जो छात्रों के लिए सहायक होती हैं।
14. **रचनात्मक गतिविधियाँ:** पार्श्वशिक्षक रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से छात्रों की रचनात्मकता और विचारशीलता को बढ़ाने में सहायता करते हैं, जो उनकी शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाता है।
15. **शिक्षण परियोजनाएँ और अनुसंधान:** पार्श्वशिक्षक छात्रों को शैक्षिक परियोजनाओं और अनुसंधान में भाग लेने में सहायता करते हैं, जो उनके अनुसंधान कौशल और अध्ययन के प्रति रुचि पैदा करता है।

उपसंहार: विद्यालय में पार्श्वशिक्षकों की भूमिका शिक्षा का एक अनिवार्य हिस्सा है। वे शिक्षकों के सहायक के रूप में काम करते हैं और छात्रों के शिक्षा और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। सहानुभूति, ध्यान, और सहायता के माध्यम से, पार्श्वशिक्षक एक सहायक वातावरण बनाते हैं जहाँ छात्र अपनी पसंदीदा क्षेत्रों में विकास कर सकते हैं। उनके सहयोग से कक्षा में सक्रिय भागीदारी और सामाजिक कौशल बढ़ता है। शिक्षकों के साथ उनका समन्वय और संचार विद्यालय के समग्र वातावरण और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करता है। इसलिए, पार्श्वशिक्षक शिक्षा की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करते हैं, जो सफल शिक्षण की नींव तैयार करता है।

Course: 1.2. EPC2 (Drama and Art in Education)

Marks: 2

1. Write, four characteristics of folk drama. 2017

Ans: लोक नाटक के चार विशेषताएँ हैं:

1. **सीधा और सरल प्रस्तुतीकरण:** लोक नाटक सामान्यतः सरल भाषा, सीधा संवाद और हास्यपूर्ण शैली में प्रस्तुत किया जाता है, जो साधारण लोगों के लिए आसानी से समझने योग्य होता है और उनके साथ तुरंत जुड़ाव स्थापित करता है।
2. **संगीत और नृत्य का प्रयोग:** लोक नाटक में गीत और नृत्य का मिश्रण होता है। विभिन्न रागों, लोकगीतों और ताल का प्रयोग नाटक को जीवंत बना देता है और दर्शकों का मनोरंजन करता है।
3. **प्राकृतिक और सामाजिक परिवेश:** लोक नाटक की कहानियाँ आमतौर पर ग्रामीण समाज, स्थानीय संस्कृति और प्रकृति से संबंधित होती हैं। इसमें स्थानीय रीति-रिवाज, आचार-व्यवहार और सामाजिक समस्याओं का प्रतिबिंब मिलता है।
4. **दर्शकों की सहभागिता:** लोक नाटक में दर्शकों की सक्रिय सहभागिता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कलाकार अक्सर दर्शकों से बात करते हैं, उनकी प्रतिक्रियाओं को लेते हैं, जिससे नाटक और भी आकर्षक और निजी हो जाता है।

2. What is 'Third Theatre'? 2017, 2021

Ans: थर्ड थिएटर एक विशेष रंगमंचीय आंदोलन है, जिसे बांग्लादेश के नाटककार बादल सरकार ने शुरू किया। यह पारंपरिक मंचन और व्यावसायिक थिएटर से अलग एक जनोन्मुखी और विरोधात्मक

नाट्य रूप है, जो समाज के उत्पीड़ित लोगों के जीवन और संघर्ष को उजागर करता है। थर्ड थिएटर की कुछ विशेषताएँ हैं:

- **मंच की आवश्यकता नहीं:** इसे खुले मैदान या सड़कों पर प्रस्तुत किया जाता है, जिससे आम लोग आसानी से जुड़ सकते हैं।
- **सामाजिक संदेश:** थर्ड थिएटर राजनीतिक भ्रष्टाचार और सामाजिक उत्पीड़न जैसे मुद्दों को उठाता है और जनमत बनाने का काम करता है।
- **सुलभ उत्पादन:** इसमें साधारण पोशाक और उपकारणों का प्रयोग होता है, जिससे लागत कम होती है।
- **दर्शकों की भागीदारी:** दर्शक नाटक में सक्रिय रूप से भाग ले सकते हैं, जिससे नाटक अधिक जीवंत और वास्तविक हो जाता है।

थर्ड थिएटर समाज की आवाज बनकर सांस्कृतिक जागरण में सहायक भूमिका निभाता है।

3. What is 'Laya'? Mention the types of 'Laya'. 2017, 2019, 2020, 2022

Ans: लय संगीत में गति, ताल और सुर के मिलन को दर्शाने के लिए उपयोग किया जाने वाला एक महत्वपूर्ण तत्व है। यह मूलतः संगीत के प्रवाह और सुर की मधुरता बनाने में सहायता करता है। 'लय' संगीत की मौलिक गुणात्मक विशेषताओं में से एक है, जो शास्त्रीय संगीत के विभिन्न रागों और तालों को एकत्रित करता है।

<u>लय के प्रकार:</u>

1. **विषम लय (Visham Laya):** यह संगीत में अजीब या असमान ताल को दर्शाता है। इसमें आमतौर पर संगीत की विभिन्न गति का संयोजन होता है।
2. **सम लय (Sam Laya):** यह संगीत में नियमित (सामान्य) ताल को दर्शाता है। इस प्रकार की लय में संगीत की सूक्ष्मता और संगति स्पष्ट होती है, और यह सामान्यतः नियमित गति का पालन करता है।
3. **अतिशय लय (Atishay Laya):** यह एक विशेष प्रकार की लय है, जहां संगीत की गति बहुत तेज और जीवंत होती है। इसे सामान्यतः उत्सवमुखी संगीत में उपयोग किया जाता है।
4. **धीरे लय (Dhir Laya):** यह धीमी गति के संगीत को दर्शाता है। इसमें संगीत की कण्ठस्वर की स्पष्टता और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए धीरे-धीरे गाया जाता है।

लय संगीत की गति और अभिव्यक्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, और प्रदर्शन के शैली और प्रस्तुति को निर्धारित करता है।

4. State the origin of worli art with two special features. 2017, 2021

Ans: <u>वर्ली चित्रकला की विशेषताएँ:</u>

1. **प्राकृतिक और आदिम प्रेरणा:** वर्ली चित्रकला आमतौर पर प्रकृति, पशु-पक्षी, और स्थानीय सांस्कृतिक प्रतीकों पर आधारित होती है। कलाकार अपने कलाकृतियों में स्थानीय प्राकृतिक वातावरण, जैसे पौधे, नदियाँ, और पशुओं के जीवन का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो आदिवासी जीवनशैली से संबंधित होते हैं।
2. **रंग और रेखाओं का उपयोग:** वर्ली चित्रकला की एक महत्वपूर्ण विशेषता इसकी जीवंत रंग और सरल रेखाओं का उपयोग है। चित्रों में आमतौर पर काले, सफेद और प्राकृतिक रंगों का संयोजन देखने को मिलता है, जो सृष्टि की प्राकृतिक सुंदरता को उजागर करता है। रेखाएँ आमतौर पर चिकनी और तरल होती हैं, जो चित्रों को गतिशील और जीवंत बनाती हैं।

वर्ली चित्रकला का स्रोत भारत के आदिवासी वर्ली समुदाय की संस्कृति और जीवनशैली है, जो महाराष्ट्र का एक प्राचीन जनजाति है। उनकी प्राचीन कथाएँ और पारंपरिक जीवन के चित्रण इस कला का मूल आधार बनाते हैं।

5. What is the etymological meaning of 'Fabric'? What are two principles, which you need to maintain before starting fabric painting? 2017

Ans: फेब्रिक का व्युत्पत्तिगत अर्थ: "फेब्रिक" शब्द लैटिन भाषा के "फैब्रिका" से आया है, जिसका अर्थ "बनाना" या "निर्माण करना" है। यह मूल रूप से एक प्रकार के टेक्सटाइल या कपड़े को दर्शाता है जो विभिन्न सामग्रियों जैसे कपास, रेशम, ऊन आदि से बना होता है।

<u>फेब्रिक चित्रण शुरू करने से पहले पालन करने के लिए दो सिद्धांत:</u>

1. **डिज़ाइन और योजना:** फेब्रिक चित्रण के लिए एक स्पष्ट डिज़ाइन और योजना आवश्यक है। कलाकार को पहले से सोचना होगा कि वे किस प्रकार का चित्रण करना चाहते हैं और किस रंग और सामग्री का उपयोग करेंगे।
2. **फेब्रिक के प्रकार का चयन:** विभिन्न प्रकार के फेब्रिक के साथ काम करना पड़ता है। प्रत्येक फेब्रिक की संरचना और बनावट भिन्न हो सकती है, इसलिए सही फेब्रिक का चयन करना महत्वपूर्ण है ताकि चित्रण का परिणाम सुंदर और टिकाऊ हो।

6. What is poetry? 2017, 2020, 2022

Ans: कविता एक साहित्यिक रूप है, जो सामान्यतः छंद, अलंकार, और सुर के माध्यम से भावनाओं, विचारों, या अनुभवों को व्यक्त करती है। कविता संक्षिप्त और गहरी हो सकती है, जहां लेखक सामान्यतः शब्दों का सटीक उपयोग करके एक विशेष प्रभाव बनाता है। यह केवल वर्णन या कहानी कहने के लिए नहीं, बल्कि भावनाओं और विचारों की एक कलात्मक अभिव्यक्ति के रूप में कार्य करती है।

<u>कविता के कुछ मौलिक विशेषताएँ हैं:</u>

1. **छंद और रिदम:** कविता में छंद और रिदम बहुत महत्वपूर्ण हैं। ये कविता को सुरम्य बनाते हैं और पढ़ने के समय एक विशेष भावना उत्पन्न करते हैं।

2. **अलंकार:** कविता में विभिन्न प्रकार के अलंकारों का उपयोग किया जाता है, जैसे रूपक, उपमा, उपमा, आदि, जो विचार की गहराई और वर्णन की सुंदरता को बढ़ाते हैं।
3. **विचारों की अभिव्यक्ति:** कविता सामान्यतः लेखक के विचारों को संक्षेप में, लेकिन गहराई से व्यक्त करती है। यह पाठक के मन में अनेक विचार और भावनाएँ उत्पन्न कर सकती है।
4. **सृजनात्मकता:** कविता लिखने के लिए सृजनात्मक सोच की आवश्यकता होती है। कवि सामान्यतः नए विचारों और सोच के साथ काम करते हैं।

कविता विभिन्न प्रकार की हो सकती है, जैसे प्रेम की कविता, प्रकृति पर कविता, सामाजिक और राजनीतिक कविता, आदि, जो उनके उद्देश्य और विषय सामग्री के अनुसार अलग-अलग रूप धारण करती है।

7. Write the meaning of 'Origami". 2017, 2020, 2022

Ans: ओरिगामी एक जापानी शब्द है, जिसका अर्थ है 'कागज मोड़ना।' यह कागज के टुकड़ों को विशेष रूप से मोड़कर विभिन्न आकार और डिज़ाइन बनाने वाली एक कला रूप है। ओरिगामी सामान्यतः कागज के रचनात्मक उपयोग के लिए जाना जाता है, जैसे कि पक्षियों, फूलों, जानवरों या ज्यामितीय आकार बनाना। यह केवल एक कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि धैर्य, एकाग्रता और सृजनात्मकता को बढ़ाने के लिए भी प्रयोग किया जाता है।

8. Mention two principles of Creative Work. 2018, 2022

Ans: <u>सृजनात्मक कार्य के दो सिद्धांत हैं:</u>

1. **मुक्त विचार (Free Thinking):** सृजनात्मकता के लिए मुक्त विचार अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें किसी भी बाधा या सीमा के बिना नए विचार और समाधान बनाने का अवसर होता है। विचारों में प्रवाह होना चाहिए, जहाँ आपका मन विचारों की खोज करने के लिए स्वतंत्र हो।
2. **अनुभव से सीखना (Learning from Experience):** सृजनात्मक कार्य के लिए पूर्व अनुभव और परिणामों से सीखना आवश्यक है। यह आपकी प्रक्रिया और परिणामों को बेहतर बनाने में मदद करता है। विभिन्न तकनीकों और तरीकों का परीक्षण करना और उनसे मूल्यवान शिक्षा लेना सृजनात्मकता के विकास में सहायक होता है।

9. What does 'Gharana' mean in Indian Music? 2018, 2021

Ans: भारतीय संगीत में 'घराना' शब्द आमतौर पर एक विशेष शैली या संगीत के स्कूल का उल्लेख करता है, जो एक निश्चित क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत, कलात्मक तरीकों और प्रथाओं के बीच एक संबंध स्थापित करता है। घराना सामान्यतः शास्त्रीय संगीत की विभिन्न शाखाओं में देखा जाता है, जैसे हिंदुस्तानी और कर्नाटिक संगीत।

<u>घराने के लक्षण:</u>

1. **शैली और तकनीक:** प्रत्येक घराने की अपनी संगीत शैली, राग, ताल और गायन की तकनीक होती है, जो इसे अन्य घरानों से अलग करती है। उदाहरण के लिए, कुछ घराने विशेष प्रकार के रागों और तकनीकों का उपयोग करते हैं जो दूसरों से भिन्न होती हैं।
2. **नामकरण:** घराने अक्सर विशिष्ट गायक या संगीतज्ञ के नाम पर नामित होते हैं, जो उनकी शैली के लिए जाने जाते हैं। उदाहरण के लिए, गायक उस्ताद बिल्ला मास्टर या उस्ताद अमजद अली खान द्वारा लोकप्रिय घराना।
3. **शिक्षण पद्धति:** घरानों की शिक्षण पद्धति आमतौर पर गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से होती है, जहां एक शिष्य अपने गुरु से संगीत सीखता है।

घराना भारतीय संगीत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और यह कला के रूप की परंपराओं और विकास को समृद्ध करता है।

10. What is folk song? 2018, 2020, 2023

Ans: लोकगीत एक विशेष प्रकार का संगीत है, जो आम लोगों के जीवन के अनुभव, संस्कृति और परंपराओं को उजागर करता है। यह मुख्य रूप से विशेष क्षेत्रों के लोगों के दैनिक जीवन का प्रतिबिंब है और सामाजिक, राजनीतिक या सांस्कृतिक विषयों पर आधारित होता है। लोकगीत आमतौर पर मौलिक और सहज होते हैं, जिससे उनकी धुन और लय सामान्य जनता के बीच आसानी से स्वीकार्य होती है।

<u>लोकगीत के कुछ विशेष लक्षण हैं:</u>

1. **सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ:** लोकगीत सामान्यतः लोगों के जीवन शैली, परंपरा, और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं। यह विभिन्न त्योहारों, कार्यक्रमों, और सामाजिक गतिविधियों से संबंधित होते हैं।
2. **सरल धुन और ताल:** लोकगीतों की धुनें आमतौर पर सरल और जानी-पहचानी होती हैं, जिससे आम जनता के लिए गाना आसान हो जाता है। इनमें सरल भाषा और सामान्य शब्दों का उपयोग किया जाता है, ताकि यह सभी तक पहुंच सके।
3. **आधिकारिक रूप का अभाव:** लोकगीत आमतौर पर किसी सरकारी या स्थापित संगीत प्रणाली में शामिल नहीं होते; बल्कि यह लोगों की स्वाभाविक रचनाएँ और सांस्कृतिक धरोहर का परिणाम होते हैं।

लोकगीत विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं, जैसे कामकाजी गीत, प्रेम गीत, सामाजिक विषयों, और त्योहारों के गीत, जो समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर करते हैं।

11. What is 'dance'? 2018, 2021

Ans: नृत्य एक कला रूप है जो शरीर की गति के माध्यम से भावनाओं, विचारों और कहानियों को व्यक्त करता है। यह आमतौर पर संगीत के साथ जुड़ा होता है और विभिन्न सांस्कृतिक, सामाजिक या धार्मिक कार्यक्रमों और उत्सवों में प्रदर्शित किया जाता है। नृत्य आमतौर पर विभिन्न प्रकारों में आता है,

जैसे शास्त्रीय नृत्य, लोक नृत्य और आधुनिक नृत्य, जो अपनी अनूठी शैली और तकनीक के माध्यम से अलग होते हैं।

<u>नृत्य के कुछ मौलिक विशेषताएँ हैं:</u>

1. **शारीरिक गति:** नृत्य में शरीर के विभिन्न अंगों की गति, जैसे हाथ, पैर, सिर, और शारीरिक अभिव्यक्तियों का उपयोग किया जाता है। नर्तक विभिन्न मुद्राओं और गतियों के माध्यम से भावनाओं को व्यक्त करते हैं।
2. **संगीत के साथ संबंध:** आमतौर पर नृत्य संगीत के साथ जुड़ा होता है, जो नृत्य की ताल और गति के प्रभाव को बढ़ाता है। संगीत की ध्वनियाँ और लय नर्तकों की गतियों को नियंत्रित करती हैं।
3. **संस्कृति और परंपरा:** नृत्य विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं का हिस्सा है। यह स्थानीय लोगों की जीवनशैली, इतिहास और रीति-रिवाजों का प्रतिबिंब है।
4. **शिक्षा और प्रशिक्षण:** नृत्य आमतौर पर प्रशिक्षण के माध्यम से सिखाया जाता है, जहाँ कलाकार विशेष शैलियों और तकनीकों को सीखते हैं।

नृत्य एक सृजनात्मक और कलात्मक माध्यम है, जो मानव भावनाओं और विचारों की गहराई को व्यक्त करने में सक्षम है।

12. What do you mean by 'Theatre in Education' (TIE)? 2018, 2021

Ans: शिक्षा में थिएटर का मतलब है थिएटर या नाट्य कला के माध्यम से पढ़ाने और सीखने की विधि। यह छात्रों की रचनात्मकता, आत्मविश्वास और सामाजिक कौशल को विकसित करने में मदद करता है।

<u>इसके मुख्य विशेषताएँ हैं:</u>

1. **अभिनय और भूमिका निभाना:** छात्र विभिन्न पात्रों में अभिनय करके भावनाओं और विचारों को व्यक्त करते हैं।
2. **संचार कौशल:** यह बोलने और सुनने की क्षमताओं को बढ़ाता है।
3. **रचनात्मकता:** यह छात्रों को नए विचार उत्पन्न करने के लिए प्रेरित करता है।
4. **टीम वर्क:** यह सहयोग और सहानुभूति की भावना को बढ़ावा देता है।
5. **संस्कृति और विरासत:** यह स्थानीय संस्कृति को समझने में मदद करता है।

इस प्रकार, शिक्षा में थिएटर छात्रों के व्यक्तित्व और सामाजिक कौशल के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

13. Mention two advantages of Water Colour. 2018, 2020

Ans: जलरंग एक प्रकार की कला माध्यम है जिसमें जल आधारित रंगों का उपयोग किया जाता है। यह सामान्यतः कागज या अन्य समतल सतहों पर रंगों की विभिन्न परतें लागू करके बनाई जाती है। जलरंग

की विशेषता यह है कि इसे आसानी से मिलाया जा सकता है और यह एक पारदर्शी और उज्ज्वल प्रभाव उत्पन्न करने में सक्षम है।

<u>जलरंग के दो लाभ:</u>

1. **प्रयोग में सरलता और नियंत्रण:** जलरंग सामान्यतः उपयोग करने में आसान होते हैं और जल्दी सूख जाते हैं, जिससे कलाकारों को उनके काम की प्रक्रिया पर नियंत्रण करने में मदद मिलती है। इसके अलावा, जलरंगों को आसानी से मिलाया जा सकता है, जिससे कलाकार अपने काम के लिए विभिन्न शेड्स बना सकते हैं।
2. **प्राकृतिकता और उज्ज्वलता:** जलरंगों का उपयोग करने से रंगों के बीच एक पारदर्शिता और उज्ज्वलता उत्पन्न होती है, जो चित्र में एक नरम और स्पष्ट प्रभाव देती है। ये प्राकृतिक और मनोहारी प्रस्तुतियाँ कलाकार की कल्पना को विस्तारित करती हैं।

14. Write two differences between Art and Craft. 2018, 2019, 2020

Ans: <u>स्वगतोक्ति और संवाद के बीच भिन्नताएँ इस प्रकार हैं:</u>

<u>परिभाषा:</u>

- **स्वगतोक्ति:** यह किसी व्यक्ति के अपने विचारों या भावनाओं की अभिव्यक्ति है, जहाँ वह अपने आप से बात करता है। यह सामान्यतः एकल वक्ता के भीतर होता है और इसमें किसी और को शामिल नहीं किया जाता है।
- **संवाद:** यह दो या अधिक व्यक्तियों के बीच बातचीत है, जहाँ कई पात्रों के बीच आदान-प्रदान होता है। यह सामान्यतः चर्चा, तर्क या सूचना के आदान-प्रदान के रूप में कार्य करता है।

<u>उद्देश्य:</u>

- **स्वगतोक्ति:** इसका उद्देश्य विचारों या भावनाओं को व्यक्त करना है, जो पाठक या श्रोता के पास अंतर्दृष्टि के रूप में पहुँचता है।
- **संवाद:** इसका उद्देश्य सूचना का आदान-प्रदान करना, विचार साझा करना और चर्चा के माध्यम से निर्णय पर पहुँचाना है।

<u>संरचना:</u>

- **स्वगतोक्ति:** यह सामान्यतः एकल वाक्य या अनुच्छेद के रूप में व्यक्त किया जाता है, जिसमें विचारों या भावनाओं का संक्षिप्त वर्णन होता है।
- **संवाद:** यह वाक्यवाणी या बातचीत की धारा के रूप में बनाया जाता है, जिसमें विभिन्न पात्रों की बातें और प्रतिक्रियाएँ शामिल होती हैं।

ये भिन्नताएँ स्वगतोक्ति और संवाद की मूलभूत समझ प्रदान करती हैं।

17. What is collage? 2019, 2021, 2023

Ans: कोलाज एक कला रूप है जिसमें विभिन्न प्रकार की सामग्रियों—जैसे कागज, चित्र के टुकड़े, कपड़े, या अन्य किसी तत्व—को मिलाकर एक नया कलाकृति बनाई जाती है। इस तकनीक में, कलाकार विभिन्न तत्वों को काटता है, सजाता है और एकत्रित करता है ताकि एक नई चित्र या कहानी बनाई जा सके।

<u>कोलाज की कुछ विशेषताएँ हैं:</u>

1. **विभिन्न सामग्रियों का उपयोग:** कोलाज में आमतौर पर विभिन्न प्रकार की सामग्रियों को एकत्रित किया जाता है, जो मिलकर एक नई शैली या प्रभाव उत्पन्न करती हैं।
2. **रचनात्मक अभिव्यक्ति:** यह कलाकारों को अपने विचारों और भावनाओं को अलग-अलग तरीकों से व्यक्त करने का अवसर देती है। कोलाज के माध्यम से, कलाकार अपनी अभिव्यक्तियों और विषयों को आसानी से व्यक्त कर सकते हैं।
3. **सामग्री और विषय:** कोलाज में प्रयुक्त सामग्रियाँ कलाकार के चयन के आधार पर विभिन्न विषयों या विषय वस्तुओं को उजागर कर सकती हैं, जैसे सामाजिक मुद्दे, राजनीतिक संदेश, या व्यक्तिगत अनुभव।

कोलाज एक रचनात्मक माध्यम है जो कलाकारों को नए विचारों और अवधारणाओं को उत्पन्न करने में मदद करता है।

19. Ramnidhi Gupta is a famous name in the history of Bengali music why? 2019

Ans: रामनिधि गुप्ता बंगाली संगीत के इतिहास में एक प्रसिद्ध नाम हैं क्योंकि उन्होंने बंगाली संगीत की एक विशेष धारा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वह 20वीं सदी के एक प्रसिद्ध संगीतज्ञ और गायक थे, जिन्होंने बंगाली लोक संगीत और शास्त्रीय संगीत का संयोग कर एक नई धारा की रचना की। उनकी संगीत शैली और गायन तकनीक ने बंगाली संगीत को नई ऊंचाइयों पर पहुँचाया।

<u>रामनिधि गुप्ता के कुछ महत्वपूर्ण योगदान हैं:</u>

- **लोक संगीत का प्रचार:** उन्होंने बंगाली लोक संगीत को लोकप्रिय बनाने का काम किया और विभिन्न लोकगीतों को नए तरीके से प्रस्तुत किया, जिसने आम जनता में व्यापक लोकप्रियता प्राप्त की।
- **शास्त्रीय संगीत के साथ संबंध:** रामनिधि गुप्ता ने शास्त्रीय संगीत की विभिन्न शैलियों और रूपों के साथ लोकगीतों का समन्वय किया, जिससे एक नई संगीत धारा का जन्म हुआ।
- **योगदान:** उनकी रचनाएँ आज भी सराही जाती हैं, और वह नई पीढ़ी के संगीतकारों के लिए एक मॉडल के रूप में कार्य करते हैं।
- **गायक और शिक्षक:** उन्होंने एक गायक के रूप में ख्याति अर्जित की और कई छात्रों को शास्त्रीय और लोक संगीत सिखाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इन्हीं कारणों से, रामनिधि गुप्ता बंगाली संगीत के इतिहास में एक स्मरणीय नाम माने जाते हैं।

20. Write two features of 'Madhubani Art'. 2019, 2022

Ans: <u>मधुबनी कला की दो विशेषताएँ हैं:</u>

1. **विविध डिज़ाइन:** मधुबनी कला के डिज़ाइन सामान्यतः जटिल और विस्तृत होते हैं, जहाँ फूल, पक्षियों, जानवरों, और प्राकृतिक दृश्यों के प्रतीकात्मक चित्रण होते हैं। ये डिज़ाइन प्राकृतिक वातावरण और सामाजिक विषयों पर आधारित होते हैं।
2. **चमकीले रंग:** मधुबनी कला में रंग बहुत चमकीले और जीवंत होते हैं, जो सामान्यतः प्राकृतिक रंगों से बनाए जाते हैं। कलाकार पौधों और अन्य प्राकृतिक तत्वों से रंगों का उपयोग करते हैं, जिससे उनकी कलाकृति को विशेष और आकर्षक बनाया जाता है।

21. Identify two identical characteristics of 'Chhou Dance'. 2019, 2022

Ans: <u>छौ-नाच की दो विशेषताएँ हैं:</u>

1. **अंगभंगिमा और मुखाकृति:** छौ-नाच में कलाकारों की अंगभंगिमा, मुखाकृति और शरीर के विभिन्न हिस्सों का उपयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रत्येक नर्तक विभिन्न पात्रों के भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने के लिए विशेष अंगभंगिमा और मुखाकृति का उपयोग करते हैं। इसके माध्यम से वे कहानियों और विचारों का प्रदर्शन करते हैं।
2. **संगीत और स्वर:** छौ-नाच सामान्यतः उच्च गुणवत्ता वाले संगीत और स्वर के साथ प्रस्तुत किया जाता है, जो नृत्य की ताल और गति से जुड़ा होता है। संगीत की ताल और लय के साथ नर्तक सुरेल और गतिशील प्रदर्शन के माध्यम से दर्शकों को मोहित करते हैं।

22. Write four characteristics of folk drama. 2020, 2022

Ans: <u>लोकनाट्य के चार विशेषताएँ हैं:</u>

1. **सांस्कृतिक तत्व:** लोकनाट्य सामान्यतः स्थानीय संस्कृति, परंपराओं और विरासत को दर्शाता है। इसमें विभिन्न लोककथाएँ, किंवदंतियाँ और सामाजिक जीवन के चित्र प्रस्तुत किए जाते हैं।
2. **सरल और आसान भाषा:** लोकनाट्य में प्रयुक्त भाषा सामान्यतः सरल और सीधी होती है, जो स्थानीय लोगों के लिए आसानी से समझ में आती है। यह आम लोगों की समस्याओं और अनुभवों को उजागर करती है।
3. **जीवंत प्रदर्शन:** लोकनाट्य के प्रदर्शन सामान्यतः जीवंत और गतिशील होते हैं। इसमें अभिनेता शक्तिशाली हावभाव और चेहरे के भावों का उपयोग करते हैं, जो पात्रों की भावनाओं और कहानी की गहराई को बढ़ाते हैं।
4. **संगीत और नृत्य का संयोजन:** लोकनाट्य में सामान्यतः संगीत और नृत्य के तत्व शामिल होते हैं, जो कहानी के प्रदर्शन को और भी आकर्षक और आनंददायक बनाते हैं। संगीत और नृत्य लोकनाट्य की कहानी का समर्थन करते हैं और दर्शकों का मनोरंजन करते हैं।

23. Write two educational objectives of street play. 2023

Ans: <u>पथनाटिका के दो शैक्षिक उद्देश्य हैं:</u>

1. **सामाजिक जागरूकता बढ़ाना:** पथनाटिका सामान्यतः सामाजिक समस्याओं और विषयों पर चर्चा करती है। यह समाज के विभिन्न मुद्दों, जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, महिलाओं का सशक्तिकरण, और पर्यावरण के बारे में जनता को जागरूक करने में मदद करती है। दर्शक नाटक के माध्यम से इन मुद्दों की गहराई और महत्व को समझ सकते हैं।
2. **भाषा और संचार कौशल का विकास:** पथनाटिका में भाग लेने से अभिनेता और दर्शक दोनों भाषा, अभिव्यक्ति, और संचार कौशल का विकास कर सकते हैं। नाटकीय संदर्भ में भाषा, इशारों, और संवाद का उपयोग लोगों के बीच बेहतर संचार बनाने में मदद करता है, और यह उनके आत्मविश्वास को बढ़ाता है।

24. What are the origins of Indian music? 2023

Ans: <u>भारतीय संगीत के स्रोत चार मुख्य स्रोतों से उत्पन्न हुए हैं। ये स्रोत हैं:</u>

1. **वेद:** भारतीय संगीत का सबसे प्राचीन स्रोत वेद हैं, विशेष रूप से सामवेद, जिसमें मंत्रों और स्तोत्रों को लय और सुर के साथ गाया जाता था। सामवेद में गीतों के सबसे प्राचीन उदाहरण मिलते हैं, जो बाद में भारतीय शास्त्रीय संगीत की नींव बने।
2. **लोक संगीत:** भारतीय संगीत का एक अन्य प्राचीन स्रोत लोक संगीत है, जो विभिन्न क्षेत्रों की संस्कृति, जीवनशैली और परंपराओं से प्रेरित है। लोकगीतों में स्थानीय भाषा, विचार और भावनाएं झलकती हैं, जो भारतीय संगीत को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
3. **भक्ति आंदोलन:** भक्ति आंदोलन के दौरान विभिन्न संतों ने भक्ति भाव से ओत-प्रोत गीतों का प्रचार किया। यह प्रकार का संगीत भगवान के प्रति समर्पित होता है और इसे भारतीय संगीत के एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में माना जाता है।
4. **नाट्यशास्त्र:** भारतीय संगीत की सैद्धांतिक नींव और विन्यास के निर्माण में भरतमुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें राग, ताल, और संगीत के अन्य तत्वों का विस्तार से वर्णन है, जो भारतीय संगीत के विकास में विशेष योगदान देता है।

25. Write two characteristics of one act play. 2023

Ans: एकांकी नाटक एक नाट्य रूप है, जो आमतौर पर एक ही अंके में या दृश्य में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें आमतौर पर एक संक्षिप्त कहानी होती है और यह अक्सर एक विशिष्ट विषय या विचार को व्यक्त करता है। एकांकी नाटक की लंबाई कम होती है और इसे जल्दी मंच पर लाया जा सकता है।

<u>एकांकी नाटकों की दो विशेषताएँ:</u>

1. **संक्षिप्तता:** एकांकी नाटक आमतौर पर बहुत संक्षिप्त होते हैं, जो आमतौर पर 10 से 30 मिनट के भीतर पूरे होते हैं। इनमें कहानी की जटिलता कम होती है और यह एक केंद्रीय विचार या स्थिति को प्रस्तुत करते हैं, जिसमें कम पात्र और दृश्य होते हैं।

2. **एकल दृश्य:** एकांकी नाटक आमतौर पर एक ही दृश्य में पूरे होते हैं, जो मुख्य घटनाओं और पात्रों के बीच के संबंधों को उजागर करता है। यह नाटक की गतिशीलता को बढ़ाता है और जल्दी से दर्शकों का ध्यान आकर्षित करता है।

26. Mention the main subjects of Worli painting. 2023

Ans: <u>वर्ली पेंटिंग सामान्यतः निम्नलिखित मुख्य विषयों को चित्रित करती है:</u>

1. **प्राकृतिक दृश्य:** प्रकृति, पशुओं और पर्यावरण के विभिन्न तत्वों की चित्रण।
2. **धार्मिक और सांस्कृतिक विषय:** स्थानीय देवी-देवताओं, त्योहारों और पारंपरिक संस्कृति को प्रमुखता दी जाती है।
3. **सामाजिक चित्र:** गांव की जीवन, किसानों और समाज के विभिन्न पहलुओं का चित्रण।
4. **दैनिक जीवन:** लोगों के दैनिक कार्यों और संबंधों की चित्रण।
5. **भावनाएँ:** मानव भावनाओं और अनुभवों, जैसे खुशी, दुख, और प्रेम का चित्रण।
6. **सरल रेखाएँ और पैटर्न:** जटिल डिज़ाइन और रेखाओं का उपयोग, जो कार्य को एक विशिष्ट और जीवंत पहचान देता है।

वर्ली पेंटिंग संस्कृति और प्रकृति के बीच एक मजबूत संबंध को दर्शाती है।

27. What is the role of mould in clay work? মাটির কাজের ক্ষেত্রে 'ছাঁচ'-এর ভূমিকা কি? 2023

Ans: <u>मिट्टी के काम में 'मोल्ड' की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। इसके कुछ मुख्य पहलू हैं:</u>

1. **आकार और डिज़ाइन:** मोल्ड का उपयोग निश्चित आकार और डिज़ाइन में मिट्टी के उत्पाद बनाने के लिए किया जाता है। यह कलाकार या कारीगर की सृजनात्मकता व्यक्त करने का एक माध्यम है।
2. **दोहराव:** मोल्ड के माध्यम से समान आकार के उत्पादों को बार-बार बनाना संभव होता है, जिससे उत्पादन प्रक्रिया आसान और तेज़ हो जाती है।
3. **गुणवत्ता:** मोल्ड के उपयोग से उत्पाद की गुणवत्ता बनाए रखना आसान हो जाता है, क्योंकि प्रत्येक उत्पाद समान आकार और संरचना के अनुसार बनाया जाता है।
4. **समय की बचत:** मिट्टी के काम में मोल्ड का उपयोग करने से समय की बचत होती है, क्योंकि यह कार्य को जल्दी और कुशलता से पूरा करने में मदद करता है।
5. **अनुभव:** मोल्ड के उपयोग से नई कौशल और अनुभव प्राप्त करने की संभावना होती है, जिसे बाद में अन्य कार्यों में लागू किया जा सकता है।
6. **सृजनात्मकता:** मोल्ड के विभिन्न डिज़ाइन बनाकर सृजनात्मकता को बढ़ावा दिया जा सकता है, जो नए उत्पादों के विकास में सहायक होता है।

कुल मिलाकर, मिट्टी के काम में मोल्ड एक अपरिहार्य उपकरण है, जो उत्पादन प्रक्रिया, गुणवत्ता और सृजनात्मकता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

Marks: 5

1. Discuss the role of a teacher to develop creative skills among the students. 2019

Ans: छात्रों में सृजनात्मक कौशल के विकास में शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षक केवल जानकारी प्रदान नहीं करते; वे छात्रों के विचार, सृजनात्मकता और समस्या समाधान कौशल को विकसित करने में मदद करते हैं। यहां शिक्षकों की कुछ महत्वपूर्ण भूमिकाएं दी गई हैं:

1. **प्रेरणा प्रदान करना:** शिक्षक छात्रों को सृजनात्मक सोच के लिए प्रेरित करते हैं। वे छात्रों को नए विचार उत्पन्न करने और समस्याओं को हल करने के विभिन्न तरीकों का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
2. **मुक्त वातावरण बनाना:** शिक्षकों को एक मुक्त और सुरक्षित सीखने का वातावरण बनाना चाहिए जहां छात्र स्वतंत्र रूप से अपने विचार और धारणाएं व्यक्त कर सकें। इससे वे अपनी सृजनात्मकता व्यक्त करने में अधिक सहज महसूस करते हैं।
3. **सृजनात्मक गतिविधियाँ:** शिक्षक छात्रों को कला, नाटक, संगीत, और विज्ञान परियोजनाओं जैसी सृजनात्मक गतिविधियों में भाग लेने के अवसर प्रदान करते हैं। ये गतिविधियाँ छात्रों की सृजनात्मक सोच और परियोजना विकास कौशल को बढ़ाने में मदद करती हैं।
4. **नए विचार प्रस्तुत करना:** शिक्षक विभिन्न विषयों पर नए और आकर्षक दृष्टिकोण प्रस्तुत करके छात्रों में उत्साह जगाते हैं। वे समस्याओं या परिस्थितियों पर नए तरीके से सोचने के अवसर बनाते हैं।
5. **सहयोग और सहकारी कार्य:** शिक्षक छात्रों को सहयोगी परियोजनाओं में शामिल करके टीमवर्क के माध्यम से सृजनात्मकता को विकसित करते हैं। सहयोग और सहकारी कार्य के माध्यम से छात्र एक-दूसरे के विचारों और कौशलों से सीख सकते हैं।
6. **प्रतिक्रिया प्रदान करना:** शिक्षक छात्रों के सृजनात्मक कार्य पर सकारात्मक और निर्माणात्मक प्रतिक्रिया प्रदान करते हैं। यह उनके आत्मविश्वास को बढ़ाता है और उन्हें सृजनात्मक गतिविधियों में अधिक रुचि रखने के लिए प्रेरित करता है।
7. **शैक्षिक उपकरणों का उपयोग:** शिक्षक विभिन्न शैक्षिक उपकरणों और प्रौद्योगिकी का उपयोग करके छात्रों की सृजनात्मकता को बढ़ाने के अवसर बना सकते हैं। इससे उन्हें नई प्रौद्योगिकियों से परिचित कराया जा सकता है और विभिन्न तरीकों से सोचने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

शिक्षक छात्रों के सृजनात्मक कौशल के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनके मार्गदर्शन, समर्थन, और प्रोत्साहन से छात्रों को नए विचारों और धारणाओं को उत्पन्न करने में मदद मिलती है और सृजनात्मक रूप से समस्या समाधान की क्षमता विकसित होती है। इस प्रकार, शिक्षक छात्रों के लिए एक सृजनात्मक पृष्ठभूमि बनाते हैं और उन्हें उनके भविष्य के लिए तैयार करते हैं।

2. How is folk dance related with the deletion and culture of India? Briefly discuss. 2021

Ans: भारत के धर्म और संस्कृति के साथ लोकनृत्य का संबंध अत्यंत गहरा और बहुआयामी है। लोकनृत्य भारत की सांस्कृतिक धरोहर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो स्थानीय जनसंख्या के जीवनशैली, विश्वास, और परंपराओं को व्यक्त करता है। इस संबंध के कुछ प्रमुख पहलुओं पर नीचे चर्चा की गई है:

1. **धार्मिक त्योहार और समारोह:** लोकनृत्य भारत के विभिन्न धार्मिक त्योहारों और समारोहों का एक अनिवार्य हिस्सा है। उदाहरण के लिए, नवरात्रि, दुर्गापूजा, और ईद पर विशेष नृत्य किए जाते हैं, जो धार्मिक भावनाओं और उत्साह को व्यक्त करते हैं। ये नृत्य आमतौर पर देवताओं की आराधना या पारंपरिक कहानियों के आधार पर होते हैं, जो धार्मिक गतिविधियों को सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ जोड़ते हैं।
2. **स्थानीय संस्कृति का प्रतिबिंब:** भारत के प्रत्येक राज्य में विभिन्न प्रकार के लोकनृत्य होते हैं, जो उस क्षेत्र की संस्कृति, भाषा, और परंपरा का प्रतिबिंब होते हैं। उदाहरण के लिए, गुजरात का गरबा और राजस्थान का गूमर नृत्य स्थानीय संस्कृति का परिचायक है और समाज की रीतियों और परंपराओं के साथ जुड़ा होता है।
3. **विवाह और सामाजिक रीतियों:** लोकनृत्य शादी और अन्य सामाजिक आयोजनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विवाह समारोहों में विभिन्न प्रकार के नृत्य प्रदर्शित किए जाते हैं, जो खुशी और उत्सव का माहौल बनाते हैं। इस प्रकार के नृत्य सामाजिक संबंधों और समुदाय की एकता में योगदान करते हैं।
4. **कहानी और किंवदंतियों का प्रदर्शन:** लोकनृत्य अक्सर लोककथाओं और प्राचीन ऐतिहासिक घटनाओं से जुड़ा होता है। नृत्य कलाकार अपने नृत्यों के माध्यम से कहानियों और परंपराओं को जीवित करते हैं, जो दर्शकों के सामने सांस्कृतिक और धार्मिक जानकारी प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के लिए, महाभारत और रामायण की कहानियाँ लोकनृत्य के माध्यम से दर्शाई जाती हैं।
5. **सामाजिक और राजनीतिक संदेश:** लोकनृत्य समाज के विभिन्न मुद्दों के प्रति जागरूकता पैदा करता है। विभिन्न नृत्यों के माध्यम से सामाजिक, राजनीतिक, और पर्यावरणीय संदेश दिए जाते हैं। इस प्रकार, लोकनृत्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है, बल्कि समाज की जागरूकता बढ़ाने का भी एक माध्यम है।
6. **आध्यात्मिकता:** लोकनृत्य के कई प्रकार आध्यात्मिक पहलुओं से जुड़े होते हैं, जो धार्मिक संस्कृति से जुड़े होते हैं। नृत्य साधना या नृत्य योग का अभ्यास आत्मिक विकास के उद्देश्य से किया जाता है। विभिन्न समुदायों के लोकनृत्य आध्यात्मिक शक्ति और शांति की स्थापना में सहायक होते हैं।

<u>उपसंहार:</u> भारत के धर्म और संस्कृति के साथ लोकनृत्य का संबंध एक समृद्ध और जटिल प्रक्रिया है। यह केवल मनोरंजन का एक साधन नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक, सांस्कृतिक, और धार्मिक संबंध स्थापित करता है। लोकनृत्य के माध्यम से लोगों की सांस्कृतिक पहचान, धार्मिक विश्वास, और परंपराओं का संरक्षण और नवाचार किया जाता है, जो भारत के विभिन्न समुदायों के बीच एकता और सहानुभूति स्थापित करने का एक महत्वपूर्ण तरीका है।

3. Discuss the educational motives of singing prayer songs in school. 2018, 2020, 2021, 2023

Ans: विद्यालय प्रार्थना गीत गाने के शैक्षिक उद्देश्यों अत्यंत महत्वपूर्ण हैं और छात्रों की रचनात्मकता, सामाजिक कौशल और नैतिक मूल्यों के विकास में सहायक होते हैं। नीचे कुछ प्रमुख उद्देश्यों पर चर्चा की गई है:

1. **आध्यात्मिक विकास:** प्रार्थना गीत छात्रों को आध्यात्मिकता और विश्वास के आधार पर सही दृष्टिकोण बनाने में मदद करते हैं। ये उनके जीवन में आशा की किरण लाते हैं और आत्म-शुद्धि की ओर मार्गदर्शन करते हैं।
2. **सामाजिक एकता:** विद्यालय में एक साथ गाना छात्रों के बीच बंधन और एकता का निर्माण करता है। यह समाज के प्रति एक स्वस्थ दृष्टिकोण उत्पन्न करता है और उनमें सहानुभूति और एकता को बढ़ाता है।
3. **नैतिक शिक्षा:** प्रार्थना गीत विभिन्न नैतिक मूल्यों जैसे ईमानदारी, दया, और क्षमा के विचारों को उजागर करते हैं। छात्र इन मूल्यों का अभ्यास करके अपने नैतिक चरित्र का विकास कर सकते हैं।
4. **शांति और समझ का संदेश:** प्रार्थना गीत गाना छात्रों के बीच शांति का संदेश फैलाता है। यह उनके मन को शांत करता है और मिलकर काम करने की भावना का विकास करता है।
5. **रचनात्मकता का विकास:** संगीत छात्रों की रचनात्मकता और सोचने की क्षमता को बढ़ाता है। वे विभिन्न सुर, ताल, और रूपों के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त कर सकते हैं।
6. **भाषाई कौशल में वृद्धि:** प्रार्थना गीत गाने के माध्यम से छात्र नए शब्दावली और भाषा के उपयोग को सीखते हैं। यह उनके भाषाई कौशल और संवाद की क्षमता को बढ़ाने में सहायक होता है।
7. **शारीरिक और मानसिक विकास:** गाने के समय श्वास-प्रश्वास पर नियंत्रण और सही शारीरिक मुद्रा का प्रशिक्षण होता है। यह उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के विकास में सहायक होता है।
8. **संस्कृतिक ज्ञान में वृद्धि:** प्रार्थना गीत विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं और रीति-रिवाजों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह छात्रों को विभिन्न संस्कृतियों और उनके मूल्यों के बारे में जानकारी देता है।
9. **आत्मविश्वास में वृद्धि:** एक साथ गाना छात्रों के आत्मविश्वास को बढ़ाता है। वे प्रदर्शन के माध्यम से अपने आपको व्यक्त करने में सक्षम होते हैं।
10. **शिक्षा और रचनात्मक सोच का समन्वय:** प्रार्थना गीत गाने के माध्यम से छात्र शिक्षा के विभिन्न पहलुओं को समन्वय करते हैं। यह उनके सोचने और विश्लेषण करने की क्षमता को बढ़ाने में सहायक होता है।

विद्यालय प्रार्थना गीत गाना केवल एक सांस्कृतिक गतिविधि नहीं है, बल्कि यह छात्रों की रचनात्मकता, सामाजिकता, और नैतिक शिक्षा को विकसित करने का एक प्रभावी तरीका है। इसके माध्यम से वे अपनी पहचान बनाते हैं और समाज के एक जिम्मेदार सदस्य के रूप में स्थापित होते हैं।

4. What is 'Terracotta'? Discuss the process of clay making for 'relief works'.' 2017, 2020, 2022

Ans: टेरेकोटा (Terracotta) एक प्रकार की मिट्टी की कलाकृति है जो सामान्यतः सिरेमिक सामग्री से बनाई जाती है। यह सामग्री मुख्यतः क्ले (कीचड़) से बनाई जाती है और यह कला और निर्माण दोनों में बहुत लोकप्रिय है। "टेरेकोटा" शब्द लैटिन भाषा से आया है, जिसका अर्थ है "पकी हुई मिट्टी" या "रंजित मिट्टी"। यह आमतौर पर भूरे, नारंगी, या लाल रंग की होती है और इसके ऊपर विभिन्न डिज़ाइन और पैटर्न खुदे जा सकते हैं।

टेरेकोटा बनाने की प्रक्रिया:

टेरेकोटा बनाने के लिए कुछ निश्चित चरणों का पालन किया जाता है। नीचे इस प्रक्रिया के विवरण दिए गए हैं:

1. **मिट्टी का चयन:** टेरेकोटा बनाने के लिए पहले उपयुक्त मिट्टी का चयन करना होता है। सामान्यतः, सबसे अच्छे परिणामों के लिए भूमि या नदी के किनारे से प्राप्त कीचड़ का उपयोग किया जाता है।
2. **मिट्टी की तैयारी:** चयनित मिट्टी को अच्छे से साफ करना आवश्यक है ताकि उसमें कोई धात्विक या अशुद्ध पदार्थ न हो। फिर, मिट्टी को पानी के साथ मिलाकर एक चिकनी और काम करने योग्य रूप में तैयार किया जाता है।
3. **आकार देना:** तैयार मिट्टी को विभिन्न आकारों में गढ़ा जाता है। यह हाथ से या विभिन्न उपकरणों की मदद से किया जा सकता है। कलाकार अपनी कल्पना के आधार पर मिट्टी के विभिन्न आकार बनाते हैं।
4. **सूखने देना:** आकार दिए गए मिट्टी के टुकड़ों को सूखने के लिए रखा जाता है। यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया है, जिससे मिट्टी की नमी कम हो जाती है और यह कठोर हो जाती है। सामान्यतः, यह एक दिन से लेकर कई दिनों तक हो सकता है।
5. **काटना और खुदाई करना:** सूखने के बाद, कलाकार टेरेकोटा पर डिज़ाइन और खुदाई कर सकते हैं। ये खुदाई टेरेकोटा को और अधिक आकर्षक बनाती हैं।
6. **पहली बार जलाना:** खुदाई के बाद, टेरेकोटा के आकारों को पहली बार जलाया जाता है। यह एक मिट्टी की भट्टी में किया जाता है। पहली बार जलाने से मिट्टी मजबूत और टिकाऊ हो जाती है।
7. **ग्लेजिंग (चिकनाई देना):** टेरेकोटा उत्पादों को चमकदार बनाने के लिए ग्लेजिंग की प्रक्रिया होती है, जिससे उन्हें रंग और चमक मिलती है। यह एक से अधिक परतों में किया जा सकता है, और प्रत्येक परत को जलाना आवश्यक होता है।
8. **दूसरी बार जलाना:** ग्लेजिंग के बाद, टेरेकोटा उत्पादों को फिर से जलाया जाता है। यह उन्हें टिकाऊ बनाता है और उन्हें अंतिम पूर्ण रूप देता है।

रिलीफ कार्य के लिए मिट्टी तैयार करने की प्रक्रिया:

रिलीफ कार्य के लिए मिट्टी तैयार करने की प्रक्रिया आमतौर पर समान चरणों का पालन करती है लेकिन इसमें कुछ अतिरिक्त विचार भी होते हैं:

1. **मिट्टी की विभिन्न परतें बनाना**: रिलीफ कार्य के लिए विशेष रूप से विभिन्न परतों की मिट्टी तैयार की जाती है। कलाकार आमतौर पर रिलीफ के आकार के अनुसार मिट्टी की परतें बनाते हैं।
2. **सटीक आकार में काटने की प्रक्रिया:** मिट्टी के आकारों को सही तरीके से काटने के लिए कलाकारों को विशेष तकनीक अपनानी होती है, ताकि रिलीफ का आकार सही तरीके से उकेरा जा सके।
3. **डिज़ाइन और खुदाई:** रिलीफ कार्य के लिए विस्तृत खुदाई बहुत महत्वपूर्ण होती है। यह मिट्टी के आकारों में गहराई और आकृति जोड़ती है।
4. **जलाने की प्रक्रिया:** रिलीफ कार्य के लिए पहले और दूसरे जलाने के दौरान सावधानी बरतनी होती है ताकि रिलीफ का डिज़ाइन अछूता रहे।

इस प्रकार, टेरेकोटा और रिलीफ कार्य के लिए मिट्टी बनाने की प्रक्रियाएँ कलाकारों की सृजनात्मकता का प्रदर्शन करती हैं और स्थानीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होती हैं।

5. Discuss the reasons of E.P.C-2 as a compulsory paper in B.Ed curriculum. 2019, 2021

Ans: E.P.C-2 (Enhancing Professional Capacities) एक महत्वपूर्ण विषय है जो बी.एड पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। इस विषय में छात्र विभिन्न पेशेवर कौशल और तैयारी हासिल करते हैं, जो उनके भविष्य के शैक्षणिक और पेशेवर जीवन में सहायक होते हैं। नीचे E.P.C-2 की तार्किकता चर्चा की गई है:

1. **पेशेवर विकास:** E.P.C-2 शिक्षकों के पेशेवर विकास के लिए एक प्लेटफार्म प्रदान करता है। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्र अपने शिक्षण पद्धतियों, कक्षा प्रबंधन और छात्रों के लिए विभिन्न प्रौद्योगिकियों और उपकरणों के उपयोग के बारे में सीखते हैं।
2. **कौशल विकास:** E.P.C-2 छात्रों को संवाद कौशल, समस्या समाधान क्षमता, निर्णय लेने की क्षमता, और शिक्षण विधियों की दक्षता जैसे कौशल विकसित करने में मदद करता है। ये कौशल शिक्षकों को अधिक प्रभावी और प्रभावशाली बनाने में सहायक होते हैं।
3. **शिक्षण विधियों में सुधार:** इस विषय में छात्र विभिन्न शिक्षण विधियों और दृष्टिकोणों के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं, जिससे वे कक्षा में छात्रों को बेहतर तरीके से पढ़ा सकते हैं। यह शिक्षकों को छात्रों की विभिन्न सीखने की शैलियों के आधार पर विभिन्न विधियों को लागू करने के लिए प्रोत्साहित करता है।
4. **संविधानिक शिक्षा:** E.P.C-2 छात्रों को संविधानिक शिक्षा की अवधारणा सिखाता है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, और सामाजिक विकास जैसे शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर जोर दिया जाता है। यह प्रकार की शिक्षा शिक्षकों को सभी छात्रों के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करता है।
5. **पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता:** E.P.C-2 वर्तमान शैक्षणिक परिवर्तनों और मांगों के साथ पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता बनाए रखने में मदद करता है। यह शिक्षकों को नई शिक्षण रणनीतियों, प्रौद्योगिकियों, और नीतियों के बारे में अपडेट रखता है।

6. **नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी:** E.P.C-2 छात्रों को नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक करता है। यह शिक्षकों को समाज के विकास में योगदान देने के लिए प्रेरित करता है और उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में आकार देता है।

E.P.C-2 को बी.एड पाठ्यक्रम में अनिवार्य विषय के रूप में शामिल करने से शिक्षकों की पेशेवर क्षमताओं को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह छात्रों को समृद्ध बनाता है और उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में न्याय और समानता स्थापित करने में मदद करता है, जिससे वे समाज में अपने पेशेवर भूमिका निभाने के लिए तैयार होते हैं।

6. Explain the style and method of Madhubani art. 2017, 2020

Ans: मधुबनी चित्रकला भारत के बिहार राज्य के मधुबनी क्षेत्र से उत्पन्न एक विशेष कला का रूप है। इस शैली की चित्रकला की मुख्य विशेषताएँ इसकी उज्ज्वल रंग, जटिल पैटर्न, और प्रतीकात्मक चित्रण हैं। इसे मुख्यतः महिलाएं बनाती हैं और प्राचीन काल से धार्मिक और सामाजिक समारोहों में उपयोग किया जा रहा है।

मधुबनी चित्रकला की विशेषताएँ:

1. **विवरण और विषयवस्तु:** मधुबनी चित्रों में सामान्यतः पौराणिक कथाएँ, देवता, देवी, प्रकृति, और सामाजिक जीवन के चित्र होते हैं। चित्रों में राधा-कृष्ण, सीता का स्वयंवर, और देवी दुर्गा की विभिन्न लीलाओं का चित्रण किया जाता है।
2. **रंगों का उपयोग:** मधुबनी चित्रों में प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है, जैसे कच्चा पीला, कच्चा लाल, हरा, और भूरा। ये रंग आमतौर पर पौधों, फूलों, और अन्य प्राकृतिक सामग्री से बनाए जाते हैं।
3. **पैटर्न और डिज़ाइन:** चित्रों में जटिल पैटर्न और डिज़ाइन होते हैं, जो विशेष रूप से पशु, पक्षी, और फूलों के विभिन्न आकारों में प्रस्तुत होते हैं। चित्र के चारों ओर एक प्रकार का फ्रेम बनाया जाता है, जो पूरी चित्र की सुंदरता को बढ़ाता है।

मधुबनी चित्र बनाने की प्रक्रिया:

1. **मिट्टी और बर्तन की तैयारी:** सबसे पहले, कलाकार एक मिट्टी का बर्तन या कैनवास तैयार करते हैं। वह बर्तन सफेद, चिकना और साफ होना चाहिए।
2. **प्राकृतिक रंगों का उपयोग:** कलाकार प्राकृतिक सामग्री से रंग बनाते हैं, जैसे पीले रंग के लिए पीले पत्ते, लाल रंग के लिए गुलाबी फूल, और हरे रंग के लिए पत्ते।
3. **आउटलाइन बनाने की प्रक्रिया:** पहले, चित्र की एक आउटलाइन बनाई जाती है। फिर, उस आउटलाइन के भीतर विभिन्न डिज़ाइन और पैटर्न जोड़े जाते हैं।
4. **रंग लागू करना:** फिर, कलाकार रंग लगाने शुरू करते हैं। रंगों का कुशलता से उपयोग किया जाता है, और चित्र के विभिन्न भागों में अलग-अलग रंगों का अनुप्रयोग किया जाता है।
5. **अंतिम कार्य:** अंत में, चित्र के विभिन्न भागों में खुदाई की जाती है या डिज़ाइन को और बढ़ाया जाता है। कुछ मामलों में, सुनहरे रंग का भी उपयोग किया जाता है।

मधुबनी चित्रकला एक पारंपरिक और सांस्कृतिक कला रूप है जो बिहार के समाज के धार्मिक और सामाजिक जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके रंगीन और जटिल डिज़ाइन केवल चित्रकला नहीं हैं, बल्कि सांस्कृतिक धरोहर के प्रतीक भी हैं।

7. Discuss the role of poster drama to remove 'Social distance'. '2017, 2021

Ans: 'सामाजिक दूरी' को समाप्त करने में पोस्टर नाटक की भूमिका महत्वपूर्ण है। पोस्टर नाटक एक आधुनिक और सृजनात्मक माध्यम है, जिसका उपयोग विभिन्न सामाजिक समस्याओं और जागरूकता बढ़ाने के लिए किया जाता है। सामाजिक दूरी, विशेष रूप से COVID-19 के संदर्भ में, एक महत्वपूर्ण समस्या बन गई है। नीचे, पोस्टर नाटक के माध्यम से सामाजिक दूरी को समाप्त करने की भूमिका का उल्लेख किया गया है:

1. **जागरूकता बढ़ाना:** पोस्टर नाटक लोगों के बीच सामाजिक दूरी के महत्व के बारे में जागरूकता बनाने में मदद करता है। नाटक में विभिन्न सामाजिक समस्याओं और उनके प्रभावों को उजागर किया जाता है, जिससे दर्शकों में सोचने की प्रेरणा मिलती है।
2. **समाज में चर्चा की शुरुआत:** पोस्टर नाटक एक मंच के रूप में कार्य करता है, जहां समाज के लोग विभिन्न समस्याओं पर चर्चा कर सकते हैं। यह समाज के लोगों के बीच संबंध बनाने और एक-दूसरे का समर्थन करने के लिए प्रोत्साहित करता है।
3. **सामाजिक एकता:** इस तरह के नाटक विभिन्न स्तरों के लोगों को एकत्रित करते हैं। यह एक ऐसा मंच तैयार करता है जहां विभिन्न समुदाय के लोग एक साथ काम कर सकते हैं, जो सामाजिक दूरी को समाप्त करने के लिए प्रभावी होता है।
4. **रचनात्मक सोच को प्रोत्साहन:** पोस्टर नाटक दर्शकों को रचनात्मक सोचने के लिए प्रेरित करता है। यह सामाजिक दूरी की समस्या का सामना करने के लिए नए और नवोन्मेषी विचार प्रदान करता है, जो लोगों के मन में गहरी छाप छोड़ते हैं।
5. **अनुभव साझा करना:** पोस्टर नाटक के माध्यम से विभिन्न व्यक्ति अपने अनुभव साझा कर सकते हैं। यह सामाजिक दूरी के कारण उत्पन्न एकाकीत्व और चिंता की भावना को कम करने में मदद करता है और समाज के भीतर एकता बढ़ाता है।
6. **प्रोत्साहन और प्रेरणा:** ये नाटक सामाजिक दूरी के खिलाफ लड़ाई के लिए लोगों को प्रेरित करते हैं। यह एक मजबूत संदेश देते हैं कि हम एक साथ काम करने पर सब कुछ संभव कर सकते हैं।

पोस्टर नाटक सामाजिक दूरी को समाप्त करने में एक प्रभावी माध्यम के रूप में कार्य करता है। यह जागरूकता बढ़ाने, चर्चा की शुरुआत करने, रचनात्मक सोच को उत्तेजित करने, और सामाजिक एकता बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए, यह समाज में महत्वपूर्ण प्रभाव डालने की क्षमता रखता है।

8. Discuss the role of 'light and shade' and 'perspective' in drawing a picture. 2019, 2022

Ans: 'प्रकाश-छाया' और 'परिप्रेक्ष्य' की भूमिका चित्रांकन में अत्यंत महत्वपूर्ण है। ये दो तत्व चित्र में गहराई, वास्तविकता, और आयामिकता बनाने में सहायता करते हैं। नीचे प्रकाश-छाया और परिप्रेक्ष्य की भूमिका का विस्तृत चर्चा किया गया है:

1. प्रकाश-छाया

- **गहराई निर्माण:** प्रकाश और छाया का उपयोग चित्र में गहराई और आयतन जोड़ता है। यह चित्र को त्रि-आयामी (3D) अनुभव देता है, जिससे दर्शक चित्र के विषय को वास्तविक रूप में अनुभव कर सकते हैं।
- **रूपरेखा और संरचना:** छाया विषय की रूपरेखा और संरचना को स्पष्ट करती है। यदि इसे सही रूप से चित्रित नहीं किया गया, तो चित्र अस्पष्ट या धुंधला हो सकता है। प्रकाश-छाया का सही उपयोग रूपरेखा के विवरण को बढ़ाता है।
- **भावना की अभिव्यक्ति:** प्रकाश और छाया का उपयोग चित्र में भावनाओं की अभिव्यक्ति में सहायता करता है। उदाहरण के लिए, उज्ज्वल प्रकाश खुशी और उत्साह व्यक्त कर सकता है, जबकि अंधेरी छाया उदासी या रहस्य पैदा कर सकती है।
- **फोकल प्वाइंट का निर्माण:** कलाकार प्रकाश का उपयोग करके एक विशेष बिंदु पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं, जो दर्शक की आंखों को आकर्षित करता है। यह चित्र के मुख्य विषय को उजागर करने में मदद करता है।

2. परिप्रेक्ष्य

- **वस्तुओं के बीच संबंध:** परिप्रेक्ष्य वस्तुओं के बीच संबंध स्थापित करता है। यह दर्शकों को यह समझने में मदद करता है कि एक वस्तु की स्थिति दूसरी वस्तु के साथ कैसे संबंधित है।
- **दूरी का अवधारणा:** परिप्रेक्ष्य के माध्यम से दूरी को समझा जा सकता है। यह प्राकृतिक दृश्य, नगरीय दृश्य, और चित्र के अन्य तत्वों में गहराई उत्पन्न करता है।
- **आयाम का निर्माण:** परिप्रेक्ष्य के उपयोग से चित्र में आयाम और गहराई उत्पन्न होती है। यह दर्शकों को एक त्रि-आयामी चित्र का अनुभव प्रदान करता है, जो चित्र को और अधिक वास्तविक बनाता है।
- **विषय की स्वाभाविकता:** सही परिप्रेक्ष्य के उपयोग से विषय को स्वाभाविक और वास्तविक रूप में चित्रित किया जाता है। यह दर्शकों के लिए चित्र की आकर्षण को बढ़ाता है।

प्रकाश-छाया और परिप्रेक्ष्य चित्रांकन के दो मौलिक तत्व हैं। इन तत्वों का सही उपयोग चित्र की वास्तविकता, गहराई और भावनात्मक अभिव्यक्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब कलाकार इन तत्वों का उपयोग करते हैं, तो वे ऐसे चित्र बनाते हैं जो अधिक जीवंत और आकर्षक होते हैं, जो दर्शकों की भावनाओं के साथ जुड़ते हैं।

9. Discuss the components of 'poetry'. 2018, 2021

Ans: कविता एक साहित्यिक रूप है जो विशेष भाषा और लय के माध्यम से भावनाओं, विचारों और अनुभवों को व्यक्त करता है। कविता के विभिन्न तत्व होते हैं, जो इसके अर्थ और गहराई को बनाने में सहायक होते हैं। नीचे कविता के मुख्य तत्वों पर चर्चा की गई है:

1. **विषय (Theme):** कविता का मुख्य विषय या थिम उसकी केंद्रीय सोच या संदेश है। यह कविता के भीतर व्यक्त की गई भावनाओं या धारणाओं की नींव होती है। विषय प्रेम, प्रकृति, जीवन, मृत्यु जैसे विभिन्न विषयों पर आधारित हो सकता है।

2. **भाषा (Language):** कविता की भाषा विशेष रूप से चयनित होती है। इसमें शब्द चयन, चित्रण, अलंकार और लय का उपयोग देखा जाता है। शब्दों के चयन में कवि की भावनाएँ और उद्देश्य व्यक्त होते हैं।
3. **लय (Rhythm):** लय कविता का एक मौलिक तत्व है, जो कविता को एक संगीतात्मक गुण देता है। यह एक विशेष शब्द की माप और गति के माध्यम से बनाया जाता है। जब कविता पढ़ी जाती है, तो इसकी लय दर्शकों के दिल में गूंजती है।
4. **चित्रण (Imagery):** कविता में चित्रण या दृश्य कवि की कल्पना का प्रदर्शन है। यह शब्दों के माध्यम से पाठक के मन में एक दृश्य या भावना उत्पन्न करता है। चित्रण विभिन्न प्रकार का हो सकता है, जैसे उपमा, अनुप्रास, रूप-रस का संयोग आदि।
5. **अलंकार (Figures of Speech):** अलंकार कविता की शैली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसमें तुलना, उपमा, प्रतीक, उपमा, आदि का उपयोग किया जाता है, जो कविता के भाव को गहरा और आकर्षक बनाते हैं।
6. **सुर (Tone):** कविता का सुर या टोन कवि की भावनाओं और स्थिति को दर्शाता है। यह संवेदनशीलता, हास्य, दुःख आदि का प्रदर्शन करता है। सुर के माध्यम से कविता का वातावरण बनता है।
7. **संरचना (Structure):** कविता की संरचना या स्टेक्चर इसके आकार और व्यवस्था को दर्शाती है। यह स्तबक, पंक्ति और कतरों की संख्या द्वारा निर्धारित होती है। कविता की संरचना पाठक का ध्यान आकर्षित करती है और विचार की धारा को निर्देशित करती है।
8. **शब्द चयन (Word Choice):** शब्द चयन कवि की सोच और भावनाओं के व्यक्त करने में महत्वपूर्ण होता है। कुछ शब्दों का प्रभाव अधिक होता है और उनके अर्थ गहरे हो सकते हैं, जो कविता को विशेषता प्रदान करते हैं।
9. **स्मृति और अनुभव (Memory and Experience):** कविता अक्सर कवि की स्मृति और अनुभवों पर आधारित होती है। कवि के जीवन और समाज का प्रतिबिंब कविता में व्यक्त होता है।

कविता के तत्व एक साथ मिलकर भावनाओं और विचारों का एक अविश्वसनीय बुनाई तैयार करते हैं। ये तत्व कविता को अपनी पहचान देते हैं और पाठक के मन में गहरा प्रभाव डालते हैं। कविता पढ़ते समय, यह जानना बहुत महत्वपूर्ण है कि ये तत्व कैसे काम करते हैं।

10. Discuss the significance of drawing and painting in educational practices. 2017, 2020

Ans: <u>शिक्षात्मक अभ्यास में चित्रण और चित्रकारी का महत्व:</u>

चित्रण और चित्रकारी का शिक्षात्मक अभ्यास में महत्व बहुत बड़ा है। ये दो माध्यम केवल छात्रों के लिए रचनात्मकता की अभिव्यक्ति नहीं हैं, बल्कि उनके सोचने, विश्लेषण करने और अनुभव के आधार पर सीखने की प्रक्रिया को समृद्ध करते हैं। नीचे चित्रण और चित्रकारी के शिक्षात्मक महत्व पर चर्चा की गई है:

<u>चित्रण का महत्व</u>

1. **सोच और विश्लेषण:** चित्रण छात्रों के लिए एक विचारशील प्रक्रिया है। जब वे कुछ चित्रित करते हैं, तो उन्हें इसके विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करना पड़ता है, जो उनके सोचने की क्षमताओं को बढ़ाता है।
2. **रचनात्मकता:** चित्रण के माध्यम से छात्र अपनी रचनात्मकता व्यक्त करते हैं। यह उन्हें नए विचार उत्पन्न करने और मौजूदा अवधारणाओं को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखने की क्षमता प्रदान करता है।
3. **संवाद का माध्यम:** चित्रण एक शक्तिशाली संवाद का माध्यम है। छात्र अपनी भावनाओं, विचारों और अनुभवों को चित्रों के माध्यम से दूसरों तक पहुँचा सकते हैं।
4. **ध्यान केंद्रित करना:** चित्रण की प्रक्रिया छात्रों को अपने ध्यान को केंद्रित करने में मदद करती है। यह उन्हें अपनी गतिविधियों में अधिक संलग्न बनाती है।

<u>चित्रकारी का महत्व</u>

1. **दृश्यात्मक शिक्षा:** चित्रकारी छात्रों को दृश्यात्मक शिक्षा के लाभ प्रदान करती है। यह उनकी जानकारी को अवशोषित करने और विश्लेषण करने की क्षमता को बढ़ाती है, क्योंकि चित्रकारी डेटा को दृश्यता में लाती है।
2. **विषय की गहराई:** चित्रकारी के माध्यम से छात्र विषय के बारे में अधिक गहराई से समझ सकते हैं। वे चित्रित जानकारी के माध्यम से सीखे गए विषयों के बीच संबंध स्थापित कर सकते हैं।
3. **सामाजिक और सांस्कृतिक समझ:** चित्रकारी के माध्यम से छात्र विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यह उन्हें विभिन्न समाजों और संस्कृतियों के प्रति सहानुभूति विकसित करने में मदद करती है।
4. **मानसिक विकास:** चित्रकारी की प्रक्रिया छात्रों के मानसिक विकास में सहायक होती है। यह उनके आत्मविश्वास को बढ़ाती है और उनकी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए एक सुरक्षित मंच प्रदान करती है।

चित्रण और चित्रकारी शिक्षात्मक अभ्यास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये दो माध्यम छात्रों की रचनात्मकता, विश्लेषणात्मक क्षमताओं और संवाद कौशल को बढ़ाने में मदद करते हैं। शिक्षा में इन गतिविधियों को शामिल करके, छात्र अपने संपूर्ण विकास के लिए एक मजबूत आधार बना सकते हैं।

11. How is folk dance related with the religion and culture of India? Briefly discuss. 2017

Ans: भारत के धर्म और संस्कृति के साथ लोकनृत्य का संबंध गहरा और मौलिक है। लोकनृत्य केवल मनोरंजन का एक साधन नहीं है, बल्कि यह भारत के विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों और सामाजिक जीवन को प्रस्तुत करने का एक महत्वपूर्ण साधन है। यहाँ कुछ मुख्य बिंदु उल्लेखित हैं:

1. **संस्कृतिक पहचान:** लोकनृत्य विभिन्न क्षेत्रों की संस्कृति और परंपराओं को प्रतिबिंबित करता है। प्रत्येक समुदाय की अपनी नृत्य शैली होती है, जो उनकी संस्कृति, विश्वास और प्रथाओं से संबंधित होती है।
2. **धार्मिक त्योहार:** कई लोकनृत्य धार्मिक त्योहारों और कार्यक्रमों से जुड़े होते हैं। उदाहरण के लिए, दुर्गा पूजा के दौरान बंगाल का "गंगा नाटक" या नवरात्रि के दौरान गुजरात का "गरबा"। ये नृत्य धार्मिक वातावरण को उजागर करते हैं और समाज में लोगों के बीच एकता को बढ़ावा देते हैं।

3. **सामाजिक बंधन:** लोकनृत्य आमतौर पर स्थानीय जनसंख्या के बीच सामाजिक बंधन को विकसित करता है। यह विभिन्न समुदायों के लोगों को एक साथ लाता है और उनकी सांस्कृतिक एकजुटता को प्रारंभ करता है।
4. **परंपरा और इतिहास:** लोकनृत्य भारत की प्राचीन परंपराओं और इतिहास का साक्षी है। यह विभिन्न समयों की ऐतिहासिक कहानियों, किस्सों और सांस्कृतिक परिवर्तनों को दर्शाता है।
5. संगीत और कला: लोकनृत्य अक्सर संगीत और अन्य कलात्मक रूपों, जैसे गाने, नाटकों, और कलात्मक अभिव्यक्तियों से जुड़ा होता है। ये संबंध समाज की सांस्कृतिक विविधता और महत्वपूर्णता को बढ़ाते हैं।

लोकनृत्य और भारत के धर्म और संस्कृति के बीच का संबंध एक समृद्ध और जटिल प्रणाली का प्रतिबिंब है। यह सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित और प्रचारित करता है। लोकनृत्य के माध्यम से भारत के विभिन्न धर्म और संस्कृतियाँ एकत्रित होकर एक विविध और समृद्ध समाज का निर्माण करती हैं।

12. What is 'sublimation'? How can you create the scopes for 'sublimation' through the practice of Drama or Art in education? 2018, 2022

Ans: मानसिक उद्गमन (Sublimation) एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपनी प्राथमिक, असुविधाजनक, या अस्वीकृत भावनाओं और प्रवृत्तियों को स्वस्थ और सामाजिक रूप से स्वीकार्य गतिविधियों में बदलता है। यह अवधारणा सामान्यतः फ्रायड के मनोवैज्ञानिक सिद्धांत से जुड़ी हुई है, जहाँ उन्होंने उल्लेख किया कि दबाए गए प्रवृत्तियों या इच्छाओं को सकारात्मक रूप से व्यक्त किया जा सकता है जब उन्हें उद्देश्यपूर्ण और सृजनात्मक गतिविधियों में पुनर्निर्देशित किया जाता है।

<u>शिक्षा में नाटक या कला के माध्यम से मानसिक उद्गम के अवसर पैदा करना</u>

1. **नाटक और अभिनय:** नाटक और अभिनय के माध्यम से छात्र अपने अनुभवों, भावनाओं और विचारों को व्यक्त कर सकते हैं। यह उन्हें मानसिक तनाव कम करने और सामाजिक कौशल को बेहतर बनाने में मदद करता है। नाटकीय गतिविधियाँ उन्हें असुविधाजनक भावनाओं का सामना करने और उन्हें सकारात्मक रूप से व्यक्त करने का अवसर प्रदान करती हैं।
2. **चित्रकला और दृश्य कला:** चित्रकला छात्रों के लिए एक शक्तिशाली माध्यम है, जहाँ वे अपनी आंतरिक भावनाओं को चित्रित कर सकते हैं। यह उनके विचारों को एकत्रित करने और इशारों के माध्यम से भावनाओं को व्यक्त करने में सहायक होता है।
3. **सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भागीदारी:** सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भागीदारी छात्रों के लिए एक अवसर प्रदान करती है, जहाँ वे नृत्य, गाना, और अन्य कलात्मक गतिविधियों में संलग्न हो सकते हैं। यह उनके सामाजिक जागरूकता और आत्मविश्वास को बढ़ाता है।
4. **समूह गतिविधियाँ:** समूह गतिविधियों के माध्यम से छात्र एक साथ काम करते हैं और विभिन्न प्रकार की भावनाएँ साझा करते हैं। यह उनके बीच सहयोग और संचार कौशल को बढ़ाने में मदद करता है।

5. **रचना और साहित्य:** साहित्य और कविता की रचना के माध्यम से छात्र अपने आंतरिक भावनाओं को शब्दों के माध्यम से व्यक्त कर सकते हैं। यह उनके विचारों को व्यक्त करने का एक प्रभावी माध्यम है।
6. **थेरेप्यूटिक आर्ट:** थेरेप्यूटिक आर्ट कार्यक्रम विशेष रूप से छात्रों को मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से निपटने में मदद करने के लिए डिज़ाइन किए जाते हैं। यहाँ रचनात्मकता और कला के माध्यम से उनके आंतरिक भावनाओं को बाहर लाने का अवसर दिया जाता है।

13. Describe the work process of glass painting. 2018, 2020

Ans: ग्लास पेंटिंग एक शानदार और सृजनात्मक कला रूप है, जो कांच की सतह पर रंगों का उपयोग करके बनाई जाती है। इस कला के माध्यम से विभिन्न डिज़ाइन, चित्रों की शैलियाँ और कलाकृतियाँ बनाई जा सकती हैं। नीचे ग्लास पेंटिंग की प्रक्रिया का विवरण दिया गया है:

ग्लास पेंटिंग की प्रक्रिया

1. **आवश्यक सामग्री इकट्ठा करना:**
- **कांच की पैनल:** ग्लास पेंटिंग के लिए पारदर्शी या रंगीन कांच की पैनल का उपयोग किया जाता है।
- **पेंट:** ग्लास पेंटिंग के लिए विशेष प्रकार के कांच के रंग या पेंट की आवश्यकता होती है, जो सामान्यतः पानी के आधार पर बनाया जाता है।
- **ब्रश:** विभिन्न प्रकार के ब्रश, जैसे फ्लैट, गोल, या डिटेलिंग ब्रश।
- **विरोधी रंग:** काम की बाहरी रेखा बनाने के लिए एक विरोधी रंग का उपयोग किया जा सकता है।
- **पैलेट और पानी:** रंग मिलाने के लिए।

2. **डिजाइन बनाना:** सबसे पहले, एक पेंसिल या पेंसिल कोर का उपयोग करके कांच की पैनल पर डिज़ाइन खींचा जाता है। यह एक प्रारंभिक स्केच के रूप में कार्य करता है।
3. **आउटलाइन बनाना:** डिज़ाइन की बाहरी रेखा बनाने के लिए एक विरोधी रंग का पेंट का उपयोग किया जाता है। यह डिज़ाइन को स्पष्ट रूप से देखने में मदद करता है और बाद में रंग भरने के लिए इसमें सीमाएँ बनाता है।
4. **रंग भरना:** डिज़ाइन पूरा होने के बाद, चयनित रंगों को ब्रश की मदद से कांच की पैनल पर लागू किया जाता है। यहाँ विभिन्न रंगों की परतें बनाई जा सकती हैं, और रंगों को मिलाकर नए शेड बनाए जा सकते हैं।
5. **सूखने देना:** रंग भरने के बाद, पैनल को कुछ समय के लिए सूखने के लिए छोड़ना चाहिए। सूखने के समय रंगों की स्थिरता सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है।
6. **फिनिशिंग टच:** अंत में, काम को और आकर्षक बनाने के लिए फिनिशिंग टच दिए जाते हैं। यहाँ अतिरिक्त विवरण या स्टाइलिंग की जा सकती है।
7. **रखरखाव:** एक बार ग्लास पेंटिंग पूरी होने पर, इसे सुरक्षित स्थान पर रखा जाना चाहिए। लंबे समय तक रखने के लिए, इसे सीधे धूप से दूर रखना चाहिए और सही तरीके से साफ करना चाहिए।

ग्लास पेंटिंग एक सृजनात्मक और आनंददायक कला परियोजना है, जो अद्वितीय डिज़ाइन और रंगों के माध्यम से कलाकार की सोच को व्यक्त करने में मदद करती है। इस प्रक्रिया का पालन करके कोई भी इस कला रूप को बना सकता है और अपनी सृजनात्मकता व्यक्त कर सकता है।

14. What is 'Rangoli'? Explain the spiritual significance of practicing this type of art in school. 2018, 2022

Ans: रंगोली एक पारंपरिक भारतीय कला रूप है, जो सामान्यतः मिट्टी, रंगीन पाउडर, या फूल की पंखुड़ियों की मदद से बनाई जाती है। इसे घरों के प्रवेश द्वार, आंगन या समारोहों को सजाने के लिए उपयोग किया जाता है और यह विभिन्न त्योहारों और अवसरों पर विशेष रूप से लोकप्रिय है। रंगोली के डिज़ाइन आमतौर पर ज्यामितीय आकृतियों, फूलों, जानवरों और देवताओं की छवियों का समावेश करते हैं, जो आध्यात्मिक और सांस्कृतिक प्रतीकों के रूप में कार्य करते हैं।

विद्यालय में रंगोली कला के आध्यात्मिक महत्व

1. **आध्यात्मिक पहचान:** रंगोली बनाना आध्यात्मिकता और शुद्धता का प्रतीक है। यह विश्वास किया जाता है कि रंगोली घर में सुख, समृद्धि और भाग्य लाती है। स्कूलों में रंगोली बनाना छात्रों को आध्यात्मिक मूल्यों से जोड़ता है।
2. **सृजनात्मकता और एकता:** रंगोली कला का अभ्यास छात्रों को अपनी सृजनात्मकता व्यक्त करने का एक माध्यम प्रदान करता है। एक साथ रंगोली बनाने की प्रक्रिया उनके बीच सहयोग और एकता की भावना को बढ़ावा देती है, जो समाज में भाईचारे का संदेश देती है।
3. **संस्कृति का संरक्षण:** विद्यालय में रंगोली बनाना भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित और प्रचारित करने में मदद करता है। यह नई पीढ़ी को उनके परंपराओं और संस्कृति से जोड़ता है।
4. **मानसिक शांति:** रंगोली बनाना एक ध्यान की तरह गतिविधि है, जो छात्रों को मानसिक शांति और आराम प्रदान करती है। यह उनके विचारों को शिथिल करने में मदद करती है और ध्यान केंद्रित करने में सहायता करती है।
5. **त्योहारों का उत्सव:** विभिन्न त्योहारों के अवसर पर विद्यालय में रंगोली बनाई जाती है, जो उन समयों के आध्यात्मिक और सामाजिक महत्व को उजागर करती है। यह छात्रों को उत्सवों के मौके पर आनंदित होने और परंपराओं के बारे में जानने का अवसर देती है।

रंगोली केवल एक कला अभ्यास का माध्यम नहीं है, बल्कि यह छात्रों के लिए आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों के विकास का एक महत्वपूर्ण तरीका है। विद्यालय में रंगोली के माध्यम से छात्र अपनी सृजनात्मकता व्यक्त कर सकते हैं और संस्कृति से जुड़ सकते हैं, जो उनके समग्र विकास में सहायक है।

15. Discuss the educational significance of Bertolt Brecht`s alienation theory. 2019, 2022

Ans: बर्टोल्ट ब्रेख्ट का विच्छेद प्रभाव (Verfremdungseffekt) नाटक में एक विशेष दृष्टिकोण है जो दर्शकों को घटनाओं के साथ एकात्मता में जाने से रोकता है और उनके आलोचनात्मक विचारों को उत्तेजित करता है। ब्रेख्ट के अनुसार, इस सिद्धांत का उद्देश्य दर्शकों को नाटकीयता को एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण से समझने में मदद करना है। नीचे विच्छेद प्रभाव के शैक्षिक महत्व पर चर्चा की गई है:

शैक्षिक महत्व

1. **आलोचनात्मक सोच का प्रोत्साहन:** ब्रेख्ट का विच्छेद प्रभाव छात्रों को आलोचनात्मक सोच में संलग्न होने के लिए प्रेरित करता है। नाटक में विभिन्न घटनाओं और पात्रों के माध्यम से, छात्र समाज की वास्तविकताओं और मानव संबंधों पर विचार कर सकते हैं।
2. **भावना के बजाय तर्क का महत्व:** नाटक में दर्शकों का ध्यान भावनाओं के बजाय तर्क और विचार पर केंद्रित करके, छात्र वास्तविकता का विश्लेषण करना सीखते हैं बिना भावनाओं पर निर्भर किए।
3. **ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ:** ब्रेख्ट का सिद्धांत छात्रों को नाटक और इसके सामाजिक संदर्भ के बीच संबंध खोजने में मदद करता है। यह उनके सांस्कृतिक इतिहास और सामाजिक परिवर्तन की समझ को बढ़ाता है।
4. **अभिनय में नए तरीके:** विच्छेद प्रभाव नाटकीय प्रदर्शन में नए तकनीकों को पेश करता है, जहाँ अभिनेता दर्शकों के सामने वास्तविकता का एक अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। यह छात्रों को अभिनय के नए तरीकों पर विचार करने में मदद करता है।
5. **सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रेरणा:** ब्रेख्ट के नाटक समाज की अन्याय और असमानताओं को उजागर करते हैं, जो छात्रों को सामाजिक परिवर्तन के प्रति जागरूक करते हैं। नाटक के माध्यम से, छात्र विभिन्न सामाजिक मुद्दों को हल करने के बारे में सोच सकते हैं।
6. **नाटक के माध्यम से शिक्षा की शक्ति:** ब्रेख्ट का विच्छेद प्रभाव नाटक को एक शैक्षिक माध्यम के रूप में प्रस्तुत करता है, जहाँ छात्र वास्तविक जीवन की समस्याओं और चुनौतियों के साथ जुड़कर अपने विचारों का विकास करते हैं।

बर्टोल्ट ब्रेख्ट का विच्छेद प्रभाव शिक्षा में नाटक के माध्यम से एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह छात्रों की आलोचनात्मक सोच, तर्क, और समाज के प्रति जागरूकता को बढ़ाता है, जो उनके समग्र विकास में मदद करता है। ब्रेख्ट का यह सिद्धांत शिक्षा के क्षेत्र में एक नई दृष्टि और प्रभाव उत्पन्न करता है, जो छात्रों की रचनात्मकता और मानव संबंधों की गहरी समझ को बढ़ाता है।

16. Explain the style and method of Warli Art. 2019

Ans: ओरली चित्रकला एक पारंपरिक भारतीय कला रूप है, जो महाराष्ट्र के ओरली गांव में उत्पन्न हुई है। इस चित्रकला की विशेषताएँ और पद्धतियाँ निम्नलिखित हैं:

<u>शैली</u>

1. **विवरण और परिचय:** ओरली चित्रकला की मुख्य विशेषता इसकी सूक्ष्म विवरण और प्राकृतिक दृश्यों का रूपांकन है। आमतौर पर इसे प्राकृतिक सामग्रियों जैसे मिट्टी, पेड़ के रस और पत्तियों का उपयोग करके बनाया जाता है।
2. **ज्यामितीय डिज़ाइन:** इस कला में ज्यामितीय आकृतियों का प्रमुखता से उपयोग किया जाता है। इसमें आमतौर पर फूल, पशु, मनुष्य और नर्तकियों के चित्रों का संयोग होता है।
3. **पृष्ठभूमि:** ओरली चित्रकला की पृष्ठभूमि सामान्यतः सफेद या प्राकृतिक रंग में बनाई जाती है, जो कला के ऊपर उज्ज्वल और जीवंत रंगों का जोर देती है।
4. **संस्कृतिक तत्व:** इस कला में विभिन्न भारतीय देवताओं के प्रतीक और सांस्कृतिक चित्रावलियाँ शामिल होती हैं। यह भारत की परंपराओं और धार्मिक विश्वासों का प्रतिबिंब है।

<u>पद्धतियाँ</u>

1. **सामग्री की तैयारी:** ओरली चित्रकला के लिए आमतौर पर स्थानीय मिट्टी और पेड़ के रस का उपयोग किया जाता है। रंगों के लिए सफेद मिट्टी के साथ पेड़ के रस को मिलाकर एक प्राकृतिक रंग तैयार किया जाता है।
2. **प्रारंभिक डिज़ाइन:** पहले, कलाकार एक कैनवास या दीवार पर एक प्रारंभिक डिज़ाइन बनाता है। इसे आमतौर पर पेंसिल या एक सूक्ष्म लकड़ी की मदद से खींचा जाता है।
3. **रंगों का अनुप्रयोग:** डिज़ाइन के बाद, प्राकृतिक रंगों का उपयोग करके रंगा जाता है। कलाकार अक्सर रंगों की गहराई बनाने के लिए कई परतें लगाते हैं।
4. **फिनिशिंग:** काम समाप्त होने के बाद, चित्र पर कुछ सजावट या विवरण जोड़े जाते हैं ताकि यह और अधिक आकर्षक बने।
5. **रखरखाव:** पूर्ण ओरली चित्रकृतियाँ सामान्यतः स्थायित्व के लिए रखी जाती हैं। रंगों की स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए उचित देखभाल की जाती है।

ओरली चित्रकला की शैली और पद्धतियाँ एक सृजनात्मक और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं। यह भारतीय परंपरा और संस्कृति की गहराई को दर्शाती है, जो वर्तमान पीढ़ी के लिए एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक संसाधन के रूप में कार्य करती है। इस कला के माध्यम से स्थानीय कलाकारों की सृजनात्मकता और तकनीकी कौशल का प्रदर्शन होता है।

17. Briefly discuss the importance of drama for teaching in class. 2023

Ans: शिक्षा में नाटक का उपयोग एक प्रभावशाली विधि है, जो छात्रों की सीखने की प्रक्रिया में विशेष भूमिका निभाता है। इसका महत्व निम्नलिखित है:

1. **अभिनय और अनुभव**: नाटक छात्रों को अभिनय के माध्यम से विषयवस्तु का अनुभव प्राप्त करने में मदद करता है। वे पात्रों में प्रवेश करके विषयवस्तु को वास्तविक जीवन की तरह अनुभव करते हैं।
2. **रचनात्मकता और कल्पना:** नाटक के माध्यम से छात्रों की रचनात्मकता और कल्पना का विकास होता है। वे नए विचारों और सोचने की क्षमताओं को विकसित करते हैं, जो उनकी शिक्षा में सहायक होती हैं।
3. **संवाद कौशल:** नाटक छात्रों की बोलने, सुनने और संवाद कौशल को बढ़ाता है। यह उनके आत्मविश्वास को बढ़ाता है और सामाजिक संवाद की क्षमता को सुधारता है।
4. **समस्या समाधान:** नाटक में विभिन्न समस्याओं का सामना करने का अवसर मिलता है, जो छात्रों की समस्या समाधान की क्षमताओं को बढ़ाता है। वे परिस्थितियों के आधार पर निर्णय लेना सीखते हैं।
5. **सांस्कृतिक जागरूकता:** नाटक छात्रों को विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भों और सामाजिक मुद्दों के प्रति जागरूक करता है। यह उनके भीतर सहानुभूति और मानविक मूल्यों का विकास करता है।
6. **मानसिक विकास:** नाटक के माध्यम से छात्रों को अपने और दूसरों के भावनाओं को समझने का अवसर मिलता है। यह उनके मानसिक और सामाजिक कौशल में सुधार करता है।
7. **मनोरंजन और आकर्षण:** नाटक सीखने की प्रक्रिया को अधिक आकर्षक और मनोरंजक बनाता है, जिससे छात्रों का ध्यान बनाए रखना आसान हो जाता है।

कक्षा में शिक्षण में नाटक एक प्रभावशाली और रचनात्मक विधि है। यह छात्रों के ज्ञान, सामाजिक कौशल और मानविक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। नाटक शिक्षा का एक प्रभावशाली माध्यम माना जाता है, जो सीखने के अनुभव को समृद्ध करता है।

18. Discuss the importance of Dance in the Educational institutions from the stand point of socialization, recreation and physical development. 2023

Ans: शिक्षा संस्थानों में नृत्य का महत्व सामाजिकीकरण, मनोरंजन और शारीरिक विकास के संदर्भ में व्यापक और बहुआयामी है। नृत्य केवल एक कला के रूप में नहीं, बल्कि छात्रों के सामाजिक और शारीरिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण तत्व है। नीचे नृत्य के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई है:

<u>सामाजिकीकरण</u>

1. **सामाजिक संबंध बनाना:** नृत्य के माध्यम से छात्र एक-दूसरे के साथ जुड़ते हैं। यह सामाजिक संबंध बनाने में मदद करता है, जिससे कक्षा का माहौल अधिक मीठा और मित्रवत बनता है।
2. **संस्कृति और परंपरा:** नृत्य विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं का हिस्सा है। नृत्य के माध्यम से छात्र अपनी संस्कृति और विरासत के प्रति जागरूक होते हैं और अन्य संस्कृतियों के प्रति सम्मान और समझ विकसित करते हैं।
3. **टीमवर्क:** नृत्य एक सामूहिक गतिविधि है, जो छात्रों के बीच सहयोग और समन्वय बढ़ाती है। एक साथ काम करने से वे एक-दूसरे के प्रति जिम्मेदारी और समर्थन सीखते हैं।

<u>मनोरंजन</u>

1. **मानसिक तनाव को कम करना:** नृत्य एक मनोरंजक गतिविधि है, जो छात्रों को मानसिक तनाव से मुक्त करने में मदद करती है। यह उनकी मानसिक थकान को दूर करती है और आनंद देती है।
2. **भावनाओं की अभिव्यक्ति:** नृत्य एक शक्तिशाली माध्यम है भावनाओं की अभिव्यक्ति का। छात्र अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकते हैं, जो उनके मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है।
3. **नए अनुभव:** नृत्य छात्रों को विभिन्न शैलियों और संस्कृतियों से परिचित कराता है। यह उन्हें नए अनुभव प्राप्त करने में मदद करता है।

<u>शारीरिक विकास</u>

1. **शारीरिक फिटनेस:** नृत्य एक शारीरिक गतिविधि है, जो शरीर के विभिन्न मांसपेशियों और अंगों को सक्रिय करता है। यह शारीरिक फिटनेस और समग्र स्वास्थ्य को बनाए रखने में सहायक है।
2. **समन्वय और संतुलन:** नृत्य छात्रों की समन्वय, संतुलन और मोटर कौशल को बढ़ाता है। यह शारीरिक दक्षता में सुधार करता है।
3. **शारीरिक जागरूकता:** नृत्य छात्रों को अपने शरीर के अंगों के प्रति जागरूकता बढ़ाता है और उनके शारीरिक अनुभव को समृद्ध करता है।

शिक्षा संस्थानों में नृत्य का महत्व सामाजिकीकरण, मनोरंजन और शारीरिक विकास के माध्यम से अत्यधिक है। यह छात्रों के मानसिक और शारीरिक कल्याण, सामाजिक संबंध और सांस्कृतिक

जागरूकता को समर्थन करता है। नृत्य शिक्षा का एक अविभाज्य हिस्सा है, जो छात्रों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

19. Write a short note on Bharatanatyam. 2023

Ans: भरतनाट्यम भारतीय शास्त्रीय नृत्य का एक विशेष शैली है, जो विशेष रूप से तमिलनाडु राज्य के साथ जुड़ी हुई है। इसे प्राचीन भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत का एक भाग माना जाता है। भरतनाट्यम का इतिहास और विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

इतिहास

- **उत्पत्ति:** भरतनाट्यम की उत्पत्ति प्राचीन भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैलियों से हुई है, विशेष रूप से तमिल साहित्य और धार्मिक स्रोतों से। इसे प्राचीन काल से मंदिर के समारोहों और धार्मिक पृष्ठभूमि में प्रदर्शन किया गया है।
- **रूपांतरण:** 20वीं शताब्दी में, भरतनाट्यम को पुनर्जीवित किया गया, जब शास्त्रीय नर्तक इसे आधुनिक रूप में विकसित करने लगे। विशेष रूप से, रुक्मिणी देवी अरुंडेल ने इस नृत्य शैली के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

विशेषताएँ

- **कलात्मक प्रस्तुति:** भरतनाट्यम आमतौर पर एक नाट्य कार्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जहाँ नृत्य, संगीत, और नाट्य कला का संयोजन होता है।
- **अभिनय और अभिव्यक्ति:** यह नृत्य शैली भावनाओं को व्यक्त करने में विशेष रूप से सक्षम है। नर्तक अपने चेहरे के भाव और शरीर के अंगों के माध्यम से विभिन्न भावनाओं को व्यक्त करते हैं, जो नृत्य के संगीत के साथ मेल खाता है।
- **संगीत:** भरतनाट्यम का संगीत मुख्य रूप से कर्नाटकी संगीत पर आधारित होता है, जहाँ नृत्य के साथ संगीत का हिस्सा गहराई से संबंधित होता है।

नृत्य शैली की संरचना

- **आंगिक:** इस नृत्य के विभिन्न अंग और मुद्राएँ ("आंगिक") बहुत महत्वपूर्ण हैं। यह दर्शकों के सामने कहानी और भावनाओं को व्यक्त करने में मदद करता है।
- **अभिनय:** भरतनाट्यम की विशेषता इसकी मुद्राएँ हैं, जो "हंसी," "डर," "प्रेम," आदि विभिन्न भावनाओं को व्यक्त करती हैं।

नृत्य शैली का उद्देश्य

- **धार्मिक कार्यक्रम:** इसे मुख्य रूप से धार्मिक कार्यक्रमों और पूजा-अर्चना में प्रस्तुत किया जाता है, जहाँ देवताओं की पूजा की जाती है।
- **संस्कृतिक मूल्य:** भरतनाट्यम केवल एक कला नहीं है, बल्कि यह समाज की सांस्कृतिक पहचान और विरासत का एक हिस्सा है। यह भारत की कला और संस्कृति की विविधता को दर्शाता है।

भरतनाट्यम एक कलात्मक स्वरूप के रूप में भारतीय संस्कृति का एक अमूल्य हिस्सा है। इसके माध्यम से समाज की सांस्कृतिक विरासत और धार्मिक मूल्य प्रकट होते हैं। भरतनाट्यम की कलात्मकता, गहराई, और अभिव्यक्ति भारतीय नृत्य कला को समृद्ध करती है, जो वर्तमान पीढ़ी के लिए एक मूल्यवान सांस्कृतिक संपत्ति है।

20. Discuss the materials and Methods of Fabric paintings. 2023

Ans: जब कपड़े या फैब्रिक बनाने के सामग्री और विधियों पर चर्चा की जाती है, तो यह मुख्य रूप से विभिन्न प्रकार के फाइबर, उनकी प्रोसेसिंग और कपड़ा उत्पादन में प्रयुक्त तकनीक से संबंधित है। नीचे कपड़े बनाने के सामग्री और विधियों पर विस्तृत चर्चा की गई है:

<u>फैब्रिक के लिए सामग्री</u>

1. **<u>प्राकृतिक फाइबर:</u>**
   - **कॉटन (सुत):** यह कपास के पौधे से उत्पन्न होता है और यह एक नरम और श्वसनशील कपड़ा है।
   - **लिनेन (आस):** यह फ्लैक्स पौधे के रेशों से बना होता है, यह मजबूत और जल-शोषक होता है।
   - **ऊन (वूल):** यह भेड़ की ऊन से बना होता है, जो गर्मी बनाए रखने में मदद करता है।
   - **रेशम (सिल्क):** यह एक प्राकृतिक रूप से उत्पादित फाइबर है, जो मुलायम और भव्य होता है।
2. **<u>कृत्रिम फाइबर:</u>**
   - **पॉलिएस्टर (Polyester):** यह एक सिंथेटिक फाइबर है जो बहुत मजबूत और जल-रोधक होता है।
   - **नायलॉन (Nylon):** यह मजबूत और लचीला होता है, जो आमतौर पर बाहरी कपड़ों में उपयोग किया जाता है।
   - **एक्रिलिक (Acrylic):** इसे ऊन के विकल्प के रूप में उपयोग किया जाता है, आमतौर पर स्वेटर और सर्दियों के कपड़ों में।
3. **ब्लेंडेड फाइबर:** विभिन्न प्राकृतिक और कृत्रिम फाइबरों का मिश्रण, जैसे कि पॉलिएस्टर-कॉटन, जो दोनों के लाभ प्रदान करता है।

<u>कपड़ा बनाने की विधियाँ</u>

1. **फाइबर प्राप्ति:**
   - प्राकृतिक फाइबर पौधों या जानवरों से एकत्र किए जाते हैं, जैसे कि कपास, ऊन, या रेशम।
   - कृत्रिम फाइबर पॉलीमर से बनाए जाते हैं और विभिन्न रासायनिक प्रक्रियाओं द्वारा तैयार किए जाते हैं।
2. **स्पिनिंग (Spinning):** फाइबरों को धागों में तैयार किया जाता है, जो विभिन्न मोटाई में हो सकते हैं। इसमें फाइबर को घुमाकर एक सूत में बदलना शामिल होता है।
3. **वीविंग (Weaving):** धागों को एक वीविंग मशीन का उपयोग करके कपड़े में बदलने के लिए बुना जाता है। यहाँ लंबवत और क्षैतिज धागे एक साथ जुड़े होते हैं।
4. **निटिंग (Knitting):** कपड़ा बनाने की एक और विधि, जिसमें धागों को एकत्रित करके लूप बनाया जाता है। यह अधिक लचीला और मुलायम कपड़ा बनाता है।

5. **फिनिशिंग (Finishing):** कपड़ा बनाने के बाद विभिन्न फिनिशिंग प्रक्रियाएँ पूरी की जाती हैं, जैसे रंगाई, पैटर्न बनाना और सतह के साथ संलग्न करना। यह कपड़े की मजबूती और सुंदरता को बढ़ाता है।
6. **सिलाई (Sewing):** विभिन्न कपड़ा भागों को एक साथ सिलाई की जाती है। विभिन्न सिलाई विधियाँ उपयोग की जाती हैं, जैसे हाथ की सिलाई और मशीन की सिलाई।

फैब्रिक के निर्माण में उपयोग की जाने वाली सामग्री और विधियाँ कपड़े की गुणवत्ता, उपयोगिता और स्थायित्व को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। प्राकृतिक और कृत्रिम दोनों प्रकार के फाइबरों की विविधता फैब्रिक की विस्तृत श्रृंखला बनाती है, जो कपड़ों, फर्नीचर और अन्य व्यावहारिक अनुप्रयोगों में उपयोग की जाती है।

*****